उपोद्घात

जैन प्रवचन चार अनुयोगमां वहेंचायेल छे—१ द्रव्यानुयोग, २ चरणकरणानुयोग, ३ गणितानुयोग अने ४ धर्मकथानुयोग. द्रव्यानुयोगमां द्रव्य-तत्त्वने लगतो विचार करवामां आव्यो छे. चरणकरणानुयोगमा चारित्र अने क्रियाकांडने लगता नियमोनो विचार छे गणितानुयोगमां जंबूद्वीपादि क्षेत्र अने सूर्यचंद्रादि ज्योतिष्कने लगता गणितनो विचार करेल छे अने धर्मकथानुयोगमां चरित अथवा कल्पित कथाओ आवे छे प्रस्तुत उपासगदसाओ-उपासकदशांगनो प्रतिपाद्य विषय मुख्यत्वे श्रावकना द्वादश व्रत, तेना अतिचारो, प्रतिमाओ, संलेखना वगेरे होवाथी तेनो चरणकरणानुयोगमा समावेश थइ शके छे ते बार अंग मांहेनुं सातमुं अंग छे. उपासक-श्रावको संबन्धी दस अध्ययनो ते 'उपासगदसाओ' अथवा उपासकदशांग कहेवाय छे. प्राकृतमां 'दस' शब्दनुं बहुवचन 'दसाओ' थयेलुं छे ते दस अध्ययनमां भगवान् महावीरना आनंदादि दस श्रावकोना जीवननी टुंकी हकीकत आपवामां आवी छे. चोथा समवायांगमां उपासकदशाङ्गनो आ प्रमाणे सविस्तर परिचय आपवामां आव्यो छे—

"उपासकदशांगमां उपासकोना नगरो, उद्यानो, चैत्यो, वनखंडो, राजाओ, मातपिता, समवसरण, धर्माचार्य (धर्मना उपदेशक), धर्मकथा, आ लोकनी अने परलोकनी ऋद्धिविशेष, उपासकोना शीलव्रत, विरमणव्रत, गुणव्रत, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासनो स्वीकार, श्रुतपरिग्रह (शास्त्रज्ञान) तपोपधान, प्रतिमाओ, उपसर्गो, संलेखना, भक्तप्रत्याख्यान, पादपोपगमन, देवलोकगमन, सुकुलमां उत्पत्ति, बोधिलाभ, अने अंतक्रियानु (मोक्षनुं) कथन छे. उपासकदशांगमा उपासकोनी ऋद्धि विशेष, परिषद्-परिवार, विस्तार-पूर्वक धर्मनुं श्रवण, बोधिलाभ, अभिगम-सम्यक्त्वनी विशुद्धि, स्थिरपणुं, मूलगुण-उत्तर गुणना अतिचारो, (श्रावकपणाना पर्यायनी) स्थितिविशेष, बहु प्रकारना विशेषवाळी प्रतिमा, अभिग्रहनुं ग्रहण अने पालन, उपसर्गोनुं सहन करवुं, उपसर्गोनो अभाव, विचित्र तप, शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत प्रत्याख्यान अने पोषधोपवास तथा सौथी छेल्ले मारणांतिक संलेखना जेओ संलेखनाना आराधन वडे आत्माने भावित करीने घणा भक्त (टंक) अनशन वडे व्यतीत करीने उत्तम विमानने विशे उत्पन्न थइने जे प्रकारे उत्तम

सुखो भोगवे छे अने उत्तम सुखोने अनुक्रमे भोगवी त्यांथी आयुष्यना क्षय थडे च्यवी जे प्रकारे जिनमतमां बोधि अने उत्तम संयम पामी तम-अज्ञान अने कर्मना प्रवाहथी मुक्त थइ जे प्रकारे अक्षय अने सर्व दुःखना मोक्षने पामे छे ते अने ते सिवायना बीजा अर्थो सविस्तर कहेला छे. उपासकदशामां परित्ता (परिमित) वाचना छे, संख्याता अनुयोगद्वारो छे, यावत् संख्याती संग्रहणी छे. ते अंग रूपे सातमुं अंग छे, तेनो एक श्रुतस्कन्ध छे, दस अध्ययनो, दस उद्देशकाल अने दस समुद्देशकाल छे. तेमां पदनी संख्या वडे संख्याता हजार पदो, संख्याता अक्षरो, अने यावत् चरणकरणनी प्ररूपणा करवामां आवी छे.

नंदिसूत्रमां उपासकदशांगनो ए प्रमाणेज पण कंइक संक्षिप्त परिचय आप्यो छे. परन्तु 'भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ' ए पाठ अधिक छे. पहले भोगनो त्याग अने प्रव्रज्या. परन्तु अहीं भोगोना त्यागनो अर्थ श्रावकोए भोगनुं परिमाण करेलुं होवाथी अधिक भोगोनो त्याग एवो अर्थ विवक्षित होइ शके, परन्तु प्रव्रज्या तो कोइ पण श्रावकोए ग्रहण करी नथी, तो पण अहीं प्रव्रज्यानो मात्र देशविरतिनो स्वीकार ए अर्थ होय तो संगत थइ शके छे. कारण के त्यार बाद 'सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासपडिवज्जणया' एवो पाठ छे. तेथी प्रव्रज्यानो अर्थ 'श्रावकना व्रतो' एवो करवो योग्य छे.

ते बधा श्रावको धनाढ्य छे. दरेकनी पासे क्रोडो रुपियानी संपत्ति छे. तेओए पोताना संपत्तिना त्रण भाग करी एक भाग वेपारमां एक भाग व्याजे अने एक भाग स्थायी निधि तरीके राखेल छे. ते बधानी पासे गायोना घणा गोकुलो छे. ते बधा व्यवहार-कुशल गृहपति छे अने समाजने दोरनारा छे. तेओ राजकार्यमां, सामाजिक कार्यमां तेमज कुटुंबकार्यमां बधाने पूछवा योग्य सलाह आपवा योग्य छे. ते बधाने एक एक स्त्री छे, परन्तु महाशतक नामना श्रावकने रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओ छे. ते बधा श्रमण भगवान महावीरनो उपदेश सांभळे छे अने ते तेओने सत्य लागे छे, तेमां तेनी श्रद्धा बेसे छे. तेओ भगवंतने सर्व परिग्रह अने भोगोनो त्याग करी अनगार थवानी पोतानी अशक्ति जणावे छे, परन्तु सम्यक्त्वमूल बार व्रत ग्रहण करवाने इच्छे छे. भगवंत पण इच्छा प्रमाणे करवानुं कहे छे. तेओ भगवान् महावीर पासेथी पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रतरूप श्रावकना बार व्रतो ग्रहण करे छे

अने महावीरने वंदन नमस्कार करी पोताने घेर जाय छे. घेर आवीने पोतानी स्त्रीने ए वात जणावे छे अने तेने पण भगवान् महावीर पासे धर्म सांभळवा मोकले छे अने ते पण धर्म सांभळी तेनी रुचि थवाथी बार व्रत ग्रहण करी श्रमणोपासिका थाय छे. ए प्रमाणे बधा श्रावको चौद वरस पर्यन्त व्रतनुं पालन करे छे अने पंदरमा वरसमां कोइ रात्रे धर्मजागरण करता तेओने विचार थाय छे के आ प्रमाणे प्रवृत्तिना विक्षेप वडे भगवंत महावीरे उपदेशेलो धर्म यथार्थपणे साधी शकाता नथी, माटे कुटुंबनो भार ज्येष्ठ पुत्रने सोंपी पोताना स्वजन संबन्धीनी रजा लइ पोषधशालामां जइ डाभना संथारा उपर बेसी भगवान् महावीरे कहेली धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने रहे छे. ते पछी ते बधा श्रावको अगियार श्रावकनी प्रतिमाओने स्वीकारी तेनुं यथार्थपणे पालन करे छे अने तेवा प्रकारनी खूब तपस्या करवा वडे तेओनुं शरीर कृश थइ जाय छे. छेवटे मारणान्तिक संलेखना करी भक्त पाननुं प्रत्याख्यान करे छे अने विशुद्ध परिणाम वडे तेओने अवधिज्ञान उत्पन्न थाय छे, ए प्रमाणे एक मास पूरो करी काळ धर्म पामी बधा देवलोकमां जाय छे अने त्यांथी बधा महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न थइ बोधि प्राप्त करी मुक्तिए जवाना छे. आ बधा श्रावको सर्व परिग्रहना त्याग करी संयमी जीवन गाळवाने असमर्थ होवाथी अणुव्रत अने शिक्षाव्रत द्वारा संयमधर्मनी शरुआत करी धीमे धीमे संयममां वधता छेवटे शरीर उपरना ममत्वनो त्याग करी संयमना निर्वाह करवाने असमर्थ शरीरने जाणी शरीरनो त्याग करे छे, परन्तु तेम छतां तेओ गृहवासनो त्याग करी अनगार थवाने समर्थ नथी. आ बाबत भगवान् गौतम महावीर भगवंतने पूछे छे के हे भगवन्! आपनो शिष्य आनंद आपनी पासे अगारवासनो त्याग करी अनगार थवाने समर्थ छे? भगवान् महावीर उत्तर आपे छे के ए अर्थ समर्थ नथी एटले तेमनो संयम सर्वविरति त्यागनी कोटीए पहोंची शके तेम नथी. एम बधा दसे श्रावकोनी सामान्य हकीकत छे आ सूत्रमां प्रथम अध्ययनमां आनंद श्रावक संबन्धे बधी हकीकत सविस्तर कही छे अने पछीना अध्ययनोमां बीजा श्रावको संबन्धे ते हकीकतनी पुनरुक्ति न करतां अतिदेश वडे एज हकीकत जणावी छे. मात्र बीजा श्रावकोमां जे विशेषता छे तेनुंज कथन करवामां आव्युं छे

प्रथम अध्ययनमां आनन्द श्रावक संबन्धे विशेष हकीकत आ छे-एकवार गौतम स्वामी कोल्लाक सन्निवेशमां भिक्षाए जता हता ते वखते घणा माणसोना मुखथी एम सांभळ्युं के भगवान् महावीरना शिष्य श्रमणोपासक आनन्दे मरणान्तसंलेखना स्वीकारी छे. तेथी गौतम स्वामीने आनन्दने जोवानो विचार थयो अने त्यां गया. आनंदे गौतम स्वामीने आवता जोइ नमस्कार करी पूछ्युं के भगवन् ! शुं गृहस्थाश्रममां रहेता गृहस्थने अवधिज्ञान थाय छे? गौतम स्वामीए 'हा' कही एटले आनंदे कह्यु के मने पांचसो योजननी मर्यादामां रहेला रूपी विषयने जाणवाना सामर्थ्यवाळुं अवधिज्ञान थयुं छे. त्यार बाद भगवान् गौतमे कह्यं के गृहस्थने अवधिज्ञान थाय छे पण एटलुं मोटु अवधिज्ञान थतुं नथी, माटे हे आनन्द ! तुं आ बाबत आलोचना कर. आनन्दे गौतमस्वामीने कह्युं के शुं जिनप्रवचनमां सद्भूत भावोनी आलोचना करवानी होय छे? गौतमस्वामीए 'ना' कही एटले आनंदे कह्युं के जो एम होय तो आप ज आ बाबतनी आलोचना करो. तेथी गौतम शंकित थया अने श्रमण भगवान् महावीरनी पासे जइ बधी वात कही अने पूछ्युं के भगवन् ! ए स्थाननी आलोचना श्रमणोपासक आनन्दे करवी जोइए के मारे करवी जोइए? भगवंते कह्युं के गौतम ! ए स्थाननी तुं आलोचना कर अने आ बाबत आनन्दनी क्षमा माग. गौतम स्वामी आनन्दनी पासे गया अने तेनी क्षमा मागी. आ प्रसंग घणो महत्वनो छे गौतमस्वामी जेवा चतुर्ज्ञानीने पण आनन्द बेधडक विनयथी कहे छे के शुं जिनवचनमां सत्य वस्तुनी आलोचना करवानी होय छे? गौतम स्वामी ना पाडे छे एटले आनन्द कहे छे के तो आपने ज आलोचना करवी जोइए. भगवान् गौतम पण पोतानी भूल समजातां पोतानाथी उतरती कोटीना आनन्द श्रमणोपासकनी पासे जइ मिथ्यादुष्कृत आपे छे.

बीजा अध्ययनमां मध्यरात्रीए पोषधशालामां कामदेव श्रावकनी पासे एक मायी मिथ्यादृष्टि देव भयंकर पिशाचनुं रूप विकुर्वी हाथमां तलवार लइने प्रगट थाय छे, अने तेने व्रत वगेरेनो त्याग नहि करे तो तलवार वडे शिरच्छेद करवानी धमकी आपे छे अने तलवार वडे तेना टुकडा करे छे, तो पण ते व्रतथी चलायमान थतो नथी. त्यार बाद ते हाथी अने सर्पनुं रूप विकुर्वी उपसर्गो करे छे, छतां पण ते चलित थतो नथी. देव पोतानुं दीव्य स्वरूप प्रगट करी कामदेव श्रावकने धन्यवाद आपे छे अने पोतानो

अपराध खमावे छे. त्यार बाद ते कामदेव श्रावक भगवान् महावीरनी पासे वंदन करवा जाय छे अने वंदन करी पर्युपासना करे छे ते पछी भगवान् महावीर कामदेवने उद्देशी तेने रात्रिए उपसर्ग थयानी वात करे छे अने बधा साधुओ अने साध्वीओने बोलावी कामदेवनी दृढताना वखाण करी तेना जीवन उपरथी बोध लेवानु सूचवे छे अने बधा निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओ भगवान् महावीरनी ए वातने विनय वडे कबूल करे छे

त्रीजा अध्ययनमां पण देव चुलनीपिताने व्रतथी चलायमान करवा आवे छे अने तेना पुत्रोने मारी तेनुं मडदुं करी कडाइमां पकावी तेना शरीर उपर मांस अने रुधिर छांटवानी धमकी आपे छे अने तेम करे छे, छतां पण ते व्रतथी चलित थतो नथी, त्यारे तेनी माताने मारी नांखवानी धमकी आपे छे, परन्तु तेथी ते व्रतथी चलित थइ देवने पकडवाने दोडे छे देव आकाशमा उडी जाय छे अने तेनो कोलाहल सामळी तेनी माता जागी उठे छे अने पोते व्रतथी चलित थवानी भूल समजाता प्रायश्चित्त लइ शुद्ध थाय छे

चोथा अध्ययनमा श्रमणोपासक सुरादेव पासे देव प्रकट थाय छे अने ते तेना पुत्रोने मारवा छता चलायमान थतो नथी पण ज्यारे तेना शरीरमा सोळ रोगो मूकवानी धमकी आपे छे त्यारे ते चलायमान थाय छे अने ते पण देवने पकडवा दोडे छे. छेवटे पोते व्रतथी चलित थवानी भूल समजाता प्रायश्चित्त लइ शुद्ध थाय छे

पांचमा अध्ययनमां चुल्लशतकनु वृत्तांत पण सुरादेवनी पेठेज समजवानु छे

छट्ठा अध्ययनमां कुंडकोलिक श्रमणोपासक अशोक वनमा जइ त्यां पृथिवीशिलापट्ट उपर पोतानी नाममुद्रा अने उत्तरीय वस्त्र मूकी महावीरे कहेली धर्मप्रज्ञप्तिने स्वीकारी रहे छे त्यां तेनी पासे एक देव प्रकट थइ तेनी नाममुद्रा अने उत्तरीय वस्त्र लइने कहे छे–चुल्लशतक ! 'गोशालकनी धर्मप्रज्ञप्ति सुंदर छे, कारण के तेना मते सर्वे भावो नियत छे, महावीरनी धर्मप्रज्ञप्ति खराब छे, कारण के तेना मते सर्वे भावो अनियत छे ते पछी कुंडकोलिक ते देवने प्रश्न करे छे के तें आ दिव्य देवर्द्धि शाथी प्राप्त करी छे–उत्थानथी–

पुरुषार्थथी के अनुत्थानथी-अपुरुषार्थथी? जो अनुत्थान वडे प्राप्त करी होय तो बधा देवो केम थता नथी? जो तें उत्थानथी-पुरुषार्थथी प्राप्त करी छे तो पछी गोशालकनी धर्मप्रज्ञप्ति के जेमां पुरुषार्थने अवकाश नथी ते साची केम होय? अने महावीरनी धर्मप्रज्ञप्ति जेमां पुरुषार्थ छे, अने सर्व भावो अनियत छे ते खराब केम होय? तेथी ते देव निरुत्तर थाय छे. त्यारबाद ते भगवंतने वंदन करवा जाय छे अने तेमनी पर्युपासना करे छे. भगवान् पण बधा साधु साध्वीओ समक्ष तेनी प्रशंसा करे छे के गृहस्थावासमां रहेता गृहस्थो पण अन्यतीर्थिकोने पोतानी दलीलथी निरुत्तर करी शके छे तो पछी द्वादशांग गणिपिटकना धारक मुनिओ करी शके तेमां शुं कहेवुं.

सातमा अध्ययनमां सद्दालपुत्र कुंभारनी हकीकत छे. ते पोलासपुरमां रहेतो हतो अने ते आजीविक मतना प्रवर्तक गोशालकनो उपासक हतो. तेना अस्थिनी मज्जा आजीविक मतना राग वडे रंगायेली हती. एक दिवसे त्यां भगवान् महावीर आव्यानी वात सांभळी ते वंदन करवा आव्यो अने तेणे भगवंत महावीरने पोतानी कुंभकारनी शालामां रहेवा माटे निमन्त्रण आप्युं. भगवान् महावीर त्यां आवीने रहेवा लाग्या. एक दिवसे ते पोताना वासणो शालामांथी बहार काढी तडके सुकवतो हतो त्यारे भगवान् महावीरे प्रश्न कर्यो के सद्दालपुत्र! आ बधा वासणो शी रीते थाय छे उत्थान प्रयत्नथी के उत्थान सिवाय? सद्दालपुत्रे उत्तर आप्यो के उत्थान सिवाय थाय छे. कारण के सर्व पदार्थो नियत छे, त्यारे भगवान् महावीरे कह्युं के कोइ पुरुष आ तारा वासणोने उपाडी जाय के फोडी नांखे अथवा तो आ तारी स्त्री साथे बलात्कार करे तो तुं तेने शिक्षा करे? त्यारे सद्दालपुत्रे उत्तर आप्यो के जरूर ते पुरुषने हुं शिक्षा करुं, मारुं अने तेनो नाश करुं. त्यारबाद भगवान् महावीरे कह्युं के जो उत्थान के पुरुषार्थ नथी तो ते पुरुष तारा भांड-पात्र हरण करतो नथी, तेम फोडी नांखतो पण नथी, तेम तारी स्त्री साथे बलात्कार पण करतो नथी, अने तुं तेने शिक्षा पण करतो नथी. माटे तुं जे कहे छे के सर्व भावो नियत (नियतिने आधीन) छे ते तारुं कहेवुं मिथ्या छे तेथी सद्दालपुत्र बोध पाम्यो अने ते श्रमणोपासक थयो तथा जीवाजीवादि तत्त्वनो ज्ञाता थयो. ते पछी गोशालके आ वात जाणी एटले ते तेने निर्ग्रन्थ दृष्टिनो

त्याग करावी आजीविक मतमां स्थिर करवा सद्दालपुत्रनी पासे आव्यो, परंतु सद्दालपुत्रे तेनो आदर कर्यो नहि अने चूप रह्यो. त्यारबाद गोशालके अहीं महामाहण (महाब्राह्मण-ज्ञानने धारण करनारा) महागोप, महासार्थवाह, महाधर्मकथी, अने महानिर्यामक आव्या हता इत्यादि कही महावीर भगवंतनी स्तुति करी पटले तेमने रहेवा माटे पोतानी शाळामां स्थान आप्युं. ते पछी गोशालके घणुं समजाववा छतां ज्यारे ते निर्ग्रन्थ प्रवचनथी चलायमान न थयो त्यारे ते गोशालक खिन्न थइ पोलासपुरथी नीकळी गयो.

अहीं पण एकवार मध्य रात्रे सद्दालपुत्रनी पासे एक देव प्रगट थयो अने तेणे तेना बधा पुत्रोने मारी नांख्या छतां पण सद्दालपुत्र डग्यो नहि, तेथी तेनी स्त्रीने मारी नांखवानो धमकी आपी अने तेथी ते देवने पकडवा दोडयो परन्तु व्रतमां दूषण लाग्युं एम जणातां ते प्रायश्चित्त करी शुद्ध थयो.

आठमा अध्ययनमां महाशतक संबन्धी हकीकत छे. महाशतकने रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओ हती. तेमां रेवतीए पोतानी बार सपत्नीओने अग्निप्रयोगथी, शस्त्रप्रयोगथी अने विषप्रयोगथी मारी नांखी. ते मांस अने मद्यमां घणी लोलुप हती. एक वखते राजगृह नगरमां अमारीघोष थयो. त्यारे तेणे पोताना पियेरथी केटलाक माणसोने बोलावीने कह्युं के तमारे हमेशां बे वाछडाओ मारी अहीं आपी जवा, ए रीते हमेशां वाछडानुं मांस खाती अने मदीरापान करती रहेवा लागी.

एकवार महाशतक श्रमणोपासक पोषधशालामां धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करी रहेवा लाग्यो, त्यारे उन्मत्त थयेली रेवती ठोकर खाती अने पोताना केश छूटा मूकी पोताना उत्तरीय वस्त्रने शरीर उपरथी खसेडती महाशतक पासे आवीने मोह अने उन्मादजनक शृंगाररिक स्त्रीभावने प्रदर्शित करती भोगनी प्रार्थना करवा लागी, परंतु महाशतके तेनो आदर न कर्यो अने ते पाछी गई. त्यारबाद महाशतके श्रावकनी अगियार प्रतिमाओ संपूर्ण करी अने छेवटे मारणान्तिक संलेखना करी. शुभ परिणाम वडे तेने अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं. ते पछी अन्य दिवसे उन्मत्त थयेली रेवती पोषधशालामां ज्यां महाशतक श्रमणोपासक छे त्यां आवी शृंगाररिक चेष्टा करती महाशतकनी पासे भोगनी प्रार्थना करवा लागी. त्यारे महाशतके तेनो आदर कर्यो नहि अने तेनी वातमां जरा पण लक्ष

आप्युं नहि. ए प्रमाणे रेवतीए बे वार अने त्रण वार पण भोगनी प्रार्थना करी. तेथी महाशतक गुस्से थयो अने तेणे अवधिज्ञाननो उपयोग करी रेवतीने कह्युं-अप्रार्थितनी प्रार्थना करनार रेवती ! तुं सात दिवसनी अंदर अलसक व्याधिथी मृत्यु पामी रत्नप्रभा नरकमां उत्पन्न थइश.

आ वात जाणी भगवान् महावीरे गौतमने महाशतक पासे मोकली कहेवराव्युं के मारणान्तिक संलेखनाने प्राप्त थयेला श्रमणोपासके सत्य होवा छतां अप्रिय कथन वडे कोइने कहेवुं योग्य नथी, तें तारी पत्नीने अप्रिय वचन कह्युं छे, तो तुं आ पापस्थानकनी आलोचना कर. महाशतके श्रमण भगवत महावीरनुं वचन विनयपूर्वक 'तह' त्ति कही स्वीकार कर्यो अने ते आलोचना अने प्रायश्चित्त करी शुद्ध थयो.

नवमा अध्ययनमां नंदिनीपिताए पण आनन्दनी पेठे गृहस्थ धर्म स्वीकार्यो अने महावीरे कहेल धर्मप्रज्ञप्तिने स्वीकारी रहेवा लाग्यो अने ते मरणान्तसंलेखना स्वीकारी कालधर्म पामी स्वर्ग गयो. सालिहीपितानुं वृतान्त पण एमज जाणवुं.

ए प्रमाणे महावीरना दस श्रावकोनो संक्षिप्त परिचय आपेलो छे. ते बधा श्रावको भगवान महावीरनो उपदेश सांभळी तेने विशे रुचिवाळा थाय छे अने सत्य धर्मनी श्रद्धा थतां तेओनुं वलण संयम तरफ थाय छे, परन्तु तेओने पोतानी शक्ति अने अशक्तिनो पूरो ख्याल होवाथी एकदम सर्वसंगनो त्याग करी शकता नथी, परन्तु अणुव्रतो ग्रहण करी अने भोग्य वस्तुओनुं परिमाण करी संयम धर्मनी शरुआत करे छे. अहीं जे संयमधर्म बताववामां आव्यो छे ते मनुष्योनी वधती जती भोगतृष्णानी वृत्ति रोकवा माटे छे. ज्यारे भोगतृष्णानी वृत्ति प्रबळ थाय छे त्यारे ते समाज अने देशने भयंकर थाय छे, अने ते आत्मानुं श्रेय साधी शकतो नथी, तेथी ज्ञानी पुरुषोए ते वृत्तिने अंकुशमां लाववा अथवा निर्मूळ करवा माटे संयमनो मार्ग बताव्यो छे अने जे मनुष्य एकदम दुष्कर संयमधर्म न साधी शके तेओने माटे तेओए आनन्दादि श्रावकोना चारित्र द्वारा धीमेथी शरुआत करी ते धर्ममां आगळ वधवानो मार्ग बतावी लोककल्याण साध्युं छे.

प्रस्तुत ग्रन्थना रचयिता भगवान् महावीरना शिष्य सुधर्मा स्वामी कहेवाय छे. कारण के जंबूस्वामीना प्रश्नना उत्तररूपे सुधर्मास्वामी बार अंगो कहे छे आ पुस्तकना उपोद्घातमां जंबूस्वामी प्रश्न करे छे के निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरे छट्ठा ज्ञाताधर्मकथानो आ अर्थ कह्यो छे तो सातमा उपासकदशांगनो शो अर्थ कह्यो छे ? आर्य सुधर्मा स्वामी कहे छे के "श्रमण भगवान् महावीरे उपासकदशाना दश अध्ययनो कह्या छे" इत्यादि. [1]सुधर्मास्वामीनो जन्म इ. स पूर्वे ६०७मां नालंदानी पासे आवेला कोल्लाकमां थयो हतो तेमना पितानु नाम धम्मिल अने मातानुं नाम भद्दिला हतुं एकवार अपापा नगरीमां सोमिल नामना ब्राह्मणे यज्ञ कर्यो अने ते निमित्ते गौतम इन्द्रभूति अने सुधर्मा वगेरे वेदपारगत अगियार ब्राह्मणो आव्या अने तेओने प्रतिबोध करी दीक्षा आपी.

गौतम इन्द्रभूतिनुं लांबु आयुष नहि होवाने लीधे संघनी व्यवस्थानु काम सुधर्मा स्वामीने सोंप्युं. सुधर्मा स्वामीने ९२ वरसनी उमरे केवळज्ञान थयु एटले तेमणे संघनी व्यवस्थानुं काम पोताना शिष्य जंबूस्वामीने सोंप्युं तेओ केवळज्ञानी तरीके आठ वरस जीव्या अने सो वरसनी उमरे इ स पूर्वे ५०७मा भगवान् महावीरना निर्वाण पछी २०मा वरसे निर्वाण पाम्या.

आ सूत्रनी उपर नवांगीटीकाकार अभयदेवसूरिए टीका करी छे. तेमना गुरु वर्धमानसूरिना शिष्य जिनेश्वर सूरि हता. तेमणे धारानगरीमां धनदेव शेठना पुत्र अभयकुमारने दीक्षा आपी अने तेमनुं नाम अभयदेव राख्यु. योग्यता प्राप्त थतां वर्धमान सूरिना आदेशथी वि. स. १०८८मां तेमने आचार्य पदे स्थापन कर्या.

वर्धमानसूरिना स्वर्गवास पछी पहेला बे अंगोनी टीका शीलाचार्ये बनावेली हती ते सिवाय बाकीना नव अंगोना पाठो कूट थइ गया हता तेनी टीकाओ रची ते सिवाय तेमणे पंचाशक वगेरे ग्रन्थोनी पण टीकाओ रची छे अने द्रोणाचार्य प्रमुख विद्वानोए ते टीकाने संशोधित करी छे तेओ पाटणमां कर्णना राज्यकाळमां वि. सं ११३५मां स्वर्ग गया.

१ आ सुधर्मास्वामी सम्बन्धी हकीकत 'महावीरस्वामीना संयमधर्म' ना उपोद्घातमांथी लीधी छे.

उपासकदशाङ्ग—विषयानुक्रम.

॥ अर्हम् ॥

श्रीमद्भगवद्आर्यसुधर्मस्वामिप्रणीत

उपासकदशाङ्ग सूत्र

मूळ तथा

श्रीमद् अभयदेवसूरि विरचित टीकाना अनुवाद सहित

---

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था। वण्णओ। पुण्णभद्दे चेइए। वण्णओ॥

१–२ ते काळे अने ते समये चंपा नामे नगरी हती. ते ऋद्धिवाळी अने उपद्रव रहित हती–इत्यादि वर्णन जाणी लेवुं. ते नगरीना

श्रीमदभयदेवसूरिकृत-टीकानो अनुवाद

श्रीवर्धमान स्वामीने प्रणाम करीने उपासकदशा विगेरे सूत्रोनी प्रायः बीजा ग्रन्थोमां जोयेली कंइक व्याख्या करुं छुं.

१ तेमां उपासकदशा ए सातमुं अंग छे. तेनो शब्दार्थ आ प्रमाणे छे-उपासक-श्रमणोपासक संबन्धी अनुष्ठाननुं प्रतिपादन करनार

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं अज्जसुहम्मे समोसरिए, जाव जम्बू पज्जुवासमाणे एवं वयासी–जइ णं भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव सम्पत्तेणं छट्ठस्स अङ्गस्स नायाधम्मकहाणं अयमट्ठे पण्णत्ते, सत्तमस्स णं भन्ते ! अंगस्स उवासगदसाणं समणेणं जाव सम्पत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता। तंजहा–आणंदे १, कामदेवे य २, गाहावइ

ईशान खूणामां पूर्णभद्र नामे चैत्य हतुं. ते एक मोटा वनखंड वडे चोतरफ वींटायेलुं हतुं–इत्यादि वर्णन जाणवुं. ते काळे अने ते समये आर्य सुधर्मा स्वामी समोसर्या. ते सुधर्मा स्वामीना ज्येष्ठ अंतेवासी आर्य जम्बू स्वामीए उपासना करता आ प्रमाणे पूछ्युं–हे भगवन् ! जो यावत् उत्तमार्थ–निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरे ज्ञाताधर्मकथा नामे छट्ठा अंगनो आ अर्थ कह्यो छे, तो उपासकदशा नामे सातमा अंगनो निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरे शो अर्थ कह्यो छे ? हे जम्बू ! यावत् उत्तमार्थने

दशा–दस अध्ययनरूप ते उपासकदशा कहेवाय छे. आ ग्रन्थनुं नाम बहुवचनान्त छे. आ ग्रन्थना संबन्ध, अभिधेय–विषय अने प्रयोजन सूत्रना नामना अन्वर्थ–व्युत्पत्तिना सामर्थ्यथी प्रतिपादन करेलां छे. ते आ प्रमाणे–उपासकोनुं अनुष्ठान अहीं अभिधेय छे, तेनुं ज्ञान थवुं ते श्रोताओनुं अनन्तर–तुरतनुं प्रयोजन छे अने श्रावकोना अनुष्ठाननो बोध करवो ते शास्त्रकारोनुं अनन्तर प्रयोजन छे. शास्त्रमां संबन्ध बे प्रकारनो कह्यो छे–उपायोपेय–कार्यकारणभाव अने गुरुपर्वक्रमलक्षण. तेमां कार्यकारणभाव संबन्ध शास्त्रना नामनी व्युत्पत्तिना सामर्थ्यथी कह्यो छे. जेम के आ शास्त्र कारण छे अने तेथी श्रावकोना अनुष्ठाननुं ज्ञान थवुं ते कार्य छे. गुरुपर्वलक्षण संबन्ध साक्षात् बतावता सूत्रकार कहे छे–

चुलणीपिया ३, सुरादेवे ४, चुल्लसयए ५, गाहावइकुण्डकोलिए ६, सद्दालपुत्ते ७, महासयए ८, नन्दिणीपिया ९, सालिहीपिया १०॥

पढमं अज्झयणं।

३. जइ णं भन्ते! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दस अज्झयणा पण्णत्ता, पढमस्स णं भन्ते! समणेणं जाव सम्पत्तेणं के अट्ठे पण्णत्ते? ॥

एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणियगामे नामं नयरे होत्था। वण्णओ। तस्स णं वाणियगामस्स नयरस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए दूइपलासए नामं चेइए होत्था। तत्थ णं वाणियगामे नयरे जि-

---

प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरे उपासकदशा नामे सातमा अंगना दश अध्ययनो कह्यां छे. ते आ प्रमाणे–आनन्द १, कामदेव २, गृहपति चुलनीपिता ३, सुरादेव ४, चुल्लशतक ५, गृहपति कुण्डकोलिक ६, सद्दालपुत्र ७, महाशतक ८, नंदिनीपिता ९ अने सालिहीपिता १०.

१ आनंदाध्ययन

हे भगवन्! जो निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवंत महावीरे उपासकदशा नामे सातमा अंगना दश अध्ययन कहेलां छे तो हे भगवन् मोक्षने प्राप्त थयेला श्रमण भगवंत महावीरे प्रथम अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे?

श्रावकना नाम छे. तेमां आनन्द नामे श्रावकनी हकीकत संबन्धी अध्ययन आनंद अध्ययन कहेवाय छे. 'गाहावइ' गृहपति–अमुक ऋद्धिवाळो गृहस्थ छे अने कुंडकोलिक ए 'गृहपतिकुंडकोलिक' ए आखा नामनो अंतनो भाग छे.

यसत्तू राया। वण्णओ। तत्थ णं वाणियगामे आणंदे नामं गाहावई परिवसइ। अड्ढे जाव अपरिभूए। तस्स णं आणन्दस्स गाहावइस्स चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था। से णं आणन्दे गाहावई बहूणं राईसर० जाव सत्थवाहाणं बहूसु कज्जेसु य कारणेसु य मन्तेसु य कुडुम्बेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, सयस्सवि य णं कुडुम्बस्स मेढी पमाणं आहारे आलम्बणं चक्खू, मेढिभूए जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। तस्स णं आणन्दस्स गा-

हे जम्बू! ए प्रमाणे ते काळे अने ते समये वाणिज्यग्राम नामे नगर हतुं. अहीं तेनुं वर्णन जाणवुं, ते वाणिज्यग्राम नामे नगरनी बहार ईशान खूणामां दूतिपलाश नामे चैत्य हतुं. ते वाणिज्य ग्राममां जितशत्रु नामे राजा हतो. अहीं तेनुं वर्णन जाणवुं, ते वाणिज्य ग्राममां आनन्द नामे गृहपति रहे छे. ते आढ्य-धनवान् अने बीजा कोइथी पराभव नहि पामे तेवो समर्थ छे. ते आनन्द गृहपतिने चार हिरण्यकोटि निधानमां, चार हिरण्यकोटी वृद्धि-व्याजमां अने चार हिरण्यकोटी धन धान्यादिना विस्तारना कार्यमां रोकायेली छे. वळी तेने दस हजार गायोनुं एक व्रज एवा चार व्रजो छे. ते आनंद गृहपति घणा राजा, युवराज वगेरे यावत् सार्थवाहोना घणा कार्यमां, कारणमां, मन्त्रो-विचारोमां तथा कुटुम्बोमां गुह्यो, रहस्यो, निश्चयो अने व्यवहारोमां पूछवा योग्य, सलाह लेवा योग्य हतो.

३ 'पवित्थरपउत्ताओ' प्रविस्तर-धन, धान्य, द्विपद-दास दासी विगेरे, चतुष्पद-गायो विगेरे संपत्तिनो विस्तार. व्रज-गोकुळ, 'दसगोसाहस्सिएणं' दशहजार गायनुं एक गोकुळ जाणवुं.

हावइस्स सिवनन्दा नामं भारिया होत्था, अहीण० जाव सुरूवा आणन्दस्स गाहावइस्स इट्ठा आणन्देणं गाहावइणा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्द० जाव पञ्चविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणी विहरइ। तस्स णं वाणियगामस्स बहिया उत्तरपुरच्छिमे दिसीभाए एत्थ णं कोल्लाए नामं सन्निवेसे होत्था, रिद्धत्थिमिय० जाव पासादीए। तत्थ णं कोल्लाए सन्निवेसे आणन्दस्स गाहावइस्स बहुए मित्तनाइनियगसयणसम्बन्धिपरिजणे परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए। परिसा निग्गया, कूणिए राया जहा तहा जियसत्तू निग्गच्छइ, जाव पज्जुवासइ। तए णं से आणन्दे गाहावई इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं खलु समणे जाव विहरइ, तं महाफलं जाव गच्छामि णं जाव पज्जुवासामि' एवं सम्पेहेइ,

---

पोताना कुटुम्बनो पण मुख्य, प्रमाणभूत, आधार, अवलंबन, चक्षुरूप, प्रधानभूत यावत् बधा कार्योने वधारनार हतो. ते आनन्द गृहपतिने शिवनन्दा नामे भार्या हती. परिपूर्ण अंगवाळी, यावत् सुंदररूपवाळी आनन्द गृहपतिने प्रिय अने आनन्द गृहपतिनी साथे अनुरक्त अने अविरक्त थयेली ते इष्ट शब्दादि मनुष्य संबन्धी काम अने भोगोनो अनुभव करती विहरे छे. ते वाणिज्य ग्रामनी बहार ईशान खूणामां कोल्लाक नामे संनिवेश हतो. ते समृद्धिवालो निरुपद्रव यावत् मनने प्रसन्न करनार हतो. ते कोल्लाक संनिवेशमां आनन्द गृहपतिना घणा मित्र, ज्ञाति, निज—स्वकीय स्वजन, संबन्धी अने परिवार वसे छे. ते धनिक अने समर्थ छे.

ते काले अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर यावत् समोसर्या. परिषद् वांदीने पाछी गइ. कोणिक राजानी पेठे जितशत्रु राजा वंदन करवाने नीकळे छे. नीकळीने यावत् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद आनन्द गृहपति महावीर स्वामी आव्यानी आ वात जाणीने

सम्पेहित्ता ण्हाए सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालङ्कियसरीरे सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता सकोरण्टमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते पायविहारचारेणं वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणामेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ,करेत्ता वन्दइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे आणन्दस्स गाहावइस्स तीसे य महइमहालियाए परिसाए जाव धम्मकहा, परिसा पडिगया, राया य गओ ॥

४. तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ० जाव

'आ प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर विहरे छे, तो अरिहंत भगवंतोनुं नामश्रवण पण महा फलवाळुं छे, तो वंदन नमस्कार वगेरेनुं करवुं महा फलवाळुं होय तेमां शुं कहेवुं ? माटे हुं जाउं अने यावत् तेमनी पर्युपासना करुं ' एवो विचार करे छे, विचार करी शुद्ध अने बहार जवा लायक वस्त्रो धारण करी अल्प अने महामूल्य अलंकारो वडे अलंकृत शरीरवाळो थई पोताना घरथी बहार नीकळे छे, नीकळीने धारण कराता कोरंट पुष्पनी माला युक्त छत्र वडे मनुष्य रूपी वागुरा (जाल)थी वींटायेलो पगे चालीने वाणिज्यग्राम नगरना मध्य भागमां थइने नीकळे छे अने ज्यां दूतिपलाश चैत्य छे अने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने त्रण वार जमणी बाजुथी प्रदक्षिणा करे छे. प्रदक्षिणा करी वंदन, नमस्कार यावत् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवान् महावीरे आनन्द गृहपतिने तथा अत्यन्त मोटी परिषदने धर्मोपदेश कर्यो. परिषद् गइ अने राजा गयो.

एवं वयासी-'सद्दहामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं, पत्तियामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं, रोएमि णं भन्ते ! निग्गंथं पावयणं, एवमेयं भन्ते !, अवितहमेयं भन्ते !, इच्छियमेयं भन्ते !, पडिच्छियमेयं भन्ते !, इच्छियपडिच्छियमेयं भन्ते !, से जहेयं तुब्भे वयह'त्ति कट्टु जहा णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे राईसरतलवरमाडम्बियकोडुम्बियसेट्ठिसेणावइसत्थवाहप्पभिईओ मुण्डा भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइया नो खलु अहं तहा संचाएमि मुण्डे जाव पव्वइत्तए, अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामि । अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह ॥

---

४ त्यार बाद आनन्द गृहपति श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्म सांभळी, अवधारी प्रसन्न अने संतुष्ट थइ आ प्रमाणे बोल्यो—हे भगवन् ! निर्ग्रन्थना प्रवचन—उपदेशनी श्रद्धा करु छुं, हे भगवन् ! हुं निर्ग्रन्थना प्रवचननी प्रतीति करुं छुं, हे भगवन् ! हुं निर्ग्रन्थना प्रवचननी रुचि करु छुं, हे भगवन् ! जे तमे कहो छो ते एमज छे, हे भगवन् ! तेमज छे, हे भगवन् ! अवितथ—सत्य छे, हे भगवन् ! ए मने इष्ट छे, हे भगवन् ! ए मने प्रतीच्छित—स्वीकृत छे, हे भगवन् ! इच्छित अने प्रतीच्छित छे. एम कहीने जेम देवानुप्रिय एवा आपनी पासे घणा राजा, युवराज, तलवर—राजस्थानीय पुरुषो, माडंबिको, कौटुम्बिको, श्रेष्ठी, सेनापति अने सार्थवाह प्रमुखे मुंड थइने गृहवासथी नीकळी अनगारिता—प्रव्रज्या ग्रहण करी छे तेम हुं मुंड थइ प्रवज्या ग्रहण करवाने समर्थ नथी, हुं देवानुप्रिय एवा आपनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षा व्रत रूप बार प्रकारना गृहस्थ धर्मने स्वीकारीश. (भगवंते कह्युं के) हे देवानुप्रिय ! जेम सुख उपजे तेम करो, इच्छा प्रमाणे करो, प्रतिबन्ध न करो.

५. तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए तप्पढमयाए थूलगं पाणाइवायं पचक्खाइ, 'जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा' १। तयाणन्तरं च णं थूलगं मुसावायं पचक्खाइ,'जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा' २। तयाणन्तरं च णं थूलगं अदिण्णादाणं पचक्खाइ,'जावज्जीवाए दुविहं तिविहेणं न करेमि न कारवेमि मणसा वयसा कायसा'३। तयाणन्तरं च णं सदारसन्तोसिए परिमाणं करेइ,'नन्नत्थ एक्काए सिवनन्दाए भारियाए, अवसेसं सव्वं मेहुणविहिं

५ त्यार बाद आनन्द गृहपति श्रमण भगवंत महावीरनी पासे प्रथमथी स्थूल प्राणतिपातनुं प्रत्याख्यान करे छे-'हुं जीवनपर्यन्त द्विविध अने त्रिविधे एटले मन, वचन अने काया वडे स्थूल प्रणातिपात-हिंसा नहि करुं अने नहि करावुं.'त्यार पछी स्थूल मृषावादनुं प्रत्याख्यान करे छे-'हुं यावज्जीव द्विविध त्रिविधे मन वचन अने काया वडे स्थूल मृषावादनुं आचरण नहि करुं अने नहि करावुं.'त्यार पछी स्थूल अदत्तादाननुं प्रत्याख्यान करे छे-'जीवन पर्यन्त द्विविध-त्रिविधे मन, वचन अने काया वडे अदत्तादान नहि करुं अने नहि करावुं

५ ते आनन्द श्रावक भगवंत महावीर पासे 'तप्पढमयाए' ते अणुव्रतोमां 'प्रथमतया'-प्रारंभमां 'स्थूलकं' स्थूल-त्रस संबंधी प्राणातिपातनुं प्रत्याख्यान करे छे 'जावज्जीवाए' यावती जीवा-ज्यां सुधी जीवन-प्राणधारण छे, अथवा यावान् जीवः-प्राणधारणं यस्यां प्रतिज्ञायां-ज्यां सुधी प्राण धारण करुं त्यां सुधी 'द्विविधं' करवुं अने कराववुं ए बे भेदे 'त्रिविधेन' मन, वचन अने काया वडे, (अहीं 'कायसा' प रूप 'स' नो आगम थयाथी थयुं छे.) 'न करोमि' नहि करु अने नहि करावुं इत्यादि वडे पत्र हकीकतने स्पष्ट करेली छे, त्यार पछी स्थूल मृषावादनुं प्रत्याख्यान करे छे. तीव्र संक्लेशना परिणामथी तीव्र संक्लेशने उत्पन्न करनार स्थूल मृषावाद छे 'आ चोर छे' एवा व्यवहारनुं कारण स्थूल अदत्तादान छे. पोतानी स्त्री वडे संतोष ते स्वदारसंतोष.-अहीं स्वार्थमां

पचक्खामि मणसा वयसा कायसा ४। तयाणन्तरं च णं इच्छाविहिपरिमाणं करेमाणे हिरण्णसुवण्णविहिपरिमाणं करेइ,'नन्नत्थ चउहिं हिरण्णकोडीहिं निहाणपउत्ताहिं, चउहिं वुड्ढिपउत्ताहिं, चउहिं पवित्थरपउत्ताहिं, अवसेसं सव्वं हिरण्णसुवण्णविहिं पचक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं चउप्पयविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ चउहिं वएहिं दसगोसाहस्सिएणं वएणं, अवसेसं सव्वं चउप्पयविहिं पचक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं खेत्तवत्थुविहिपरिमाणं

त्यार पछी स्वदारसंतोषने विशे परिमाण करे छे, 'एक शिवनन्दा भार्या सिवाय बाकीनी स्त्री साथे मैथुनविधिनुं मन वचन अने काया वडे प्रत्याख्यान करुं छुं.' त्यार बाद इच्छानुं परिमाण करतो हिरण्य अने सुवर्णनुं परिमाण करे छे. 'चार हिरण्यकोटी निधानमां, चार हिरण्यकोटी वृद्धि-व्याजमां अने चार हिरण्यकोटी धनधान्यादिना विस्तारमां रोकेली छे, ते सिवाय बाकीना हिरण्यसुवर्णविधिनो त्याग करुं छुं.' ते पछी चतुष्पदविधिनुं परिमाण करे छे. 'दस हजार गायनुं एक व्रज तेवा चार व्रज सिवाय बाकीना चतुष्पदोनुं प्रत्याख्यान करुं छुं'. त्यार बाद क्षेत्र रूप वस्तुनुं परिमाण करे छे. जेनाथी सो निवर्तन खेडी शकाय एवुं एक हळ, एवा पांचसो हळ वडे खेडी

'इक' प्रत्यय थयो होवाथी 'स्वदारसंतोषिक' रूप थाय छे. अथवा 'इ' प्रत्यय करवाथी 'स्वदारसंतोषि' रूप जाणवुं. एटले पोतानी स्त्रीमात्रथी संतोष पामवो. घणी स्त्रीओथी उत्पन्न थता संतोषने संक्षेप करवो. केवी रीते करे छे? ते बतावे छे. 'नन्नत्थ' पोतानी एक शिवनंदा भार्याने छोडी अन्यत्र-बीजी स्त्रीने विशे मैथुन सेवीश नहि. एज वातने स्पष्ट करे छे. 'अवसेसं' ते सिवाय बीजा मैथुन विधि-मैथुनना प्रकार अथवा मैथुनना कारणनो त्याग करुं छुं. वृद्ध आचार्यनी व्याख्या आ प्रमाणे छे 'नन्नत्थ' अन्यत्र बीजे, एटले शिवनंदाने छोडीने बीजे मैथुनविधिनो त्याग करुं छुं. बन्ने व्याख्यामां भावार्थ तो एकज छे. इच्छाविधिना परिमाणमां 'हिरण्यं' रूपुं, रूपानाणुं, सुवर्ण प्रसिद्ध छे, तेनुं परिमाण करे छे. 'नन्नत्थ' निधानमां राखेली चार कोटि हिरण्य वगेरेथी बीजा हिरण्यादिनी

करेइ, 'नन्नत्थ पञ्चहिं हलसएहिं नियत्तणसइएणं हलेणं, अवसेसं सव्वं खेत्तवत्थुविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं सगडविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ पञ्चहिं सगडसएहिं दिसायत्तिएहिं, पञ्चहिं सगडसएहिं संवाहणिएहिं, अवसेसं सव्वं सगडविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं वाहणविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ चउहिं वाहणेहिं दिसायत्तिएहिं, चउहिं वाहणेहिं संवाहणिएहिं, अवसेसं सव्वं वाहणविहिं पच्चक्खामि' ३, ५। तयाणन्तरं च

शकाय एटली क्षेत्रनी भूमि सिवाय बाकीना क्षेत्रवस्तुनुं प्रत्याख्यान करुं छुं. त्यार पछी शकट-गाडानुं परिमाण करे छे, बहार देशान्तरमां गमन करवा योग्य पांचसो गाडां, अने सांवाहनिक-मालनुं वहन करनारा पांचसो गाडां उपरांत बधा शकटोनुं प्रत्याख्यान करुं छुं. त्यार बाद वहाणनुं प्रत्याख्यान करे छे. देशान्तरमां मोकलवा योग्य चार वहाणो अने अहींना सांवाहनिक-माल लाववा लइ जवा योग्य चार वहाणो सिवाय बाकीना वहाणोनुं प्रत्याख्यान करुं छुं. त्यार बाद उपभोग-परिभोग विधिनुं प्रत्याख्यान

इच्छा नहि करुं, 'अवशेषं' तेथी अधिक हिरण्यादिनो त्याग करुं छुं. एम बधे स्थळे जाणवुं. त्यार बाद चतुष्पद विधिना परिमाणमां दसहजार गायोनुं एक गोकुळ एवा चार गोकुळ सिवाय बीजा चतुष्पदोनो त्याग करे छे. क्षेत्रवस्तु विधिना परिमाणमां 'खेत्तवत्थु' क्षेत्ररूप वस्तु ते क्षेत्रवस्तु, बीजा ग्रन्थोमां क्षेत्र अने वास्तु-घर एवी व्याख्या करेली छे. तेमां 'नियत्तणसइएणं' निवर्तन-देश विशेषमां प्रसिद्ध एक जातनुं भूमिनुं परिमाण छे. 'निवर्तनशतं कर्षणीयं यस्य अस्ति निवर्तनशतिकं'-सो निवर्तन जमीन खेडवा योग्य जेने छे एवुं एक हळ, एवा पांचसो हळ वडे खेडवा योग्य भूमि सिवाय बाकीनी भूमिनुं प्रत्याख्यान करे छे. २ शकटविधिना परिमाणमां 'दिसायत्तिएहिं' दिग्यात्रा-देशान्तरगमन प्रयोजन जेनुं छे ते दिग्यात्रिक-देशान्तरमां गमन करवा योग्य पांचसो शकट, ते सिवायना बीजा शकटोनो तथा 'संवाहणिएहिं' संवाहन-वहेवुं, क्षेत्रादिथी घास, काष्ठ अने धान्यादिनुं घर वगेरे स्थळे लाववुं, ते प्रयोजन

णं उवभोगपरिभोगविहिं पच्चक्खाएमाणे उल्लणियाविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगाए गन्धकासाईए, अवसेसं सव्वं उल्लणियाविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं दन्तवणविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं अल्ललट्ठीमहुएणं, अवसेसं दन्तवणविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं फलविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं खीरामलएणं, अवसेसं फलविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं अब्भङ्गणविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ सयपागसहस्सपागेहिं

करतो अंगलूपण-अंगुछानुं परिमाण करे छे. एक गंधकाषायी-सुगंधी राता अंगुछा सिवाय बाकीना बधा अंगुछानो त्याग करुं छुं. त्यार पछी दन्तपवन-दातणनी विधिनुं प्रत्याख्यान करे छे. एक लीला यष्टिमधु-जेठीमधना दातण सिवाय बाकीना दातणनो त्याग करुं छुं. त्यार बाद फळविधिनुं परिमाण करे छे. एक क्षीरामलक-मधुर आमळाना फळ सिवाय बाकीना फळोनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी अभ्यंगविधिनुं परिमाण करे छे. शतपाक अने सहस्रपाक तैल सिवाय बाकीना अभ्यंग विधिनो त्याग करुं छुं. त्यार बाद

जेओनुं छे ते सांवाहनिक एटले लाववा लइ जवाना कार्यमां रोकायेला पांचसो शकटो सिवाय बीजा शकटोनो त्याग करे छे. वाहन-वहाणनी विधिना परिमाणमां दिग्यात्रिक-देशान्तरमां मोकलवा योग्य चार वाहन-यानपात्र-वहाण अने संवाहन-लाववा जवाना कार्यमां रोकायेला चार वहाणो सिवाय बीजा वहाणोनो त्याग करे छे. 'उवभोगपरिभोग' त्ति. उपभुज्यते-वारंवार भोगवाय-उपयोग करी शकाय ते उपभोग-घर, वस्त्र, स्त्री वगेरे, परिभुज्यते-एकवार भोगवी शकाय ते परिभोग-आहार, पुष्प, विलेपन वगेरे. अथवा तेथी विपरीत व्याख्या करवी. एकवार भोगवी शकाय ते उपभोग अने वारंवार भोगवी शकाय ते परिभोग समजवो. ते उपभोग परिभोगना विधिनुं प्रत्याख्यान करतो 'उल्लणिय' ति उल्लणिया-अंगुछानुं, स्नानना जळ वडे भींजायेला शरीरना जळने लुंछवाना वस्त्रनुं परिमाण करे छे एक 'गंधकासाईए' कषाय-लाल रंग वडे रंगायेली शाटिका-वस्त्र काषायी कहेवाय छे 'गन्धप्रधाना काषायी'

तेल्लेहिं, अवसेसं अब्भङ्गणविहिं पचक्खामि' ३ । तयाणन्तरं च णं उव्वट्टणाविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं सुरहिणा गन्धट्टएणं, अवसेसं उव्वट्टणाविहिं पचक्खामि' ३ । तयाणन्तरं च णं मज्जणविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ अट्ठहिं उट्टिएहिं उदगस्स घडएहिं, अवसेसं मज्जणविहिं पचक्खामि' ३ । तयाणन्तरं च णं वत्थविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं खोमजुयलेणं, अवसेसं वत्थविहिं पचक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं विलेवणविहिपरिमाणं

उद्वर्तनाविधिनुं परिमाण करे छे. एक सुगंधी गन्धचूर्ण सिवाय बाकीना उद्वर्तनाविधिनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी मज्जन-स्नाननी विधिनुं परिमाण करे छे, आठ औष्ट्रिक घडा पाणी सिवाय वधारे पाणी वडे स्नान करवानो त्याग करुं छुं. त्यार बाद वस्त्रनी विधिनुं परिमाण करे छे. एक क्षौमयुगल (बे सुतराउ वस्त्रो) सिवाय बाकीना वस्त्रोनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी विलेपनविधिनुं परिमाण करे छे, अगर, कुंकुम-केसर अने चंदनादि सिवाय बाकीना विलेपननो त्याग करुं छुं. त्यार पछी पुष्पविधिनुं परिमाण करे छे. एक शुद्ध

जेमां सुगंध प्रधान छे एवुं रातुं वस्त्र ते गन्धकाषायी कहेवाय छे. ते सिवाय बीजा उल्लणिया-अंगुछानो त्याग करे छे. 'दंतवण'त्ति दन्ताः पूयन्ते अनेन दांत स्वच्छ कराय जे वडे ते दन्तपवन-दांतना मेलने दूर करनार काष्ठ-दातण, तेना परिमाणमां 'अल्ललट्ठीमहुएणं' आर्द्र-लीला 'यष्टिमधु' जेठीमधना दातण सिवाय बीजा दातणनो त्याग करे छे. फळ विधिना परिमाणमां 'खीरामलएणं' जेमां ठळीयो बंधायो नथी एवा अथवा क्षीर-दूधनी पेठे मधुर रसवाळा आमलक-आमळा सिवाय बीजा फळनो त्याग करे छे. 'सयपागसहस्सपागेहिं' सो औषधीद्रव्यना सो क्वाथ वडे जे पकावाय ते अथवा सो कार्षापणना मूल्यवडे जे पकावाय ते शतपाक, ए प्रमाणे सहस्त्रपाक तैल पण जाणवुं. ते सिवाय बीजा तैलना अभ्यंग विधिनु प्रत्याख्यान करे छे. उद्वर्तनविधिना परिमाणमां 'गंधट्ट-

१ उंटना जेवी लांबी डोकवाळा घडाने औष्ट्रिक घडा कहेवाना होय तेम समजे छे

करेइ, 'नन्नत्थ अगुरुकुंकुमचन्दणमादिएहिं, अवसेसं विलेवणविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं पुप्फविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं सुद्धपउमेणं मालइकुसुमदामेणं वा, अवसेसं पुप्फविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं आभरणविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ मट्ठकण्णेज्जएहिं नाममुद्दाए य, अवसेसं आभरणविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं धूवणविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ अगरुतुरुक्कधूवमादिएहिं, अवसेसं धूवणविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं भोयणविहिपरिमाणं करेमाणे पेज्जविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगाए कट्ठपेज्जाए, अव-

---

पद्म अने मालतीना पुष्पोनी माळा सिवाय बाकीना पुष्पविधिनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी आभरण विधिनुं परिमाण करे छे. मृष्ट-कोमळ कार्णेयक-कानना आभरण अने नामवाळी मुद्रिका सिवाय बाकीना अलंकारोनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी धूपविधिनुं परिमाण करे छे. अगर अने तुरुष्क-शिलारसना धूप वगेरे सिवाय बाकीना धूपविधिनो त्याग करुं छुं. तेना पछी भोजनविधिनुं परिमाण करतो

एणं' गंध-उपल, कुष्ठ विगेरे सुगंधी द्रव्योना अट्टक-चूर्ण अथवा घउना लोटना सुगंधी चूर्ण सिवाय बीजा उद्वर्तननु प्रत्याख्यान करे छे. उट्टिएहिं उदगस्स घडएहिं' उष्ट्रिका-मोटुं माटीनुं पाणी भरवानुं वासण, तेने भरवामां प्रयोजन जेनुं छे एवा, उचित प्रमाणवाळा अत्यन्त नाना नहि तेम मोटा नहि एवा पाणीना आठ घडा सिवाय वधारे पाणीथी स्नानविधिनो त्याग करे छे. अहीं वधे 'अन्नत्थ' अन्यत्र-शब्दनो प्रयोग होवा छतां पंचमीना अर्थमां तृतीया विभक्ति जाणवी. वस्त्रनो विधिना परिमाणमां 'खोमजुयलेणं' 'क्षौमयुगल-

---

१ क्षौमयुगलनो टीकाकार कार्पासिक-सुतराउ वस्त्रयुगल एवो अर्थ करे छे, परन्तु हेमचन्द्राचार्य अभिधानचिंतामणिमा "क्षौमं दुकूलं दुकूलं स्यात् कार्पासं तु बादरम्" । का० ३ श्लो० ३३३ तेनी स्वोपज्ञ टीकामा क्षुमा-अतसी, तस्या विकार. क्षौमम्, क्षौमने दुकूल कहे छे अने ते अळसीनुं बने छे" एम जणावे छे

सेसं पेज्जविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं भक्खविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेहिं घयपुण्णेहिं खण्डखज्जएहिं वा, अवसेसं भक्खविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं ओदणविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ कलमसालिओदणेणं, अवसेसं ओदणविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं सूवविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ कलायसू-

पेय विधिनुं (पीवा योग्य वस्तुनुं) परिमाण करे छे. एक काष्ठपेया (मगना यूष के तंडूलना यूष) सिवाय बाकीना पेयविधिनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी भक्ष्यविधि (पकवान)नुं परिमाण करे छे. एक घृतपूर्ण (घेबर) अने खंडखाद्य-खांडना खाजा सिवाय बीजा भक्ष्यनो त्याग करुं छुं. तेना पछी ओदनविधिनुं परिमाण करे छे. एक कलमशालिना ओदन सिवाय बाकीना ओदनविधिनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी सूपविधि-दाळनुं परिमाण करे छे. कलाय-वटाणानो सूप, मगनो सूप अने अडदना सूप सिवाय बाकीना बधा

कपासना बनेला बे वस्त्रो सिवाय बीजा वस्त्रोनो त्याग करे छे, विलेपन विधिना परिमाणमां 'अगरु'ति अगुरु-सुगंधी द्रव्य विशेष छे, अगर, कुंकुम-केसर अने [1]चंदनादि सिवाय बीजा द्रव्यना विलेपननो त्याग करे छे. पुष्पविधिना परिमाणमां 'सुद्धपउमेणं' बीजा पुष्पो विनानुं पुंडरीक-कमल अथवा शुद्ध पद्म-केवळ कमळ, अने 'मालइकुसुमदाम'त्ति मालती-जाइना पुष्पनी माळा सिवाय बीजा पुष्पविधिनो त्याग करे छे. आभरण विधिना परिमाणमां 'मट्ठकण्णेज्जएहिं' मृष्टकार्णयकाभ्याम्-मृष्ट-चित्र विनाना सुकोमळ एवा कार्णेयक-कानना आभरण अने नाममुद्दाए' नामवाळी मुद्रा-वींटी सिवाय बीजा आभरणनो त्याग करे छे. धूपना विधिना परिमाणमां अगर, 'तुरुक्कधूव'त्ति तुरुष्क-'शिलारसादिना धूप सिवायना बाकीना धूपविधिनो त्याग करे छे. 'पेज्जविहि'त्ति पीवा लायक आहारनो प्रकार,

१. अहीं आदि शब्द होवाथी ते सिवायना बीजा द्रव्योनो ख्याल आवतो नथी, तो पण तेवी बीजा परिगणित अने परिमित द्रव्यो हशे, परन्तु सूत्रकारे विस्तारना भयथी बीजा परिमित द्रव्योनो उल्लेख नहि करतां आदि शब्द मूक्यो छे.

वेण वा मुग्गमाससूवेण वा, अवसेसं सूवविहिं पच्चक्खामि'३। तयाणन्तरं च णं घयविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ सारइएणं गोघयमण्डेणं, अवसेसं घयविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं सागविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ चुच्चूसाएण वा सुत्थियसाएण वा मण्डुक्कियसाएण वा, अवसेसं सागविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं माहुरयविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ एगेणं पालङ्गामाहुरएणं, अवसेसं माहुरयविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं जेमणविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ सेहंबदालियंबेहिं, अवसेसं जेमणविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च

सूपविधि-दाळनो त्याग करुं छुं. त्यार बाद घृतविधिनुं परिमाण करे छे. एक शरद ऋतुना गायना घृतमंड-सारभूत घी सिवाय बाकीना घृतविधिनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी शाकविधिनुं परिमाण करे छे. 'एक चुच्चू शाक, स्वस्तिक अने मंडूकिका शाक सिवाय बाकीना शाकनो त्याग करुं छुं.' त्यार बाद माधुरक-मधुर रसना पीणानी विधिनुं परिमाण करे छे. पालंकना मधुर रसना पीणा

तेना परिमाणमां 'कट्ठपेय'त्ति काष्टपेया-मग वगेरेनो यूष अथवा घी वडे तळेला तंदुलनी पेया जाणवी. भक्ष्यविधिना परिमाणमां 'भक्ख'त्ति भक्ष्य शब्द कठण अने विशद आहार योग्य द्रव्यमां रूढ छे, परन्तु अहीं पकवान मात्र विवक्षित छे. 'घयपुण्ण'त्ति घृतपूर-घेवर प्रसिद्ध छे. 'खण्डखज्ज'त्ति जेनी उपर खांड चडावी होय एवा खाद्य-अशोकवर्ति-मरकी अथवा खाजा जाणवा. ओदननी विधिना परिमाणमां 'ओदण'त्ति कूर-चोखा, कलमना चोखा, जे पूर्वदेशमां प्रसिद्ध छे. सूपमां सूप-कूर-दाळनुं धोळुं भोजन प्रसिद्ध छे, 'कलायसुवे'त्ति कलाय-चणानी आकृतिवाळुं धान्यविशेष एटले वटाणा, तेनो सूप, मुद्ग-मग, माष-अडद प्रसिद्ध छे. घृतविधिना परिमाणमां 'सारइएणं गोघयमंडेणं' शारदिक-शरद् ऋतुमां थयेलुं गोघृतमंड-श्रेष्ठ गायनुं घी जाणवुं. शाकनी विधिना परिमाणमां अहीं वत्थुलादि शाक जाणवा, चुचू शाक, सौवस्तिक अने मंडूकिका शाक लोकप्रसिद्ध जाणवा. 'माहुरय'त्ति माधुरक-खाटुं नहि एवुं

णं पाणियविहिपरिमाणं करेइ, नन्नत्थ एगेणं अन्तलिक्खोदएणं, अवसेसं पाणियविहिं पच्चक्खामि' ३। तयाणन्तरं च णं मुहवासविहिपरिमाणं करेइ, 'नन्नत्थ पञ्चसोगन्धिएणं तम्बोलेणं, अवसेसं मुहवासविहिं पच्चक्खामि' ३, ६। तयाणन्तरं च णं चउव्विहं अणट्ठादण्डं पच्चक्खाइ, तंजहा–अवज्झाणायरियं पमायायरियं हिंसप्पयाणं पावकम्मोयएसे ३, ७।

सिवाय बाकीना बधा मधुररसना पीणानो त्याग करुं छुं.' त्यार पछी जमणनी विधिनुं परिमाण करे छे. 'सेधाम्ल अने दालिकाम्ल सिवाय बाकीना जमणविधिनो त्याग करुं छुं.' त्यार बाद पाणीनी विधिनुं परिमाण करे छे, 'एक अंतरीक्षोदक–वरसादना पाणी सिवाय बाकीना बधा पाणीनो त्याग करुं छुं.' त्यार पछी मुखवासनी विधिनुं परिमाण करे छे, पंचसौगन्धिक (पांच सुगन्धी पदार्थ सहित) ताम्बूल सिवाय बाकीना बधा मुखवास विधिनो त्याग करुं छुं. त्यार पछी चार प्रकारना अनर्थदंडनो त्याग करे छे. ते

मधुर रसवाळुं शालनक (?) पीणुं जाणवुं. तेमां 'पालङ्ग'त्ति पालंक–वल्लीना फळ विशेष रूप जाणवुं. ते पालंकाना पीणा सिवाय बीजा पीणानो त्याग करे छे. 'जेमणं'त्ति जेमन–वडा, पूरण वगेरे जमण कहेवाय छे, तेमां 'सेहंबदालियंबेहिं' सेधाम्ल–पक्व थया पछी खटाईनो संस्कार करवामां आवे छे ते, दालिकाम्ल–मग वगेरेनी दाळना बनेलां खाटां वडां वगेरे जाणवां. पाणीनी विधिना परिमाणमां 'अंतलिक्खोदयं'ति अंतरीक्षोदक–जे पाणी आकाशमांथी पडतुं ग्रहण कराय ते जाणवुं, ते सिवाय अन्य पाणीनो त्याग करे छे. त्यारबाद मुखवास विधिना परिमाणमां 'पंचसोगंधिएणं' एलची, लवींग, कपूर, ककोल अने जायफळ ए पांच सुगंधी द्रव्य वडे संस्कारवाळा तांबूल सिवाय बीजा मुखवासनो त्याग करे छे.

त्यार पछी चार प्रकारना 'अणट्ठादंडं'ति अनर्थ–धर्म, अर्थ अने काम सिवाय हिंसारूप के कर्मबंधनरूप दंड थाय ते अनर्थदंड, तेनुं

६. इह खलु 'आणन्दा'ई समणे भगवं महावीरे आणन्दं समणोवासगं एवं वयासी-"एवं खलु आणन्दा ! समणोवासएणं अभिगयजीवाजीवेणं जाव अणइक्कमणिज्जेणं सम्मत्तस्स पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा, संका, कङ्खा, विइगिच्छा, परपासण्डपसंसा, परपासण्डसंथवे। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स पाणाइवायवेरमणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा पेयाला जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-बन्धे, वहे,

आ प्रमाणे-१ अपध्यानाचरित-दुर्ध्यान करवुं, २ प्रमादाचरित-प्रमाद सेववो, ३ हिंस्रप्रदान-हिंसा करनार शस्त्रादि आपवां, ४ पापकर्मनो उपदेश करवो.

६. अहीं 'हे आनन्द' ! एम संबोधीने श्रमण भगवान् महावीरे आनन्द श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं-हे आनन्द ! जेणे जीवाजीव तत्त्वने जाणेला छे एवा अने यावत् निर्ग्रन्थ प्रवचनथी अनतिक्रमणीय-देवादि वडे पण अचलायमान एवा श्रमणोपासके सम्यक्त्वना पेयाला-

प्रत्याख्यान करे छे. १ 'अवज्झाणायरियं' अपध्यान-आर्त अने रौद्ररूप दुर्ध्यान, ते वडे आचरित-सेवेल अनर्थदंड ते अपध्यानाचरित. ए प्रमाणे २ प्रमादाचरित पण जाणवो. परन्तु विकथारूप अथवा तेल वगेरेना पात्रने नहि ढांकवारूप प्रमाद जाणवो. ३ हिंस्र-हिंसाना साधनभूत शस्त्रादि बीजाने आपवां ते हिंस्रप्रदान. ४ 'खेतर खेडो' वगेरे रूप पापोपदेश समजवो.

६ 'आणंदाइ' त्ति । हे आनन्द ! ए प्रमाणे संबोधी श्रमण भगवान् महावीरे आनन्दने आ प्रमाणे कह्युं, पज्ज यावत कहे छे-'एवं खलु आणन्दा' इत्यादि. हे आनन्द ! जीवाजीवादि तत्त्वना जाणनार अने अनतिक्रमणीय-देवादिथी अचलायमान श्रावके सम्यक्त्वना पांच अतिचारो-मिथ्यात्वना मोहनीयना उदयविशेषथी आत्माना अशुभ परिणामो, जे सम्यक्त्वने 'अतिचारयन्ति' दूषित करे छे, ते गुणवान् पुरुषोनी अनुपबृंहणा-प्रशंसा न करवी वगेरे अनेक प्रकारना छे, तेओमां 'पेयाला'-सारभूत, प्रधान, स्थूलपणे

छविच्छेए, अइभारे, भत्तपाणवोच्छेए १। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स मुसावायवेरमणस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-सहसाऽभक्खाणे, रहसाऽभक्खाणे, सदारमन्तभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे २। तयाणन्तरं च णं थूलगस्स अदिण्णादाणवेरमणस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-

प्रधान, स्थूल अतिचारो जाणवा, पण आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे १ शंका, २ कांक्षा-अन्य दर्शननी इच्छा, ३ विचिकित्सा-धर्मना फळनो संदेह, ४ पर पाषंड प्रशंसा-अन्य दर्शनीनी प्रशंसा, अने ५ परदर्शनीनो परिचय. त्यारबाद श्रमणोपासके स्थूल प्राणातिपातविरमण व्रतना पांच स्थूल अतिचारो जाणवा, परन्तु तेनुं आचरण न करवुं. ते आ प्रमाणे १ बन्ध, २ वध-ताडन, ३ छविच्छेद-अवयवोनो छेद करवो, ४ अतिशय भार भरवो, अने ५ भक्तपानव्यवच्छेद-पाणी अने खोराक बंध करवो. त्यार पछी स्थूल मृषावाद विरमण व्रतना पांच अतिचारो जाणवा, पण तेनुं आचरण न करवुं. ते आ प्रमाणे-१ सहसा अभ्याख्यान-विचार कर्या सिवाय खोटा दोषनो आरोप करवो, २ रहसा अभ्या-

जेनो व्यवहार थाय छे तेवा पांच अतिचारो छे. तेमां १ शंका-जैन प्रवचनमां शंका करवी, संदेहशील रहेवुं. २ कांक्षा-अन्य अन्य दर्शनने ग्रहण करवानी इच्छा करवी, ३ विचिकित्सा-धर्मना फळनो संदेह राखवो, अथवा विद्वज्जुगुप्सा-साधुओनी जात्यादिनी निंदा करवी, ४ परपाषंडस्तव-अन्य दर्शनीनी प्रशंसा करवी अने ५ परपाखंडसंस्तव-अन्य दर्शनीनो परिचय करवो. स्थूल प्राणातिपात विरमणना पांच अतिचारो-१ बन्ध-मनुष्य पशु वगेरेने दोरडा वगेरेथी बांधवा, २ वध-लाकडी वगेरेथी मारवुं, ३ छविच्छेद-शरीरना अवयवोनो छेद करवो, ४ अतिभारारोपण-तेवा प्रकारनी शक्तिरहित पशु वगेरे उपर घणो भार भरवो. ५ भक्तपान-व्युच्छेद-खोराक पाणी वगेरे न आपवुं. अहीं पूज्य पुरुषोए आ प्रमाणे विभाग-विवेक बताव्यो छे-"वन्धवहं छविछेदं अइभारं भत्तपाणवोच्छेयं। कोहाइदूसियमणो गोमणुयाईण नो कुज्जा॥" बन्ध, वध, छविच्छेद, अतिशय भार भरवो, अने खोराक अने पाणी न आपवा-ए

तेणाहडे, तक्करप्पओगे, विरुद्धरज्जाइक्कमे, कूडतुलकूडमाणे, तप्पडिरूवगववहारे ३। तयाणन्तरं च णं सदारसन्तोसिए पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा, तंजहा-इत्तरियपरिग्गहियागमणे, अपरिग्गहियागमणे, अणङ्गकीडा, परविवाहकरणे, कामभोगतिव्वाभिलासे ४। तयाणन्तरं च णं इच्छापरिमाणस्स समणो-

ख्यान-एकान्त निमित्ते असद् दोषनो आरोप करवो. ३ स्वदारमन्त्रभेद-पोतानी स्त्रीनी रहस्य-गुप्त वात प्रगट करवी. ४ मृषोपदेश-असत्य बोलवानो उपदेश करवो. अने ५ कूटलेखकरण-जुठा खतपत्र करवा. त्यार पछी स्थूल अदत्तादान-विरमण व्रतना पांच अतिचारो जाणवा, पण तेनुं आचरण न करवुं. ते आ प्रमाणे-१ स्तेनाहृत-चोरे आणेली वस्तु खरीद करवी. २ तस्करप्रयोग-चोरने चोरी करवा माटे प्रेरणा करवी, ३ विरुद्ध राज्यमां गमन करवुं, ४ कूटतुलाकूटमान-खोटा तोला अने माप राखवा. ५ तत्प्रतिरूपकव्यवहार-मूळना वस्तुना जेवी वस्तुनो व्यवहार-प्रक्षेप करवो. त्यार बाद स्वदारसंतोष व्रतने विशे पांच अतिचारो जाणवा, पण

क्रोधादि वडे दूषित मनवाळो गो-पशु अने मनुष्य वगेरेने न करे. तथा "न मारयामीति कृतव्रतस्य विनैव मृत्युं क इहातिचारः। निगद्यते यः कुपितः करोति व्रतेऽनपेक्षः तदसौ व्रती स्यात् ॥ १॥ कायेन भग्नं न ततो व्रती स्यात् कोपाद्दयाहीनतया तु भग्नम्। तदेशभंगादतिचार इष्टः सर्वत्र योज्यः क्रम एव धीमन् ॥" हुं 'मारीश नहि-प्राणघात नहि करूं' आ प्रमाणे व्रत लेनारने तेना मृत्यु सिवाय शो दोष लागे छे? परन्तु जे गुस्से थईने बंध वधादि करे छे तेथी ते व्रतधारी व्रतथी निरपेक्ष थाय छे. तेणे कायाथी मारवानो भंग कर्यो नथी माटे ते व्रतधारी कहेवाय छे, परन्तु कोप-गुस्सो करवाथी दया रहितपणे व्रतनो भंग कर्यो छे माटे अंशतः भंग थवाथी अतिचार लागे छे. हे बुद्धिमान् आ क्रम बधां व्रतोमां योजवो.

स्थूलमृषावाद विरमणना पांच अतिचार—१ सहसाअभ्याख्यान-सहसा-वगर विचार्ये अभ्याख्यान-खोटो दोष चडाववो, खोटुं आळ

वासगणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा तंजहा-खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे, हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे, दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे, धणधन्नपमाणाइक्कमे, कुवियपमाणाइक्कमे ५। तयाणन्तरं च णं दिसिवयस्स पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे, अहोदिसिपमाणा-

आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे-१ इत्वरपरिगृहितागमन-थोडा काळ सुधी ग्रहण करेली स्त्री साथे गमन-मैथुन करवुं. २ अपरिगृहीतागमन-कोइए नहि ग्रहण करेली वेश्या वगेरे साथे मैथुन करवुं. ३ अनंगक्रीडा-कामोत्तेजक आलिंगनादि क्रीडा करवी. ४ परविवाहकरण-पोताना अने पोतानी संतति सिवाय बीजाना विवाह करवा. ५ कामभोगतीव्राभिलाप-कामभोगने विशे तीव्र इच्छा करवी. त्यार पछी श्रमणोपासके इच्छापरिमाणना पांच अतिचारो जाणवा, पण आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे-१ क्षेत्रवस्तुप्रमाणातिक्रम-क्षेत्र अने वास्तु-घरना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. २ हिरण्यसुवर्णप्रमाणातिक्रम-हिरण्य-रूपा अने सुवर्ण-सोनाना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं, ३ द्विपद-

मूकवुं. जेमके चोरी नहि करनारने 'तुं चोर छे' एम कहेवुं वगेरे. ए वगर विचार्ये कहुं होवाथी पण तीव्र संक्लेशथी नहि कहुं होवाथी अतिचार छे, २ रहसाअभ्याख्यान-रहस्-एकान्त, ते निमित्ते खोटुं आळ मूकवुं. तात्पर्य ए छे के एकान्ते मळी विचार करनाराने कहे के 'एओ राजविरुद्ध विचार करे छे' वगेरे. आ अनाभोग-अज्ञानपणे कहुं होवाथी अतिचार छे, अने तेमां एकान्तमात्र निमित्त होवाथी पूर्वना अतिचारथी तेनो भेद छे. अथवा संभवित हकीकत कहेवाथी आ अतिचार छे पण व्रतनो भंग नथी. ३ स्वदारमन्त्रभेद-पोतानी स्त्री संबन्धी मन्त्र-विश्वासपूर्वक कहेली गुप्त वातचीतनो भेद-प्रकाश करवो ते. साची वात कहेवा छतां पण ग्वांप कहेल नहि प्रगट करवा लायक वातने प्रगट करवाथी लज्जादि वडे मरणादि अनर्थपरंपरानो संभव होवाथी वास्तविक रीते ते असत्य छे अने तेथी ए अतिचार रूप छे. ४ 'मृषोपदेशः'-बीजाओने वगर विचार्ये अनाभोगादिवडे के कपटपूर्वक असत्य उपदेश

इक्कमे, तिरियदिसिपमाणाइक्कमे, खेत्तवुड्ढी, सइअन्तरद्धा ६।

चतुष्पदप्रमाणातिक्रम–द्विपद्–दास दासी वगेरे, तथा चतुष्पद–गाय प्रमुख पशुओना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं, ४ धनधान्यप्रमाणातिक्रम–धन अने धान्यना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. ५ कुप्यप्रमाणातिक्रम–कुप्य–घरना वासण वगेरे उपकरणोना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. त्यार बाद दिशाव्रतना पांच अतिचारो जाणवा, पण तेनुं आचरण न करवुं, ते आ प्रमाणे–१ ऊर्ध्वदिशाप्रमाणातिक्रम–ऊर्ध्व दिशाना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं, २ अधोदिशाप्रमाणातिक्रम–अधोदिशाना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं, ३ तिर्यग्दिशाप्रमाणातिक्रम–तिरछी–चारे तरफनी दिशाना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. ४ क्षेत्रवृद्धि–क्षेत्रनी दिशामां एक तरफ वृद्धि करवी. ५ स्मृत्यन्तर्धा–व्रतनुं स्मरण न होवुं.

करवो. जेमके अमे आ के ते असत्य कहीने बीजाना उपर विजय मेळव्यो हतो. ए प्रमाणे वात कहेवाथी बीजाने असत्य बोलवानो बोध करवो. ए अतिचार छे, कारण के तेनी साक्षात् असत्यमां प्रवृत्ति थती नथी. ५ कूटलेखकरण–असत्–खोटा लेख–दस्तावेज करवा प्रमादादि वडे के दुर्विवेकपणाथी 'में मृषावादनो त्याग कर्यो छे परन्तु खोटा लेखनो त्याग कर्यो नथी' एवो विचार करनारने अतिचार रूप छे. सूत्रनी बीजी वाचनामां "कन्नालीयं, गवालियं, भूमालियं, नासावहारे, कूडसक्खे संधिकरणे' एवा प्रकारनो पाठ छे. आवश्यकादिमां तो तेने स्थूल मृषावादना भेदो कह्या छे, तेथी तेनो आ अर्थ संभवे छे. ते प्रमाद, सहसाकार–विचार कर्या सिवाय अने अनाभोगादि वडे कहेवामां आवे तो अतिचार रूप छे अने बुद्धिपूर्वक कहेवामां आवे तो तेथी व्रतनो भंग थाय छे. ए अतिचारोनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे–१ कन्यालीक–कन्या–कुमारिका, नहि परणेली स्त्री, ते माटे असत्य बोलवुं ते कन्यालीक. ते वडे लोकमां अतिशय निंदा थाय छे. अहीं कन्यालीक वडे सर्व मनुष्य जाति संबन्धी असत्य जाणवुं. २ गवालीक–गाय संबन्धी असत्य बोलवुं,

ते पण चतुष्पद-पशुजातिनुं उपलक्षण-सूचक छे. भूम्यलीक-भूमि संबन्धी असत्य, ते अपद-पगरहित सर्वे सचेतन के अचेतन वस्तु संबन्धी असत्यनु उपलक्षण छे. एटले सर्वे गमन रहित सचेतन के जड वस्तु संबन्धी असत्य बोलवुं. ४ न्यासापहार-न्यास-थापण, बीजाए थापण तरीके मूकेलुं द्रव्य, तेनो अपहार-अपलाप करवो. ५ कूटसाक्ष्य-कूट-असत्यनो संवाद करवा वडे जुठी साक्षी आपवी. क्यां आपवी? 'संधिकरणे' परस्पर बेनो विवाद थयो होय त्यारे संधि-सुलेह करवामां खोटी साक्षी आपवी. अहीं न्यासापहार अने कूटसाक्ष्य ए बन्ने अतिचारोनो प्रथमना त्रण अतिचारमां समावेश थतो होवा छतां तेना प्राधान्यनी विवक्षा वडे अपलाप अने साक्षी आपवानी क्रियाने जुदी ग्रहण करी छे स्थूल अदत्तादानविरमण व्रतना पांच अतिचार-१ 'तेणाहडे'त्ति स्तेनाहृत-चोरे आणेली वस्तु, ते सोंघी छे एम जाणी लोभथी चोरेली वस्तुने खरीद करनार के लेनार त्रीजा व्रतनो अतिचार करे छे-त्रीजा व्रतने दूषित करे छे माटे ते अतिचारनुं कारण होवाथी 'स्तेनाहृत' ए अतिचार छे. कारण के ए साक्षात् चोरी करतो नथी, माटे ते अतिचार रूप छे. २ तक्करपओगे'त्ति तस्करप्रयोग-चोरने चोरी करवा माटे प्रेरणा करवी. 'तमे चोरी करो' ए प्रमाणे अनुज्ञा करवी ते अनाभोगादि वडे अतिचार रूप छे. ३ 'विरुद्धरज्जाइक्कमे' विरुद्धराज्यातिक्रम-परस्पर विरुद्ध राजाओना राज्यमां अतिक्रम-जवुं. कारण ते राजाओए जवानी परवानगी आपी नथी, अने चोरी करवानी बुद्धि पण नथी एटले अनाभोगादि वडे अतिचार छे. ४ 'कूडतुलकूडमाणे' कूटतुलाकूटमान-तुला-तोलां काटलां प्रसिद्ध छे,-मान माप, कुडव वगेरे. ते न्यूनाधिक राखवां न्यून तोल अने माप वडे आपतो अने अधिक तोल अने माप वडे ग्रहण करतो त्रीजा व्रतनो अतिचार सेवे छे. अथवा 'हुं चोर नथी, कारण के खातर पाडवुं वगेरे कर्युं नथी' माटे व्रतसापेक्ष होवाथी ते अतिचार छे ५ 'तप्पडिरूवगववहारे'-तत्प्रतिरूपकव्यवहार-ते मूळ वस्तुना प्रतिरूपक-सरखी वस्तुनो व्यवहार-मूळ वस्तुमां प्रक्षेप करवो. एटले व्रीहि-डांगरमां पराळ अने घी वगेरेमां चरबी वगेरे मेळववां, अथवा तेना प्रतिरूपक-चरबी वगेरेने घृतादि रूपे व्यवहार करवो. ए अतिचार रूप छे ते पूर्वेनी पेठे जाणवुं. 'सदारसंतोसीए' स्वदारसंतोष व्रतना पांच अतिचार छे-१

'इत्तरियपरिग्गहियागमणे' 'इत्वरकालपरिगृहीतागमन—अहीं काळ शब्दनो लोप थयो छे. थोडा काळ सुधी ग्रहण करेली पहेले

१ भाडु आपवा वडे थोडा काळ माटे वेश्याने पोतानी स्त्री करीने गमन करनार पुरुषने पोतानी कल्पना वडे पोतानी स्त्री मानेली होवाथी व्रत सापेक्ष होवाने लीधे व्रतनो भंग थतो नथी अने अल्प काळ सुधी ग्रहण करेली होवाथी अने वास्तविक रीते पोतानी स्त्री नहि होवाथी व्रतनो भंग थाय छे माटे भंगाभंगरूप अतिचार छे. २ अपरिगृहीता-वेश्या, जेनो पति विदेशमां गयो छे एवी स्वच्छंदी स्त्री अने धणी विनानी कुलांगना, तेनी साथे गमन करनार पुरुषने अनाभोगादि तथा अतिक्रमादि वडे अतिचार लागे छे आ बन्ने अतिचारो स्वदारसंतोषीने होय छे, पण परस्त्री त्यागीने होता नथी कारण के थोडा काळ माटे भाडु आपी ग्रहण करेली वेश्या होवाथी, अने ते सिवायनी बीजी कुलांगना वगेरे अनाथ होवाथी परस्त्री नथी बाकीना अतिचारो स्वदारसंतोषी अने परस्त्रीत्यागी बन्नेने लागे छे आ हरिभद्राचार्यनो मत छे अने ते आगमानुसारी छे. बीजा आचार्यो आ संबन्धे कहे छे के—इत्वरपरिगृहीतागमन ए स्वदार संतोषीने अतिचाररूप छे, अने अपरिगृहीतागमन ए परस्त्रीत्यागीने अतिचाररूप छे. कारण के ज्यारे वेश्याने कोइए भाडु आपीने पोतानी स्वाल करेली होय अने तेनी साथे मैथुन गमन करे त्यारे परस्त्री गमनना दोषनो संभव होवाथी व्रतनो भंग थाय छे अने कोइ अपेक्षाए परस्त्री नहि होवाथी भंग थतो नथी माटे भंगाभंगरूप अतिचार छे. अन्य आचार्य आ अतिचारनो बीजी रीत विचार करे छे—स्वदारसंतोषी 'मे मैथुन मात्रनो त्याग कर्यो छे' एम समजी पोतानी पत्नीथी वेश्यादिकने विषे मैथुननो त्याग करे छे, पण आलिंगनादिनो त्याग करतो नथी, अने परस्त्रीत्यागी परस्त्रीने विषे मैथुननो त्याग करे छे पण आलिंगनादिनो त्याग करतो नथी माटे कथंचित् व्रतसापेक्ष होवाथी बन्ने अतिचाररूप छे ए प्रमाणे स्वदारसंतोषीने पांच अतिचार अने परस्त्रीत्यागीने त्रण अतिचार छे बीजा आचार्यो अन्य प्रकारे अतिचारोनो विचार करे छे—परस्त्रीत्यागीने पांच अतिचार अने स्वदार संतोषीने त्रण अतिचार होय छे, कारण के कोइए भाडु वगेरे आपीने राखेली वेश्यानी साथे मैथुन सेवनार परस्त्रीत्यागीने व्रतनो भंग थाय छे, कारण के ते थोडा काळ सुधी परस्त्री छे, परन्तु लोकमां परस्त्री तरीके प्रसिद्ध नथी माटे भंग थतो नथी तथी भंग अने अभंगरूप अतिचार छे अपरिगृहीता—अनाथ कुलांगना साथे मैथुनसेवी परस्त्रीत्यागीने ते पण अतिचार छे, कारण के ते बीजा धणीना अभावे परस्त्री नथी, माटे भंग थतो नथी अने लोकमां परस्त्री तरीके प्रसिद्ध छे माटे व्रतनो भंग थाय छे माटे भंग अने अभंगरूप अतिचार छे स्वदारसंतोषीने तो पूर्वोक्त बे अतिचार व्रतभंग रूप छे, बाकीना त्रण अतिचार स्वदारसंतोषी अने परस्त्रीत्यागी बन्नेने होय छे. स्त्रीने स्वपुरुषसंतोष अने परपुरुषत्यागमां भेद नथी,

ते पण चतुष्पद-पशुजातिनुं उपलक्षण-सूचक छे. भूम्यलीक-भूमि संबन्धी असत्य, ते अपद-पगरहित सर्व सचेतन के अचेतन वस्तु संबन्धी असत्यनु उपलक्षण छे. एटले सर्व गमन रहित सचेतन के जड वस्तु संबन्धी असत्य बोलवुं. ४ न्यासापहार-न्यास-थापण, बीजाए थापण तरीके मूकेलुं द्रव्य, तेनो अपहार-अपलाप करवो. ५ कूटसाक्ष्य-कूट-असत्यनो संवाद करवा वडे जुठी साक्षी आपवी. क्यां आपवी? 'संधिकरणे' परस्पर बेनो विवाद थयो होय त्यारे संधि-सुलेह करवामां खोटी साक्षी आपवी. अहीं न्यासापहार अने कूटसाक्ष्य ए बन्न अतिचारोनो प्रथमना त्रण अतिचारमां समावेश थतो होवा छतां तेना प्राधान्यनी विवक्षा वडे अपलाप अने साक्षी आपवानी क्रियाने जुदी ग्रहण करी छे स्थूल अदत्तादानविरमण व्रतना पांच अतिचार-१ 'तेणाहडे'त्ति स्तेनाहृत-चोरे आणेली वस्तु, ते सोंघी छे एम जाणी लोभथी चोरेली वस्तुने खरीद करनार के लेनार त्रीजा व्रतनो अतिचार करे छे-त्रीजा व्रतने दूषित करे छे माटे ते अतिचारनुं कारण होवाथी 'स्तेनाहृत' ए अतिचार छे. कारण के ए साक्षात् चोरी करतो नथी, माटे ते अतिचार रूप छे. २ तक्करपओगे'त्ति तस्करप्रयोग-चोरने चोरी करवा माटे प्रेरणा करवी. 'तमे चोरी करो' ए प्रमाणे अनुज्ञा करवी ते अनाभोगादि वडे अतिचार रूप छे. ३ 'विरुद्धरज्जाइक्कमे' विरुद्धराज्यातिक्रम-परस्पर विरुद्ध राजाओना राज्यमां अतिक्रम-जवुं कारण ते राजाओए जवानी परवानगी आपी नथी, अने चोरी करवानी बुद्धि पण नथी एटले अनाभोगादि वडे अतिचार छे. ४ 'कूडतुलकूडमाणे' कूटतूला कूटमान-तुला-तोलां काटलां प्रसिद्ध छे-मान माप, कुडव वगेरे. ते न्यूनाधिक राखवां. न्यून तोल अने माप वडे आपतो अने अधिक तोल अने माप वडे ग्रहण करतो त्रीजा व्रतनो अतिचार सेवे छे. अथवा 'हुं चोर नथी, कारण के खातर पाडवुं वगेरे कर्युं नथी' माटे व्रतसापेक्ष होवाथी ते अतिचार छे ५ 'तप्पडिरूवगववहारे'-तत्प्रतिरूपकव्यवहार-ते मूळ वस्तुना प्रतिरूपक-सरखी वस्तुनो व्यवहार-मूळ वस्तुमां प्रक्षेप करवो. एटले व्रीहि-डांगरमां पराळ अने घी वगेरेमां चरबी वगेरे मेळववां, अथवा तेना प्रतिरूपक-चरबी वगेरेने घृतादि रूपे व्यवहार करवो. ए अतिचार रूप छे ते पूर्वेनी पेठे जाणवुं. 'सदारसंतोसीए' स्वदारसंतोष व्रतना पांच अतिचार छे-१

'इत्तरियपरिग्गहियागमणे '²इत्वरकालपरिगृहीतागमन—अहीं काळ शब्दनो लोप थयो छे थोडा काळ सुधी ग्रहण करेली एटले

१ भाडु आपवा वडे थोडा काळ माटे वेश्याने पोतानी स्त्री करीने गमन करनार पुरुषने पोतानी कल्पना वडे पोतानी स्त्री मानेली होवाथी व्रत सापेक्ष होवाने लीधे व्रतनो भग थतो नथी अने अल्प काळ सुधी ग्रहण करेली होवाथी अने वास्तविक रीते पोतानी स्त्री नहि होवाथी व्रतनो भग थाय छे माटे भगाभगरूप अतिचार छे २ अपरिगृहीता-वेश्या, जेनो पति विदेशमा गयो छे एवी स्वच्छंदी स्त्री अने धणी विनानी कुलागना, तेनी साथे गमन करनार पुरुषने अनाभोगादि तथा अतिक्रमादि वडे अतिचार लागे छे आ बन्ने अतिचारो स्वदारसतोषीने होय छे, पण परस्त्री त्यागीने होता नथी कारण के थोडा काळ माटे भाडु आपी ग्रहण करली वेश्या होवाथी, अने ते सिवायनी बीजी कुलागना वगरे अनाथ होवाथी परस्त्री नथी बाकीना अतिचारो स्वदारसतोषी अने परस्त्रीत्यागी बन्नेने लाग छे आ हरिभद्राचार्यनो मत छे अने त आगमानुसारी छे बीजा आचार्यो आ सबधे कहे छे के-इत्वरपरिगृहीतागमन ए स्वदार सतोषीने अतिचाररूप छे, अने अपरिगृहीतागमन ए परस्त्रीत्यागीने अतिचाररूप छे कारण के ज्यारे वेश्याने कोइए भाडु आपीने पोतानी रखात करेली होय अने तेनी साथे मैथुन गमन करे त्यारे परस्त्री गमनना दोषनो सभव होवाथी व्रतनो भग थाय छे अने कोइए अपनाए परस्त्री नहि होवाथी भग थतो नथी माटे भगाभगरूप अतिचार छे अन्य आचार्य आ अतिचारनो बीजी रीते विचार करे छे-स्वदारसतोषी मे मैथुन मात्रनो त्याग कर्यो छे' एम समजी पोतानी कल्पनाथी वेश्यादिकने विषे मैथुननो त्याग करे छ, पण आलिंगनादिनो त्याग करतो नथी अने परस्त्रीत्यागी परस्त्रीने विषे मैथुनना त्याग करे छे पण आलिंगनादिनो त्याग करतो नथी माटे कथचित् व्रतसापेक्ष होवाथी बन्ने अतिचाररूप छ ए प्रमाणे स्वदारसतोषीने पाच अतिचार अने परस्त्रीत्यागीने त्रण अतिचार छे बीजा आचार्यो अन्य प्रकारे अतिचारोनो विचार करे छे-परस्त्रीत्यागीने पाच अतिचार अने स्वदार सतोषीने त्रण अतिचार होय छे, कारण के कोइए भाडु वगेरे आपीने राखेली वेश्यानी साथे मैथुन सेवनार परस्त्रीत्यागीने व्रतनो भग थाय छे, कारण के ते थोडा काळ सुधी परस्त्री छे परन्तु लोकमा परस्त्री तरीके प्रसिद्ध नथी माटे भग थतो नथी तेथी भग अने अभगरूप अतिचार छे अपरिगृहीता-अनाथ कुलागना साथे मैथुनसेवी परस्त्रीत्यागीने ते पण अतिचार छे, कारण के ते बीजा धणीना अभावे परस्त्री नथी, माटे भग थतो नथी अने लोकमा परस्त्री तरीके प्रसिद्ध छे माटे व्रतना भग थाय छे माटे भग अने अभगरूप अतिचार छे स्वदारसतोषीने तो पूर्वोक्त बे अतिचार व्रतभग रूप छे, बाकीना त्रण अतिचार स्वदारसतोषी अने परस्त्रीत्यागी बन्नेने होय छे स्त्रीने स्वपुरुषसतोष अने परपुरुषत्यागमा भेद नथी,

भाडुं आपवा वडे दिवस, मास वगेरे थोडा काळ पर्यंत राखेली वेश्यानी साथे गमन-मैथुन सेववुं. ते [1]अतिक्रमादि वडे अतिचार छे. २ 'अपरिग्गहियागमणे' अपरिगृहीतागमन-अन्यनो पासेथी जेणे मूल्य ग्रहण कर्युं छे एवी अपरिगृहीता-वेश्या, अथवा के धणी विनानी कुलांगना स्त्री, तेनी साथे मैथुन सेववुं. आ पण अतिक्रमादि वडे अतिचार छे. ३ 'अणंगकीडा'-अनंगक्रीडा-अंग-शरीरना अवयव, मैथुन कार्यनी अपेक्षाए योनि अथवा पुरुषचिह्न, तेथी भिन्न अनंग-स्तन, कांख, साथळ, मुख वगेरे, तेने विशे क्रीडा करवी. पोतानी स्त्री सिवाय बीजी स्त्रीने विशे मैथुननो त्याग करी अनुरागथी आलिंगनादि करनारने व्रतनी मलीनता थाय छे माटे ते अतिचाररूप छे. ४ 'परविवाहकरणे' पोताना तथा पोतानी संतति सिवाय बीजाना विवाह करवा. अहीं आ तात्पर्य छे-'स्वदारसंतोषीने बीजाना विवाह करवा वडे मैथुनमां प्रेरणा करवी अयोग्य छे, कारण के ते विशिष्टविरतिवाळो छे, एम नहि जाणनारने परोपकार करवानी तत्परता वडे आ अतिचार छे. ५ 'कामभोगतिव्वाभिलासे' कामभोगतीव्राभिलाष-शब्द अने रूप काम छे अने गन्ध, रस अने स्पर्श भोग छे, तेमां तीव्राभिलाष-उत्कट इच्छा. तात्पर्य आ छे-स्वदारसंतोषी विशिष्ट विरतिवाळो छे अने तेने तेटलुंज मैथुनसेवन करवुं

वारण के स्वपुरुष सिवाय बीजा परपुरुष छे, परविवाहकरणादि त्रण अतिचारो स्त्रीने स्वदारसंतोषीनी पेठे पोताना पुरुष सम्बन्धे होय छे, स्त्रीने प्रथम अतिचार ज्यारे पोतानो पति वारामा दिवसे सपत्नीए परिगृहीत-ग्रहण करेलो छे त्यारे पोतानी सपत्नीना वारानो भंग करी पतिनी साथे उपभोग करनारी स्त्रीने होय छे. बीजो अतिचार परपुरुष पासे जती स्त्रीने अतिक्रमादि वडे होय छे. जुओ योगशास्त्र प्रकाश. ३ श्लो. ९४ टीका.

१ अतिक्रम—जेनुं प्रत्याख्यान कर्युं छे तेने करवानो संकल्प करवो, व्यतिक्रम-ते करवाने पगलुं भरवुं, अतिचार-ते वस्तुने ग्रहण करवी, अने ४ अनाचार-तेनुं आचरण करवुं. ठाणांग सूत्रनी टीकामां आधाकर्मादिने आश्रयी अतिक्रमादि बताव्या छे—

"आहाकम्मामंतणपडिसुणमाणे अइक्कमो होइ। पयभेयादि वइक्कम गहिए तइयएरो गिलिए"॥

ज्यारे आधाकर्मनुं आमन्त्रण कबुल राखे त्यारे अतिक्रम, पगलुं भरे इत्यादिमा व्यतिक्रम, आधाकर्मने ग्रहण करे त्यारे अतिचार अने खाय त्यारे अनाचार थाय छे. जुओ स्थानांग पा. १५९

उचित छे के जेटला घडे वेदना उदयथी थयेली इच्छा शान्त थाय, परन्तु जे वाजिकरणादि घडे अथवा कामशास्त्रमां बतावेला प्रयोगो घडे अधिक इच्छा उत्पन्न करीने सुरत सुखने इच्छे छे ते परमार्थथी मैथुनविरमण व्रतने मलिन करे छे, कयो बुद्धिमान मनुष्य पामा-खरजना व्याधिने उत्पन्न करीने अग्निना आश्रयजन्य सुखने इच्छे ? माटे कामभोगतीव्राभिलाष अतिचाररूप छे.

इच्छापरिमाण व्रतना पांच अतिचारो—१ 'खेत्तवत्थुपमाणाइक्कमे' क्षेत्रवस्तुप्रमाणातिक्रम-प्रत्याख्यान समये ग्रहण करेला क्षेत्र अने वास्तु-घरना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. ते अनाभोगादि घडे तथा अतिक्रमादि घडे अतिचाररूप छे. अथवा एक क्षेत्रादिनुं परिमाण करनारे तेथी बीजा क्षेत्रनी वाड प्रमुख सीमा दूर करीने तेने पूर्वना क्षेत्रमां जोडी देवुं ते क्षेत्रप्रमाणातिक्रम अतिचार छे, कारण के तेने व्रतनी अपेक्षा छे. २ 'हिरण्णसुवण्णपमाणाइक्कमे'-हिरण्यसुवर्णप्रमाणातिक्रम-हिरण्य-रूपुं अने सुवर्णना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. अथवा राजा वगेरे पासेथी मळेल हिरण्यादिने अभिग्रह पूरो थाय त्यां सुधी अन्यने आपनार अने अभिग्रह पूरो थया पछी ग्रहण करीश' एवा अध्यवसायवाळाने आ अतिचार छे. ३ 'धणधन्नपमाणाइक्कमे' धनधान्यप्रमाणातिक्रम-धन-गणिम-जेनी गणना थई शके तेवुं जायफळ सोपारी वगेरे, धरिम-तोळी शकाय तेवुं केसर, गोळ वगेरे, मेय-माप करवा योग्य घी, दूध वगेरे अने परीक्ष्य-परीक्षा करवा योग्य रत्न वगेरेना भेदथी चार प्रकारनुं छे. धान्य-डांगर, जव, घउं वगेरे सत्तर प्रकारनुं छे. तेना परिमाणनुं उल्लंघन करवुं. आ अनाभोगादिथी अतिचार छे. अथवा बीजानी पासेथी प्राप्त थयेल धनादि अभिग्रह पूर्ण थाय त्यां सुधी बीजाना घेर बांधी राखनारने आ अतिचार छे. ४ 'दुपयचउप्पयपमाणाइक्कमे' द्विपदचतुष्पदप्रमाणातिक्रम—दास दासी वगेरे द्विपद अने गाय वगेरे चतुष्पदना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. आ अतिचार ते प्रमाणेज जाणवो. अथवा गाय, घोडी वगेरे चतुष्पद रखोने विशे अभिग्रहकाळनी मर्यादा पूरी थाय एटले जेम प्रमाणथी अधिक वत्सादि चतुष्पदनो उत्पत्ति थाय ते प्रमाणे सांढ वगेरेने नांखी गर्भ ग्रहण करावनारने अतिचार रूप छे. कारण के जन्मेला वत्स वगेरेनी अपेक्षाए प्रमाणनी मर्यादानो भंग थतो नथी अने गर्भनी अंदर रहेलानी अपेक्षाए प्रमाणनुं उल्लंघन थाय छे ५ 'कुवियपमाणाइक्कमे' कुप्यप्रमाणातिक्रम-कुप्य-स्थाल, कचोळां वगेरे घरनी सामग्री,

अथवा रूपा अने सोना सिवाय कांसुं, लोढुं, तांबु, सीसुं, जसत, माटीना वासण वगेरे जाणवुं. तेना प्रमाणनुं अनाभोगादिवडे उलंघन करवुं ते अतिचार रूप छे. आ अतिचार पण अनाभोगादि वडे जाणवो. अथवा 'पांच स्थालनो परिग्रह राखवो' इत्यादि अभिग्रहवाळा कोईने पण तेथी वधारे स्थाळ वगेरे प्राप्त थयुं होय त्यारे प्रत्येकमां बे इत्यादि मेळवीने पूर्वनी संख्या कायम राखवा वडे आ अतिचार रूप छे. ए संबन्धे कह्युं छे के "खेत्ताइ-हिरण्णाइ-धणाइ-दुपयाइकुप्पमाणकमे । जोयण-पयाण-बंधण-कारण-भावेहि नो कुजा" ॥ क्षेत्र अने गृह वगेरेमां पासेना क्षेत्र अने घर वगेरेने जोडी देवाथी, हिरण्यादिने 'अभिग्रह पूर्ण थया पछी ग्रहण करीश' एम कहीने बीजाने प्रदान-आपवाथी, धनादिने बन्धन-बांधी मूकवाथी, व्रत भंग थवाना भयथी 'अमुक काळ पछी ग्रहण करीश' एम कही तेना घेर स्थापन करवाथी, द्विपद-चतुष्पदादिने कारण-गर्भग्रहण कराववाथी, दासी, गाय वगेरेने अमुक काळनी अंदर प्रसव थाय तो अधिक संख्या थवाथी व्रतनो भंग थाय माटे केटला काळ पछी गर्भ ग्रहण कराववाथी, तथा कुप्य-वाचरचीलाने व्रत भंगना भयथी भावथी-बे बेने मेळवी एक करवाथी, अथवा अभिग्रहनी मर्यादानो काळ पूरो थया पछी हुं लईश माटे बीजाने न आपीश ए प्रकारे राखी मूकावयाना भाव-अभिप्रायथी तेना प्रमाणनो अतिक्रम थवामां अतिचार लागे छे.

दिशाव्रत अने शिक्षा व्रत पूर्वे कह्यां नथी तो पण ते त्यां कहेलां जाणवां, कारण के अन्यथा अहीं अतिचार कहेवानो अवकाश नथी. जो एम न होय तो पूर्वे कह्युं छे के 'दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जिस्सामि' बार प्रकार श्रावकधर्मने ग्रहण करीश. अथवा तो आगळ कहेशे के 'दुवालसविहं सावगधम्मं पडिवज्जइ' बार प्रकारना श्रावकधर्मने ग्रहण करे छे ते केम घटे? अथवा सामायिकादि शिक्षाव्रतो थोडा काळना होवाथी अने अमुक काळे करवाना होवाथी ते समये तेमणे प्रमाण कर्या नहोता अने दिग्व्रत पण ग्रहण कर्युं नहोतुं, कारण के तेनी विरतिनो अभाव छे. परन्तु उचित अवसरे ग्रहण करशे माटे भगवंतनो व्रतना अतिचारोने त्याग करवानो उपदेश युक्त छे. पूर्वे जे कह्युं छे के 'हुं बार प्रकारनो गृहस्थधर्म स्वीकारीश, अने जे आगळ कहेशे के 'बार प्रकारना श्रावकधर्मनो स्वीकार करे छे' ते योग्य समये करवानो स्वीकार करवाथी ते कथन अयुक्त नथी एम समजवुं. तेमां दिशाव्रतना पांच अतिचार आ प्रमाणे छे—

तयाणन्तरं च णं उवभोगपरिभोगे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-भोयणओ य कम्मओ य। तत्थ णं भोयणओ य समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तंजहा-सचित्ताहारे, सचित्तपडिबद्धाहारे,

त्यार पछी उपभोग-परिभोग व्रत बे प्रकारनुं कहेलुं छे. ते आ प्रमाणे-भोजनने आश्रयी अने कर्मने आश्रयी. तेमां भोजनने आश्रयी श्रमणोपासके पांच अतिचारो जाणवा, पण आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे-१ सचित्ताहार-सचेतन वनस्पति वगेरेनो

'उड्ढदिसिपमाणाइक्कमे' ऊर्ध्व दिशाना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. क्वचित् 'उड्ढदिसाइक्कमे' एवो पाठ छे. ए प्रमाणे २ अधोदिशा अने ३ तिर्यग् दिशाना प्रमाणनुं उल्लंघन करवुं. ए ऊर्ध्वदिशादिनो अतिक्रम-उल्लंघन अनाभोगादि अने अतिक्रमादिवडे अतिचार रूपे जाणवुं. ४ 'खेत्तवुड्ढि'त्ति. क्षेत्रवृद्धि-एक दिशामां सो योजन प्रमाण क्षेत्रनो अभिग्रह छे अने बीजी दिशामां दस योजन छे, तेथी जे दिशामां दस योजन छे ते दिशामां ज्यारे प्रयोजन होय त्यारे पोतानी बुद्धिथी सो योजनमांथी दस योजन लइने बीजा दस योजन तेमां नांखे छे, एटले एक दिशामां वधारे छे. तेने मतनी अपेक्षा होवाथी आ अतिचार छे. ५ 'सइअन्तरद्धा' स्मृत्यन्तर्द्धा-स्मृतिनो अन्तर्द्धा-नाश, दिशाना परिमाणनी स्मृति-याददास्त न होवी. 'में सो योजननी मर्यादानुं के पचास योजननी मर्यादानुं व्रत ग्रहण कर्युं छे' एवुं स्मरण न होय त्यारे सो योजननी मर्यादा होय तोपण पचास योजननी आगळ जनारने अतिचार जाणवो. (जो अनाभोगथी क्षेत्रपरिमाणनुं उल्लंघन कर्युं होय तो पाछुं फरवुं, जाण्या पछी न जवुं, बीजाने न मोकलवो. आज्ञा सिवाय कोइ गयो होय तो तेणे जे वस्तु मेळवी होय अथवा विसरण थवाथी स्वयं गयो होय अने जे वस्तु मळी होय तेनो त्याग करवो.)

उपभोग-परिभोग व्रत बे प्रकारनुं छे-'भोयणओ य कम्मओ य' भोजनने आश्रयी, एटले बाह्य अने अभ्यन्तर भोग्य वस्तुनी अपेक्षाए अने 'कर्मतः' क्रियाने-बाह्य अने अभ्यन्तर भोग्य वस्तुनी प्राप्तिनुं कारण जीवनवृत्ति-आजीविकाने आश्रयी. तेमां भोजनने आश्रयी पांच अतिचारो आ प्रमाणे छे—१ 'सचित्ताहारे' चित्त-चेतना सहित होय ते सचित्त-पृथिवीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकाय जीवना

अप्पउलिओसहिभक्खणया, दुप्पउलिओसहिभक्खणया, तुच्छोसहिभक्खणया। कम्मओ णं समणोवासएणं पण्णरस कम्मादाणाइं जाणियव्वाइं, न समायरियव्वाइं, तंजहा–इङ्गालकम्मे, वणकम्मे, माडीकम्मे,

आहार करवो, २ सचित्तप्रतिबद्धाहार–सचित्त वस्तुनी साथे लागेली अचित्त वस्तुनो आहार करवो, ३ अपक्वौषधिभक्षण–अपक्व–अग्निथी नहि पाकेली औषधि–वनस्पतिनुं भक्षण करवुं, ४ दुष्पक्वौषधिभक्षण–अर्ध पाकेली वनस्पतिनुं भक्षण करवुं, ५ तुच्छौषधिभक्षण–

सचेतन शरीरनो आहार करवो. जेणे सचित्ताहारनो त्याग कर्यो छे अथवा तेनुं परिमाण कर्युं छे तेने अनाभोगादि वडे त्याग करेला सचेतन आहारनुं भक्षण करतां अथवा परिमाणने आश्रयी अतिक्रमादिमां वर्ततां आ अतिचार रूप छे. २ 'सचित्तपडिबद्धाहारे' सचित्त वृक्षादिने विषे प्रतिबद्ध–लागेला अचित्त गुंदा वगेरेनो आहार करवो. अथवा सचित्त ठळीयानी साथे लागेला जे पक्व खजूर वगेरेने ठळीया सहित 'खजूर वगेरेनो अचित्त कटाह–गर खाइश अने बीजानो त्याग करीश' ए भावनाथी मुखमां नांखवो. ते व्रतसापेक्ष होवाथी तेने ए अतिचार छे. ३'अप्पउलिओसहिभक्खणया' अपक्व–अग्नि वडे जेनो संस्कार कर्यो नथी एवी 'ओषधी–डांगर वगेरे वनस्पतिनुं भक्षण करवुं. आ पण अतिचार अनाभोगादि वडे छे. (प्र०)—सचित्ताहारमां आ अतिचारनो समावेश थाय छे तो जुदो अतिचार शा माटे कह्यो? (उ०)—पूर्वोक्त पृथिव्यादि सामान्य सचित्तनी अपेक्षाए ओषधी हमेशां खावा योग्य होवाथी तेनुं प्राधान्य बताववा माटे छे. कारण के लोकव्यवहारमां सामान्यनुं ग्रहण करवामां आव्युं होय तो पण प्राधान्य बताववा माटे विशेषनुं जुदुं ग्रहण करवामां आवे छे. ४ 'दुप्पउलिओसहिभक्खणया' दुष्पक्व–अर्ध पक्व थयेला चोखा घउं वगेरे ओषधीनुं भक्षण करवुं. कारण के तेमां सचित्त अवयवनो संभव होवाथी तेने पक्वनी बुद्धि वडे भक्षण करनारने अतिचार लागे छे. ५ 'तुच्छोसहिभक्खणया

१ 'ओषध्य फलपाकान्ता.' जे वनस्पतिनो फळना पाकवाथी नाश थाय छे ते शालि, यव घउ वगेरे ओषधी जाणवी.

भाडीकम्मे, फोडीकम्मे, दन्तवाणिज्जे, लक्खवाणिज्जे, रसवाणिज्जे, विसवाणिज्जे, केसवाणिज्जे, जन्त-

अमार एवी मगफळी वगेरे वनस्पतिनुं भक्षण करवुं. कर्मने आश्रयी श्रावके पंदर कर्मादानो जाणवां, पण आचरवां नहि. ते आ प्रमाणे–१ अंगारकर्म–अंगार–कोलसा इंटो वगेरे करीने तेनो वेपार करवो, २ वनकर्म–वनस्पति कापीने तेनो वेपार करवो, ३ शकटकर्म–

[1]तुच्छ–असार एवी ओषधी–कोमळ मगनी शींग वगेरेनुं भक्षण करवुं. कारण के तेने खावामां घणी विराधना थाय छे अने तेनाथी स्वल्प तृप्ति थाय छे. माटे अचित्तभोजी विवेकी श्रावके अचित्त करीने पण खावा योग्य नथी. तेम करीने पण खावामां अतिचार लागे छे. कारण के ते व्रतसापेक्ष छे. आ पांच अतिचारो पण बीजा अतिचारोनुं उपलक्षण छे, कारण के मद्य, मांस, मध अने रात्रिभोजन वगेरेना व्रतवाळाने अनाभोग अने अतिक्रमादि वडे अनेक अतिचारो लागे छे. 'कम्मओ णं' इत्यादि. कर्मने आश्रयी 'हुं खर कर्मादिनो त्याग करुं छुं' एवा प्रकारनुं उपभोग व्रत छे. खर–कठोर–प्राणीना हिंसा करनार कर्म–भोगोपभोगनुं साधन द्रव्य उपार्जन करवानो व्यापार ते खरकर्म कहेवाय छे. तेमां श्रमणोपासके पंदर कर्मादानोनो त्याग करवो. १ 'इंगालकम्मे'त्ति अङ्गारकर्म–कोलसा करवा पूर्वक तेनो

[1] योगशास्त्रमां अपक्वौषधिभक्षण अने तुच्छौषधी भक्षणने बदले सन्मिश्र अने अभिषव ए बे अतिचारो कह्या छे. सन्मिश्र–सचित्त वडे मिश्र आहार, जेमके आदु, दाडम वगेरे वडे मिश्र पूरण वगेरे. आ पण अनाभोग अने अतिक्रमादि वडे अतिचार छे. अभिषव–अनेक द्रव्यना संधान–आथा वडे थयेल मद्य वगेरे, आ पण सावद्य आहारना त्यागीने अनाभोग अने अतिक्रमादि वडे अतिचाररूप छे. कोइ आचार्य अपक्व औषधिनाआहारने अतिचाररूपे कहे छे, अपक्व–अग्नि वगेरे वडे जेनो संस्कार थयो नथी ते, आनो पण प्रथम सचित्ताहार रूप अतिचारमां समावेश थाय छे. केटला एक तुच्छौषधिभक्षणने पण अतिचार कहे छे. तुच्छौषधी–मग वगेरेनी कोमळ शींगो वगेरे, जो ते सचित्त छे तो तेनो सचित्त आहारमां समावेश थाय छे, जो अग्निमां पकाववा वगेरे वडे अचित्त छे तो शो दोष छे? जुओ योगशास्त्र प्रकाश ३ श्लो० ९८.

पीलणकम्मे, निल्लंछणकम्मे, दवग्गिदावणया, सरदहतलावसोसणया, असईजणपोसणया ७। तयाणन्तरं च णं अणट्ठादण्डवेरमणस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा । तंजहा–

गाडां करवा, वेचवा अने चलाववा. ४ भाटककर्म–गाडां वगेरे वाहनो भाडे फेरववा, ५ स्फोट कर्म–भूमि खोदवा वगेरे द्वारा आजीविका करवी. ६ दन्तवाणिज्य–हाथीदांत वगेरेनो व्यापार करवो, ७ लाक्षावाणिज्य–लाख वगेरेनो वेपार करवो, ८ रसवाणिज्य–मदिरा वगेरेनो वेपार करवो. ९ केशवाणिज्य–दास, गाय, ऊंट हाथी वगेरे केशवाळा–प्राणीओनो वेपार करवो. १० विषवाणिज्य–विष–झेर अने शस्त्रादिनो वेपार करवो. ११ यन्त्रपीलनकर्म–तल शेरडी वगेरे पीलवा. १२ निर्लांछनकर्म–प्राणीओना कान वगेरे अवयवो छेदवा. १३ दवाग्निदान–वन वगेरेने अग्निथी सळगाववा, १४ सरोवर, द्रह, तळाव वगेरेनुं शोषण करवुं. १५ असतीपोषण–कुलटा

वेपार करवो. ए प्रमाणे बीजुं पण अग्निना समारंभ पूर्वक इंटो अने माटीना वासण वगेरे पकाववा रूप आजीविका करवी ते अङ्गारकर्म जाणवुं. कारण के एओनुं समान स्वरूप छे. अङ्गारकर्मनुं जेणे प्रत्याख्यान कर्युं छे ते अनाभोगादि वडे तेमां प्रवर्ततो होवाथी तेने आ अतिचार छे. ए प्रमाणे बधे विचार करवो. परन्तु २ वनकर्म–वनस्पतिने छेदवा पूर्वक तेने वेचवा वडे आजीविका करवी. ३ शकट कर्म–गाडाने घडवा, वेचवा अने चलाववारूप जाणवुं. ४ भाटककर्म–गाडा वगेरे वडे बीजाना पात्र वगेरेनुं भाडाथी लई जवुं. ५ स्फोटकर्म–कोदाळी हळ वगेरेथी भूमिने खेडवा द्वारा आजीविका करवी. ६ दन्तवाणिज्य–हाथीदांत, शङ्ख, पूतिकेश (   ) वगेरेने ते कर्म करनारा पासेथी खरीद करीने तेने वेचवा द्वारा आजीविका करवी. ७ लाक्षावाणिज्य ■ जेमां जीवोत्पत्ति थाय एवा बीजा द्रव्यनुं सूचक छे. एटले जीवोत्पत्तिना हेतुभूत लाख वगेरेनो वेपार करवो. ८ रसवाणिज्य–मदिरा वगेरेनो वेपार करवो. ९ विषवाणिज्य ए जीवहिंसाना कारणभूत शस्त्र वगेरेना वेपारनुं उपलक्षण–सूचक छे तेथी जीवहिंसा जेनुं कार्य छे एवा विष अने शस्त्रादिनो

कन्दप्पे, कुक्कुइए, मोहरिए, संजुत्ताहिगरणे, उवभोगपरिभोगाइरित्ते ८। तयाणन्तरं च णं सामाइयस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा। तंजहा–मणदुप्पणिहाणे, वयदुप्पणिहाणे, कायदुप्प-

दासी वगेरे तथा हिंसक प्राणीओनुं पोषण करवुं. त्यार बाद श्रमणोपासके अनर्थदंड विरमण व्रतना पांच अतिचारो जाणवा पण आचरवा नहि; ते आ प्रमाणे–१ कंदर्प–कामोत्तेजक वचनो, २ कौत्कुच्य–परिहास उत्पन्न करनार भांडचेष्टा, ३ मौखर्य–वाचालपणुं, असंबद्ध बोलवुं, ४ संयुक्ताधिकरण–अधिकरण–हिंसाना साधनो जोडी तैयार राखवा, ५ उपभोगपरिभोगातिरिक्त–उपभोग अने परिभोगनी वस्तुओ अधिक राखवी. त्यार बाद श्रमणोपासके सामायिक व्रतना पांच अतिचारो जाणवा पण तेनुं आचरण न करवुं. ते आ प्रमाणे–१ मनोदुष्प्रणिधान–मनमां दुष्ट चिन्तन करवुं. २ वचन दुष्प्रणिधान–दुष्ट वचननी प्रवृत्ति, ३ कायदुष्प्रणिधान–कायानी दुष्ट

वेपार करवो. १० केशवाणिज्य–केशवाळा दास, गाय, ऊंट, हाथी वगेरेनो वेपार करवो. ११ यन्त्रपीडनकर्म–यन्त्र वडे तल, शेरडी वगेरेने पीलवारूप कर्म करवुं १२ निर्लांछन कर्म–प्राणीओना अवयवोनो छेद करवो १३ दवाग्निदान–खेतर वगेरेने साफ करवा माटे दवाग्नि आपवो. १४ सरोहदतडागपरिशोषणता–सरोवर, ह्रद–द्रह अने तळाव वगेरेने सूकवी नांखवा तेमां सरोवर–स्वाभाविक बनेलुं होय ते, ह्रद–नदी वगेरेनो नीचाण प्रदेश, पाणीनो धरो, तडाग–तळाव, खोदवा वडे थयेलुं उपरना भागमां विस्तारवाळुं पाणीनुं स्थान, पशुओने घउं वगेरे वाववा माटे सूकवी नांखवा १५ असतीपोषणता कुलटा दासी वगेरेने ते द्वारा आजीविका चलाववा माटे पोषवा तथा बीजुं पण घातकी प्राणीनुं पोषण करवुं ते असतीपोषण जाणवु.

अनर्थदण्डविरमण व्रतना पांच अतिचार—१ कन्दर्प–काम, तेनुं कारणभूत विशिष्ट वचनप्रयोग पण कन्दर्प कहेवाय छे. रागनो अधिकताथी हास्यमिश्रित मोहने उद्दीपन करनार मश्करी करवी. आ प्रमादाचरित रूप अनर्थदंडविरमणव्रतनो अतिचार सहसाका-

णिहाणे, सामाइयस्स सइअकरणया, सामाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया ९। तयाणन्तरं च णं देसावगासियस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा जाणियव्वा न समायरियव्वा, तंजहा-आणवणप्पओगे, पेसवणप्पओगे, सद्दा-

प्रवृत्ति. ४ सामायिक करवानुं स्मरण न थवुं अने ५ अनवस्थित-अनियत सामायिकनुं करवुं. त्यार बाद श्रमणोपासके देशावकाशिक व्रतना पांच अतिचारो जाणवा पण आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे-१ आनयन प्रयोग-मर्यादित भूमिनी बहारथी कोइनी पासे मंगावबुं. २ प्रेष्यप्रयोग-पोताना प्रेष्य-नोकर वगेरेने मर्यादित क्षेत्रथी बहार मोकलवा. ३ शब्दानुपात-बीजाने जणाववा माटे खांसी

रादि वडे छे. २ 'कुक्कुइए' कौत्कुच्य-अनेक प्रकारनी मुख, नेत्र वगेरेना विकारपूर्वक हास्य उत्पन्न करनारी भांड वगेरेनी जेम चेष्टा करवी. उपर कह्या प्रमाणेज आ अतिचार छे. ४ 'मोहरिए' मौखर्य-धृष्टता,-वाचालपणुं, धृष्टतापूर्वक असत्य अने संबन्ध विनानुं बोलवुं. आ प्रमादव्रतनो अथवा पापकर्मोपदेश व्रतनो अनाभोगादि वडे अतिचार छे. ४ संजुत्ताहिगरणे' संयुक्त-कार्य करवामां समर्थ, अधिकरण-खांडणी, मुशल-सांबेलुं वगेरे राखवां, ते अतिचारनुं कारण होवाथी हिंस्रप्रदान व्रतनो आ अतिचार छे. जो के आ साक्षात् हिंसाना साधन शकट वगेरेने आपतो नथी, तो पण ते संयुक्त-तैयार होवाथी बीजा ते वडे माग्या सिवाय पण काम करे छे. जो ते साधनो संयुक्त-तैयार जोडेला न होय तो स्वयमेव तेओ कार्य करतां अटकी जाय छे. ५ 'उपभोगपरिभोगाइरित्ते' उपभोगपरिभोगातिरिक्त-उपभोग-परिभोगना उपयोगमां आवती जे वस्तुओ छे, ते स्नान प्रसंगे गरम पाणी, उद्वर्तन-सुगंधी चूर्ण, आमळा वगेरे अने भोजनना प्रसंगे अशन, पान वगेरे, तेमां अतिरिक्त-अधिकता, एटले पोताना तथा पोताना संबन्धीनुं काय थतां जे बाकी रहे ते उपभोगपरिभोगातिरिक्त कहेवाय छे. ते उपचारथी अतिचार छे. पोताना उपभोग करतां अधिक वस्तु वडे बीजाओना स्नान भोजनादि द्वारा अनर्थदण्ड थाय छे. आ प्रमादव्रतनोज अतिचार छे. एम गुणव्रतना अतिचारो कह्या.

तयाणन्तरं च णं पासहोववासस्स समणोवासएणं ... णुवाए, रूवाणुवाए, बहिया पोग्गलपक्खेवे १०। तयाणन्तरं च णं पासहोववासस्स ...

वगेरे शब्द संभळाववो. ४ रूपानुपात-बीजाने जणाववा पोताना शरीरनुं रूप देखाडवुं, बीजानी दृष्टिए पडवुं अने ५ बहिःपुद्गलप्रक्षेप-अन्यने जणाववा वहारना भागमां ढेफुं, कांकरो वगेरे पुद्गलनो प्रक्षेप करवो. त्यार पछी श्रमणोपासके पोषधोपवासना पांच अति-

हवे शिक्षाव्रतना अतिचारो थतिचारो कहे छे-जेनो वारंवार अभ्यास करवो ते शिक्षाव्रत. सामाइयस्स'त्ति सम-रागद्वेषरहित, जे सर्व प्राणीओने आत्मवत् जुए छे, तेने आय-निरुपम सुखना कारणभूत अने चिन्तामणि अने कल्प वृक्ष करता पण श्रेष्ठ एवा प्रतिक्षण अपूर्व अपूर्व ज्ञान, दर्शन अने चारित्र पर्यायनो लाभ थवो ते समाय, ते जेनुं प्रयोजन छे ते सामायिक-सावद्य योगना त्यागरूप अने निरवद्य योगना सेवनरूप जाणवुं. ते सामायिकना पांच अतिचार छे-१ 'मणदुप्पणिहाणे' 'मनःदुष्पणिधान-मननो दुष्ट प्रणिधान-

१ क्रोध, लोभ,द्रोह, अभिमान इर्ष्या वगेरे तथा घरना कामनो विचार ते मनोदुष्प्रणिधान, २ वर्णसंस्कारनो अभाव-सूत्रना स्पष्ट उच्चारनो अभाव, अर्थनो बोध नहि होवो अने चपलता ते वचनदुष्प्रणिधान अने ३ शरीरना हस्त पादादि अवयवोनी अनिश्चलता ते कायदुष्प्रणिधान. ए सबन्धे कह्युं छे के "नहि जोयेल अने नहि प्रमार्जेल स्थंडिल भूमिने विशे स्थाननो आश्रय करतो हिंसा नहि होवा छतां पण प्रमादवडे सामायिक रहित जाणवो. जेणे सामायिक कर्युं छे ते पूर्वे बुद्धिथी विचारीने सदा निरवद्य वचन बोले, अन्यथा सामायिक न थाय. जे श्रावक सामायिक करीने आर्तध्यानने वश थयेलो घर सबन्धी कार्यनी चिन्ता करे तेनुं सामायिक निरर्थक छे. ४ सामायिकनो अनादर-प्रतिनियत समये सामायिक न करवु, अथवा जेम तेम सामायिक करवुं, प्रबल प्रमादादि दोषथी कर्या पछी तुरत पारवु. ५ सामायिकनु स्मरण न थवु. के 'मारे सामायिक करवानु छे के करवानुं नथी, अथवा में सामायिक कर्युं छे के कर्युं नथी'. ज्यारे प्रबल प्रमादथी स्मरण न थाय त्यारे अतिचार लागे छे. कारण के मोक्षसाधक अनुष्ठाननु मूळ स्मरण छे.

(प्र०)—मनदुष्प्रणिधानादिने विशे सामायिकनु निरर्थकपणु जणाव्युं तेथी वास्तविक रीते तेनो अभाव कह्यो अने अतिचार तो मलिनता रूप छे तो सामायिकना अभावमां अतिचार केम होय ? माटे ते सामामायिकना भङ्ग रूप छे पण अतिचार नथी. (उ०) अनाभोगथी अतिचार होय छे.

यारा जाणियव्वा, न समायरियव्वा। तंजहा-अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियसिज्जासंथारे, अप्पमज्जियदुप्पमज्जिय-

चार जाणवा, पण आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे-१ अप्रत्युपेक्षितदुष्प्रत्युपेक्षितशय्यासंस्तारक-शय्या-वसति अने कंबलादि संथारानुं प्रतिलेखन-निरीक्षण न करवुं अथवा सारी रीते प्रतिलेखन न करवुं. २ अप्रमार्जितदुष्प्रमार्जितशय्यासंस्तारक-वसति अने संस्ता-

व्यापार, प्रवृत्ति. जेणे सामायिक कर्युं छे तेणे घरना कार्य संबन्धी सारा खोटानो विचार करवो, २ 'वयदुप्पणिहाणे' वचनदुष्प्रणिधान-जेणे सामायिक कर्युं छे तेणे निष्ठुर अने सावद्य वचन बोलवुं. ३ 'कायदुप्पणिहाणे' कायदुष्प्रणिधान-काय-शरीरनी दुष्ट प्रवृत्ति, जेणे सामायिक कर्युं छे तेणे नहि जोयेली अने नहि प्रमार्जेली भूमि वगेरेने विशे शरीरना हाथ पग वगेरे चपलपणे मूकवा. ४ 'सामाइयस्स सइ अकरणया' सामायिकनी स्मृति-'मारे आ समये सामायिक करवानुं छे' एवुं स्मरण प्रबळ प्रमाद वडे न करवुं. ५ 'अणवट्ठियस्स करणया' अल्प काळनुं अथवा अनियत सामायिकनुं करवुं. थोडो काळ सामायिक कर्या पछी तेनो त्याग करवो अथवा जेम तेम सामायिक करवुं ए भावार्थ छे. प्रथमना त्रण अतिचारो अनाभोगादि वडे अतिचार रूप छे अने पछीना बे अतिचारो प्रमादनी अधिकताथी अतिचार रूप छे.

'देसावगासियस्स'त्ति । देश-दिशाव्रतमां ग्रहण करेल दिशाना परिमाणनो एक देश, तेने विशे अवकाश-गमनादि चेष्टानुं स्थान ते देशावकाश, ते वडे निर्वृत्त-थयेलुं ते [1]'देशावकाशिक व्रत-पूर्वे ग्रहण करेल दिशाव्रतना संक्षेप करवा रूप अने उपलक्षणथी सर्व

१. दिशाव्रत विशेष एज देशावकाशिक व्रत छे. विशेषता आ छे के दिशाव्रत यावज्जीव, वरस के चार मासना परिमाणवाळुं होय छे अने देशावकाशिक व्रत दिवस पहोर के मुहूर्तादिना परिमाणवाळुं होय छे. तेना पांच अतिचारो छे—१ प्रेष्य प्रयोग-प्रेष्य-आदेश करवा योग्य पुत्रादिने प्रयोग-विवक्षित क्षेत्रनी बहार काम माटे मोकलवा. पोते स्वयं जाय तो व्रतनो भंग थाय माटे व्रत सापेक्ष होवाथी अतिचार छे. देशावकाशिक व्रत गमनागमनादिनी प्रवृत्ति वडे प्राणीनी हिंसा न थाय ए हेतुथी ग्रहण कराय छे, परन्तु स्वयं करे के बीजा पासे करावे तेमां फळनी दृष्टिथी विशेषता नथी, उलटुं स्वयं जाय तो ईर्यासमितिनी विशुद्धिथी गुण थाय,

सिज्जासंथारे, अप्पडिलेहियदुप्पडिलेहियउच्चारपासवणभूमी, अप्पमज्जियदुप्पमज्जियउच्चारपासवणभूमी,

रकनी प्रमार्जना न करवी अथवा बरोबर प्रमार्जना न करवी. ३ अप्रत्युपेक्षितदुष्प्रत्युपेक्षितउच्चारप्रस्रवणभूमि-उच्चार-स्थंडिलनी जग्या अने प्रस्रवणभूमि-पेशाब करवानी जग्यानुं प्रतिलेखन-निरीक्षण न करवुं अथवा बरोबर निरीक्षण न करवुं, ४ अप्रमार्जित-

व्रतोना संक्षेप रूप जाणवुं. तेना पांच अतिचार छे-१ 'आणवणप्पओगे' आनयनप्रयोग-अमुक मर्यादावाळा भूमिना भागमां जवा आववानो अभिग्रह कर्यो होय त्यारे तेथी आगळना भागमां पोते न जइ शके माटे बीजाने संदेश आपवा इत्यादि वडे प्रेरणा करे के 'तारे आ लाववुं' ते आनयनप्रयोग. २ 'पेसवणप्पओगे' बळात्कार वडे प्रेरणा करवा योग्य ते प्रेष्य-नोकर वगेरे, तेने प्रयोग-बहार मोकलवो, अभिग्रह करेला गगनादि योग्य भूमिभागनुं उल्लंघन थवाना भयथी 'तारे अवश्य त्यां जइने मारी गाय वगेरेने लाववी अथवा आ काम तारे करवुं ते प्रेष्यप्रयोग. ३ 'सद्दाणुवाए' शब्दानुपात-पोताना घरनी वाड के वंडी वगेरेथी मर्यादित भूमिना भागनो अभिग्रह कर्यो होय अने तेथी बहारनुं कोइ कार्य पडे त्यारे पोते नहि जइ शकतो होवाथी वाड के वंडीनी पासे रहेलाने बुद्धिपूर्वक खांसी

परन्तु बीजो अनिपुण होवाथी ईर्यासमितिना अभावमां दोष थाय छे माटे अतिचार छे. २ आनयन प्रयोग-आनयन-विवक्षित क्षेत्रनी बहार रहेल सचेतनादि द्रव्यने विवक्षित क्षेत्रमां बीजा द्वारा मगाववुं, स्वयं जाय तो व्रतभंग थाय अने बीजा पासे मंगावे तो व्रतभंग नहि थाय ए बुद्धिथी ज्यारे प्रेष्य द्वारा सचेतनादि द्रव्यने मगावे छे त्यारे आ अतिचार थाय छे ३ पुद्गलप्रक्षेप-पुद्गलो-बादर परिणामने प्राप्त थयेला परमाणुनो समुदाय ढेफु, ईंट, लाकडुं, सळी वगेरे, तेने प्रक्षेप-फेंकवु. विशिष्ट देशनो अभिग्रह होवाथी कार्यनो अर्थी आगळ जइ न शके माटे ज्यारे बीजाने जणाववा ढेफुं वगेरे फेंके अने तेथी ते तेनी पासे आवे तेथी पोते जीवहिंसा करतो नथी पण बीजाने प्रेरे छे माटे अतिचार छे. ४ शब्दानुपात-पोताना घरनी वाड के कील्ला वडे मर्यादित भूमीप्रदेशना अभिग्रहवाळो काम पडे त्यारे पोते जइ शकतो न होवाथी वंडी के किल्ला वगेरेनी पासे ऊभो रही खांसी वगेरेनो शब्द करे छे अने जेने बोलाववानो छे तेने संभळावे छे, ते सांभळीने ते तेनी पासे आवे छे, माटे शब्दानुपात अतिचार छे. ५ रूपानुपात-कार्यनो अर्थी शब्दनो उच्चार कर्या सिवाय पोताना शरीर संबन्धी रूप जेने बोलाववानो छे तेनी दृष्टिए पाडे छे अने तेने

पोसहोववासस्स सम्मं अणणुपालणया ११। तयाणन्तरं च णं अहासंविभागस्स समणोवासएणं पञ्च अइयारा

दुष्प्रमार्जितउच्चारप्रस्रवणभूमि-स्थंडिलभूमि अने पेशाब करवानी भूमिनी प्रमार्जना न करवी अथवा बरोबर प्रमार्जना न करवी. ५ पोषधोपवासनुं बरोबर पालन न करवुं. त्यार पछी श्रमणोपासके यथासंविभाग-अतिथिसंविभाग व्रतना पांच अतिचारो जाणवा, पण

वगेरेना शब्द वडे जणावनारने शब्दानुपात नामे अतिचार लागे छे शब्दनुं अनुपातन-तेवा प्रकारनुं उच्चारण करवुं के जेथी ते शब्द पोताना कानमां प्रवेश करे. ४ 'रूवाणुवाए' रूपानुपात-अभिग्रह करेला भूमिप्रदेशनी बहार कोइ काम पडे त्यारे शब्दनुं उच्चारण कर्या सिवाय ज बीजाने पोतानी पासे लाववा माटे पोताना शरीरनुं रूप बताववुं ते रूपानुपात. ५ 'बहिया पुग्गलपक्खेवे' बहिः पुद्गल-प्रक्षेप-अभिग्रह करेल भूमिप्रदेशनी बहार प्रयोजन पडे त्यारे बीजाने जणाववा माटे तेना उपर पुद्गल-ढेफुं वगेरे फेंकवुं. अहीं प्रथमना बे अतिचार अनाभोगादि वडे होय छे अने पछीना त्रण अतिचार व्रतसापेक्ष होवाथी होय छे.

'पोसहोववासस्स'त्ति. पोषध शब्द अष्टमी वगेरे पर्वने विशे रूढ छे, तेथी अष्टम्यादि पर्वने विशे उपवास करवो ते पोषधोपवास

नांखवाथी ते तेनी पासे आवे छे तात्पर्य आ छे के मर्यादित क्षेत्रनी बहार रहेला कोइ मनुष्यने व्रतभंग थवाना भयथी नहि बोलावतो पोताना शब्द संभळाववाना के रूप देखाडवाना बहानाथी तेने बोलावे छे माटे व्रतसापेक्ष होवाथी शब्दानुपात अने रूपानुपात ए बन्ने अतिचार छे. अहीं प्रथमना बे अतिचार मन्द बुद्धि होवाथी के सहसाकारादि वडे अने छेल्ला त्रण अतिचार माया कपट वडे थाय छे अहीं दिशाव्रतना संक्षेप करवानी पेठे बीजा व्रतोनो संक्षेप करवो ते देशावकाशिक व्रत छे एम वृद्ध आचार्यो कहे छे. (प्र०)—अतिचारो दिशाव्रतना कहेवामां आव्या छे, परन्तु बीजा व्रतना संक्षेप करवाना अतिचारो कह्या नथी, तो बीजा व्रतोनो संक्षेप करवो ते देशावकाशिक व्रत केम कहेवाय? (उ०)—बीजा प्राणातिपातादि विरमण व्रतना संक्षेप करवामां वध बन्धादि अतिचारो होय अने दिशाव्रतने संक्षेप करवामां क्षेत्रनो संक्षेप करेलो होवाथी प्रेष्यप्रयोगादि अतिचारो होय, माटे अहीं भिन्न भिन्न अतिचारोनो संभव होवाथी दिशाव्रतनो संक्षेप करवो एज मात्र देशावकाशिक व्रत थयुं छे. जुओ योग० प्र० ३ श्लो. ११७

जाणियव्वा न समायरियव्वा। तंजहा–सचित्तनिक्खेवणया, सचित्तपिहणया, कालाइक्कमे, परववदेसे, मच्छ-

आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे–१ सचित्तनिक्षेप–साधुने आपवा योग्य आहारादिनुं सचित्त–सचेतन वनस्पति वगेरे उपर मूकवुं. २ सचित्तपिधान–सचित्त वस्तु वडे पिधान–ढांकवुं. ३ कालातिक्रम–साधुने योग्य भिक्षाना समयनुं उल्लंघन करवुं. ४ परव्यपदेश–'आ

कहेवाय छे. ते आहारादि विषयना भेदथी चार प्रकारनो छे. ते व्रतना पांच अतिचार छे–१ 'अप्पडिलेहिय' इत्यादि. अप्रतिलेखित–जीवरक्षा माटे चक्षु वडे नहि जोयेल, दुष्प्रतिलेखित–मननी अस्थिर वृत्ति होवाथी सारी रीते नहि जोयेल शय्या–वसति अने संस्तारक–डाभ, कांबल पाट वगेरे रूप संथारो ते अप्रतिलेखितदुष्प्रतिलेखितशय्यासंस्तारक. तेनो उपभोग करवो ते अतिचारनुं कारण होवाथी आ अतिचार कह्यो छे. ए प्रमाणे अप्रमार्जित–दुष्प्रमार्जितशय्यासंस्तारक–नहि प्रमार्जेल अथवा सारी रीते नहि प्रमार्जेल शय्यासंस्तारक अतिचार जाणवो. परन्तु अहीं प्रमार्जन वस्त्रना छेडा वगेरेथी जाणवुं. ए प्रमाणे अप्रतिलेखित–दुष्प्रतिलेखितउच्चार-प्रस्रवणभूमि–स्थंडिल अने पेसाब करवानी भूमि न जोवी अथवा बरोबर न जोवी. अहीं उच्चार–विष्टा अने प्रस्रवण–पेसाब जाणवो. स्थंडिल भूमि अने पेसाब करवानी जग्यानुं प्रमार्जन न करवुं अथवा बरोबर प्रमार्जन न करवुं. ए चारे अतिचारो प्रमाद वडे जाणवा. ५ 'पोसहोववासस्स सम्ममणुपालणया' पोषधोपवासनुं बरोबर पालन न करवुं. जेणे पोषधोपवास करेलो छे तेणे अस्थिर चित्त वडे आहार, शरीरसत्कार, अब्रह्मचर्य अने व्यापारनी इच्छा करवाथी पोषधनुं यथार्थपणे पालन न करवुं. आ भावथी व्रतनो बाध थवाथी अतिचार छे.

'अहासंविभागस्स' यथा सिद्ध–स्वार्थने माटे करेला अशन पान वगेरेने 'सं' संगतपणे–पश्चात्कर्म वगेरे दोषनो त्याग करीने विभाग–साधुने दान आपवुं ते यथासंविभाग कहेवाय छे. तेना पांच अतिचारो छे—१ 'सच्चित्तनिक्खेवणया' इत्यादि. सचित्त डांगर वगेरे उपर नहि देवानी बुद्धिथी कपट वडे अन्न वगेरेने मूकवुं ते सच्चित्तनिक्षेपण. २ ए प्रमाणे अन्नादिने सचित्त फळ

रिया १२। तयाणन्तरं च णं अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाराहणाए पंच अइयारा जाणियव्वा, न

वस्तु बीजानी छे' एम साधु समक्ष कहेवुं. ५ मत्सरिता–मात्सर्यपूर्वक दान आपवुं. त्यार बाद अपश्चिम–सौथी छेल्ली मारणान्तिक संलेखनानी आराधनाना पांच अतिचारो जाणवा पण आचरवा नहि. ते आ प्रमाणे–१ इहलोकाशंसाप्रयोग–इहलोक–आ मनुष्य लोकमां

वगेरे घडे पिधान-ढांकवुं ते सचित्तपिधान, ३ कालातिक्रम–साधुना भोजनना समयनुं अतिक्रम–उल्लंघन करवुं. अहीं आ तात्पर्य छे–समय न होय अथवा अधिक समय जाणीने साधुओ नहि ग्रहण करे अने जाणशे के 'आ दाता छे' एवा विचारथी दान आपवा तैयार थवुं ते अतिचार छे. ४ परव्यपदेश–'आ बीजानुं छे, माटे साधुओने न आपी शकाय' साधुओ जाणे के जो आनुं अन्न वगेरे होय तो केम अमने न आपे एम साधुओने विश्वास पमाडवा साधुसमक्ष कहेवुं. अथवा 'आ दानथी मारी माता वगेरेने पुण्य थाओ' एम कहेवुं. '५ मत्सरिता–बीजाए आ आप्युं छे, तो हुं शुं एथी हीन अथवा कृपण छुं? माटे हुं पण आपीश' ए प्रमाणे दान आपनारनो विचार ते मात्सर्य. आ अतिचारो छे, पण व्रतभङ्ग नथी. कारण के ते आपवा माटे तैयार छे, पण दानना परिणाम दूषित छे. व्रतभङ्गनुं स्वरूप तो आ प्रमाणे कह्युं छे–"दाणन्तरायदोसा न देइ दिज्जंतयं च वारेइ। दिण्णे वा परितप्पइ इति किवणत्ता भवे भङ्गो॥" दानान्तरायना दोषथी न आपे अने आपनारने दाननो निषेध करे, कोइए आप्युं होय तो परिताप पामे एम कृपणपणाथी व्रतनो भङ्ग थाय छे. आवश्यकटीकामां तो व्रतभङ्ग अने अतिचारनी विशेषता अमे जाणी नथी, परन्तु अहीं व्रतभङ्गथी तेने जुदा करतां अमे अतिचारोनी व्याख्या करी छे. कारण के संप्रदायथी नवपदादिने विशे ते प्रमाणे जणाय छे.

पृ० ३८ नुं अनुसंधान,

जाहिसओ १ जइभेओ २ जह जायइ ३ जहेव एत्थ दोस ४ गुणा ५ । जयणा ६ जह अइयारा ७ भंगो ८ तह भावणा ९ नेया ॥

आ आवश्यक चूर्णिनी पूर्वान्तर्गतगाथामां नव-द्वारोनुं प्रतिपादन छे अने ते नवद्वारो वडे मिथ्यात्व, सम्यक्त्व, बार-व्रत अने संलेखनानुं निरूपण करेलुं छे. तेमां 'यादृशं' जेवा स्वरूपवाळुं मिथ्यात्वादि छे तेनुं प्रतिपादन करवुं ते प्रथम द्वार छे. 'यतिभेदं' ते मिथ्यादर्शनादिना जेटला भेदो छे तेनुं निरूपण करवुं ते बीजुं द्वार. 'यथा जायते' जे प्रकारे मिथ्यादर्शन अने सम्यग्दर्शनादिनी उत्पत्ति थाय ते प्रकारे तेनुं प्रतिपादन करवुं ते त्रीजुं द्वार. 'यथैव अत्र दोषाः' जे प्रकारे सम्यग्दर्शनादि नहि ग्रहण करवाथी जे दोषो थाय तेनुं निरूपण करवुं ते चोथुं द्वार. 'गुणाः' अणुव्रतादि ग्रहण करवाथी जे गुणो थाय तेनुं प्रतिपादन करवुं ते पांचमुं द्वार. 'यतना' अणुव्रतादिमां दोषना गौरव अने लाघवना विचारपूर्वक व्रतरक्षणनो प्रयत्न ते छट्ठुं यतना द्वार. 'यथा अतिचाराः' सम्यक्त्व अने अणुव्रतादिना दोषनो विचार करवो ते सातमुं अतिचार द्वार. 'भंगः' सम्यक्त्वादिनुं सर्वथा खंडन संबन्धे निरूपण करवुं ते आठमुं भंग द्वार. 'तथा भावना' पोतानाथी अधिक गुणवाळानी गुणना बहुमान रूप दरेक अणुव्रतनी भावनानुं प्रतिपादन करवु ते नवमुं द्वार.

आ आवश्यकचूर्णिनी गाथामां अतिचार अने भंग जुदा जणावेला होवाथी अने अतिचारशब्द व्रतना मर्थ भगमां प्रसिद्ध

१ प्रथम यादृश द्वारमां मिथ्यात्वना स्वरूपनुं प्रतिपादन करवुं. जेमके देव, गुरु अने धर्म तथा जीवादि तत्त्व संबन्धे यथार्थ श्रद्धान ते सम्यक्त्व अने तेथी विपरीत मिथ्यात्व. बीजा भेद द्वारमां मिथ्यात्वना आभिग्रहिकादि पांच भेदोनुं वर्णन करवुं. त्रीजा द्वारमां मिथ्यात्वनी उत्पत्ति कइ रीते थाय छे ते बताववुं. जेमके जमालिनी पेठे मतिभेद थवाथी, पूर्वग्रहथी, मिथ्यादृष्टिना संसर्ग थकी, अने रोहगुप्तनी पेठे अभिनिवेश–कदाग्रहथी मिथ्यात्वनी उत्पत्ति थाय छे. अथवा साधुओना दर्शन–श्रवण सिवाय पण मिथ्यात्वनी उत्पत्ति थाय छे. चोथा दोषद्वारमां मिथ्यात्वना दोषथी जीव नारकादि गतिमां भ्रमन करे छे. पांचमां गुण द्वारमां मिथ्यात्वना अनभिनिवेश–कदाग्रहना अभावरूप गुणथी जीव सम्यग्दर्शन प्राप्त करे छे. छट्ठा यतना द्वारने विषे दोषना गौरव अने लाघवनो विचार करी अंबड परिव्राजकना शिष्योए व्रतभंगना

भयथी अनशन कर्युं. जो केआ द्वार सीधी रीते मिथ्यात्वने लागु पडतुं नथी पण सम्यक्त्व अने व्रतादिने लागु पडे छे माटे सामान्य रूपे कह्यु छे. आठमा अतिचार द्वारमां मिथ्यात्वना अतिचार होता नथी पण ते द्वारा शंकितादिवडे अतिचार लागे छे तेनु वर्णन करातु होय छे. आठमा भंगद्वारमा शिवराजर्षिने छठ्ठ अठ्ठमना तप वडे आतापना लेता उपशमादि गुण वडे विभंगज्ञाननी उत्पत्ति थइ अने सम्यग्भावना वडे मिथ्यात्वना भग वडे अवधिज्ञान उत्पन्न थयु भावना द्वारमा अनित्यत्वादि भावना भाववी. जेमके तामलि श्रेष्ठीए ऋद्धि सबन्धे अनित्यता अने अनशन समये शरीरनी अनित्यतानो विचार कर्यो हतो. मिथ्यादृष्टिमे पण 'प्राणोथी धर्म श्रेष्ठ छे' इत्यादि धर्म एक बंधुरूप छे एवी भावना होय छे. ए प्रमाणे सम्यक्त्व, बार व्रत अने मलेषणाने विशे नव नव द्वारोनो विचार करवानो छे,

समायरियव्वा । तंजहा-इहलोगासंसप्पओगे, परलोगासंसप्पओगे, जीवियासंसप्पओगे, मरणासंसप्पओगे,

'हुं राजा थाउं' वगेरे इच्छा करवी, २ परलोकाशंसाप्रयोग 'हुं देव थाउं' एवा प्रकारे परलोकनी इच्छा करवी. ३ जीविताशंसा-

होवाथी जे अहीं अतिचार कह्या छे ते व्रतना सर्वथा भंगरूप छे एम शंका न करवो. जे अहीं दरेक व्रतना पांच पांच अतिचार कह्या छे ते बीजा अतिचारोना सूचक छे, परन्तु तेटलाज छे एवुं अवधारण-निश्चित नथी. ए संबन्धे पूज्य जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कहे छे-"पंच पंचाइयारा उ सुत्तंमि जे पदंसिया । ते नावहारणट्ठाए किंतु ते उवलक्खणं" ॥ सूत्रमां जे पांच पांच अतिचार बताव्या छे ते तेटलाज छे एवो नियम नथी, परन्तु बीजा अतिचारोनुं उपलक्षण छे. अहीं आ भावार्थ छे-जे व्रतने विशे अनाभोगादि वडे, अतिक्रमादि वण पद वडे के पोतानी बुद्धिकल्पनाथी व्रतना विषयनो त्याग करतां प्रवृत्ति थाय ते अतिचार अने तेथी विपरीतपणामां भंग जाणवो. ए प्रमाणे संकीर्ण-एकमेक थयेला-उभयार्थक अतिचार पदनो अर्थ समजवो.

(प्र०)—सर्वविरतिमां अतिचार संभवे छे अने देशविरतिमां तो व्रतनो भंग ज थाय छे. ए संबन्धे कह्युं छे के-"सव्वेवि य अइयारा संजलणाणं तु उदयओ हुंति । मूलछेज्जं पुण होइ बारसण्हं कसायाणं" ॥ बधा अतिचारो संज्वलन कषायना उदयथी होय छे, अने बार कषायना उदयथी तो व्रतनो मूळथी छेद-भंग थाय छे.

(उ०)—आ गाथा सर्व विरतिने विशे ज अतिचार अने भंग जणाववा माटे छे, परन्तु देशविरतिनो भंग बताववा माटे नथी. कारण के तेनी वृत्तिमां तेवा प्रकारनी व्याख्या करी छे. संज्वलनना उदयविशेषथी सर्वविरतिविशेषना अतिचारो होय छे, पण मूळथी छेद-भंग थतो नथी. प्रत्याख्यानावरणादिना उदयमां पाछळना क्रमथी सर्व विरति वगेरेनो मूळथी छेद थाय छे' एवी व्याख्या करवामां आवे तो पण देशविरति वगेरेमां अतिचारनो अभाव सिद्ध थतो नथी. कारण के जेम संयत-साधुने चोथा संज्वलनना उदयथी यथाख्यात चारित्रनो नाश थाय छे अने अन्य चारित्र अने सम्यक्त्व सातिचार अने उदयविशेषथी निरतिचार होय छे. बीजा कषायना

कामभोगासंसप्पओगे १३।

प्रयोग–'हुं घणा काळ सुधी जीवुं तो सारुं' एवी इच्छा करवी. ४ मरणाशंसाप्रयोग–'हुं शीघ्र मरण पामुं तो ठीक' ए प्रमाणे मरणनी इच्छा करवी. ५ कामभोगाशंसाप्रयोग–कामभोगनी इच्छा करवी.

उदयमां देशविरतिनो नाश थाय छे, पण सम्यक्त्व सातिचार के निरतिचार बन्ने प्रकारनुं होय छे. प्रथम अनन्तानुबन्धीना उदयमां सम्यक्त्वनो नाश थाय छे. ए प्रमाणे ज छे, जो एम न होय तो देशतः भंगरूप सम्यक्त्वना अतिचारो होय त्यारे प्रायश्चितरूपे तपज कहेलुं छे अने सर्व भंगरूप होय तो मूळ प्रायश्चित कहेलुं छे ते केम घटे? (प्र०)—अनन्तानुबन्धी वगेरे बार कषायो सर्वघाती छे अने संज्वलन कषाय देशघाती छे, तेथी सर्वघातीना उदये मूळथी छेद थाय अने देशघाती संज्वलनना उदयमां अतिचारो होय छे, माटे बार कषायना उदयमां सर्वथा भंग थवो जोइए? (उ०)—सत्य छे, परन्तु जे बार कषायोनुं सर्वघातीपणुं छे ते सर्वविरतिनी अपेक्षाए ज शतकचूर्णिकारे कह्युं छे, परन्तु सम्यक्त्वादिनी अपेक्षाए नथी. ते प्रमाणे तेमनुं वाक्य छे–'भगवप्पणीयं पंचमहव्वयमइय अट्ठारससीलंगसहस्सकलियं चारित्तं घायन्ति त्ति सव्वघाइणो'त्ति–भगवंते कहेल पांच महाव्रतमय अने अढार हजार शीलांग वडे युक्त चारित्रनो घात करे छे माटे सर्वघाती कहेवाय छे. वळी 'जारिसओ' इत्यादि गाथाना सामर्थ्यथी अतिचार अने भंग देशविरति अने सम्यक्त्वना जाणवा.

'अपच्छिम' इत्यादि. जेनाथी पश्चिम–पछी बीजुं नथी ते अपश्चिम–सौथी छेल्ली, मरण–प्राणनो त्याग करवो, ते रूप अन्त ते मरणान्त, ते समये थयेली ते मारणान्तिकी, संलिख्यते अनया–जे वडे शरीर अने कषायादि कृश कराय ते संलेखना-तपविशेष, तेनी

१ श्रावक आवश्यक योग–संयम व्यापारनुं पालन करवाने अशक्त होय त्यारे अथवा मृत्युसमय प्राप्त थयो होय त्यारे संलेखना करे छे. जे वडे शरीर अने कषायादि कृश कराय ते संलेखना. तेमां शरीरसंलेखना–अनुक्रमे भोजननो त्याग करवो अने कषायसंलेखना–क्रोधादि कषायनो त्याग करवो, तेमां शरीरसंलेखना

जोषणा-सेवना, तेनुं आराधन, एटले सौथी छेल्ली मरणान्तसमये शरीर अने कषायादिने कृश करनार तपविशेषनी आराधना करवी अर्थात् मरण समये आहारपाणी लीधा सिवाय अखंडितपणे काळधर्मने प्राप्त थवुं ते अपश्चिम-मारणान्तिक-संलेखना-जोषणाराधना. तेना पांच अतिचार छे—इहलोगेत्यादि. १ इहलोग-मनुष्यलोक, तेने विषे आशंसा-अभिलाष, तेनो प्रयोग-प्रवृत्ति, व्यापार ते इहलोकाशंसाप्रयोग. 'हुं शेठ थाउं, अथवा बीजा जन्ममां प्रधान थाउं' एवी इच्छा करवी. २ ए प्रमाणे परलोकाशंसाप्रयोग-'हुं देव थाउं' इत्यादि इच्छा करवी. ३ जीविताशंसाप्रयोग-जीवित-प्राण धारण करवा, तेनो आशंसा-इच्छानो प्रयोग-व्यापार. 'जो हुं घणा काळ सुधी जीवुं तो सारुं', आ संलेखना करनार वस्त्र, माला, पुस्तकनुं वांचवुं वगेरे सत्कार थतो जोइने घणा परिवारने जोवाथी के लोकनी प्रशंसा सांभळवाथी एम विचारे के 'जीवित ज श्रेष्ठ छे,' कारण के में अनशन कर्युं छे तो पण मारा उद्देशथी आवा प्रकारनो अभ्युदय

करावुं कारण [illegible] छे-जो शरीरने आहारना त्याग वडे कृश न कर्युं होय एकदम क्षिप्र थयेली धातुओ वडे प्राणीओने मरणसमये आर्तध्यान थाय छे. तेनी [illegible] सामाचारी छे–श्रावक सर्व श्रावकधर्मना उद्यापनने माटे होयनी हुं तेम अन्ते संयमने अंगीकार करे, तेने साधुधर्मना अवशेष रूप संलेखना छे. ए संबन्धे कयुं छे के "संलेखना अंते अवश्य होती नथी, कारण के कोइ प्रव्रज्या ग्रहण करे, तेथी जे संयमने अंगीकार करे ते संयम ग्रहण कर्या पछी मरणसमये संलेखना करीने मरण पामे. जे संयमने अंगीकार न करे ते आनन्द श्रावकनी पेठे संलेखना करे. तेमां तीर्थंकरोना जन्म, दीक्षा, ज्ञान अने निर्वाणना स्थाने, तेना अभावमां घरे, उपाश्रये, अरण्यमां, शत्रुंजयादि तीर्थमां, त्यां पण भूमि जोईने प्रमार्जीने जन्तुरहित स्थानमां चारे प्रकारना आहारनो त्याग करी पंच परमेष्ठिना नमस्कारना ध्यानमां तत्पर अतिचारना त्यागवडे ज्ञानादिनी आराधना करीने अरिहंतादि चार शरण अंगीकार करे. तथा आहारनो त्याग करवामां पांच प्रकारना अतिचारनो त्याग करे–१ आ लोकमां धन, पूजा, कीर्ति, वगेरेनी इच्छा करवी, २ परलोकमां स्वर्गादिनी इच्छा करवी, पूजा सत्कार वगेरे जोवाथी, घणा परिवारने अवलोकन करवाथी अने सर्वलोकनी श्लाघा सांभळवाथी एम माने के जीवितज श्रेष्ठ छे एम जीवितनी इच्छा करवी. ४ कोई पूजा वगेरे न करे तो जल्दी मरुं तो ठीक एम मरणनी इच्छा करवी तथा ५ निदान–आवा दुष्कर तपथी बीजा जन्ममां चक्रवर्ती थाउं इत्यादि इच्छा करवी. ए अतिचारोनो त्याग करी समाधिरूपी अमृतथी सींचायेलो, परिषह अने उपसर्गना भयथी रहित जिनने विषे भक्तिवाळो आनन्द श्रावकनी पेठे मरणने [illegible] थाय. जुओ योग. प्रका. ३ श्लो० १४९.

७. तए णं से आणन्दे गाहावई समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं सावयधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'नो खलु मे भन्ते ! कप्पइ अज्जप्पभिइं अन्नउत्थिए वा अन्नउत्थियदेवयाणि वा अन्नउत्थियपरिग्गहियाणि अरिहन्तचेइयाणि वा वन्दित्तए वा नमंसित्तए वा, पुव्विं अणालत्तेणं आलवित्तए वा संलवित्तए वा,

७. त्यार बाद ते आनन्द गृहपति श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षा व्रत रूप बार प्रकारना श्रावक धर्मनो स्वीकार करे छे. स्वीकारीने श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करे छे, वंदन अने नमस्कार करी तेणे ए प्रमाणे कह्युं-'हे भगवन् ! आजथी आरंभी मारे अन्यतीर्थिकोने, अन्य तीर्थिकोना देवने, अन्यतीर्थिकोए ग्रहण करेला अरिहंतना चैत्योने वंदन अने नमस्कार करवो तथा पूर्वे तेओ न बोल्या होय तो तेनी साथे आलाप-एक वार बोलवुं अने संलाप-वातचीत करवी तथा तेओने अशन, पान, खादिम अने स्वादिम (भक्तिपूर्वक)आपवुं, वारंवार आपवुं ते राजाभियोग-राजानी अधीनता, गणा-

मनतें छे. ४ मरणाशंसाप्रयोग-आवा प्रकारनो सत्कार न थतो होय तो आवो विचार करे के 'जो हुं जल्दी मरुं तो सारुं' ए प्रमाणे मरणनी इच्छा करवी. ५ कामभोगाशंसाप्रयोग-'जो मने मनुष्य संबन्धी के देव संबन्धी कामभोगो प्राप्त थाय तो सारुं' ए प्रमाणे कामभोगनी इच्छा करवी.

७. त्यार पछी आनन्द श्रावके भगवंत महावीरनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत रूप बार व्रतनो स्वीकार करी, भगवंत महावीरने वंदन करी आ प्रमाणे कह्युं-'नो खलु' इत्यादि हे भगवन् ! 'अद्यप्रभृति' आजथी-सम्यक्त्वना अंगीकार कर्यांना दिवसथी मांडी निरतिचार सम्यक्त्वनुं पालन करवा माटे तेनी यतनाने आश्रयी 'अन्नउत्थिए वा' जैनयूथथी अन्य यूथ-संघ, तीर्थ ते जेओने

तेसिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा दाउं वा अणुप्पदाउं वा, नन्नत्थ रायाभिओगेणं गणाभिओगेणं
बलाभिओगेणं देवयाभिओगेणं गुरुनिग्गहेणं वित्तिकन्तारेणं । कप्पइ मे समणे निग्गन्थे फासुएणं एसणिज्जेणं
असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थपडिग्गहकम्बलपायपुंछणेणं पीढफलयसिज्जासंथारएणं ओसहभेसज्जेण य पडि·

भियोग–समुदायनी परतन्त्रता, बलाभियोग–बलवाननी अधीनता, देवताभियोग–देवतानी परतन्त्रता, गुरुनिग्रह–मातापिता वगेरेनी
पराधीनता अने वृत्तिकांतार–आजीविकानो अभाव ए छ आगार सिवाय बीजे योग्य नथी, मारे श्रमण निर्ग्रन्थोने प्रासुक–अचित्त अने
एषणीय (निर्दोष) अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहार, वस्त्र, पात्र, कम्बल, पादप्रोंछनक–(पग साफ करवानुं वस्त्र), पीठ–
आसन, फलक–पाटीउं, शय्या–वसति, संस्तारक तथा औषध अने भैषज्य वडे सत्कार करवो योग्य छे' एम कहीने आवा प्रका·

छे ते अन्ययूथिक–चरकादि कुतीर्थिकोने, 'अन्ययूथिकदेवतानि' हरि, हर वगेरे अन्यतीर्थिक देवोने, 'अन्ययूथिकपरिगृहीतानि अर्हच्चै-
त्यानि वा' अन्यतीर्थिकोए ग्रहण करेला अरिहंतना चैत्य–प्रतिमाओने, जेम के भौत–शैवोए ग्रहण करेला वीरभद्र अने महाकालतीर्थ
वगेरेने 'वंदितुम्' अभिवादन–प्रणाम करवाने 'नमस्यितुम्' प्रणामपूर्वक प्रशस्त ध्वनि वडे गुणोत्कीर्तन करवाने 'न कल्पते' योग्य
नथी, कारण के तेना भक्तोने मिथ्यात्व स्थिर करवा वगेरे दोषनो प्रसंग प्राप्त थाय. तथा 'पूर्वम्' पहेला 'अनालप्तेन' अन्यतीर्थिकोए
न बोलावेला होय तो ते अन्यतीर्थिकोने 'आलपितुम्' एक वार बोलाववाने, 'संलपितुम्' वारंवार बोलाववाने योग्य नथी. कारण के
तेओ आसनादि क्रियाओमां नियुक्त करेला–आसनादि वडे संमान करायेला तपेला लोढाना गोळा समान छे, अने ते निमित्ते कर्मनो
बन्ध थाय छे. तथा आलाप–वातचीत वगेरेथी तेना के तेना परिवारना परिचयथी मिथ्यात्वनी प्राप्ति थाय छे. परन्तु प्रथम तेओए
बोलावेला होय तो लोकापवादना भयथी संभ्रम सिवाय 'तमे केवा छो' इत्यादि कहेवुं. तथा ते अन्यतीर्थिकोने अशनादि 'दातुं'

लाभेमाणस्स विहरित्तए'त्तिकट्टु इमं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ, अभिगिण्हित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठाइं आदियइ, आदिइत्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ, वंदित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव वाणियगामे नयरे जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सिवनन्दं भारियं एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिए ! मए समणस्स

रनो अभिग्रह-नियम ग्रहण करे छे, ग्रहण करीने ते संबन्धे प्रश्नो पूछे छे, प्रश्नो पूछी तेनो अर्थ ग्रहण करे छे, अर्थ ग्रहण करी श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार वंदन करे छे, वंदन करी श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी अने दूतिपलाश चैत्यथी नीकळे छे. नीकळीने ज्यां वाणिज्यग्राम नगर छे अने ज्यां पोतानुं घर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने तेणे शिवनंदा भार्याने आ प्रमाणे कह्युं-"हे देवानुप्रिये ! खरेखर में श्रमण भगवंत महावीरनी पासे ए प्रमाणे धर्म सांभळ्यो अने ते धर्म मने इष्ट छे, पुनः पुनः इष्ट छे अने तेनी

आपवाने 'अनुप्रदातुम्' वारंवार आपवाने योग्य नथी. आ धर्मबुद्धिथी आपवानो निषेध छे, पण करुणाबुद्धिथी नथी, करुणा पडे तो आपे पण खरो. शुं सर्वथा योग्य नथी? ए शंकाना समाधानमां कहे छे-'नन्नत्थ रायाभिओगेणं' राजाभियोगाद् अन्यत्र-राजानो अभियोग-पराधीनता ते सिवाय बीजे योग्य नथी. अहीं तृतीया विभक्ति पंचमीना अर्थमां छे. गण-समुदाय, तेनो अभियोग-परवशता, बलाभियोग-राजा अने गण-समुदाय सिवाय बळवाननी पराधीनता, देवाभियोग-देवनी पराधीनता, गुरुनिग्रह-मातापिता नी पराधीनता, अथवा गुरु-चैत्य अने साधुओनो निग्रह-शत्रुओए करेलो उपद्रव ते :गुरुनिग्रह, ते प्राप्त थाय त्यारे अन्यतीर्थिकोने आपवा छतां पण सम्यक्त्वने दूषित करतो नथी. 'वित्तिकंतारेणं' वृत्ति-आजीविका, तेनो कांतार-अरण्यना जेवुं क्षेत्र अने काळ होय ते वृत्तिकान्तार-निर्वाहनो अभाव, तेथी बीजे दान अने प्रणामादिनो निषेध छे. श्रमण निर्ग्रन्थोने निर्दोष आहार पाणी, वस्त्र, प्रतिग्रह-

भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मे निसन्ते, सेऽवि य धम्मे मे इच्छिए पडिच्छिए अभिरुइए, तं गच्छ णं तुम देवाणुप्पिए ! समणं भगवं महावीरं वन्दाहि जाव पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि' ॥

८. तए णं सा सिवनन्दा भारिया आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठा कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'खिप्पामेव लहुकरण० जाव पज्जुवासइ । तए णं समणे भगवं महावीरे सिवनन्दाए तीसे य महइ० जाव धम्मं कहेइ । तए णं सा सिवनन्दा समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं

मने रुचि थइ छे, ते माटे हे देवानुप्रिये ! तुं जा अने श्रमण भगवंत महावीरने वंदन कर, यावत् तेमनी पर्युपासना कर अने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत रूप बार प्रकारना गृहस्थ धर्मनो स्वीकार कर."

८.त्यार बाद ते शिवनन्दा भार्या ते आनन्द श्रावके एम कह्युं एटले हर्षित अने प्रसन्न थइ कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावे छे, बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रियो ! जलदी लघुकरण–शीघ्र गमन करवामां निपुण इत्यादि वर्णनयुक्त बे बळदसहित श्रेष्ठ वाहनने हाजर करो, त्यार बाद ते श्रेष्ठ वाहनमां बेसीने जाय छे अने यावत् पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीर शिव

पात्र, कंबल, पादप्रोंछनक–पग साफ करवानुं वस्त्र, पीठ–पाट वगेरे, फलक–ओठींगण आपवा वगेरेनुं पाटीउं, औषध–दवा अने भैषज्य–पथ्य वडे सत्कार करवा योग्य छे. त्यार बाद प्रश्नो पूछे अने तेना उत्तर रूप अर्थोने ग्रहण करे छे.

८ 'लहुकरण' अहीं यावत् शब्दनुं ग्रहण होवाथी 'लहुकरणजुत्तजोइय'–लघु–शीघ्र गमन क्रियामां दक्ष-निपुण अने यौगिक–

सोचा निसम्म हट्ठ० जाव गिहिधम्मं पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

९. 'भन्ते'त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'पहू णं भन्ते ! आणन्दे समणोवासए देवाणुप्पियाणं अन्तिए मुण्डे जाव पव्वइत्तए' ? नो तिणट्ठे समट्ठे, गोयमा ! आणन्दे णं समणोवासए बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणिहिइ, पाउणित्ता जाव सोहम्मे कप्पे अरुणे विमाणे देवत्ताए उववज्जिहिइ । तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । तत्थ णं

नन्दाने अने ते मोटी पर्षदाने धर्मोपदेश करे छे. त्यार पछी ते शिवनन्दा श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मने सांभळी विचारी प्रसन्न थइ अने यावत् गृहस्थ धर्मनो स्वीकार करे छे. गृहस्थ धर्मनो स्वीकार करीने ते धार्मिक श्रेष्ठ वाहन उपर चढे छे, चढीने जे दिशाथी आवी हती ते दिशा तरफ पाछी जाय छे.

९. 'हे भगवन् !' एम कही भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करे छे, वंदन अने नमस्कार करीने तेमणे आ प्रमाणे पूछ्युं–हे भगवन् ! आनन्द श्रावक देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड थइने प्रव्रज्या ग्रहण करवा समर्थ छे ? हे गौतम ! ए अर्थ समर्थ–युक्त नथी. आनन्द श्रावक घणा वरस सुधी श्रावकना पर्याय–अवस्थानुं पालन करशे, पालन करीने सौधर्म देवलोकने विशे अरुण नामे विमानमां देवपणे उत्पन्न थशे. त्यां केटला एक देवोनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. त्यां आनन्द श्रावकनी पण

समान योगवाळा एवा बे बळद वडे युक्त इत्यादि वाहननुं वर्णन सातमा अध्ययनथी जाणी लेवुं.

आणन्दस्सऽवि समणोवासगस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ बहिया जाव विहरइ। तए णं से आणन्दे समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव पडिलाभेमाणे विहरइ। तए णं सा सिवनन्दा भारिया समणोवासिया जाया जाव पडिलाभेमाणी विहरइ॥

१०. तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स उच्चावएहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि धम्मजागरियं जागरमाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिन्तिए पत्थिए मणोगए सङ्कप्पे समुप्पज्जित्था—'एवं खलु अहं वाणियगामे नयरे बहूणं राईसर० जाव सयस्सवि य णं कुडुम्बस्स जाव

चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोइ दिवसे बहारना देशोमां विहार करे छे. ते पछी जीव अजीव तत्त्व जेणे जाणेला छे एवो आनन्द श्रावक यावत् श्रमण निर्ग्रन्थनो अशनादि वडे सत्कार करतो विहरे छे. ते शिवनन्दा भार्या श्राविका थइ अने श्रमण निर्ग्रन्थनो सत्कार करती विहरे छे.

१०. त्यार पछी आनन्द श्रावकना अनेक प्रकारना शीलव्रत, गुणव्रत, विरमणव्रत, प्रत्याख्यान अने पोषधोपवास वडे आत्माने भावित करतां चौद वर्ष व्यतीत थयां अने पंदरमां वर्षना मध्य भागमां वर्तता अन्य कोइ दिवसे मध्यरात्रिना समये धर्म जागरिका

१०. 'महावीरस्स अन्तियं' अन्ते भवा-अन्ते थयेली ते आन्तिकी-भगवंत महावीरनी पासे स्वीकारेली 'धम्मपण्णत्तिं' धर्मप्रज्ञापनाने 'उवसंपज्ज'-अनुष्ठान द्वारा स्वीकारीने वर्ती शकतो नथी. 'जहा पूरणो' जेम भगवती सूत्रमां कहेल बाल तपस्वी पूरण छे, तेजे

आधारे, तं एएणं विक्खेवेणं अहं नो संचाएमि समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरित्तए, तं सेयं खलु ममं कल्लं० जाव जलन्ते विउलं असणं० जहा पूरणो जाव जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेत्ता तं मित्त० जाव जेट्ठपुत्तं च आपुच्छित्ता कोल्लाए सन्निवेसे नायकुलंसि पोसहसालं पडिलेहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरित्तए' एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता कल्लं विउलं० तहेव जिमियभुत्तुत्तरागए तं मित्त० जाव विउलेणं पुप्फ० ५ सक्कारेइ सम्माणेइ, सक्कारित्ता संमा-

करतां तेने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय, विचार, अभिलाष अने मनोगत संकल्प थयो–'ए प्रमाणे खरेखर हुं वाणिज्य ग्राम नगरमां घणा राजा, धनाढ्य वगेरेने बहुमान्य यावत् मारा पोताना कुटुंबनो आधारभूत छुं, तेथी ए विक्षेप वडे हुं श्रमण भगवंत महावीरनी पासे स्वीकारेली धर्मप्रज्ञप्तिने करवाने समर्थ नथी, ते माटे मारे काले सूर्योदय थाय त्यारे विपुल अशन पान खादिम अने स्वादिम आहार तैयार करावी यावत् कुटुंबने आमन्त्री इत्यादि पूरण संबन्धे कह्युं छे तेम यावत् ज्येष्ठ पुत्रने कुटुम्बमां स्थापन करीने, ते मित्र वगेरेनी यावत् ज्येष्ठ पुत्रनी रजा मागीने कोल्लाक संनिवेशमां ज्ञातकुलने विषे पोषधशालानुं प्रतिलेखन करी श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने रहेवुं श्रेय छे" एवो विचार करे छे, विचार करीने विपुल अशनादि तैयार करावी मित्र वगेरेने आमन्त्री, जमीने-

जेम पोताना स्थाने पुत्रादिनुं स्थापन कर्युं तेम आ आनंद श्रावके पण कर्युं. तेणे विपुल अशन, पान, खादिम अने स्वादिम आहार तैयार करावीने मित्र, ज्ञाति अने पोताना संबन्धी परिवारने आमन्त्रीने ते मित्र ज्ञाति विगेरेने विपुल अशनादि तथा वस्त्र, गन्ध, माला अने अलंकार वडे सत्कार करी सन्मान करीने ते मित्र विगेरेनी समक्ष ज्येष्ठ पुत्रने कुटुंबमां स्थापन करीने पण कह्युं–'आजथी

णित्ता तस्सेव मित्त० जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–'एवं खलु पुत्ता ! अहं वाणियगामे बहूणं राईसर० जहा चिन्तियं जाव विहरित्तए, तं सेयं खलु मम इदाणिं तुमं सयस्स कुडुम्बस्स आलम्बणं ४ ठवेत्ता जाव विहरित्तए'। तए णं जेट्ठपुत्ते आणन्दस्स समणोवासयस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ। तए णं से आणन्दे समणोवासए तस्सेव मित्त० जाव पुरओ जेट्ठपुत्तं कुडुम्बे ठवेइ, ठवेत्ता एवं वयासी–'मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे अज्जप्पभिइं केइ मम बहूसु कज्जेसु जाव आपुच्छउ वा पडिपुच्छउ वा, ममं अट्ठाए असणं वा

भोजन करीने आवेला ते मित्र ज्ञाति वगेरेने यावत् विपुल अशनादि वडे तथा पुष्प वगेरे वडे सत्कार अने सन्मान करे छे सत्कार अने सन्मान करीने यावत् ते मित्र वगेरेनी पासे ज्येष्ठ पुत्रने बोलावे छे. बोलावीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं–"हे पुत्र ! ए प्रमाणे खरेखर हुं वाणिज्य ग्राममां घणा राजा, धनिक वगेरेने बहुमान्य छु वगेरे जेम चिंतव्युं हतुं तेम कहीने यावत् धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करी विहरवाने समर्थ नथी, तो अत्यारे मारे मारा पोताना कुटुम्बना आलंबनभूत तने स्थापन करी यावत् धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करी विहरवुं श्रेयरूप छे." त्यार बाद ज्येष्ठ पुत्र आनन्द श्रावकनी ए बाबतने 'तह'त्ति कहीने विनय वडे कबुल करे छे. त्यार बाद आनन्द श्रावक ते मित्र वगेरेनी समक्ष जेष्ठ पुत्रने कुटुम्बमां स्थापन करे छे, स्थापन करीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिय ! तमे कोई आजथी आ-

---

मांडी तमे कोइ कोइपण काममां मने पूछशो नहि, तेम मारा माटे अशनादि 'उपस्करोतु' रांधशो नहि. 'उपकरोतु' रांधेलुं होय तेने बीजा द्रव्यो वडे संस्कारित करशो मा. ते पछी मित्र, ज्ञाति वगेरेनी तथा ज्येष्ठ पुत्रनी रजा मागीने कोल्लाक नामे संनिवेश-परामां 'नायकुलंसि' स्वजनना घरे ज्यां पोषधशाला छे त्यां आवे छे. त्यां आवी पोषधशालाने प्रमार्जी स्थंडिलभूमि अने पेशाब करवानी

४ उवक्खडेउ वा उवकरेउ वा । तए णं से आणन्दे समणोवासए जेट्ठपुत्तं मित्तनाइं आपुच्छइ, आपुच्छित्ता सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता वाणियगामं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव नायकुले जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोसहसालं पमज्जइ, पमज्जित्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, पडिलेहित्ता दब्भसंथारयं संथरइ, दब्भसंथारयं दुरूहइ, दुरूहित्ता पोसहसालाए पोसहिए दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ ॥

रंभीने बहु कार्योमां मने पूछशो नही, वारंवार पूछशो नहि. अने मारा माटे अशन, पान, खादिम स्वादिम, तैयार करशो नहि, तेनो संस्कार करशो नहि". त्यार बाद आनन्द श्रावक ज्येष्ठ पुत्र अने मित्र ज्ञाति वगेरेनी रजा ले छे, रजा लइने पोताना घरथी नीकळे छे. नीकळीने वाणिज्य गामना मध्य भागमां थइने ज्यां कोल्लाक नामे संनिवेश छे, ज्यां ज्ञात कुल छे अने ज्यां पोषधशाला छे, त्यां आवे छे, आवीने पोषधशाला प्रमार्जे छे, प्रमार्जीने उच्चार-दिशाए जवानी अने प्रस्रवणभूमि-पेसाब करवानी जग्याने जुए छे, जोइने डाभनो संथारो पाथरे छे, पाथरीने तेना उपर बेसे छे, बेसीने पोषधशालामां पोषध ग्रहण करी डाभना संथाराने प्राप्त थइ श्रमण भगवंत महावीरनी पासे ग्रहण करेली धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करी विहरे छे.

भूमिने जोइने डाभनो संथारो पाथरी ते उपर बेसी पोषधव्रत ग्रहण करी डाभना संथारा उपर बेठेल आनंद श्रावक भगवत महावीरनी पासे स्वीकारेल धर्मप्रज्ञापनाने अनुष्ठान द्वारा अंगीकार करीने विहरे छे.

११. तए णं से आणन्दे समणोवासए उवासगपडिमाओ उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ। पढमं उवासगपडिमं

११. त्यार पछी ते आनन्द श्रावक श्रावकनी प्रतिमाओ स्वीकार करीने विहरे छे. तेमां प्रथम उपासक प्रतिमा-व्रत विशेषने सूत्र

११. तेमां प्रथम अगियार श्रावकनी प्रतिमाओमांथी प्रथम श्रावकने उचित अभिग्रह विशेषरूप प्रथम प्रतिमानो स्वीकार करीने विहरे छे. ते प्रथम प्रतिमानुं आ स्वरूप छे-शंका वगेरे शल्य रहित सम्यग्दर्शन युक्त अने बाकीना गुण रहित जे प्राणी छे ते प्रथम सम्यग्दर्शन प्रतिमा. निरतिचारपणे सम्यग्दर्शननुं पालन करवुं ते प्रथम प्रतिमा जाणवी, छतां अहीं गुण अने गुणीनो अभेद होवाथी सम्यग्दर्शन युक्त प्राणीने प्रथम सम्यग्दर्शन प्रतिमा कही छे. जो के सम्यग्दर्शननी प्रतिपत्ति (अंगीकार) तेने पूर्वे पण हती, तो पण शंकादि दोष अने राजाभियोगादि अपवाद सिवाय तथाविध सम्यग्दर्शनाचारना विशेष पालन करवाना स्वीकार वडे प्रतिमानो संभव छे. एम न होय तो आनंद श्रावके प्रथम प्रतिमाने एक मास पालन करवा वडे, बीजी प्रतिमाने बे मास पालन करवा वडे, ए प्रमाणे यावत् अगियारमी प्रतिमाने अगियार मास पालन करवा वडे साडा पांच वरस पूर्ण कर्यां ए अर्थात् कहेशे ते केम संगत थाय? आ अर्थ दशाश्रुतस्कन्धादिने विषे नथी, कारण के त्यां श्रद्धामानरूप प्रथम प्रतिमानुं प्रतिपादन करेलुं छे. ते प्रथम प्रतिमाने 'अहासुत्तं' यथासूत्र-सूत्र प्रमाणे 'यथाकल्पं' प्रतिमाना आचारने उल्लंघन कर्या सिवाय, 'यथामार्गं' क्षायोपशमिक भावरूप मार्गनो अतिक्रम कर्या सिवाय, 'अहातच्चं' यथा तत्त्व-दर्शन प्रतिमाना अन्वर्थने अनुसरी, 'फासेइ' सम्यक् प्रकारे काया वडे स्पर्श करे छे, कारण के प्रतिपत्ति समये तेने विधि वडे अंगिकार करी छे. 'पालेइ' निरन्तर उपयोगनी जागृति वडे रक्षण करे छे. 'सोहेइ' शोभयति-गुरुपूजा पूर्वक पारणा करवा वडे शोभावे छे. अथवा शोधयति-निरतिचार पणे शुद्ध करे छे. 'तीरेइ' पूर्ण करे छे, काळनी मर्यादा पूर्ण थया छतां तेना परिणामनो त्याग करतो नथी. 'कीर्तयति' वखाणे छे, कारण के तेनी समाप्तिमां आदि, मध्य अने अंतमां आ आ करवा योग्य हतुं ते में कर्युं छे एम स्तुति करे छे. आराधयति-ए यथा प्रकारो वडे निर्दोषपणे समाप्त करे छे. पछी 'दोच्चं'

अहासुत्तं अहाकप्पं अहामग्गं अहातचं सम्मं काएणं फासेइ पालेइ सोहेइ तीरेइ किट्टेइ आराहेइ। तए णं से आणन्दे समणोवासए दोचं उवासगपडिमं, एवं तचं चउत्थं पञ्चमं छट्ठं सत्तमं अट्ठमं नवमं दसमं एक्कारसमं जाव आराहेइ ॥

प्रमाणे, कल्प प्रमाणे, मार्ग प्रमाणे यथातथ्य-यथार्थपणे सम्यक् काया वडे स्पर्श करे छे, पाळे छे, शोभावे छे, संपूर्ण करे छे, कीर्तन करे छे अने तेनुं आराधन करे छे. त्यार बाद आनन्द श्रावक बीजी श्रावकनी प्रतिमाने, एम, त्रीजी, चोथी, पांचमी, छट्ठी, सातमी, आठमी, नवमी, दसमी अने अगियारमी प्रतिमानुं यावत् आराधन करे छे.

बीजी व्रतप्रतिमाने स्वीकारे छे तेनुं आ स्वरूप छे-दर्शनप्रतिमायुक्त अणुव्रताने निरतिचारपणे पालन करतो अनुकंपादिगुणयुक्त जीव बीजी व्रतप्रतिमा कहेवाय छे. 'तच्चं' त्रीजी सामायिक प्रतिमाने स्वीकारे छे. तेनुं स्वरूप आ छे-श्रेष्ठ सम्यग्दर्शन अने व्रतयुक्त जे बन्ने संध्याए उत्कृष्ट त्रण मास सुधी सामायिक करे ते सामायिक प्रतिमा छे. 'चउत्थं' चोथी पोषधप्रतिमानो स्वीकार करे छे. तेनुं आ स्वरूप छे-पूर्वे कहेली प्रतिमा युक्त जे आठम अने चौदश वगेरे पर्वदिवसे चार मास सुधी संपूर्ण पोषध पाले ते चोथी प्रतिमा जाणवी. 'पञ्चमं' पांचमी कायोत्सर्ग प्रतिमानो स्वीकार करे छे. तेनुं स्वरूप आवा प्रकारनुं छे-सम्यग्दर्शन, अणुव्रत अने गुणव्रत, शिक्षाव्रतवाळो, स्थिर, ज्ञानी आठम अने चतुर्दशीने विषे (पौषधना दिने) एक रात्री कायोत्सर्गमां स्थिर रहे. प्रतिमा सिवायना दिवसोमां स्नानरहित अने विकटभोजी-रात्रीभोजन त्यागी कच्छने मोकळो मुकी दीवसे-ब्रह्मचर्य पाळनार अने रात्रिए जेणे परिमाण करेलुं छे एवो होय. कायोत्सर्ग प्रतिमाने विषे रहेलो त्रण लोकमां पूजवा योग्य अने जेणे कषायोने जित्या छे एवा जिनोनुं ध्यान करे, अथवा पोताना दोषथी विरुद्ध एवुं बीजुं कोइ ध्यान यावत् पांच मास सुधी करे. 'छट्ठं' छट्ठी अब्रह्मचर्यना त्याग

१२. तए णं से आणन्दे समणोवासए इमेणं एयारूवेणं उरालेणं विउलेणं पयत्तेणं पग्गहियेणं तवोकम्मेणं

१२. त्यार बाद ते आनन्द श्रावक आवा प्रकारना आ उदार, विपुल, प्रयत्नरूप अने स्वीकारेला तप कर्म वडे शुष्क यावत् कृश अने

रूप प्रतिमानो स्वीकार करे छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे-पूर्वे कहेली प्रतिमाना गुणयुक्त अने विशेषतः तेणे मोहनीय कर्मने जित्युं छे एवो एकान्तथी मैथुननो त्याग करे अने रात्रिने विषे स्थिर चित्तवाळो होय. ते शृंगारनी कथाथी विरक्त थयेलो स्त्रीओनी साथे एकान्ते न रहे तथा स्त्रीओना अति प्रसंगनो अने उत्कृष्ट विभूषानो त्याग करे. ए प्रमाणे छ मास सुधी ए फल समजवो. अथवा बीजी रीते पण आ लोकमां यावज्जीव अब्रह्मचर्यनो त्याग करे. 'सत्तमं' सातमी सचित्ताहारना त्याग रूप प्रतिमानो स्वीकार करे छे. ते आ प्रमाणे-समग्र अशनादि सचित्ताहारनो विधिपूर्वक त्याग करे अने बाकीना प्रतिमाओना एद-स्थान वडे यावत् सात मास सुधी युक्त होय. 'अट्ठमं' आठमी स्वयं आरंभना त्याग करवा रूप आठमी प्रतिमानो स्वीकार करे छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे-आठ मास सुधी स्वयं सावद्य आरंभनो त्याग करे, पण वृत्तिनिमित्ते-आजीविका निमित्ते प्रेष्य-नोकर वगेरे द्वारा आरंभ करावे अने पूर्वोक्त प्रतिमाना गुणयुक्त होय ते आठमी प्रतिमा जाणवी. 'नवमं' नवमी भृतकप्रेष्यारंभ-भृत्य के नोकरद्वारा आरंभना त्याग रूप प्रतिमानो स्वीकार करे छे. ते आ प्रमाणे छे-प्रेष्य-नोकर वगेरे द्वारा मोटा सावद्य आरंभने करावतो नथी. अने पूर्वे कहेली प्रतिमाना गुणयुक्त नव मास सुधी विधि वडे रहे छे. 'दसमं' दसमी उद्दिष्टभोजनना त्याग रूप प्रतिमाने स्वीकारे छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे-पोताने उद्देशीने करेला भोजननो पण त्याग करे छे, तो बीजा आरंभ माटे तो शुं कहेवुं ? ते अस्त्रा वडे मुंड थाय छे, अथवा चोटी शिखाने धारण करे छे. द्रव्य संबन्धे पूछ्युं होय तो जाणतो होवा छतां पण 'हुं जाणुं छुं अथवा जाणतो नथी' एम न कहे, अने पूर्वे कहेला गुणयुक्त होय. ए प्रतिमा काळना प्रमाण वडे दश मासनी छे. 'एकारसमं' अगियारमी श्रमणभूत प्रतिमाने स्वीकारे छे. तेनुं स्वरूप आ छे-"अस्त्रा वडे मुंड थाय अथवा केशोनो लोच करे. तथा रजोहरण अने अवग्रह ग्रहण करीने श्रमणनी पेठे काया

सुक्खे जाव किसे धमणिसन्तए जाए। तए णं तस्स आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्नया कयाइ पुव्वरत्ता० जाव धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए ५–'एवं खलु अहं इमेणं जाव धमणिसन्तए जाए, तं अत्थि ता मे उट्ठाणे कम्मे बले वीरिए पुरिसक्कारपरक्कमे सद्धाधिइसंवेगे, तं जाव ता मे अत्थि उट्ठाणे सद्धाधिइसंवेगे जाव य मे धम्मायरिए धम्मोवएसए समणे भगवं महावीरे जिणे सुहत्थी विहरइ ताव ता मे सेयं कल्लं जाव जलन्ते अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसणाझूसियस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स कालं अणवकङ्खमाणस्स विहरित्तए' एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता कल्लं पाउ० जाव अपच्छिममारणन्तिय० जाव कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ। तए णं तस्स

धमनी–नाडीओ वडे व्याप्त थयो एटले तेना शरीरनी नाडीओ देखावा लागी. त्यार पछी ते आनन्द श्रावकने अन्य कोइ दिवसे मध्य रात्रीए धर्म जागरिका करतां आवो संकल्प थयो–'ए प्रमाणे हुं आ प्रकारना तप वडे धमनीथी व्याप्त शरीरवाळो थयो छुं अने हजी मारामां उत्थान, कर्म, बल, वीर्य, पुरुषकारपराक्रम तथा श्रद्धा, धैर्य अने संवेग छे, ज्यां सुधी मारामां उत्थान यावत् श्रद्धा, धैर्य अने संवेग छे अने ज्यां सुधी मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवान् महावीर जिन सुहस्ती विचरे छे त्यां सुधी मारे आवती काले सूर्योदय थये अपश्चिम–सौथी छेल्ली मारणान्तिक संलेखनानी आराधना युक्त थइने, भात पाणीनुं प्रत्याख्यान करी, अने

वडे धर्मने स्पर्श करतो एक दिवसथी मांडी उत्कृष्ट अगियार मास सुधी विचरे. ए प्रमाणे बधे प्रायः–बहुधा जाणवुं.

१२ 'उराळेणं' उदार एवा तप वडे इत्यादि वर्णन मेघकुमारना तपना वर्णननी पेठे जाणवुं. यावत् 'अनवकांक्षन्'–मरणनी दरकार नहि करतो विचरे छे.

आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्नया कयाइ सुभेणं अज्झवसाणेणं सुभेणं परिणामेणं लेसाहिं विसुज्झमाणीहिं तदावरणिज्जाणं कम्माणं खओवसमेणं ओहिनाणे समुप्पन्ने। पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्चजोयणसंइयं खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेण य, उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासधरपव्वयं जाणइ पासइ, उड्ढं जाव सोहम्मं कप्पं जाणइ पासइ, अहे जाव इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ ॥

१३. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे समोसरिए, परिसा निग्गया, जाव पडिगया। तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे अन्तेवासी इन्दभूई णामं अणगारे गोयमगोत्तेणं सत्तु

काळनी दरकार नहि करतां रहेवुं श्रेय रूप छे' एम विचार करे छे. विचार करीने आवती काले प्रातःकाळे यावत् अपश्चिम मारणान्तिक संलेखनानी आराधना युक्त थइ यावत् काळनी नहि दरकार करतो विहरे छे. त्यार बाद ते आनन्द श्रावकने अन्य कोइ दिवसे शुभ अध्यवसाय वडे, शुभ परिणाम वडे, विशुद्ध लेश्याओ वडे तेना आवरणभूत कर्मना क्षायोपशमथी अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं. ते पूर्व दिशामां लवण समुद्रने विशे पांचसो योजन प्रमाण क्षेत्रने जाणे छे, ए प्रमाणे दक्षिण दिशाए अने पश्चिम दिशाए जाणवुं, उत्तर दिशाए चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वत सुधी जाणे छे अने देखे छे. ऊर्ध्व-उपर सौधर्म देवलोक सुधी जाणे छे अने देखे छे, अधो-नीचे आ रत्नप्रभाना पृथिवीना चोराशी हजार वर्षनी स्थितिवाळा लोलुय नरकावास सुधी जाणे छे अने देखे छे.

१३. ते काळे अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर समोसर्या. पर्षदा वांदवाने नीकळी अने वांदीने पाछी गई. ते काळे अने

रसेहे समचउरंससंठाणसंठिए वज्जरिसहनारायसङ्घयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे घोरतवे महातवे उराले घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबम्भचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेउलेसे छट्ठंछट्ठेणं अणिक्खित्तेणं तवोकम्मेणं संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तए णं से भगवं गोयमे छट्ठक्खमणपारणगंसि पढमाए पोरिसीए सज्झायं करेइ, बिइयाए पोरिसीए झाणं झियाइ, तइयाए पोरिसीए अतुरियं अचवलं असम्भन्ते मुहपत्तिं पडिलेहेइ,२ त्ता भायणवत्थाइं पडिलेहेइ,२ त्ता भायणवत्थाइं पमज्जइ,२ त्ता भायणाइं उग्गाहेइ, उग्गाहेत्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'इच्छामि णं भन्ते ! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए छट्ठक्खमणपारणगंसि वाणियगामे

ते समये श्रमण भगवंत महावीरना ज्येष्ठ अन्तेवासी गौतम गोत्रीय, सात हाथ ऊंचा, समचतुरस्र संस्थानवाळा, वज्रऋषभनाराच संघयणयुक्त सुवर्णना कसोटी उपरना कष जेवा, पद्मना समान गौरवर्णवाळा, उग्र तपवाळा, तेजस्वी तपवाळा, तपस्वी, घोर तप वाळा, महातपस्वी, उदार, घोर गुणवाळा, घोर तपस्वी घोर ब्रह्मचारी, जेणे शरीरना ममत्वनो त्याग कर्यो छे एवा, संक्षिप्त अने विपुल तेजोलेश्यावाळा इन्द्रभूति नामे अनगार निरन्तर छठ्ठ छठ्ठना तप करवा वडे, संयम अने तप वडे आत्माने भावित करता विहरे छे. त्यार पछी भगवान् गौतम छठ्ठ क्षपणना पारणाने दिवसे प्रथम पौरुषीने विषे स्वाध्याय करे छे, बीजी पौरुषीए ध्यान करे छे, त्रीजी पौरुषीए त्वरा अने चपलता सिवाय संभ्रम रहित मुहपत्तिनुं प्रतिलेखन करे छे, प्रतिलेखन करी पात्र अने वस्त्रोनुं प्रतिलेखन करे छे. प्रतिलेखन करी पात्र अने वस्त्रोने प्रमार्जे छे, प्रमार्जी पात्रो ग्रहण करे छे. ग्रहण करी ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवान् महावीरने वंदन

नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडित्तए'। अहासुहं देवाणुप्पिया! मा पडिवन्धं करेह। तए णं भगवं गोयमे समणेणं भगवया महावीरेण अब्भणुण्णाए समाणे समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियाओ दूइपलासाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता अतुरियमचवलमसम्भन्ते जुगन्तरपरिलोयणाए दिट्ठीए पुरओ ईरियं सोहेमाणे जेणेव वाणियगामे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता वाणियगामे नयरे उच्चनीयमज्झिमाइं कुलाइं घरसमुदाणस्स भिक्खायरियाए अडइ। तए णं से भगवं गोयमे वाणियगामे नयरे जहा पण्णत्तीए तहा जाव भिक्खायरियाए अडमाणे अहापज्जत्तं भत्तपाणं सम्मं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहित्ता वाणियगामाओ पडिणिग्गच्छइ, पडिणिग्गच्छित्ता कोल्लायस्स सन्निवेसस्स अदूरसामन्तेणं वईवय-

अने नमस्कार करे छे. वंदन अने नमस्कार करीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं-'हे भगवन्! आपनी अनुज्ञा वडे छट्ठना उपवासना पारणे वाणिज्य ग्राम नगरने विशे घर समुदायना उच्च, नीच अने मध्यम कुळोमां भिक्षाचर्याए जवाने इच्छुं छुं.' (भगवंते कह्युं-) हे देवानुं प्रिय! सुख थाय तेम करो, प्रतिबंध न करो. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे अनुज्ञा आपी एटले भगवान् गौतम श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी दूतिपलाश चैत्यथी नीकळे छे. नीकळीने त्वरा, चपलता अने संभ्रम सिवाय युगप्रमाण भूमिने जोनारी दृष्टि वडे ईर्या-मार्गने शोधता ज्यां वाणिज्य ग्राम नगर छे. त्यां आवे छे आवीने वाणिज्य ग्राम नामे नगरमां घर समुदायना उच्च, नीच अने मध्यम कुळोमां भिक्षाचर्या माटे भमे छे. त्यार पछी ते भगवान् गौतम वाणिज्यग्राम नगरमां जेम भगवतीसूत्रमां कह्युं छे तेम भिक्षाचर्याए भमता यथा योग्य भात पाणीने सम्यक् प्रकारे ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने वाणिज्य ग्रामथी नीकळे छे, नीकळीने

माणे बहुजणसद्दं निसामेइ । बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ ४–'एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तेवासी आणन्दे नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिम० जाव अणवकङ्खमाणे विहरइ' । तए णं तस्स गोयमस्स बहुजणस्स अन्तिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४–'तं गच्छामि णं आणन्दं समणोवासयं पासामि' एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता जेणेव कोल्लाए सन्निवेसे जेणेव आणन्दे समणोवासए जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ । तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ० जाव हियए, भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'एवं खलु भन्ते ! अहं इमेणं उरालेणं जाव धमणिसन्तए जाए, न संचाएमि देवाणुप्पियस्स अन्तियं पाउब्भवित्ता णं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं

कोल्लाक संनिवेशनी पासे थईने जता घणा माणसोनो शब्द सांभळे छे. घणा माणसो परस्पर ए प्रमाणे कहे छे–हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवंत महावीरना अन्तेवासी आनन्द नामे श्रावक पोषधशालामां अपश्चिम मारणान्तिक संलेखनानुं आराधन करता काळनी दरकार नहि करता विहरे छे. त्यार बाद ते भगवंत गौतमने घणा जणनी पासेथी ए अर्थ सांभळी, विचारी आवा प्रकारनो आ संकल्प थयो–'तो माटे हुं जाऊं अने आनन्द श्रावकने जोउं' एम विचार करे छे. विचारीने ज्यां कोल्लाक संनिवेश छे, ज्यां पोषधशाला छे अने ज्यां आनन्द श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे. त्यार बाद ते आनन्द श्रावक भगवान् गौतमने आवता जुए छे, जोईने ते हृष्ट–प्रसन्न अने संतुष्ट हृदय वाळो थई भगवान् गौतमने वंदन नमस्कार करे छे. वांदी अने नमीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं–'ए प्रमाणे हे भगवन् ! हुं आ उदार तप वडे यावत् धमनी–नाडीओ वडे व्याप्त शरीरवाळो थयो छुं, तेथी देवानुप्रिय एवा आपनी पासे आवीने

पाए अभिवन्दित्तए, तुब्भे णं भन्ते! इच्छाकारेणं अणभिओएणं इओ चेव एह, जा णं देवाणुप्पियाणं तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वन्दामि नमंसामि'। तए णं से भगवं गोयमे जेणेव आणन्दे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ॥

१४. तए णं से आणन्दे समणोवासए भगवओ गोयमस्स तिक्खुत्तो मुद्धाणेणं पाएसु वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'अत्थि णं भन्ते! गिहिणो गिहमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पज्जइ? हन्ता अत्थि। जइ णं भन्ते! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, एवं खलु भन्ते! ममवि गिहिणो गिहमज्झावसन्तस्स ओहिनाणे समुप्पन्ने-पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे पञ्च जोयणसयाइं जाव लोलुयच्चुयं नरयं जाणामि पासामि। तए णं से

त्रण वार मस्तक वडे आपना पगे वंदन करवाने समर्थ नथी, तो हे भगवन्! तमेज इच्छा वडे अनभियोग-स्वतन्त्रपणे अहीं आवो, यावत् देवानुप्रिय एवा आपना पगे मस्तक वडे त्रणवार वन्दन नमस्कार करूं'. त्यार बाद भगवान् गौतम ज्यां आनन्द श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे.

१४. त्यार बाद ते आनन्द श्रावक भगवान् गौतमने त्रण वार मस्तक वडे पगे वंदन नमस्कार करे छे, वंदन नमस्कार करीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं-'हे भगवन्! गृहस्थने गृहवासमां रहेता अवधि ज्ञान थाय छे'? हा, थाय. हे भगवन्! गृहस्थने यावत् अवधिज्ञान थाय छे तो हे भगवन्! गृहवासमां रहेता गृहस्थ एवा मने पण अवधिज्ञान थयुं छे. पूर्व दिशामां लवण समुद्रने विशे पांचसो योजन सुधी यावत् नीचे रोरुयनामे नरकावासने जाणुं छुं अने देखुं छुं, त्यार बाद भगवान् गौतमे आनन्द श्रमणोपासकने ए प्रमाणे

---

१४ गिहमज्झावसन्तस्स' गृहमध्यावसतः-घरमा रहेता.

भगवं गोयमे आणन्दं समणोवासयं एवं वयासी-'अत्थि णं आणन्दा ! गिहिणो जाव समुप्पज्जइ, नो चेव णं एमहालए, तं णं तुमं आणन्दा ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव तवोकम्मं पडिवज्जाहि' । तए णं से आणंदे समणोवासए भगवं गोयमं एवं वयासी-'अत्थि णं भन्ते ! जिणवयणे सन्ताणं तच्चाणं तहियाणं सब्भूयाणं भावाणं आलोइज्जइ जाव पडिवज्जइ ? नो इणट्ठे समट्ठे । जइ णं भन्ते ! जिणवयणे सन्ताणं जाव भावाणं नो आलोइज्जइ जाव तवोकम्मं नो पडिवज्जिज्जइ तं णं भन्ते ! तुब्भे चेव एयस्स ठाणस्स आलोएह, जाव पडिवज्जह' । तए णं से भगवं गोयमे आणन्देणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए कंखिए विइगिच्छासमावन्ने

कह्युं -'हे आनन्द ! गृहस्थने यावत् अवधिज्ञान उत्पन्न थाय छे, परन्तु एटलुं मोटुं होतुं नथी, तो हे आनन्द ! तुं ए स्थानकनी-विषयनी आलोचना कर, यावत् (प्रायश्चित्त रूपे) तपकर्मनो स्वीकार कर'. त्यार पछी ते आनन्द श्रमणोपासके भगवान् गौतमने ए प्रमाणे कह्युं-' हे भगवन् ! जिनप्रवचनमां सत्-विद्यमान, तथ्य, तथा भूत-ते प्रमाणे रहेला अने सद्भूत भावोनी आलोचना कराय छे, यावत् प्रायश्चित्त रूपे तपनो स्वीकार कराय छे ? हे आनन्द ! ए अर्थ युक्त नथी. 'हे भगवन् ! जो जिनवचनमां सद् रूप भावो संबन्धे आलोचना न कराय अने यावत् तप रूप प्रायश्चित्त न कराय तो हे भगवन् ! तमेज ए स्थानकनी आलोचना करो, यावत् तपरूप प्रायश्चित्त करो'. त्यार बाद आनन्द श्रावके ए प्रमाणे कह्युं एटले शंकित-शंकावाळा कांक्षित-जिज्ञासा वाळा अने विचिकित्सा-संशयने प्राप्त थयेला भगवान् गौतम आनन्द श्रावकनी पासेथी निकळे छे, नीकळीने ज्यां दूतिपलाश चैत्य छे अने

'संताणं' इत्यादि पदार्थक शब्दो छे.

आणन्दस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता जेणेव दूइपलासे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अदूरसामन्ते गमणागमणाए पडिक्कमइ, पडिक्कमित्ता एसणमणेसणं आलोएइ, आलोएत्ता भत्तपाणं पडिदंसेइ, पडिदंसित्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'एवं खलु भन्ते ! अहं तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए तं चेव सव्वं कहेइ जाव तए णं अहं संकिए ३ आणन्दस्स समणोवासगस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमामि, पडिनिक्खमित्ता जेणेव इहं तेणेव हव्वमागए, तं णं भन्ते ! किं आणन्देणं समणोवासएणं तस्स ठाणस्स आलोएयव्वं जाव पडिवज्जेयव्वं उदाहु मए? 'गोयमा' इ समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं एवं वयासी–'गोयमा ! तुमं चेव णं तस्स

ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवान् महावीरनी थोडे दूर रही गमनागमन पडिक्कमे छे. पडिक्कमी एषणा अने अने अनेषणानी आलोचना करे छे, आलोचना करीने भक्तपान–आहारपाणीने देखाडे छे. देखाडीने श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करीने तेणे ए प्रमाणे कह्युं—'हे भगवन् ! ए प्रमाणे आपनी अनुज्ञा मेळवी हुं (वाणिज्यग्राम नामे ग्रामने विशे गोचरी माटे गयो हतो) इत्यादि पूर्वोक्त बधुं कहे छे. यावत् त्यार बाद शंकित, कांक्षित अने संशयने प्राप्त थयेलो हुं आनन्द श्रमणोपासकनी पासेथी नीकळीने ज्यां आ स्थान छे त्यां शीघ्र आव्यो छुं, तो हे भगवन् ! आनन्द श्रमणोपासके ते स्थाननी आलोचना करवी जोइए, यावत् प्राश्चित करवुं जोइए अथवा मारे करवुं जोइए? 'गौतम' !

१४ 'गोयमा इ'त्ति हे गौतम ' ए प्रमाणे आमन्त्रीने

वीयं अज्झयणं ।

१. जइ णं भन्ते ! समणेणं भगवया महावीरेणं जाव संपत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पढमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते, दोचस्स णं भन्ते ! अज्झयणस्स के अट्ठे पण्णत्ते ? एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं चम्पा नामं नयरी होत्था । पुण्णभद्दे चेइए । जियसत्तू राया । कामदेवे गाहावई। भद्दा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वुड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ। छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । समोसरणं । जहा आणन्दो तहा निग्गओ, तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ , सा चेव वत्तव्वया जाव जेट्ठपुत्तं

---

२ कामदेवाध्ययन

१ हे भगवन् ! यावत् निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवन्त महावीरे जो सातमा उपासक दशांगना प्रथम अध्ययननो आ (पूर्वोक्त) अर्थ कह्यो छे, तो हे भगवन् ! बीजा अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ? हे जंबू ! ए प्रमाणे ते काळे अने ते समये चंपा नामे नगरी हती. पूर्णभद्र चैत्य हतुं. जितशत्रु राजा हतो. कामदेव गृहपति हतो. तेने भद्रा नामे भार्या हती. छ हिरण्यकोटी निधानमां मूकेली, छ व्याजमां अने छ धनधान्यादिना विस्तारमां रोकेली हती. तेने दस हजार गायोनुं एक व्रज एवां छ व्रजो हतां. भगवान् समोसर्या, आनन्दनी जेम (कामदेव) वंदन करवा निकळ्यो. अने ते प्रमाणे श्रावक धर्मनो स्वीकार करे छे. इत्यादि तेज

मित्तनाइं आपुच्छित्ता जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता जहा आणन्दो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ ।

२ तए णं तस्स कामदेवस्स समणोवासगस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे मायी मिच्छद्दिट्ठी अन्तियं पाउब्भूए । तए णं से देवे एगं महं पिसायरूवं विउव्वइ । तस्स णं देवस्स पिसायरूवस्स इमे एयारूवे वण्णावासे

वक्तव्यता कहेवी, यावत् ज्येष्ठ पुत्र अने मित्र ज्ञाति वगेरेने पूछी ज्यां पोषधशाला छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने आनन्दनी पेठे धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे.

२ त्यार पछी ते कामदेव श्रमणोपासकनी पासे मध्य रात्रिना समये एक मायी मिथ्यादृष्टि देव प्रगट थयो अने ते देव एक मोटुं पिशाचनुं रूप विकुर्वे छे. ते पिशाच रूप देवनो वर्णनव्यास–वर्णननो विस्तार आ प्रमाणे छे–तेनुं माथुं गोकिलंज–टोपलाना

१–२ हवे बीजा अध्ययनने विशे कंइक लखीए छीए–ते कामदेव श्रमणोपासकनी पासे 'पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि' पूर्वरात्र–रात्रिनो पूर्व भाग, अने अपररात्र–रात्रिनो पछीनो भाग, ते रूप कालना समयने विशे एटले मध्यरात्रिए एक मायी मिथ्यादृष्टि देव आव्यो अने ते एक मोटुं पिशाचनुं रूप विकुर्वे छे, तेनो 'इमेयारूवे' आ आवा प्रकारनो 'वण्णावासे'–वर्णकव्यासः–वर्णननो विस्तार छे. 'से' तेनुं 'सीसं' शीर्ष–मस्तक 'गोकिलञ्ज'त्ति गायोने चारो करवा माटे वांसनुं बनावेलुं पात्र, जेने डालुं कहेवामां आवे छे, ते उंधुं मूकयुं होय तेना आकार जेवो आकार छे. बीजा पुस्तकमां बीजुं विशेषण छे–'विगयकप्पयनिभं' विकृत–बेडोळ अलंजर–पाणी भरवानुं माटीनुं मोटुं पात्र वगेरे, तेना कल्पक–खंड अर्थात्–कपर–ठीवना जेवुं छे, क्वचित् 'वियडकोप्परनिभं' विकट–

पण्णत्ते– सीसं से गोकिलञ्जसंठाणसंठियं, सालिभसेल्लसरिसा से केसा कविलतेएणं दिप्पमाणा, महल्लउट्टियाकभल्लसंठाणसंठियं निडालं, मुगुंसपुंछं व तस्स भुमगाओ फुग्गफुग्गाओ विगयबीभच्छदंसणाओ, सीसघडिविणिग्गयाइं अच्छीणि विगयबीभच्छदंसणाइं, कण्णा जह सुप्पकत्तरं चेव विगयबीभच्छदंसणिज्जा, उरब्भपुडसन्निभा से नासा, झुसिरा जमलचुल्लीसंठाणसंठिया दोऽवि तस्स नासापुडया, घोडयपुछं व तस्स मंसूइं

आकार जेवुं हतुं. तेना केशो डांगरनी डुंडीओना जेवा पीळी कान्ति वडे दीपता हता. मोटा उष्ट्रिका–माटीना घडानी ठीब जेवुं तेनुं ललाट हतुं. तेनी मुंगुसना पूंछडा जेवी भमरो फगफगती हती अने तेथी तेनो देखाव विकृत–बेडोळ अने बीभत्स हतो. तेनी आंखो शीर्षघटी–मस्तक रूप घटीकाथी बहार नीकळेली तथा विकृत अने बीभत्स दर्शनवाळी हती. तेना कान सुपडाना खंड जेवा अने बेडोळ तथा बीभत्स देखाववाळा हता. तेनी नासिका उरभ्र–घेटानी नासिकापुट जेवी हती. तेना बन्ने नासिकासंपुट शुषिर–मोटा छिद्रवाळा यमल–साथे रहेली बे चुलनी आकृति जेवा हता. तेनी श्मश्रू–दाढीमुछ घोडाना पुच्छना जेवी अने पीळा वर्णवाळी विकृत–

विस्तीर्ण कर्पर-माटीना वासणनी कपाल-ठीबना जेवुं छे। 'सालिभसेल्लसरिसा' शालि-डांगरनी भसेल्ल-डुंडीओना जेवा तेना केशपाश छे. पछ यावतने स्पष्ट करे छे-ते 'कविलतेएणं दिप्पमाणा' कपिल-पीळी कांति वडे दीपता-सुशोभित छे. 'उट्टियाकभल्लसंठाणसंठिया' उष्ट्रिका-पाणी भरवाना माटीना घटना कभल्ल-कपाल-ठीबना संस्थान-आकारवाळुं तेनुं 'निडालं' ललाट छे. 'महल्लउट्टियाकभल्लसरिसोदरं' एवो बीजो पाठ छे. मोटा उष्ट्रिका-पाणी भरवाना घडाना कभल्ल-कपालना समान उपमा-समानपणुं जेने विशे छे एवुं ललाट छे. 'मुगुंसपुंछं व' मुगुंसा-भुजपरिसर्पविशेष, तेना पूछडाना जेवी 'तस्य' ते पिशाचनी 'भूमगाओ' भमरो छे. प्रस्तुत उपमाना अर्थने स्पष्ट करे छे-अने ते 'फुग्गफुग्गाओ' परस्पर छुटा रोमवाळी छे एटले फगफगती होय छे. बीजा पुस्तकमां 'जडिलकुडिलाओ'

कविलकविलाइं विगयवीभच्छदंसणाइं, उट्ठा उट्टस्स चेव लम्बा, फालसरिसा से दन्ता, जिब्भा जहा सुप्पकत्तरं चेव विगयवीभच्छदंसणिज्जा, हलकुद्दालसंठिया से हणुया, गल्लकडिल्लं च तस्स खड्डं फुट्टं कविलं फरुसं महल्लं,

वेडोळ अने बीभत्स देखाववाळी हती. होठ ऊंटना जेवा लांबा अने तेना दांत फाल–कोशना जेवा हता. तेनी जीभ शूर्पकर्तर–सुपडाना टुकडा जेवी अने वेडोळ तथा बीभत्स देखाववाळी हती. तेनी हनु–बे दाढो हळनी कोदाळी सरखा आकारवाळी हती. तेना गल्लकडिल्ल–गालरूप कडाइ फुट्ट–पहोळी खड्ड–खाडना जेवी कपिल–पीळी, परुष–कठोर अने महत्–मोटी हती. तेना स्कन्ध–खभा

पद्यो पाठ छे–पटले जटिल–जटावाळी अने कुटिल–गुचळावाळी छे तथा 'विगयविभच्छदंसणाओ' विकृत–वेडोळ अने बीभत्स–सूग उत्पन्न करनार दर्शन जेनु छे पछी छे 'सीसघडिविणिग्गयाणि' शीर्ष–मस्तक रूप घटी–घट, कारण के तेना जेवो तेनो आकार छे. शीर्षघट थकी विनिर्गत–नीकळेल होयनी शु पद्या, कारण के, मस्तक रूप घटथी बहार नीकळीने–रहेला छे एवा तेनां अक्षि–नेत्रो विकृत–वेडोळ अने बीभत्स देखाववाळा छे. 'कण्णा' तेना कान 'शूर्पकर्तरमेव' सूपडाना टुकडा जेवा छे, परन्तु अन्य आकारवाळा नथी, अर्थात् टोपरानी आकृति जेवा अने विकृत अने बीभत्स देखाववाळा छे 'उरब्भपुडसन्निभा' उरभ्र–घेटाना पुट–नासिकाना पुट जेवी 'से' तेनी नासा–नासिका छे. 'झुरब्भपुडसठाणसंठिया' झुरभ्रा–एक जातनुं वादित्र, तेना पुट–पुष्कर–मुखना संस्थान–आकृति जेवी नासिका छे, कारण के तेनी नासिका अत्यन्त चीबी होवाथी तेना समान छे 'झुसिरा' मोटा छिद्रवाळा 'जमलचुल्लिसठाणसंठिया' यमल–एक साथे रहेला बे चुली–चूलना जेवा आकारवाळा 'तस्य' तेना 'द्वावपि' बन्ने 'नासापुडे' नासिकाना विवर–छिद्रो छे. बीजी वाचनामां 'महल्लकुम्भसंठिया दोवि से कवोला' जेमा मासरहित होवाथी अने हाडकां उंचा होवाथी तेना 'द्वावपि' बन्ने कपोल–लमणा महल्ल–मोटा कुम्भ–उडा खाडाना जेवी आकृतिवाळा छे. 'घोडयपुंछं व' घोडाना पूछडाना जेवी 'तस्य' ते पिशाचनी 'श्मश्रूणि' दाढी–मूछ छे अने 'कपिलकपिलानि' अतिशय पीळी तथा विकृत, वेडोळ अने बीभत्सदर्शनवाळी छे घोडयपुंछं व तस्स कविलफरुसाओ उद्धलोमाओ

मुइङ्गाकारोवमे से खन्धे, पुरवरकवाडोवमे से वच्छे, कोट्ठियासंठाणसंठिया दोवि तस्स वाहा, निसापाहाण-संठाणसंठिया दोवि तस्स अग्गहत्था, निसालोढसंठाणसंठियाओ हत्थेसु अंगुलीओ, सिप्पिपुडगसंठिया से नक्खा, ण्हावियपसेवओ व्व उरंसि लम्बन्ति दोऽवि तस्स थणया, पोट्टं अयकोट्ठओ व्व वट्टं, पाणकलन्द-

मृदंगना आकार जेवा अने तेनी छाती नगरना कपाट–कमाड जेवी हती. तेना बे हाथ कोष्ठिका–कोठीना आकार जेवा, ते हाथना अग्र भाग निशापाषाण–दाळ वाटवानी शिला जेवा, आंगळीओ निशालोढ–दाळ वाटवाना पत्थर जेवी अने तेना नखो छीपना दलना जेवी आकृतिवाळा हता. तेना बन्ने स्तनो नापितनी कोथळीनी पेठे छातीनी उपर लटकता हता. तेनुं पेट लोढानी कोठी जेवुं वर्तुल–गोळ

शाढियाओ' एवुं पाठान्तर छे. एटले घोडाना पूछडाना जेवी परुष–कर्कशस्पर्शवाळी अने उभा रोम–केशवाळी परन्तु तीरछी नमेली नहि एवी दंष्ट्रिका–दाढी–नीचेना होटना बन्ने बाजुना वाळ छे. तेना 'ओष्ठौ' बन्ने होठ ऊंटना जेवा लांबा छे. 'उट्ठा से घोडगस्स जहा दोवि लम्बमाणा' ए पाठान्तर छे. एटले तेना बन्ने होठ घोडाना जेवा लांबा छे. तथा 'फालसरिसा' लांबा होवाथी फाल–लोढानी कोशना जेवा तेना दांत छे. 'जिह्वा यथा शूर्पकर्तरमेव' जीभ सूपडाना कर्तर–टुकडाना जेवी छे, पण अन्यना जेवी नथी, तेमज विकृत अने बीभत्स दर्शनवाळी छे. 'हिंगुलुयधाउकन्दरबिलं व तस्स वयणं' एवुं अन्य पाठान्तर छे. एटले हिंगळो रूप धातु–खनिज द्रव्य जेमां छे एवुं कन्दर–गुफारूप बिलना जेवुं तेनुं वदन–मुख छे. 'हलकुद्दालं' हळना उपरनो भाग, तेना आकार जेवी अत्यन्त वक्र अने लांबी 'से' तेनी 'हणुया' बे दाढो छे. ते पिशाचनी गल्लकडिल्लं गल्ल–गालरूपी कडिल्ल–मण्डकादिने रांधवानुं पात्र, कडाई खड्ड–खाडाना जेवी छे. एटले तेनो मध्य भाग नीचाणवाळो अने फुट्ट–पहोळो छे. अहीं समान धर्म वडे 'कडिल्ल' ए उपमान कहेलुं छे. वळी ते वर्ण थी कपिल–पीळी अने स्पर्शथी 'फरुसं' कठोर अने 'महल्लं'–मोटी छे. तेना स्कन्ध–खभा मृदंगना आकारनी उपमा–सादृश्य जेनुं छे एवा

सरिसा से नाही, सिक्कगसंठाणसंठिए से नेत्ते, किण्णपुडसंठाणसंठिया दोऽवि तस्स वसणा, जमलकोट्टियासंठाणसंठिया दोऽवि तस्स ऊरू, अज्जुणगुट्ठं व तस्स जाणूइं कुडिलकुडिलाइं विगयबीभच्छदंसणाइं, जंघाओ कक्खडीओ लोमेहिं उवचियाओ, अहरीसंठाणसंठिया दोऽवि तस्स पाया, अहरीलोढसंठाणसंठियाओ

हतुं. तेनी नाभि पानकलन्द–कांजीना कुंडा जेवी हती. तेनुं नेत्र–पुरुषचिन्ह शीकाना जेवी आकृतिवाळुं अने तेना बन्ने वृषण–अंडकोश किण्व–सुराबीजथी भरेली बे गुणनी आकृतिवाळा हता. तेना बन्ने ऊरु––साथळ साथे रहेला बे कोठीनी आकृति जेवा हता. तेना जानु–ढींचण अर्जुन–एक जातना घासना गुट्ठ–गुच्छाना जेवा अत्यन्त वांका विकृत अने बीभत्स देखाववाळा हता. तेनी जांघ कर्कश–कठण अने रोम–वाळ वडे उपचित–व्याप्त थयेली हती. तेने बन्ने पग अधरी–वाटवानी शिला जेवा अने तेना पगनी आंगळीओ अधरीलोढ–वाटवाना पत्थर जेवी हती. तेना (पगनी आंगळीओना) नखो छीपना दळ जेवा हता. ते लडह–गाडानी पाछळना

छे. 'से' तेना 'वच्छे' वक्षःस्थल विस्तीर्ण होवाथी पुरवर–श्रेष्ठ नगरना कपाटनी उपमा जेने छे एवा छे, तथा कोष्ठिका–लोह वगेरे धातुने धमवा माटे माटीनी कोठी, तेनुं जे संस्थान–आकार, तेवा आकारवाळा बन्ने बाहु–हाथ छे, एटले स्थूल छे. तथा पहोळा अने जाडा होवाथी निसापाषाण–मग वगेरेनी दाळने वाटवानी शिला, तेवा आकारवाळा हाथना बे अग्रभागो छे. तथा जाडी अने लांबी होवाथी निसालोढ–शिलापुत्रक–वाटवानो पत्थर, तत्संस्थानसंस्थिता–तेना आकारवाळी हाथनी आंगळीओ छे. 'सिप्पिपुड'त्ति शुक्तिकापुटसंस्थिता–छीपना संपुटनो एक दल–भागनी आकृति वाळा तेना हाथना नखो छे. अन्य वाचनामां आ प्रमाणे बीजो पाठ छे–'अडयालगसंठिओ उरो तस्स रोमगुविलो' त्ति। अडयालग–अट्टालक–किल्लानी उपरनो भाग कहेवाय छे, तेवा आकारवाळुं उरः–वक्षःस्थल छे. कारण के क्षामवादिधर्म वडे तेनुं समानपणुं छे. वळी ते रोम–वाळवडे गुपिल–व्याप्त छे. ते पिशाचना बन्ने स्तनो 'नापितप्रसेवक इव' नापितनी

पाएसु अंगुलीओ, सिप्पिपुडसंठिया से नक्खा, लडहमडहजाणुए विगयभग्गभुग्गभुमए अवदालियवयणविवर-निल्लालियग्गजीहे सरडकयमालियाए उन्दुरमालापरिणद्धसुकयचिंधे नउलकयकण्णपूरे सप्पकयवेगच्छे अप्फो-

भागना लाकडा सरखा अने मडह-अप्रशस्त जानु-ढींचणवाळो, विकृत-बेडोळ, भग्न-भांगेल अने भुग्न-वांकी भमरवाळो; अवदा-रित-पहोळुं करेल छे मुख रूपी विवर जेणे तथा निर्लालित-बहार काढेल जीभनो अग्रभाग जेणे एवो, शरट-काकीडानी जेणे माळा करी छे एवो, उंदरनी माळा वडे युक्त सुकृत-सारी रीते करेलुं छे चिन्ह जेणे एवो, जेणे नकुल-नोळीयानुं कर्णपूर-काननुं आभूषण करेलु छे अने सापनुं वैकक्ष-उत्तरासंग करेलुं छे एवो, करास्फोट करतो, जेणे भयंकर अट्टहास्य कर्युं छे एवो, नानाविध-अनेक

नेरणी अने शस्त्रो राखवानी कोथळी नो पेठे 'उरंसि'-छातीमां लटके छे. 'पोट्ट' पेट अय.कोष्ठकवद्-लोढानी कोठीनी जेम वृत्त-वर्तुल-गोळ छे. तथा 'पाणकलन्दसरीसा' पान-धान्यना रस वडे संस्कारवाळुं पाणी, अर्थात् कांजी, जे वडे वणकरो वस्त्रोने पाय छे, तेनुं कलन्द-कुंडुं, तेना सरखी गम्भीरपणावडे तेनी नाभि-उदरनो मध्य भाग छे. अन्य वाचनामां आ प्रमाणे पाठ छे- "भग्गकडी विगयवंकपट्ठी असरिसा दोवि तस्स फिसगा" तेमां ऊभी केड भांगी गयेली अने विगय-विकृत-बेडोळ अने वक्र-वांकी पृष्ठ-पीठ छे एवो, तेना बन्ने फिसगा-कुला असमान छे. 'सिक्कगसंठाणसंठिए' शिक्यक-शीकुं, जे दहीं वगेरेना पात्रनुं दोरीमय अवलंबन-आधारभूत छे, तेना आकारवाळुं तेनुं नेत्र-मन्थानना दण्डने खेंचवानुं दोरडुं, तेनी पेठे लांबु होवाथी नेत्र--पुरुषचिन्ह छे. किण्वपुटसंस्थानसंस्थितं' किण्व-मदिराना अङ्गरूप तंदुलादिथी भरेल परस्पर संलग्न गुणना [छालकाना] आकार जेवा तेना वृषण-अण्डकोश छे तथा 'जमलकोट्ठियासंठाणसंठिया' यमल-समानपणे रहेल बे कोठीनी आकृति जेवा तेना ऊरु-साथळ छे तथा 'अज्जुणगुट्ठं व' अर्जुन--एक जातनुं घास, तेना गुट्ठं—गुच्छाना जेवा तेना जानु ढिंचण छे. हमणां कहेली उपमानुं समानपणुं बतावे छे-ते अत्यन्त वक्र अने विकृत-बेडोळ तथा बीभत्सदेखाववाळा छे. तेनी जंघा-ढिंचणनी नीचे रहेनारी जांघ-कर्कश-कठण छे एटले मांसरहित छे. तथा रोम-वाळ वडे उपचित व्याप्त छे तथा अधरी-वाटवानी शिला, तेनी आकृति

डन्ते अभिगज्जन्ते भीममुक्कट्टहासे नाणाविहपञ्चवण्णेहिं लोमेहिं उवचिए एगं महं नीलुप्पलगवलगुलियअय-

प्रकारना पांचवर्णवाळा रोम वडे उपचित-व्याप्त एवो (पिशाच) एक मोटी काळा कमळ, गवल-पाडाना शिंगडा, गुलिका-गळी अने अळसीना पुष्प जेवी, क्षुरधार-तीक्ष्ण धारवाळी असि-तलवारने ग्रहण करीने ज्यां पोषधशाला छे अने ज्यां कामदेव श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे, आवीने आसुरत्ते-गुस्से थयेलो, रुष्ट कुपित, चंडिकिए-तीव्र क्रोधवाळो अने मीम मीस करतो (दांत कचडतो) कामदेव श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कहेवा लाग्यो-अरे अप्राथित (मरण)नी प्रार्थना करनार, दुरन्त-दुष्ट परिणामवाळा अने प्रान्त-

जेवा तेना बन्ने पग छे. तथा 'अहरीलोढसंठाणसंठियाओ' अधरीलोष्ठः-शिलापुत्रक-वाटवानो पथ्थर, तेना आकार जेवी बन्ने पगनी आंगळीओ छे. 'सिप्पिपुडसंठिया' छीपना पड जेवा तेना पगनो आंगळीना नखो छे. केशना अग्रभागथी नखना अग्रभाग सुधी पिशाचना रूपनुं वर्णन कर्युं. हवे सामान्य रीते तेना वर्णन माटे कहे छे-'लडहमडहजाणुए' अहीं प्रसंगथी लडह शब्द वडे गन्त्री-गाडाना पाछळना भागमां रहेलुं तेना उत्तरांगनुं रक्षण करवा माटे जे लाकडुं होय छे ते कहेवाय छे. ते ढीलाबन्धनवाळुं होय छे. ▪ प्रमाणे ढीला सांधाना बन्धन होवाथी लडहना जेवा ते लडह अने स्थूल, अल्प अने लांबा होवाथी मडह-अप्रशस्त जानु-ढींचण जेना छे एवो. 'विगयभग्गभुग्गभुमए' विकृत-विकारवाळी, भग्न-विरूप होवाथी भांगेली अने भुग्न-वक्र भ्रू-भृकुटी जेनी छे एवो, अहीं अन्य वाचनामां बीजां चार विशेषणो कहेवायां छे-मसिमूसगमहिसकालए' मषि, मूषक-उंदर अने महिष-पाडानी पेठे काळो, भरियमेहवण्णे' जळथी भरेला मेघना जेवा वर्णवाळो, अर्थात् काळो, 'लंबोट्ठे' लांबा होठवाळो, 'निग्गयदन्ते' बहार नीकळेला दांतवाळो, 'अवदालियवयणविवर त्ति अवदारित-पहोळुं करेलुं छे मुखरूपी विवर जेणे तथा निर्लालित-बहार काढेल छे जीभनो अग्रभाग जेणे एवो, 'शरटकृतमालिकाकः' जेणे शरट-काकीडानी माला मस्तकमां अथवा छातीमां धारण करी छे एवो, तथा उंदरनी माला वडे परिणद्ध-व्याप्त सुकृत-सारी रीते करेलुं छे चिन्ह जेणे, नकुलकृत नोळीया वडे करेलुं छे कर्णपूर-काननुं आभूषण जेणे एवो, 'सर्पकृतवैकक्षः' बे साप वडे करेलुं छे वैकक्ष-उत्तरासंग जेणे एवो, अहीं

मिकुसुमप्पगासं असिं खुरधारं गहाय जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चण्डिक्किए मिसिमिसीयमाणे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–'हं भो कामदेवा! समणोवासया! अप्पत्थियपत्थिया दुरन्तपन्तलक्खणा हीणपुण्णचाउद्दसिया हिरिसिरिधिइकित्ति-परिवज्जिया धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकंखिया पुण्णकंखिया सग्गकंखिया

खराब लक्षण जेओना छे एवा, हीनपुण्यचातुर्दशिक–अधुरी काळी चउदशे जन्मेला, ह्री–लज्जा, श्री–शोभा, धृति–धैर्य अने कीर्तिवडे रहित, धर्मनी इच्छावाळा, पुण्यनी इच्छावाळा, स्वर्गनी इच्छावाळा, मोक्षनी इच्छावाळा, धर्मनी कांक्षावाळा, पुण्यनी कांक्षावाळा,

'मूसगकयचुंभलए, विच्छुयकयवेगच्छे सप्पकयजण्णोवइए' मूषक–उंदरनो करेलो छे चुंभलय–माळायुक्त मुकुट जेणे, वींछीनुं करेलुं छे वैकक्ष–उत्तरासंग जेणे, अने सापनुं करेल छे यज्ञोपवीत–जनोई जेणे एवो, अभिन्नमुहनयणनक्खवरवग्घचित्तकत्तिनियंसणे' अभिन्न–अखण्डित छे मुख, नयन अने नखो जेने विषे एवुं श्रेष्ठ वाघना कृत्ति–चर्म रूप निवसन–वस्त्र जेने छे एवो, 'सरसरुहिरमंसावलित्तगत्ते' सरस–रसवाळा रुधिर–लोही अने मांस वडे अवलिप्त–खरडायेलुं गात्र–शरीर जेनुं छे एवो, 'आस्फोटयन्' करास्फोट करतो, 'अभिगज्जन्ते' मेघनी पेठे गर्जना करतो, 'भीममुक्कट्टहासे' भीम–भयङ्कर–मुक्त कर्युं छे अट्टहास्य जेणे एवो, नाणाविहपञ्चवण्णेहिं' अनेकप्रकारना पांचवर्णवाळा रोम–वाळ वडे उपचित–व्याप्त एवो (पिशाच) एक मोटी नीलोत्पल–काळा कमळ, गवल–पाडानुं शींगडुं, गुलिका–गळी अने अळसीना पुष्प जेवो प्रकाश जेनो छे एवी 'क्षुरधारं' अस्त्राना जेवी तीक्ष्णधारवाळी असि–तलवारने 'गृहीत्वा' ग्रहण करीने ज्यां पोषधशाळा छे अने ज्यां कामदेव श्रावक छे त्यां आवे छे. आवीने आसुरत्ते रुट्ठे कुविए चण्डिक्किए मिसिमिसीयमाणे' गुस्से थयेलो, रुष्ट थयेलो, कुपित, चण्ड–तीव्रक्रोधवाळो, अने होठ पीसतो [आ बधा शब्दो समान अर्थवाळा अने अतिशय कोप बताववा माटे छे] कामदेव

मोक्खकंखिया धम्मपिवासिया पुण्णपिवासिया सग्गपिवासिया मोक्खपिवासिया नो खलु कप्पइ तव देवाणुप्पिया ! जं सीलाइं वयाइं वेरमणाइं पच्चक्खाणाइं पोसहोववासाइं चालित्तए वा खोभित्तए वा खण्डित्तए वा भञ्जित्तए वा उज्झित्तए वा परिचइत्तए वा, तं जइ णं तुमं अज्ज सीलाइं जाव पोसहोववासाइं न छड्डेसि न भञ्जेसि तो ते अहं अज्ज इमेणं नीलुप्पल० जाव असिणा खण्डाखण्डिं करेमि, जहा णं तुमं देवाणुप्पिया ! अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

स्वर्गनी कांक्षावाळा, मोक्षनी कांक्षावाळा, धर्मनी पिपासावाळा, पुण्यनी पिपासावाळा, स्वर्गनी पिपासावाळा अने मोक्षनी पिपासावाळा कामदेव श्रमणोपासक! देवानुप्रिय ! जे शील-अणुव्रतो, व्रतो-दिशाव्रत वगेरे, विरमण-रागादिनी विरति, पच्चक्खाण-प्रत्याख्यान अने पोषधोपवासने चलाववो-भंग करवो, (एने पाळवामां) क्षोभ करवो, खंडन करवो, भांगवो, त्याग करवो अने सर्वथा त्याग करवो तने कल्पतो नथी. जो तुं आजे शील यावद् पोषधोपवास छोडीश नहि के भांगीश नहि तो आजे आ काळा कमळ जेवी यावत् तलवार वडे तारा टुकडे टुकडा करीश. जे रीते हे देवानुप्रिय ! तुं आर्तध्याननी दुर्घट-अत्यंत पराधीनताथी पीडित थयेलो अकाळे जीवितथी मुक्त थइश.

श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कहे छे-'अपत्थियपत्थया' अप्रार्थित-नहि इच्छेल मरणनी प्रार्थना करनार, 'दुरन्तपंतलक्खणा' दुरन्त-दुष्ट अन्त-परिणाम जेनो छे एवा अने प्रान्त-हीन लक्षणवाळा, 'हीनपुण्णचाउद्दसिया' हीन-अपूर्ण पुण्य चतुर्दशी—काळी चतुर्दशीने विशे जेनो जन्म थयेलो छे एवा, श्री-शोभा, ह्री-लज्जा, धृति-धैर्य अने कीर्तिरहित, 'धम्मकामया' श्रुत अने चारित्र रूप धर्मनी अभिलाषा

तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं पिसायरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए अतत्थे अणुव्विग्गे अक्खुभिए अचलिए असम्भन्ते तुसिणीए धम्मज्झाणोवगए विहरइ ।

त्यारबाद ते कामदेव श्रमणोपासक ते पिशाच रूप देवे ए प्रमाणे कह्युं एटले अभीत–भयभीत थया सिवाय, अत्रस्त–त्रास पाम्या वगर, उद्वेगरहित, अक्षुभित- क्षोभरहित, अचलित, असंभ्रान्त–निश्चल तूष्णीक–उत्तर आप्या वगर धर्मध्यानने प्राप्त थयेलो विहरे छे.

करनारा, ए प्रमाणे बधा पदोनो अर्थ जाणवो, परन्तु शुभप्रकृतिरूप पुण्य, स्वर्ग-पुण्यनुं फल, मोक्ष-धर्मनुं फल, कांक्षा-अधिक इच्छा, पिपासा-अधिक कांक्षा, ए प्रमाणे ए पदो वडे उत्तरोत्तर इच्छानो अधिकता बतावेली छे. पण हे कामदेव ! 'नो खलु' तने शील वगेरेने चलायमान करवुं कल्पतुं नथी, योग्य नथी-ए वस्तुस्थिति छे. केवळ जो तुं आज शीलादिने चलायमान नहि कर तो हुं तारा खण्डाखण्डि-टुकडे टुकडा करीश-ए वाक्यनो अर्थ छे. तेमां शील-अणुव्रत, व्रत-दिशाव्रत वगेरे, विरमण-रागादिनी विरति, प्रत्याख्यान—नमुक्कारसही वगेरे, पोषधोपवास आहारादिना भेद वडे 'चार प्रकारनो छे. ते शीलादिने 'चालित्तए' भङ्ग करवाथी चलायमान करवाने, 'क्षोभयितुं' एनुं पालन करवामां क्षोभ करवाने, 'खण्डयितुम्' देशथी खंडन करवाने, भङ्क्तुम्' सर्वथा भांगवाने, 'उज्झितुं' सर्व देशविरतिनो त्याग करवाथी छोडवाने 'परित्यक्तुम्' सम्यक्त्वनो पण त्याग करवाथी सर्वथा त्याग करवाने योग्य नथी.

'अट्टदुहट्टवसट्टे' आर्तध्याननी दुहट्ट-दुर्घट-जेनो ताग न आवी शके एवी अथवा रोकी न शकाय एवी वश-पराधीनता, ते वडे ऋत-पीडित, अथवा आर्तेदु:खार्त-आर्तध्यान वडे दुःखार्त-दुःखथी पीडित तथा वश-विषयोनी पराधीनता वडे ऋत-व्याप्त, ते पछी कर्म धारय समास करवो. 'अभीते' इत्यादि एकार्थक शब्दो छे अने अभयनो प्रकर्ष बताववा माटे छे.

१ देश अने सर्वथा आहारना त्याग करवा वडे आहारपोषध, शरीरसत्कार-आभूषण वगेरेना त्याग वडे शरीरसत्कारपोषध, अब्रह्मचर्य-मैथुनना त्याग वडे अब्रह्मचर्यपोषध अने अव्यापार-सदोष प्रवृत्तिना त्याग वडे अव्यापार पोषध.

३ तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव धम्मज्झाणोवगयं विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चंपि कामदेवं एवं वयासी-'हं भो कामदेवा ! समणोवासया ! अपत्थियपत्थया ! जइ णं तुमं अज्ज जाव ववरोविज्जसि। तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव धम्मज्झाणोवगए विहरइ । तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ। पासित्ता आसुरत्ते तिवलियं भिउडिं निडाले साहट्टु कामदेवं समणोवासयं नीलुप्पल० जाव असिणा खण्डाखण्डिं करेइ । तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव दुरहियासं वेयणं सम्मं सहइ जाव अहियासेइ।

३ त्यार पछी ते पिशाच रूप देव कामदेव श्रमणोपासकने निर्भय यावत् धर्मध्यानने प्राप्त थयेलो जुए छे. जोइने बीजीवार पण कामदेवने ए प्रमाणे कहुं-अप्रार्थितनी प्रार्थना करनार हे कामदेव ! जो तुं आजे शील व्रत वगेरेनो त्याग नहि कर तो तुं यावत् जीवितथी मुक्त थइश. त्यार बाद ते कामदेव श्रमणोपासक ते देवे बीजी वार अने त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कहुं एटले ते भयभीत थया सिवाय यावत् धर्म ध्यानने प्राप्त थयेलो विहरे छे. त्यार बाद ते पिशाच रूप देव कामदेव श्रमणोपासकने निर्भीक रहेलो जुए छे. जोइने आसुरुत्ते-गुस्से थइ त्रिवलियुक्त (त्रण वळीया वाळी) भमर ललाट विशे करीने कामदेव श्रमणोपासकना काळा कमळ जेवी यावत् तलवार वडे खंडाखंडि-टुकडेटुकडा करे छे. त्यार पछी ते कामदेव श्रमणोपासक उज्ज्वल-शुद्ध, केवळ असह्य वेदनाने सम्यक् प्रकारे यावत् सहन करे छे.

२ तिवलियं' 'त्रिवलिका' त्रण वळियावाळी 'भ्रूकुटीं' दृष्टिनी रचनाविशेषने ललाटने विशे 'संहृत्य'-करीने 'चलयितुं' अन्यथा करवाने,

४. तए णं से देवे पिसायरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ। पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते तन्ते परितन्ते सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता दिव्वं पिसायरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ, सत्तङ्गपइट्ठियं सम्मं संठियं

४ त्यार बाद ते पिशाच रूप देव कामदेव श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे. जोइने ज्यारे ते कामदेव श्रमणोपासकने निर्ग्रन्थ प्रवचनथी चलायमान करवाने, क्षोभ पमाडवाने, विपरिणाम–अन्यथा परिणाम करवाने शक्तिमान् थतो नथी त्यारे श्रान्त थयेलो थाकेलो अत्यंत थाकेलो धीमे धीमे पाछो फरे छे, पाछो फरी पोषधशालाथी बहार नीकळे छे. बहार नीकळीने दिव्य पिशाच रूपनो त्याग करे छे. त्याग करीने एक मोटुं दिव्य हाथीनुं रूप विकुर्वे छे. जेना सात अंग भूमिने लागेलां छे एवुं, सम्यक् संस्थित–आकृतिवाळुं, सुजात–पूरा दिवसे जन्मेलुं, आगळथी उंचु अने पाछळथी वराहना जेवुं, अजाना जेवा पेटवाळुं, अलम्बकुक्षि–जेनुं पेट लांबु

चलन बे प्रकारे छे–संशयद्वारा अने विपर्यास द्वारा. तेमां संशयथी क्षोभ पमाडवाने अने विपर्यासथी विपरिणाम करवाने.

४ 'सन्ते' श्रान्त वगेरे शब्दो समानार्थक छे.

'सत्तङ्गपइट्ठियं' चार पग, कर–सुंढ, पुच्छ अने पुरुषचिन्ह, ए सात अङ्गो प्रतिष्ठित–भूमिने विषे लागेलां जेना छे एवुं, सम्मं–मांसनी वृद्धि थवाथी सारी रीते, संस्थित–हाथीना लक्षण सहित अङ्गोपांग होवाथी सारा आकारवाळुं, 'सुजात' सुजातना जेवुं, एटले पूरा दिवसे जन्मेलुं, 'पुरओ' आगळ, उदग्र–उंचुं जेनुं माथुं छे एवुं, 'पृष्ठतः' पृष्ठ भागमां वराहना जेवुं, अहीं प्राकृत होवाथी नपुंसकलिंग छे. अजाना जेवुं कुक्षि–पेट जेनुं छे ते अजाकुक्षि, बळवान होवाथी, 'अलम्बकुक्षि' जेनुं पेट लांबु नथी एवुं, 'प्रलम्बोदराधरकरं' प्रलंब–लांबा

सुजायं पुरओ उदग्गं पिट्ठओ वाराहं अयाकुच्छिं अलम्बकुच्छिं पलम्बलम्बोदराधरकरं अब्भुग्गयमउलमल्लियाविमलधवलदन्तं कञ्चणकोसीपविट्ठदन्तं आणामियचावललियसंविल्लियग्गसोण्डं कुम्मपडिपुण्णचलणं वीसइनक्खं अल्लीणपमाणजुत्तपुच्छं मत्तं मेहमिव गुलगुलेन्तं मणपवणजइणवेगं दिव्वं हत्थिरूवं विउव्वइ। विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं

नथी एवुं, लम्बोदर-गणेशनी पेठे लांबा होठ अने कर-सुंढ जेनी छे एवुं, मुकुलावस्थाने प्राप्त थयेला मल्लिका-मोगरानी पेठे विमल-स्वच्छ अने धोळा दांत जेना छे एवुं, कांचनकोशी-सुवर्णनी कोशी-खोळीमां प्रविष्ट छे दांत जेना एवुं, आनामित-कंइक नमावेल चाप-धनुषनी पेठे ललित-चेष्टावाळी अने संवेल्लित-संकुचित थयेल सुंढनो अग्र भाग जेनो छे एवुं, कूर्म काचबानी पेठे परिपूर्ण चरणो जेना छे एवुं, वीशनखवाळुं, आलीन-संगत अने प्रमाणयुक्त पुच्छ जेनुं छे एवुं, मदोन्मत्त, मेघनी पेठे गर्जना करतुं, मन अने पवनने जितनार वेग जेनो छे एवुं दिव्य हाथीनुं रूप विकुर्वे छे. विकुर्वीने ज्यां पोषधशाला छे अने ज्यां कामदेव श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे. आवीने कामदेव श्रमणोपासकने तेणे आ प्रमाणे कह्युं-हे कामदेव श्रमणोपासक! इत्यादि तेमज कहे छे, यावत् शील वगे-

लम्बोदर-गणपतिनी पेठे अधर-होठ, कर-सुंढ जेनी छे एवुं, 'अब्भुग्गय' अभ्युद्गत-प्राप्त करेली मुकुलावस्था जेणे एवो मल्लिका-मोगरो, तेनी पेठे विमल-स्वच्छ अने धोळा दांत जेना छे एवुं, 'काञ्चनकोशीप्रविष्टदन्तम्' सुवर्णनी कोशी-खोली, तेमां प्रवेशेला दांत जेओना छे एवुं, एटले तेना दांत उपर सुवर्णनी खोळी छे, कोशी-[1]प्रतिमा. आनामित-कंइक नमावेल चाप-धनुषनी पेठे ललित-विलासवाळी अने संवेल्लित-संकुचित थयेल छे सुंढनो अग्रभाग जेनो एवुं, तथा कूर्म-काचबाना आकार जेवा प्रतिपूर्ण चरण जेना छे एवुं,

१ अहीं प्रतिमानो अर्थ हाथीना दाते बांधवानु आभूषण एवो थाय छे. "प्रतिमा प्रतिकृतौ गजस्य दन्तबन्धे च"-अनेकार्थसंग्रहकाण्ड श्लो. ४६३.

वयासी-'हं भो कामदेवा! समणोवासया! तहेव भणइ जाव न भञ्जेसि, तो ते अज्ज अहं सोण्डाए गिण्हामि, गिण्हित्ता पोसहसालाओ नीणेमि, नीणित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहामि, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छामि पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेमि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि'। तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं हत्थिरूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता दोच्चंपि तच्चंपि कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-'हं भो कामदेवा! तहेव जाव' सोऽवि विहरइ। तए णं से देवे

रेने यावत् भांगीश नहि तो आजे तने सुंढथी ग्रहण करीश, ग्रहण करीने पोषधशालाथी बहार लइ जइश. लइने उपर आकाशमां फेंकीश. फेंकीने तीक्ष्ण दांतरूपी मुशल वडे ग्रहण करीश. ग्रहण करीने नीचे पृथिवीना तळे त्रण वार पग वडे रोळीश. जे रीते तुं आर्तध्यानथी दुर्घट-अत्यन्त वश-पराधीनताथी पीडित थयेलो अकाळे जीवितथी मुक्त थइश. ते हस्तिरूप देवे ए प्रमाणे कह्युं एटले कामदेव श्रमणोपासक निर्भय थइने रहे छे. त्यार बाद ते हस्तीरूप देव कामदेव श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे, जोइने बीजी वार अने त्रीजी वार पण कामदेव श्रमणोपासकने ए प्रमाणे कह्युं-हे कामदेव! इत्यादि तेमज कहेवुं. यावत् ते पण तेमज (निर्भय) रहे छे. त्यार पछी ते हस्तीरूप देव कामदेव श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे. जोइने गुस्से थयेलो ते कामदेव श्रमणोपासकने सुंढ वडे

वीश नग जेना छे एवु, आलीन-उचित प्रमाण युक्त पुच्छ जेवुं छे एवुं, उन्मत्त, मेघनी जेम गर्जना करतुं, मन अने पवनने जिती शके एवो वेग जेनो छे एवु दीव्य हाथीनुं रूप विकुर्वे छे. बाकी बधुं स्पष्ट छे.

हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते ४ कामदेवं समणोवासयं सोण्डाए गिण्हेइ, गिण्हित्ता उड्ढं वेहासं उव्विहइ, उव्विहित्ता तिक्खेहिं दन्तमुसलेहिं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता अहे धरणितलंसि तिक्खुत्तो पाएसु लोलेइ । तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ ॥

५ तए णं से देवे हत्थिरूवे कामदेवं समणोवासयं जाहे नो संचाएइ जाव सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता दिव्वं हत्थिरूवं विप्पजहइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं सप्परूवं विउव्वइ । उग्गविसं चण्डविसं घोरविसं महाकायं मसीमूसकालगं नयणविसरोसपुण्णं अंजणपुंज-

---

ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने उंचे आकाशमां उछाळे छे. उछाळीने तीक्ष्ण दन्तरूप मुशलवडे ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने नीचे पृथिवी तळमां त्रण वार पग वडे रोळे छे. त्यार पछी ते कामदेव श्रमणोपासक उज्ज्वल–केवळ असाता रूप वेदनाने सहन करे छे.

५. त्यारबाद ते हस्तीरूप देव कामदेव श्रमणोपासकने ज्यारे (चलायमान करवाने) यावत् शक्तिमान् थतो नथी, त्यारे ते धीमे धीमे पाछो खसे छे, पाछो खसीने पोषधशालाथी बहार नीकले छे. बहार नीकळीने दिव्य हस्तीरूपनो त्याग करे छे. त्याग करीने एक मोटुं दिव्य सापनुं रूप विकुर्वे छे. ते उग्रविषवाळुं, चंड–तीव्रविषवाळुं, घोर विषवाळुं, मोटा शरीरवाळुं, मषी अने मूषा (मूस)

---

८ 'उग्गविसं' इत्यादि सर्परूपना विशेषणो छे अने ते क्वचित् यावत् शब्दथी ग्रहण करेलां अने क्वचित् साक्षात् कहेलां देखाय छे, तेमां 'उग्रविषं' असह्य जेनुं विष छे एवुं, 'चंडविषं' तीव्र जेनुं विष छे एवुं, कारण के तेनुं विष थोडा काळमांज डंखेला शरीरने व्याप्त करे छे. 'घोरविषं' भयंकर विषवाळुं, कारण के तेनो नाश करे छे. 'महाकायं' मोटा शरीरवाळुं, 'मषीमूषाकालकम्' मषी–काजळ

विउव्वित्ता जेणेव पोसहसाला जेणेव कामदेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-'हं भो कामदेवा ! समणोवासया! जाव न भञ्जेसि तो ते अज्जेव अहं सरसरस्स कायं दुरुहामि, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भाएणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेमि, वेढेत्ता तिक्खाहिं विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेमि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं से कामदेवे समणोवासए तेणं देवेणं सप्परूवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ, सोऽवि दोच्चंपि तच्चंपि भणइ । कामदेवोऽवि जाव विहरइ । तए णं से देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता आसुरुत्ते ४ कामदेवस्स समणोवासयस्स सरसरस्स कायं दुरुहइ, दुरुहित्ता पच्छिमेणं भायेणं तिक्खुत्तो गीवं वेढेइ, वेढेत्ता तिक्खाहिं

सकने ए प्रमाणे कह्युं-हे कामदेव श्रमणोपासक ! जो तुं यावत् शील वगेरेने भांगीश नहि तो हुं आजे तारा शरीर उपर सरसर चडी जइश. चडीने पाछळना भाग-पुंछडा वडे ग्रीवा-डोकने वींटी लइश. वींटीने तीक्ष्ण अने विष वडे व्याप्त दाढ वडे तारी छातीमां प्रहार करीश, जे रीते तुं आर्तध्याननी अत्यन्त पराधीनताथी पीडित थयेलो अकाळे जीवितथी मुक्त थइश. त्यारबाद ते कामदेव श्रमणोपासक ते सर्परूप देवे ए प्रमाणे कह्युं एटले निर्भय थइने यावत् विहरे छे. ते देव पण तेने बीजीवार त्रीजी वार पण कहे छे.

रोस' अनाकलित-अप्रमित अथवा अनर्गल-रोकी शकवाने अशक्य तीव्र प्रचंड-अत्यंत घणो रोष-गुस्सो जेने छे एवुं सापनुं रूप विकुर्वे छे. विकुर्वी कामदेव श्रमणोपासकनी पासे आवीने कहे छे के जो तुं आजे तारा शील, व्रत वगेरेनो नहि त्याग कर तो 'सरसरस्स' ए लौकिक अनुकरण वाची छे. एटले हुं तारा शरीर उपर सरसर करतो चढी जइश. अने चढीने 'पच्छिमेणं भाएणं-पुंछडा वडे तारी

विसपरिगयाहिं दाढाहिं उरंसि चेव निकुट्टेइ । तए णं से कामदेवे समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ ॥

६ तए णं से देवे सप्परूवे कामदेवं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता जाहे नो संचाएइ कामदेवं समणोवासयं निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा ताहे सन्ते ३ सणियं सणियं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता पोसहसालाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता दिव्वं सप्परूवं विप्पज-

कामदेव पण यावत् तेमज रहे छे. त्यारबाद ते सर्परूप देव कामदेव श्रमणोपासकने भयरहित जुए छे. जोइने गुस्से थयेलो ते यावत् कामदेव श्रमणोपासकना शरीर उपर सरसर चढे छे. चढीने पश्चिम भाग-पुंछडा वडे ग्रीवा-डोकने त्रण वार वींटे छे. वींटीने तीक्ष्ण अने विषयुक्त दाढ वडे छातीमां प्रहार करे छे. त्यार पछी ते कामदेव श्रमणोपासक ते उज्ज्वल-केवळ वेदनाने यावत् सहन करे छे.

६. त्यार बाद ते सर्परूप देव कामदेव श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे. जोइने ज्यारे ते कामदेव श्रमणोपासकने निर्ग्रन्थ प्रवचनथी चलायमान कराने, क्षोभ पमाडवाने अने विपरिणाम कराने शक्तिमान् थतो नथी त्यारे ते श्रान्त थयेलो धीमे धीमे त्यांथी

डसने वींटीने तारी छातीमां तीक्ष्ण दाढ वडे 'निकुट्टेमि' प्रहार करीश. जेथी आर्तध्याननी दुर्घट पराधीनताथी पीडित थइने अकाळे मरण पामीश. त्यारबाद सर्प ते प्रमाणे करे छे. अने कामदेव श्रमणोपासक 'उज्ज्वला' विपक्ष-सातावेदनीयना अंश वडे पण अकलंकित-रहित, शरीरव्यापी होवाथी विपुल, कर्कश-कठोर द्रव्यनी पेठे अनिष्ट, 'प्रगाढा' अत्यंत, 'चंडा' रौद्र-भयंकर, दुःखा दुःखरूप, पण सुखरूप नहि एवी, तात्पर्य ए छे के 'दुरहियास' सहन करी न शकाय एवी वेदना सहन करे छे

६ ज्यारे सर्परूप देव कामदेव श्रमणोपासकने निर्ग्रन्थ प्रवचनथी चलायमान करी शक्तो नथी त्यारे सर्परूपनो त्याग करी देवनु

हइ, विप्पजहित्ता एगं महं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, हारविराइयवच्छं जाव दस दिसाओ उज्जोवेमाणं पभासेमाणं पासाईयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं दिव्वं देवरूवं विउव्वइ, विउव्वित्ता कामदेवस्स समणोवासयस्स पोसहसालं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसित्ता अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं पञ्चवण्णाइं वत्थाइं पवरपरिहिए कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो कामदेवा ! समणोवासया ! धन्ने सि णं तुमं देवाणुप्पिया ! सपुण्णे

खसे छे, खसीने पोषधशालाथी नीकळे छे, नीकळीने दिव्य सर्परूपनो त्याग करे छे, त्याग करीने एक मोटुं दिव्य देवरूप विकुर्वे छे. हार वडे विराजित-सुशोभित वक्षःस्थल जेनुं छे एवुं, यावत् दस दिशाओने उद्द्योतित अने प्रकाशित करतुं, प्रासादीय-प्रसन्नता करतुं, दर्शनीय, अभिरूप-मनोज्ञ, प्रतिरूप-विशिष्ट रूपवाळुं दिव्य देवरूप विकुर्वे छे. विकुर्वीने कामदेव श्रमणोपासकनी पोषधशालामां प्रवेश करे छे. प्रवेश करीने आकाशमां रहीने घुघरीओ सहित पांचवर्णवाळा वस्त्रोने प्रवरपरिहितः-सारी पहेरेला छे जेणे एवा तेणे कामदेव श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं-हे कामदेव श्रमणोपासक ! तुं धन्य छो, हे देवानुप्रिय ! तुं पुण्यशाली, कृतार्थ अने

रूप विकुर्वे छे. तेनुं वर्णन करे छे-'हारविराइयवच्छं' हार वडे विराजित-सुशोभित वक्षःस्थल जेनुं छे एवुं, अहीं यावत् शब्दथी आ प्रमाणे वर्णन जाणवुं. 'कडगतुडियथंभियभुयं' कटक-कडां, त्रुटित-बाहुरक्षक, बहेरखां, ते घणा होवाथी ते वडे स्तम्भित-अक्कड रहेली छे भुजाओ जेनी एवुं; 'अंगदकुंडलमट्ठगंडतलकण्णपीढधारिं' अंगद-केयूर, बाहुनुं भूषण, कुंडल प्रसिद्ध छे, अने मृष्ट-स्पर्श कर्यो छे गंडस्थळनो जेणे एवा कर्णपीठ-काननां आभूषणने धारण करनार, विचित्तहत्थाभरणं' विचित्र हाथना आभरण जेने छे एवुं, विचित्तमालामउलिं' विचित्र मालायुक्त मौलि-मुकुट अथवा मस्तक जेनुं छे एवुं, 'कल्लाणगपवरवत्थपरिहियं' कल्याणक-नवीन प्रवर-श्रेष्ठ वस्त्र जेणे परिहित-पहेरेलुं छे एवुं, 'कल्लाणगपवरमल्लाणुलेवणधरं' कल्याणकारक अने प्रवर-श्रेष्ठ माल्य-पुष्पो अने अनुलेपन-विलेपन धारण कर-

कयत्थे कयलक्खणे, सुलद्धे णं तव देवाणुप्पिया ! माणुस्सए जम्मजीवियफले, जस्स णं तव निग्गन्थे पावयणे इमेयारूवा पडिवत्ती लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया । एवं खलु देवाणुप्पिया ! सक्के देविन्दे देवराया जाव सक्कंसि सीहासणंसि चउरासीईए सामाणियसाहस्सीणं जाव अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य मज्झगए

कृतलक्षण (जेणे शरीरना लक्षण–चिन्हो सफळ कर्या छे एवो) छो. हे देवानुप्रिय ! तें मनुष्यनो जन्म अने जीवितनुं फळ सारी रीते प्राप्त कर्युं छे, के जे तने निर्ग्रन्थप्रवचनने विशे आ आवा प्रकारनी प्रतिपत्ति (ज्ञान) लब्ध–प्राप्त अने सुनिर्णीत छे. ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रिय ! शक्र, देवेन्द्र देवराज यावत् शक्र नामना सिंहासनने विशे रही चोराशी हजार सामानिक देवो यावत् बीजा घणा देवो अने

नार, 'भासुरबोंदि' भासुर–देदीप्यमान बोंदि–शरीर जेनुं छे एवुं, 'पलंबवणमालधरं' प्रलंब–लांबी वनमाला–ढींचण सुधी लटकती माळाने धारण करनार, 'दिव्वेणं वण्णेणं' अहीं 'युक्त'नो अध्याहार छे एटले दिव्य वर्ण वडे युक्त, दिव्वेणं गंधेणं, दिव्वेणं फासेणं, दिव्वेणं संघयणेणं दिव्वेणं संठाणेणं' दिव्य गन्ध, दिव्य स्पर्श, दिव्य संघयण अने दिव्य संस्थान वडे युक्त, 'दिव्वाए इड्ढीए' विमान अने वस्त्रभूषणादि रूप दिव्य ऋद्धि वडे, 'दिव्वाए जुईए' दिव्य युक्ति–इष्टपरिवारादिना योग वडे, 'दिव्वाए पभाए' दिव्य प्रभा–प्रभाव वडे-'दिव्वाए छायाए' दिव्य, छाया–प्रतिबिंब वडे, 'दिव्वाए अच्चीए' दिव्य अर्चिष्–प्रकाशनी ज्वाला वडे, 'दिव्वेणं तेएणं' दिव्य कान्ति वडे, 'दिव्वाए लेसाए' दिव्य लेश्या–आत्म परिणाम वडे युक्त एवुं, दश दिशाओने 'उद्योयत्' प्रकाश करतुं, 'प्रभासयत्' शोभावतुं, 'प्रासादीयं' चित्तने आह्लाद करतुं, 'दर्शनीयं' जेने जोता चक्षु थाको न जाय तेवुं, 'अभिरूपं' मनोज्ञ, 'प्रतिरूपं' दरेक जोनारना प्रति रूप जेनुं छे एवुं दिव्य देवरूप विकुर्वे छे. 'विकुर्व्य' विकुर्वीने 'अन्तरीक्षप्रतिपन्नः' आकाशमां रही, 'सकिंकिणिकानि' नाना घुघरीओवाळा पांच वर्णना वस्त्रोने सारी रीते पहेरी तेणे कामदेव श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं ए संबन्ध छे.

एवमाइक्खइ ४–एवं खलु देवा ! जम्बुदीवे दीवे भारहे वासे चम्पाए नयरीए कामदेवे समणोवासए पोसहसालाए पोसहियबम्भचारी जाव दब्भसंथारोवगए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, नो खलु से सक्को केणइ देवेण वा दाणवेण वा जाव गन्धव्वेण वा निग्गन्थाओ पावय-

देवीओना मध्यमां रही आ प्रमाणे कहे छे–हे देवो ! ए प्रमाणे खरेखर जंबूद्वीप नामे द्वीपमां भरतक्षेत्रने विशे चंपा नगरीमां कामदेव श्रमणोपासक पोषधशालामां पोषध सहित अने ब्रह्मचारी यावत् दर्भना संथाराने प्राप्त थयेलो श्रमण भगवान् महावीरनी पासेथी प्राप्त करेली धर्मप्रज्ञप्तिने स्वीकारीने विहरे छे. खरेखर ते कोइ देव, दानव यावत् गान्धर्व वडे निर्ग्रन्थ प्रवचनथी चलायमान करवाने, क्षोभ

'सक्के देविंदे' इत्यादिने विशे यावत् शब्दनुं ग्रहण होवाथी शक्रनुं वर्णन आ प्रमाणे जाणवुं–'वज्जपाणी' वज्र जेना हाथने विशे छे एवो, 'पुरन्दरे' पुर–असुर विशेषना नगरोने दारण–नाश करवाथी पुरन्दर, 'सयक्कऊ' क्रतु शब्द वडे अहीं श्रावकनी प्रतिमा विवक्षित छे. अने ते कार्तिक शेठना भवमां सो क्रतु–प्रतिमा–अभिग्रहविशेष जेओए ग्रहण करी छे ते शतक्रतु–एवी चूर्णिकारनी व्याख्या छे. 'सहस्सक्खे' पांचसो मन्त्रीओनी हजार आंखो थाय छे, माटे तेना संबन्धथी ते सहस्राक्ष कहेवाय छे. मघशब्द वडे मेघ विवक्षित छे, ते जेने वश छे ते मघवान्, 'पागसासणे' पाक नामे बलवान शत्रु, तेने शासन–शिक्षा करवाथी पाकशासन, 'दाहिणड्ढलोगाहिवई' लोकनो दक्षिण दिशानो अर्धभाग तेनो अधिपति, 'बत्तीसविमाणसयसहस्साहिवई' बत्रीश लाख विमाननो अधिपति, 'एरावणवाहणे' एरावण–ऐरावत हस्ती, ते जेनुं वाहन छे एवो, 'सुरिंदे' सुष्ठु राजन्ते–सारी रीते शोभे ते सुरो, तेनो इन्द्र–स्वामी सुरेन्द्र, अथवा सुर–देवोनो इन्द्र ते सुरेन्द्र, कारण के पूर्वे देवेन्द्रपणे प्रतिपादन करेलुं छे अने अहीं सुरेन्द्रपणे प्रतिपादन जाणवुं. अथवा अन्य प्रकारे पुनरुक्तिनो परिहार करवो. 'अयरंवरवत्थधरे' अरजस्–रजरहित निर्मल, अंबर–आकाश तेना जेवा स्वच्छ होवाथी अम्बर कहेवाय छे, एवा वस्त्रोने धारण कर-

णाओ चालित्तए वा खोभित्तए वा विपरिणामित्तए वा'। तए णं अहं सक्कस्स देविन्दस्स देवरण्णो एयमट्ठं असद्दहमाणे ३ इहं हव्वमागए, 'तं अहो णं देवाणुप्पिया! इड्ढी ६ लद्धा ३, तं दिट्ठा णं देवाणुप्पिया! इड्ढी जाव अभिसमन्नागया, तं खामेमि णं देवाणुप्पिया! खमन्तु मज्झ देवाणुप्पिया! खन्तुमरहन्ति णं देवाणुप्पिया! नाइं

पमाडवाने के विपरिणाम करवाने शक्य नथी. त्यार बाद हुं देवेन्द्र देवराज शक्रनी ए वातनी श्रद्धा नहि करतो शीघ्र अहीं आव्यो. अहो! देवानुप्रिय! तें ऋद्धि, द्युति, यश, बल, वीर्य, पुरुषकारपराक्रम प्राप्त करेलुं छे. हे देवानुप्रिय! ऋद्धि में प्रत्यक्ष जोइ, यावद् में सारी रीते जाणी. हे देवानुप्रिय! हुं खमावुं छुं, हे देवानुप्रिय! तमे मने क्षमा आपो, हे देवानुप्रिय! तमे क्षमा आपवाने योग्य छो,

नार, 'आलइयमालमउडे' आलगित-आरोपेली छे माला जेने विशे एवा मुकुटवाळो, 'नवहेमचारुचित्तचंचलकुंडलविलिहिज्जमाणगंडे' नवा अने हेम-सुवर्णना चारु-सुशोभित, चित्र-चित्रवाळा चंचल कुंडलो वडे विलिख्यमान-स्पर्श कराता गंड-गाल जेना छे एवो, 'भासुरबोंदी' भासुर-देदीप्यमान बोंदि-शरीर जेनुं छे एवो, 'पलंबवणमालधरे' प्रलंब-लांबी वनमालाने धारण करनार एवो (इन्द्र) सौधर्म कल्पमां सौधर्मावतंसक विमानने विशे सुधर्मा सभामां 'चउरासीईए सामाणियसाहस्सीणं' चोराशी हजार सामानिक देवो, अहीं यावत् शब्द कहेवाथी तेत्रीश त्रायस्त्रिंश देवो, चार लोकपाल, परिवार सहित आठ अग्रमहिषीओ, त्रण पर्षदो, सात प्रकारना अनीक-सैन्यना देवो, सात अनीकाधिपति-सैन्यना अधिपति अने चारगुणा चोराशी हजार आत्मरक्षक देवोना मध्यमां रही, तेमां त्रायस्त्रिंश-पूज्य गुरुस्थानीय देवो, चार लोकपाल पूर्वादि दिशाना अधिपति सोम, यम, वरुण अने कुबेर, आठ अग्रमहिषी-पट्टराणी, तेनो प्रत्येकनो परिवार पांच हजार देवीओ, बधी मळी परिवार रूप देवीओ चालीश हजार जाणवी. अभ्यन्तर, मध्यम अने बाह्य त्रण पर्षद् जाणवी. पदाति-पायदळ, गज, अश्व, रथ अने वृषभ-ए भेद पांच प्रकारनुं संग्रामने उपयोगी सैन्य अने गन्धर्वानीक-संगीत करनार, अने नाट्यानीक-

भुज्जो करणयाए'त्तिकट्टु पायवडिए पञ्जलिउडे एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो खामेइ, खामेत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। तए णं से कामदेवे समणोवासए निरुवसग्गं तिकट्टु पडिमं पारेइ ॥

७ तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ। तए णं से कामदेवे समणोवासए इमीसे

हुं फरीथी एम करीश नहिं' एम कहीने पगे पड्यो अने हाथ जोडीने ए अर्थने वारंवार खमावे छे. खमावीने जे दिशाथी आव्यो हतो ते दिशाए गयो. त्यारबाद ते कामदेव श्रमणोपासक पोताने उपसर्गरहित जाणीने प्रतिमाने पारे छे.

७. ते काळे अने ते समये श्रमण भगवान् महावीर विहरे छे. त्यारबाद कामदेव श्रमणोपासक आ वातथी विदित थइ 'ए प्रमाणे

नाटक करनार देवो-एम सात प्रकारनुं सैन्य जाणवुं. अनीकाधिपति सात आ प्रमाणे छे-प्रधान पदाति, प्रधान हाथी, एम बीजा पण सैन्याधिपति देवो जाणवा. आत्मरक्षक-अंगनी रक्षा करनारा देवो चोराशी हजार छे, ते सिवाय बीजा घणा देवो अने देवीओनी मध्यमां आ प्रमाणे 'आइक्खइ' सामान्यपणे कहे छे अने भाषते-विशेषतः कहे छे, एनेज 'प्रज्ञापयति' अने प्ररूपयति' ए वे पद वडे अनुक्रमे कहे छे-ते (कामदेव श्रमणोपासक) 'देवेण वा' इत्यादिने विषे यावत् शब्दनुं ग्रहण होवाथी आ प्रमाणे जाणवुं-कोई यक्ष वडे, राक्षस वडे, किन्नर, किंपुरुष, महोरग अने गांधर्व वडे निर्ग्रन्थ प्रवचनथी चलायमान करवो शक्य नथी.

'इड्ढी' इत्यादि. अहीं यावत् शब्द होवाथी आ प्रमाणे समजवुं-जुई, जसो, वलं, वीरियं, पुरिसक्कारपरक्कमे'त्ति। एटले हे कामदेव! तें ऋद्धि-आत्मिक शक्ति, द्युति-तेज, यश, बल, वीर्य अने पुरुषकारपराक्रम प्राप्त करेलुं छे.

'नाइं भुज्जो करणयाए' न निषेधार्थक छे' 'आइं' निपात-अव्यय वाक्यालंकारमां के अवधारण अर्थमां वपराय छे. 'भुज्जो' भूयः-फरीथी करवामां हुं प्रवृत्ति करीश नहि ए तात्पर्य छे.

कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं सेयं खलु मम समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता तओ पडिणियत्तस्स पोसहं पारित्तए'त्ति कट्टु एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता सुद्धप्पावेसाइं वत्थाइं जाव अप्पमहग्घ० जाव मणुस्सवग्गुरापरिक्खित्ते सयाओ गिहाओ पडिणिक्खमइ,पडिनिक्खमित्ता चम्पं नगरिं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव पुण्णभद्दे चेइए जहा संखो जाव पज्जुवासइ। तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य जाव धम्मकहा समत्ता।

श्रमण भगवान् महावीर विचरे छे, तो मारे 'श्रमण भगवान् महावीरने वंदन नमस्कार करीने त्यांथी पाछा आवीने पोषध पारवो श्रेयस्कर छे' एम विचारे छे, विचारीने शुद्ध अने प्रवेश योग्य-बहार जवा योग्य वस्त्रो पहेरे छे, यावत् अल्प अने महामूल्य अलंकार पहेरी मनुष्यरूपी वागुराथी वींटायेलो पोताना घरथी बहार नीकळे छे, नीकळीने चंपानगरीना मध्यभागमां जाय छे. जइने ज्यां पूर्णभद्र चैत्य छे त्यां आवे छे, यावत् शंखनी पेठे पर्युपासना करे छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीरे कामदेव श्रमणोपासकने अने ते मोटी परिषदने धर्मकथा कही, यावत् धर्मकथा समाप्त थइ.

१. 'जहा संखो' त्ति जेम शंख श्रावक भगवतीसूत्रमां कह्यो छे तेम आ कामदेव श्रावक पण कहेवो. तात्पर्य आ छे-बीजा श्रावको सचित्त द्रव्यनो त्याग करवो वगेरे पांच प्रकारना [1]अभिगमने समवसरणमां प्रवेश करतां करे छे, परन्तु शंखे पोषध करेलो

१ सचित्त पदार्थ संगाथे त्याग करवा, २ अचित्त वस्त्रालंकारादिनो त्याग न करवा, अर्थात् वस्त्रालंकारादि पहेरवा, ३ मननी एकाग्रता, ४ एक वस्त्रनु उत्तरासंग करवु, अने ५ भगवंतनुं दर्शन थतां अंजलि करवी—हाथ जोडी प्रणाम करवा.

होवाने लीधे सचित्तादि द्रव्यना अभावथी पांच अभिगम कर्या नथी. कामदेव श्रावक पण पोषधवत युक्त छे माटे शंसना जेवो कह्यो छे. अहीं मूळ पाठमां 'यावत्' शब्द छे. तेथी आ वर्णन जाणवुं—'ते कामदेव श्रावक ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार जमणी बाजुथी प्रदक्षिणा करे छे. करीने वंदन अने नमस्कार करे छे, वंदन अने नमस्कार करीने अत्यन्त पासे नहि, तेम अत्यंत दूर नहि एवी रीते उभो रही शुश्रूषा करतो नमस्कार करतो सन्मुख रही हाथ जोडी पर्युपासना करे छे.

'तए णं समणे भगवं महावीरे कामदेवस्स समणोवासयस्स तीसे य'—आ सूत्रथी आरंभी औपपातिक सूत्रमां कहेल पाठ यावत् 'धर्मकथा समाप्त थई अने परिषद् पाछी गई' त्यां सुधी कहेवो. ते आ प्रमाणे सविशेषपणे बतावाय छे—त्यार बाद श्रमण भगवान् महावीर कामदेव श्रमणोपासकने अने अत्यन्त मोटी ऋषिपरिषद्ने, मुनिपरिषद्ने, यतिपरिषद्ने धर्म कहे छे. तेमां पश्यन्तीति ऋषि ते ऋषिओ—अवधि वगेरे ज्ञानवाळा, मुनि-मौनने धारण करनारा, अर्थात् वाणीनो संयम करनारा, यतयः—धर्म क्रियामां प्रयत्न करनारा. 'अणेगसयवंदाए' अनेक सेंकडा प्रमाण वृन्द-समूह जेने विशे छे एवी, 'अणेगसयवन्दपरिवाराए' अनेक सेंकडो प्रमाण वृन्द—समूह रूप परिवार जेने विशे छे एवी परिषद्ने धर्म कहे छे ए संबन्ध छे. भगवान् केवा छे तेनुं वर्णन करे छे—'ओहबले' ओघ-अव्यवच्छिन्न बल जेनुं छे एवा, 'अइबले' समग्र पुरुषो, देवो अने तिर्यंचो करतां अधिक बल जेनुं छे एवा, 'महाबले' मोटुं बल जेनुं छे एवा, एनुंज सविस्तर वर्णन करे छे—'अपरिमियबलवीरियतेयमाहप्पकंतिजुत्ते' अपरिमित बल-शारीरिक सामर्थ्य, वीर्य-जीवसामर्थ्य, तेज-प्रकाश, माहात्म्य-महानुभावपणुं अने कांति-रम्यता वडे युक्त, 'सारयनवमेहथणियदुंदुभिसरे' शरद् काळना नवीन मेघना स्तनित-शब्दनी पेठे मधुर शब्द जेनो छे अने दुंदुभिना जेवो स्वर जेनो छे एवा, 'उरे वित्थडाए' छातीमां विशाल, (आ पदोनो सरस्वतीनो साथे संबन्ध छे) कारण के तेमनी छाती विस्तीर्ण छे, 'कंठे पवट्टियाए' कंठने विशे गोळाकार, कारण के गळानुं छिद्र वर्तुलाकार छे. सिरे संकिण्णाए' मस्तकने विशे संकीर्ण थती, कारण के शरीरनो विस्तार मस्तक वडे सांकडो थाय

छे, 'अगरलाए' स्पष्ट वर्णवाळी, 'अमम्मणाए' वच्चे अटक्या सिवाय अस्खलित बोलाती, 'सव्वक्खरसन्निवाइयाए' सर्व अक्षरना संयोगवाळी, 'पुण्णरत्ताए' परिपूर्ण मधुर, 'सव्वभासाणुगामिणीए' सर्व भाषारूपे परिणमनस्वभाववाळी, 'सरस्सईए' सरस्वती-वाणीवडे जोयणनीहारिणा सरेणं' योजनगामी शब्द वडे 'अद्धमागहाए भासाए भासइ अरहा धम्मं परिकहेइ' अर्ध मागधी भाषा, के जेमां 'र' नो ल अने 'स' नो श थाय छे इत्यादि मागधी भाषानुं लक्षण संपूर्ण नथी, ते मागधी भाषा वडे 'अरहा-अर्हन्-पूजाने योग्य अथवा अरहस्य-जेने कांई पण रहस्य-छानुं नथी, कारण के ते सर्वज्ञ छे, एवा भगवान् श्रद्धा करवा योग्य, जाणवा योग्य अने आचरवा योग्य वस्तुने विषे श्रद्धान, ज्ञान अने आचरणरूप धर्मने 'परिकथयति' समस्तपणे, समग्र विशेषने कथन करवा पूर्वक कहे छे. तथा 'सव्वेसिं आरियमणारियाणं अगिलाए धम्ममाइक्खइ' केवळ ऋषिपरिषदादिने धर्म कहे छे एम नहि, परन्तु जे वंदनादि माटे आवेला ते बधा आर्य-आर्यदेशमां उत्पन्न थयेलाने अने अनार्य-म्लेच्छोने अग्लानि-खेद पाम्या सिवाय धर्म कहे छे.

हवे धर्मकथानुं स्वरूप बतावे छे—'अत्थि लोए, अत्थि अलोए' लोक छे, अलोक छे. ए प्रमाणे जीव, अजीव, बंध, मोक्ष, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, वेदना अने निर्जरा छे. ए पदार्थोनुं अस्तित्व बताववा वडे शून्यवादी, विज्ञानवादी, निरात्मवादी, अद्वैतवादी, एकान्त क्षणिकवादी, नित्यवादी अने नास्तिकादि कुदर्शनोनो निषेध करवाथी परिणामी वस्तुनुं प्रतिपादन द्वारा सर्व आ लोक अने परलोकनी क्रियाओनुं निर्दोषपणुं बताव्युं. तथा अरिहंत, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव, नरक, नारको, तिर्यंचो, तिर्यंचस्त्रीओ, माता, पिता, ऋषिओ, देवो, देवलोको, सिद्धि, सिद्धो, परिनिर्वाण अने परिनिर्वृत—निर्वाणने प्राप्त थयेला जीवो छे. सिद्धि—कृतार्थता अने परिनिर्वाण—सर्व कर्म वडे करायेला विकारना अभावथी अतिशय स्वस्थता, ए प्रमाणे सिद्ध अने परिनिर्वृत—निर्वाणने प्राप्त थयेलानो भेद जाणवो. तथा प्राणातिपात, मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह, क्रोध, मान, माया, लोभ, प्रेम-राग, द्वेष, कलह, अभ्याख्यान (खोटुं आळ मूकवुं), पैशुन्य, अरतिरति, परपरिवाद-निंदा, मायामृषावाद अने मिथ्यादर्शनशल्य छे. प्राणातिपातविरमण, यावत् क्रोधविवेक-क्रोधनो त्याग यावत् मिथ्यादर्शनशल्यविवेक छे. अधिक कहेवाथी शुं? परन्तु सर्व

अस्तिभावने अस्तिरूपे कहे छे अने सर्व नास्तिभावने नास्तिरूपे कहे छे. दानादि सारा कर्मो शुभफळवाळां अने दुष्ट कर्मो अशुभ फळवाळां थाय छे. आत्मा शुभाशुभ कर्मनो बंध करे छे, परन्तु सांख्यमतनी पेठे नथी बंधातो एम नथी. जीवो उत्पन्न थाय छे एटले जन्मे छे. कल्याण अने पाप-शुभा शुभ कर्म फळवाळां छे. ए प्रमाणे धर्मनो उपदेश करे छे. एटले ज्ञेय जाणवा योग्य अने श्रद्धा करवा योग्य तत्त्वने विषे जाणवा अने श्रद्धा करवा रूप धर्म कहे छे. तथा 'इणमेव निग्गन्थे पावयणे सच्चे, आ प्रत्यक्ष निर्ग्रंथ प्रवचन सत्य छे, कारण के सुवर्णनी पेठे 'कषादि वडे शुद्ध छे 'अणुत्तरे' जेनाथी बीजुं कोई प्रधान नथी एवुं छे, 'केवलिए' अद्वितीय छे. 'संसुद्धे' शुद्ध-निर्दोष छे, 'पडिपुण्णे' सद्गुणोथी परिपूर्ण छे, 'नेयाउए' न्याययुक्त छे, 'सल्लगत्तणे' मायादि शल्यनो कर्तन-नाश करनार छे. 'सिद्धिमग्गे' सिद्धिनो-हितप्राप्तिनो मार्ग छे, 'मुत्तिमग्गे' मुक्तिना-अहितना त्यागना मार्गरूप छे. 'निव्वाणमग्गे' निर्वाण-सिद्धक्षेत्रनी प्राप्तिनो मार्ग छे, 'परिनिव्वाणमग्गे' कर्मनो अभाव थवाथी उत्पन्न थयेला सुखनो मार्ग छे, 'सव्वदुक्खपहीणमग्गे' सर्व दुःखना क्षयनो मार्ग छे. हवे आ प्रवचननुं स्वरूप फळ द्वारा बतावे छे—आ प्रवचनने विषे रहेला जीवो कृतार्थपणे सिद्ध थाय छे, केवलिपणा वडे बोध पामे छे, कर्मवडे मुक्त थाय छे, अने निर्वाण पामे छे. 'एगच्चा पुण एगे भयंतारो' एकार्चाः-एक-अद्वितीय अर्च्य-पूजवा योग्य अथवा एकार्चा—संयम अनुष्ठानने विषे एक-असदृश-अनुपम अर्चा-शरीर जेमनुं छे एवा केटलाएक छे जेओ सिद्ध थता नथी, पण तेओ निर्ग्रन्थप्रवचन-जिनशासनना भक्तारः-सेवा करनारा, अथवा भदन्त-कल्याण युक्त, भट्टारक-पूज्य, अथवा भयत्रातारः—भयथी रक्षण करनारा पूर्व कर्म बाकी होवाथी महार्द्धिवाळा, महाद्युतिवाळा, महायश

1 "विधिप्रतिषेधो कष इति" । अहिंसा, संयम अने तप वगेरेनुं विधान अने हिंसादिनो निषेध ते कष. 'तत्संभवपालनाचेष्टोक्तिश्छेद इति" विधि अने प्रतिषेधनी उत्पत्ति अने तेना पालन करवानी चेष्टानुं प्रतिपादन ते छेद. "उभयनिवन्धनभाववादस्ताप इति" विधि अने प्रतिषेधनुं परिणामी कारण जीवादि भावनी प्ररूपणा करवी ते ताप. एटले स्याद्वाद वडे जीवादि भावोनुं प्रतिपादन करवु. जेम सुवर्णनी कष, छेद अने ताप वडे परीक्षा कराय छे तेम धर्मनी उक्त स्वरूप कषादि वडे परीक्षा कराय छे. जे धर्म कषादि वडे निर्दोष छे ते शुद्ध धर्म कही शकाय छे. जुओ धर्मबिन्दु.

याळा महाबळवाळा, महासुखवाळा, दूर रहेला अने लांबा काळनी स्थितिवाळा कोइ पण देवलोकमां देवपणे उत्पन्न थाय छे ते देवो महाऋद्धिवाळा, यावत् लांबा काळनी स्थितिवाळा, हार वडे सुशोभित छातीवाळा, कडां अने त्रुटित-बाहुरक्षक वडे अक्कड भुजावाळा, अंगद नानुवध कुंडल अने जेणे गंडस्थलनो स्पर्श कर्यो छे एवा कर्णपीठ-कानना आभूषणने धारण करनारा, विचित्र हाथना आभरणवाळा विचित्र माल्ययुक्त मुकुट जेओने छे एवा, कल्याणकारी श्रेष्ठ वस्त्र जेणे पहेरेल छे एवा कल्याणकारी श्रेष्ठ माळा अने विलेपनने धारण करनारा, भासुर-देदीप्यमान बोन्दि-शरीर जेओनु छे एवा, लांबी लटकती वनमालाने धारण करनारा, दिव्य वर्ण वडे, दिव्य गंध वडे दिव्य स्पर्श वडे, दिव्य संघयण वडे, दिव्य संस्थान वडे, दिव्य ऋद्धि वडे, दिव्य द्युति वडे, दिव्य प्रभा वडे, दिव्य छाया वडे, दिव्य-अर्चि-प्रकाशनी ज्वाला वडे, दिव्य तेज वडे अने दिव्य लेश्या वडे दस दिशाओने उद्योतित करता, प्रकाशित करता कल्याणकारकगतिवाळा कल्याणकारक स्थितिवाळा आगमेसिभद्दा' भविष्य काळे थनारु छे भद्र-कल्याण जेओनु एवा प्रसन्नता करनारा दर्शनीय अभिरूप मनोहर प्रतिरूप—विशिष्ट रूपवाळा एवा देवो देवपणे उत्पन्न थाय छे ए प्रमाणे जे अहीं धर्मनु फळ छे ते कहे छे ए प्रमाणे चार स्थानके जीवो नैरयिकपणे कर्म करे छे अने नैरयिकपणे कर्म करीने नैरयिकोमां उत्पन्न थाय छे ते आ प्रमाणे-महारंभ वडे, महापरिग्रह वडे, पंचेन्द्रियनी हिंसा वडे अने मांसाहार वडे ए प्रमाणे ए पाठ वडे तिर्यंचोमां माया वडे, असत्य वडे उत्कंचन वडे अने वंचन वडे तेमां माया छेतरवानी बुद्धि उत्कंचन-भोळा माणसोने छेतरवामां प्रवृत्त थयेला पासे रहेला चतुर पुरुषोने खबर न पडे तेवी रीते क्षणवार प्रवृत्ति न करवी वंचन छेतरवु मनुष्योमां प्रकृतिना भद्रपणाथी विनीतपणाथी दयाथी अने अमात्सर्य अदेखाइ रहितपणाथी उपजे छे प्रकृतिनो भद्रता-स्वभावथीज बीजाने संताप न करवो. देवोमां सराग संयमथी देश विरतिथी अकामनिर्जराथी अने बालतप वडे उपजे छे ए प्रमाणे नारक वगेरेना कारणोनो उपदेश करे छे जे प्रकारे नरकमां जवाय छे जे नरको छे अने नरकमां जे वेदना छे(तेने कहे छे)अने तिर्यचयोनिमां शारीरिक अने मानसिक दुःखोने कहे छे (१) व्याधि जरा मरण अने वेदना वडे प्रचुर-व्याप्त तथा अनित्य एवा मनुष्यपणाने कहे छे देवो देवलोको अने देवोने विशे देवोना

सुखो कहे छे (२). नरक, तिर्यच, मनुष्यभाव, देवलोक, सिद्धि, सिद्धिस्थान अने छ जीवनिकायने कहे छे (३) जे प्रकारे जीवो बंधाय छे मूकाय छे, कलेश पामे छे अने प्रतिबंध विनाना जेम दुःखोनो अन्त करे छे ते कहे छे. (४). जे प्रकारे आर्त अने आर्तचित्तवाळा जीवो दुःखसागरने प्राप्त थाय छे अने जे प्रकारे वैराग्यने प्राप्त थयेला कर्मरूपी समुद्गक-पेटीने उघाडे छे, आर्त-शरीरथी दुःखी थयेला, आर्तचित्त वाळा-शोकादिथी पीडित थयेला, अथवा आर्तध्यानथी पीडित थयेला मनवाळा जाणवा (५) जे प्रकारे रागथी (अने द्वेषथी) करेलां कर्मनो फलविपाक प्राप्त थाय छे अने जे प्रकारे क्षीण करेलां छे कर्म जेणे एवा सिद्धो सिद्धालयने प्राप्त थाय छे ते कहे छे. (६)

हवे आचरण करवा योग्यनुं आचरण रूप धर्म बतावे छे-ते धर्म बे प्रकारनो छे के जे धर्म वडे सिद्धो सिद्धालयने प्राप्त करे छे ते आ प्रमाणे-आगारधर्म अने अनगारधर्म. अनगारधर्म सर्वथा सर्व धन धान्यादि प्रकारने आश्रयी सर्व आत्म परिणाम वडे गृहस्थावासथी अनगारिता-साधुपणाने प्राप्त थयेलाने सर्वथा प्राणतिपातथी विरमण, ए प्रमाणे मृषावाद, अदत्तादान, मैथुन, परिग्रह अने रात्रिभोजनथी विरमण करवा रूप जाणवो. हे आयुष्मन्! आ अनगारसामायिक धर्म कह्यो छे. ए धर्मनी शिक्षा-समज अने आचरण करवामां तत्पर थयेला निर्ग्रन्थ-अने निर्ग्रन्थी-साध्वी विहरता आज्ञाना आराधक थाय छे. अगारधर्म-गृहस्थधर्म बार प्रकारनो कहेलो छे. ते आ प्रमाणे-पांच अणुव्रत, त्रण गुणव्रत अने चार शिक्षाव्रत. पांच अणुव्रत आ प्रमाणे छे—१ स्थूल प्राणातिपातथी विरमण, २ एम स्थूल मृषावादथी विरमण, ३ स्थूल अदत्तादानथी विरमण, ४ स्वदारसंतोष अने ५ इच्छापरिमाण त्रण गुणव्रत आ प्रमाणे छे-१ अनर्थदंडविरमण, २ दिशाव्रत अने ३ उपभोगपरिभोगपरिमाण. चार शिक्षाव्रत छे, ते आ प्रमाणे—१ सामायिक, २ देशावकाशिक, ३ पोषधोपवास अने ४ अतिथिसंविभाग. त्यारबाद अपश्चिममारणान्तिकसंलेखना-शरीर अने कषायादिने कृश करनार तप विशेषनु जुषणाऽऽराधना, एटले सौथी छेल्ले मरणान्ते संलेखना-तपविशेषनुं जुषणा-सेवन करवुं पांच अणुव्रतना उपकारक व्रत ते गुणव्रत कहेवाय छे अने जे शिक्षा-पुनः पुनः आचरवा योग्य ते शिक्षाव्रत कहेवाय छे. हे आयुष्मन्! आ आगारसामायिक धर्म कह्यो छे. आ धर्मनी शिक्षा-समज अने आचरणमां तत्पर थयेल श्रावक अने श्राविका विहरता आज्ञाना आराधक थाय छे.

८. कामदेवा ! इ समणे भगवं महावीरे कामदेवं समणोवासयं एवं वयासी–से नूणं कामदेवा ! तुब्भं पुव्व-रत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तिए पाउब्भूए, तए णं से देवे एगं महं दिव्वं पिसायरूवं विउव्वइ, विउव्वि-

८ "हे कामदेव !" एम कही श्रमण भगवंत महावीरे कामदेव श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं–हे कामदेव ! खरेखर मध्य-रात्रिना समये तारी पासे कोई एक देव प्रगट थयो हतो. ते पछी ते देवे एक मोडुं पिशाचनुं रूप विकुर्व्युं. विकुर्वीने गुस्से थयेला

त्यार बाद अत्यन्त मोटी मनुष्यनी परिषद् श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्म सांभळीने, अवधारीने हृष्ट-प्रसन्न हृदयवाळी थइने उठे छे, उठीने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार आदक्षिण-जमणी बाजुथी प्रदक्षिणा करे छे, प्रदक्षिणा करीने वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने केटलायक मुंड थइने गृहवासथी साधुपणाने अंगीकार करे छे अने केटलायक पांच अणुव्रत अने सात शिक्षा व्रत रूप बार प्रकारना गृहस्थ धर्मने प्राप्त थाय छे. बाकीनी परिषद् श्रमण भगवंत महावीरने वंदन करी आ प्रमाणे कहे छे–हे भगवन् ! आपे निर्ग्रन्थ प्रवचन सारी रीते कह्युं छे, भेद बतावता थडे सारी रीते प्ररूप्युं छे, वचननी स्पष्टताथी सारी रीते भाष्युं छे. शिष्योने विषे विनियोग करवाथी व्यवस्थित कहेलुं छे, तत्त्वना कहेवाथी सारी रीते भाव्युं छे, हे भगवन् ! निर्ग्रन्थ प्रवचन अनुत्तर-जेनाथी बीजुं कोइ श्रेष्ठ नथी एवुं छे. ते धर्मने कहेता तमे उपशमने कहो छो, उपशम-क्रोधादिनो निग्रह करवो. उपशमने कहेता विवेकने कहो छो, विवेक-बाह्य परिग्रहनो त्याग. विवेकने कहेता विरमणने कहो छो, विरमण-प्राणातिपातादिथी मननी निवृत्ति, विरमणने कहेता पाप कर्मने नहि करवानुं कहो छो. अर्थात् उपशमादि रूप धर्मने कहो छो ए तात्पर्य छे. बीजा कोइ श्रमण अथवा ब्राह्मण नथी, जे आवा प्रकारना धर्मने कहेवाने समर्थ होय, तो पछी आथी उत्तम धर्म कहेवाने माटे शुं कहेवुं. ए प्रमाणे वंदन करीने परिषद् जे दिशा तरफथी आवी हती ते दिशा तरफ गइ.

त्ता आसुरुत्ते ४ एगं महं नीलुप्पल० जाव असिं गहाय तुमं एवं वयासी–हं भो कामदेवा ! जाव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तं तुमं तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरसि, एवं वण्णगरहिया तिण्णिवि उवसग्गा तहेव पडिउच्चारेयव्वा जाव देवो पडिगओ । से नूणं कामदेवा ! अट्ठे समट्ठे ? हन्ता, अत्थि । 'अज्जो ! इ समणे भगवं महावीरे बहवे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तेत्ता एवं वयासी–जइ ताव अज्जो ! समणोवासगा गिहिणो गिहमज्झावसन्ता दिव्वमाणुसतिरिक्खजोणिए उवसग्गे सम्मं सहन्ति जाव अहियासेन्ति, सक्का पुणाइं अज्जो ! समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्गं गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं दिव्वमाणुसतिरिक्खजो-

तेणे एक मोटी काळा कमळना जेवी तलवार ग्रहण करी तने आ प्रमाणे कह्युं–हे कामदेव ! तुं यावत् जीवितथी मुक्त थईश. ते देवे तने ए प्रमाणे कह्युं एटले तुं निर्भय रह्यो. एम वर्णन रहित त्रणे उपसर्गो तेम ज फरीथी कहेवा यावत् देव पाछो गयो. हे कामदेव ! आ अर्थ समर्थ–यथार्थ छे ? हा, छे. श्रमण भगवंत महावीरे 'हे आर्यो' ! एम संबोधी घणा श्रमण निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओने आ प्रमाणे कह्युं–'हे आर्यो ! जो गृहवासमां रहेना गृहस्थ श्रमणोपासको दिव्य, मनुष्य अने तिर्यंच संबन्धी उपसर्गोने सम्यक् सहे छे, यावत् शान्तिथी सहे छे, तो हेआर्यो ! द्वादशाङ्गरूप गणिपिटकने अध्ययन करनारा श्रमण निर्ग्रन्थोए दिव्य, मनुष्य अने तिर्यंच संबन्धी उपसर्गो सम्यक् सहन करवा यावत् विशेषतः सहन करवा योग्य छे. त्यार बाद ते घणा श्रमण निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओ

८ 'अट्ठे समट्ठे' त्ति आ अर्थ छे अथवा अर्थ–में कहेली वस्तु समर्थ–संगत छे. 'हन्ता' ए कोमळ आमन्त्रणवाची छे.
'अज्जो' त्ति 'हे आर्यो !' ए प्रमाणे बोलावीने कह्युं 'सहन्ति' सहन करे छे, यावत् शब्दना पाठथी आ जाणवुं–'खमन्ति, तितिक्खन्ति'

णिए सम्मं सहित्तए जाव अहियासित्तए। तओ ते बहवे समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति। तए णं से कामदेवे समणोवासए हट्ठ० जाव समणं भगवं महावीरं पसिणाइं पुच्छइ, अट्ठमादियइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए। तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ चम्पाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

९. तए णं से कामदेवे समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ, तए णं से कामदेवे

श्रमण भगवंत महावीरना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे स्वीकारे छे. त्यार पछी हृष्ट–प्रसन्न थइ यावत् श्रमण भगवंत महावीरने प्रश्नो पूछे छे, तेनो अर्थ ग्रहण करे छे, अने श्रमण भगवंत महावीरने त्रण वार वदन–नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने जे दिशामांथी आव्यो हतो ते दिशामां पाछो जाय छे. त्यार बाद श्रमण भगवान् महावीर अन्य कोई दिवसे चम्पा नगरीथी नीकळे छे अने नीकळी बहार देशोमां विहार करे छे.

९. ते पछी कामदेव श्रमणोपासक प्रथम श्रावकनी प्रतिमाने अंगीकार करीने विहरे छे. त्यार बाद ते कामदेव श्रमणोपासक घणा शीलव्रत वगेरेथी आत्माने भावित करी वीश वरस सुधी श्रमणोपासक पर्यायने पाळी, अगियार श्रावकनी प्रतिमाओने सम्यक्–

ए यथा पकार्थक छे. तेनी विशेषता पण बतावेली छे ते अन्य ग्रन्थथी जाणी लेवुं.

'निक्खेवओ' त्ति निगमन–उपसंहारवाक्य छे. ते आ प्रमाणे—'एवं खलु जम्बू! समणेणं जाव संपत्तेणं दोच्चस्स अज्झयणस्स

समणोवासए बहूहिं सीलव्वएहिं जाव भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासगपरियागं पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएणं फासेत्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसयस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणाभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने। तत्थ णं अत्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता, कामदेवस्सऽवि देवस्स चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । से णं भन्ते ! कामदेवे ताओ देवलोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणन्तरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिइ, कहिं उववज्जिहिइ ? गोयमा ! महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । निक्खेवो । सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं बीतियं अज्झयणं समत्तं ॥

विधिपूर्वक काया वडे स्पर्शी एक मासनी संलेखना वडे आत्माने क्षीण करी साठ भक्त (टंक) अणसण वडे छेदी-व्यतीत करी, आलोचना करी, प्रतिक्रमी समाधिने प्राप्त थइ कालसमये काळ करी सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक महाविमाननी उत्तरपूर्व दिशाए अरुणाभ विमानने विशे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां केटलाएक देवोनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. कामदेव देवनी पण चार पल्योपमनी स्थिति छे. हे भगवन् ! कामदेव ते देवलोकथी आयुष्यना क्षय थवाथी, भवना क्षय थवाथी, स्थितिना क्षय थवाथी तुरत च्यवी क्यां जशे ? क्यां उत्पन्न थशे ? हे गौतम ! महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपद पामशे. निक्षेप-उपसंहार कहेवो.

सातमा उपासक दशांगना बीजा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.

अयमट्ठे पन्नत्ते त्ति. ए प्रमाणे हे जम्बू ! यावत् निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरे बीजा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे.

उपासकदशांगना बीजा अध्ययननो टीकानुवाद समाप्त

तइयं अज्झयणं ।

१. उक्खेवो तइयस्स अज्झयणस्स । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी, कोट्ठए चेइए, जियसत्तू राया । तत्थ णं वाणारसीए नगरीए चुलणीपिया नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जाव अपरिभूए । सामा भारिया । अट्ठ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ वुड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया

३ चुलनीपिता अध्ययन

१ त्रीजा अध्ययननो उपोद्घात कहेवो. ए प्रमाणे हे जम्बू ! ते काळे अने ते समये वाराणसी नामे नगरी हती. कोष्ठक चैत्य हतुं. जितशत्रु राजा हतो. ते वाराणसी नगरीमां चुलनीपिता नामे गृहपति रहे छे, ते आढ्य-धनिक यावत् कोईथी पराभव न पामे तेवो छे. तेने श्यामा नामे भार्या छे. तेणे आठ हिरण्यकोटि निधानमां मूकेली, आठ हिरण्यकोटि वृद्धि-व्याजे मूकेली अने आठ हिरण्यकोटि धनधान्यादिना विस्तारमां रोकेली छे. तेने दश हजार गायनुं एक व्रज एवां आठ व्रजो छे. ते आ-

१. हवे त्रीजा अध्ययननी व्याख्या करीए छीए. ते सुगम छे. परन्तु 'उक्खेवो' उत्क्षेप-उपोद्घात त्रीजा अध्ययननो कहेवो जेम. जे आ प्रमाणे छे-हे भगवन् ! यावत् निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवंत महावीरे उपासक दशाना त्रीजा अध्ययननो आ अर्थ

दसगोसाहस्सिएणं वएणं, जहा आणन्दे राईसर० जाव सव्वकज्जवड्ढावए यावि होत्था। सामी समोसढे, परिसा निग्गया, चुलणीपियावि जहा आणन्दो तहा निग्गओ, तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ। गोयमपुच्छा तहेव सेसं जहा कामदेवस्स जाव पोसहसालाए पोसहिए बम्भचारी समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ।

२. तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भूए।

नंदनी पेठे राजा, ईश्वर-शेठ वगेरेने (घणा कार्योमां पूछवा योग्य) यावत् सर्व कार्योनो वधारनार हतो. महावीर स्वामी समोसर्या, परिषद् वांदवाने नीकळी. चुलनीपिता पण आनन्दनी जेम वांदवा नीकळ्यो अने तेनी पेठे ज गृहस्थधर्मनो स्वीकार करे छे. गौतम स्वामीनी पृच्छा तेमज जाणवी. (एटले गौतम स्वामी आनन्द संबन्धे प्रश्न करे छे के हे भगवन्! आनन्द श्रमणोपासक देवानुप्रिय एवा आपनी पासे प्रव्रज्या ग्रहण करवाने समर्थ छे? इत्यादि प्रश्नो तेमज कहेवा.) बाकी बधुं कामदेवनी पेठे जाणवुं. यावत् पोषधशालामां पोषधसहित अने ब्रह्मचारी (चुलनीपिता) श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी प्राप्त थयेल धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे.

२. त्यार बाद ते चुलनीपिता श्रमणोपासकनी पासे मध्य रात्रिना समये एक देव प्रगट थयो. ते देवे एक मोटी काळा कमळ जेवी

कह्यो छे, तो हे भगवन्! त्रीजा अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे? आ स्पष्ट छे. तथा क्वचित् कोष्ठक चैत्य छे अने क्वचित् महाकामवन चैत्य छे. श्यामा नामे भार्या छे.

तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल० जाव असिं गहाय चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया ! समणोवासया ! जहा कामदेवो जाव न भञ्जसि तो ते अहं अज्ज जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्ले करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि ।

यावत् असि-तलवार लइने चुलनीपिता श्रमणोपासकने ए प्रमाणे कह्युं-'हे चुलनीपिता श्रमणोपासक ! इत्यादि कामदेवने कह्या प्रमाणे कहेवुं, यावत् व्रत वगेरेने भांगीश नहिं तो हुं आजे तारा ज्येष्ठ पुत्रने तारा पोताना घरथी लई जईश अने लईने तारा समक्ष तेनो घात करीश. घात करीने त्रण 'मांससोल्ले' मांसना टुकडा करीश. करीने 'आदाणभरियंसि' आधण-पाणी, तेल वगेरेथी भरेला कडायामां नांखी उकाळीश. उकाळीने तारा शरीरने मांस अने लोही वडे छांटीश. जे प्रकारे तुं आर्तध्याननी परवशताथी पीडित थयेलो अकाळे ज जीवितथी मुक्त थईश.

१. 'तओ मंससोल्ले'त्ति त्रीणि मांसशूल्यानि-शूले पच्यन्ते शूळमां-लोढाना अणीवाळा सळीयामां परोवीने पकावाय-शेकाय ते शूल्य एटले पाणी विना पकावेलुं मांस एवो अर्थ थाय छे, परन्तु मांस शब्दना संनिधानथी टीकाकारे तेनो मांसना खंड एवो अर्थ कर्यो छे. एटले त्रण मांसना खंड करे छे ए तात्पर्य छे. 'आदाणभरियंसि' आदाण-आद्रहण-आंधण पाणी तेल वगेरे, जे कोइ पण एक द्रव्यने गरमाया माटे अग्नि उपर उकाळाय छे, ते वडे भरेला 'कडाहंसि' लोढाना कडायाने विषे 'अद्दहेमि' आद्रहयामि-उकाळीश. 'आयञ्चामि' आसिञ्चामि-छांटीश.

३. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता दोचंपि तचंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया! समणोवासया! तं चेव भणइ,सो जाव विहरइ। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता आसुरुत्ते ४ चुलणीपियस्स समणोवासयस्स जेट्ठं पुत्तं गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता अग्गओ घाएइ, घाएत्ता तओ मंससोल्लए करेइ, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेइ, अद्दहेत्ता चुलणीपियस्स समणोवासयस्स गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चइ। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तं उज्जलं जाव अहियासेइ। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता दोचंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-

---

३. त्यार बाद ते चुलनीपिता श्रमणोपासक ते देवे ए प्रमाणे कह्युं एटले भय पाम्या सिवाय यावत् विहरे छे. त्यार पछी ते देव चुलनीपिता श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो यावत् जुए छे. निर्भय रहेलो जोइने तेणे बीजी वार अने त्रीजी वार पण चुलनीपिता श्रमणोपासकने ए प्रमाणे कह्युं-हे चुलनीपिता श्रमणोपासक! इत्यादि तेमज कहे छे अने ते यावत् तेमज विहरे छे. त्यार पछी चुलनीपिता श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो यावत् जोईने गुस्से थयेलो ते देव चुलनीपिता श्रमणोपासकना ज्येष्ठ पुत्रने घरथी लई जाय छे, लईने तेना समक्ष तेनो घात करे छे, घात करीने त्रण मांसना टुकडा करे छे, टुकडा करीने आधण-पाणी अने तेल वगेरेथी भरेला कडायामां उकाळे छे. उकाळीने चुलनीपिता श्रमणोपासकना शरीरने मांस अने रुधिर वडे छांटे छे. त्यार बाद ते चुलनीपिता श्रमणोपासक उज्ज्वल-केवळ दुःखरूप वेदना यावत् सहन करे छे. त्यार पछी ते देव चुलनीपिता श्रमणो-

हं भो चुलणीपिया! समणोवासया! अपत्थियपत्थया! जाव न भञ्जसि तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, जहा जेट्ठं पुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ। एवं तच्चंपि कणीयसं जाव अहियासेइ।

४-५-६. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता चउत्थंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी–"हं भो चुलणीपिया! समणोवासया! अपत्थियपत्थया! ४ जइ णं तुमं जाव न भञ्जसि तओ अहं अज्ज जा इमा तव माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया तं ते साओ गिहाओ नीणेमि,

पासकने निर्भय रहेलो यावत् जुए छे, जोइने तेणे बीजी वार पण चुलनीपिता श्रमणोपासकने ए प्रमाणे कह्युं–अप्रार्थितनी (मरणनी) प्रार्थना करनार हे चुलनीपिता श्रमणोपासक! यावत् व्रत वगेरेने तुं नहि भांगे तो हुं आजे तारा मध्यम–वचला पुत्रने तारा पोताना घरथी लई जईश. लईने तारा समक्ष तेनो घात करीश–इत्यादि जेम ज्येष्ठ पुत्र संबन्धे कह्युं हतुं तेम कहे छे अने ते प्रमाणे करे छे. ए प्रमाणे त्रीजा नाना पुत्रने पण करे छे. यावत् (चुलनी पिता) दुःखरूप वेदना सहन करे छे.

४. त्यार बाद ते देव चुलनीपिता श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे. जोईने तेणे चोथी वार पण चुलनीपिता श्रमणोपासकने ए प्रमाणे कह्युं–अप्रार्थित(मरण)नी प्रार्थना करनार हे चुलनीपिता श्रमणोपासक! जो तुं यावत् व्रतादिने भांगीश नहि तो आजे हुं जे आ तारी माता भद्रा सार्थवाही देव, गुरु अने जननीरूप तथा गर्भपालनादि रूप अत्यन्त दुष्कर करनारी छे, तेने तारा पोताना घरथी लई जईश. लईने तारी आगळ तेनो घात करीश. घात करीने त्रण मांसना टुकडा करीश. करीने आदान–आधण तेल वगेरेथी भरेला

नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, २ चुलणीपियं समणोवासयं दोचंपि तचंपि एवं वयासी—हं भो चुलणीपिया! समणोवासया! तहेव जाव ववरोविज्जसि। "तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५—अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, २ मम अग्गओ घाएइ, २ जहा कतं तहा

कटायामां उकाळीश. उकाळीने तारा शरीरने मांस अने लोही वडे छांटीश. जे रीते तुं आर्तध्याननी अत्यन्त परवशताथी पीडित थयेलो अकाळे ज जीवितथी मुक्त थईश. त्यार पछी ते चुलनीपिता श्रमणोपासक ते देवे ए प्रमाणे कह्युं एटले निर्भय थईने विहरे छे. त्यार पछी ते देव चुलनीपिता श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे, जोइने चुलनीपिता श्रमणोपासकने तेणे बीजी वार अने त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कह्युं—हे चुलनीपिता श्रमणोपासक! इत्यादि तेमज कहेवुं यावत् तुं अकाळे ज जीवितथी मुक्त थईश.

५. त्यार बाद ते देव वडे बीजीवार अने त्रीजीवार पण ए प्रमाणे कहेवायेला चुलनीपिता श्रमणोपासकने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय-संकल्प थयो—अहो! आ अनार्य अने अनार्यबुद्धिवाळो पुरुष अनार्य पाप कर्म करे छे. जे मारा ज्येष्ठ पुत्रने मारा पोताना घर थकी लइ जाय छे. लईने मारी आगळ घात करे छे. घात करीने—इत्यादि जे प्रमाणे (देवे) कर्युं हतुं तेम चिन्तवे

हं भो चुलणीपिया! समणोवासया! अपत्थियपत्थया! जाव न भञ्जसि तो ते अहं अज्ज मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, जहा जेट्ठं पुत्तं तहेव भणइ, तहेव करेइ। एवं तच्चंपि कणीयसं जाव अहियासेइ।

४-५-६. तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता चउत्थंपि चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-"हं भो चुलणीपिया! समणोवासया! अपत्थियपत्थया! ४ जइ णं तुमं जाव न भञ्जसि तओ अहं अज्ज जा इमा तव माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया तं ते साओ गिहाओ नीणेमि,

पासकने निर्भय रहेलो यावत् जुए छे, जोइने तेणे त्रीजी वार पण चुलनीपिता श्रमणोपासकने ए प्रमाणे कह्युं-अप्रार्थितनी (मरणनी) प्रार्थना करनार हे चुलनीपिता श्रमणोपासक! यावत् व्रत वगेरेने तुं नहि भांगे तो हुं आजे तारा मध्यम-वचला पुत्रने तारा पोताना घरथी लई जईश. लईने तारा समक्ष तेनो घात करीश-इत्यादि जेम ज्येष्ठ पुत्र संबन्धे कह्युं हतुं तेम कहे छे अने ते प्रमाणे करे छे. ए प्रमाणे त्रीजा नाना पुत्रने पण करे छे. यावत् (चुलनी पिता) दुःखरूप वेदना सहन करे छे.

४. त्यार बाद ते देव चुलनीपिता श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे. जोईने तेणे चोथी वार पण चुलनीपिता श्रमणोपासकने ए प्रमाणे कह्युं-अप्रार्थित(मरण)नी प्रार्थना करनार हे चुलनीपिता श्रमणोपासक! जो तुं यावत् व्रतादिने भांगीश नहि तो आजे हुं जे आ तारी माता भद्रा सार्थवाही देव, गुरु अने जननीरूप तथा गर्भपालनादि रूप अत्यन्त दुष्कर करनारी छे, तेने तारा पोताना घरथी लई जईश. लईने तारी आगळ तेनो घात करीश. घात करीने त्रण मांसना टुकडा करीश. करीने आदान-आधण तेल वगेरेथी भरेला

नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता तओ मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि । तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ । तए णं से देवे चुलणीपियं समणोवासयं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, २ चुलणीपियं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–हं भो चुलणीपिया ! समणोवासया ! तहेव जाव ववरोविज्जसि । "तए णं तस्स चुलणीपियस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५–अहो णं इमे पुरिसे अणारिए अणारियबुद्धी अणारियाइं पावाइं कम्माइं समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, २ मम अग्गओ घाएइ, २ जहा कतं तहा

कडायामां उकाळीश. उकाळीने तारा शरीरने मांस अने लोही वडे छांटीश. जे रीते तुं आर्तध्याननी अत्यन्त परवशताथी पीडित थयेलो अकाळे ज जीवितथी मुक्त थईश. त्यार पछी ते चुलनीपिता श्रमणोपासक ते देवे ए प्रमाणे कह्युं एटले निर्भय थईने विहरे छे. त्यार पछी ते देव चुलनीपिता श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो जुए छे, जोइने चुलनीपिता श्रमणोपासकने तेणे बीजी वार अने त्रीजी वार पण ए प्रमाणे कह्युं–हे चुलनीपिता श्रमणोपासक ! इत्यादि तेमज कहेवुं यावत् तुं अकाळे ज जीवितथी मुक्त थईश.

५. त्यार बाद ते देव वडे बीजीवार अने त्रीजीवार पण ए प्रमाणे कहेवायेला चुलनीपिता श्रमणोपासकने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय-संकल्प थयो–अहो ! आ अनार्य अने अनार्यबुद्धिवाळो पुरुष अनार्य पाप कर्म करे छे. जे मारा ज्येष्ठ पुत्रने मारा पोताना घर थकी लइ जाय छे. लईने मारी आगळ घात करे छे. घात करीने–इत्यादि जे प्रमाणे (देवे) कर्युं हतुं तेम चिन्तवे

चिन्तेइ जाव गायं आयञ्चइ, जेणं ममं मज्झिमं पुत्तं साओ गिहाओ जाव सोणिएण य आयञ्चइ, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव आयञ्चइ, जाऽवि य णं इमा ममं माया भद्दा सत्थवाही देवयगुरुजणणी दुक्करदुक्करकारिया तंपि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्तिकट्टु उद्धाइए, सेऽवि य आगासे उप्पइए, तेणं च खम्भे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए। ᵃतए णं सा भद्दा सत्थवाही तं कोलाहलसद्दं सोचा निसम्म जेणेव चुलणीपिया समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी-किण्णं पुत्ता! तुमं महया महया सद्देणं कोलाहले कए? तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मयं भद्दं सत्थवाहिं एवं वयासी-एवं खलु अम्मो! न जाणामि,

छे, यावत् मारा शरीर उपर छांटे छे. जे मारा मध्यम पुत्रने मारा पोताना घरथी लइ जाय छे, यावत् मांस अने रुधिर वडे मारा शरीरने छांटे छे.-जे मारा कनिष्ठ पुत्रने मारा पोताना घरथी लई जाय छे इत्यादि तेमज कहेवुं यावत् (मारा शरीर ऊपर) छांटे छे. जे आ मारी माता देव, गुरु अने जननीरूप भद्रा सार्थवाही छे अने अत्यन्त दुष्करने करनारी छे, तेने पण मारा पोताना घरथी लइने मारी आगळ घात करवाने इच्छे छे, ते माटे मारे ए पुरुषने पकडवो योग्य छे' एम विचारी ते 'उद्धावितः' दोडयो. ते देव पण आकाशमां उडयो. तेणे घरनो स्तम्भ पकडयो अने अत्यन्त मोटा शब्द वडे कोलाहल कर्यो.

६. त्यार बाद ते भद्रा सार्थवाही ते कोलाहलने सांभळी, अवधारीने ज्यां चुलनीपिता श्रमणोपासक छे त्यां आवी. आवीने चुलनीपिता श्रमणोपासकने तेणे ए प्रमाणे कह्युं-हे पुत्र! तें केम घणा मोटा शब्द वडे कोलाहल कर्यो? त्यार पछी ते चुलनीपिता

केवि पुरिसे आसुरुत्ते ५ एगं महं नीलुप्पल० जाव असिं गहाय ममं एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! अपत्थियपत्थया ४ वज्जिया जइ णं तुमं जाव ववरोविज्जसि। अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरामि। तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव विहरमाणं पासइ, पासित्ता ममं दोच्चंपि तच्चम्पि एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! तहेव जाव गायं आयञ्चइ। तए णं अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि । एवं तहेव उच्चारेयव्वं सव्वं जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, अहं तं उज्जलं जाव अहियासेमि। तए णं से पुरिसे ममं अभीयं जाव पासइ, पासित्ता ममं चउत्थम्पि एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया समणोवासया ! अपत्थियपत्थया जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जा इमा माया गुरु० जाव ववरोविज्जसि। तए णं अहं तेणं पुरिसेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए

श्रमणोपासके पोतानी माता भद्रा सार्थवाहीने आ प्रमाणे कह्युं—हे माता ! हुं जाणतो नथी, पण कोईक पुरुषे गुस्से थईने काळा कमळ जेवी एक मोटी तलवारने ग्रहण करी मने एम कह्युं-अप्रार्थित (मरण)नी प्रार्थना करनार, ह्री-लज्जा, श्री-लक्ष्मी, धृति अने कीर्तिरहित हे चुलनीपिता श्रमणोपासक ! जो व्रतादिनो भंग नहि कर तो तुं आजे यावत् जीवितथी मुक्त थईश. ते पुरुषे ए प्रमाणे कह्युं एटले हुं निर्भय थईने यावत् रह्यो. ते पछी ते पुरुषे मने निर्भय रहेलो यावत् जोईने मने बीजी वार अने त्रीजी वार पण एम कह्युं-हे चुलनीपिता श्रमणोपासक ! इत्यादि तेमज कहेवुं, यावत्, (मांस अने रुधिर वडे) मारा शरीरने छांटयुं. त्यार पछी में उज्ज्वल-केवळ वेदनाने यावत् सहन करी. ए प्रमाणे तेमज बधा पाठनो उच्चार करवो यावत् कनिष्ठ-सौथी नाना पुत्रने मारीने यावत् तेना मांस अने रुधिर वडे मारा शरीरने छांटयुं अने में उज्ज्वल-केवळ वेदना सहन करी. त्यार पछी ते पुरुषे मने निर्भय रहेलो जोईने

जाव विहरामि। तए णं से पुरिसे दोच्चंपि तच्चंपि ममं एवं वयासी-हं भो चुलणीपिया समणोवासया! अज्ज जाव ववरोविज्जसि। तए णं तेणं पुरिसेणं दोच्चंपि तच्चंपि ममं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ५-अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ तहेव जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, तुब्भेऽवि य णं इच्छइ साओ गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्तिकट्टु उद्धाइए, सेऽवि य आगासे उप्पइए, मएऽवि य खम्भे आसाइए, महया

मने चोथी वार ए प्रमाणे कह्युं-अप्रार्थित-मरणनी प्रार्थना करनार हे चुलनीपिता! यावत् तुं व्रतादिनो भंग नहि कर तो आजे तारी जे आ माता देव, गुरु अने जननीरूप छे, (तेनो तारा समक्ष घात करीश, यावत् तुं आर्तध्याननी पराधीनताथी पीडित थयेलो) जीवितथी मुक्त थईश. ते पछी ते पुरुषे एम कह्युं एटले हुं अभीरु-निर्भय रह्यो. त्यार पछी ते पुरुषे बीजीवार अने त्रीजीवार पण मने आ प्रमाणे कह्युं-हे चुलनीपिता श्रमणोपासक! शीलव्रतादिने नहि छोड तो तुं आजे यावत् जीवितथी मुक्त थईश. त्यार बाद ते पुरुष वडे बीजीवार अने त्रीजीवार ए प्रमाणे कहेवायेला मने आ आवा प्रकारनो संकल्प थयो-अहो आ पुरुष अनार्य छे. यावत् अनार्य पाप कर्म करे छे. जे मारा ज्येष्ठ पुत्रने मारा पोताना घरथी लई गयो, तेमज यावत् सौथी नाना पुत्रने लई गयो अने यावत् तेना मांस अने लोही वडे मारा शरीरने छांटे छे, तमने पण मारा पोताना घरथी लईने मारी आगळ घात करवाने इच्छे छे, माटे ते पुरुषने मारे पकडवो योग्य छे' एम विचारीने हुं दोडयो अने ते पण आकाशमां उडयो. में पण स्तम्भ पकडयो अने घणा मोटा शब्द वडे कोलाहल कर्यो.

महया सद्देणं कोलाहले कए

७. तए णं सा भद्दा सत्थवाही चुलणीपियं समणोवासयं एवं वयासी–नो खलु केई पुरिसे तव जाव कणीयसं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेइ, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएइ, एस णं केइ पुरिसे तव उवसग्गं करेइ, एस

७. त्यार पछी ते भद्रा सार्थवाहीए चुलनीपिता श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं–'खरेखर कोई पुरुष यावत् तारा कनिष्ठ–नाना पुत्रने तारा पोताना घरथी लई गयुं नथी. लइने तारी पासे घात कर्यो नथी. आ कोई पुरुषे तने उपसर्ग कर्यो छे. आ तें विदर्शन–विभीषिका–बीहामणुं दृश्य जोयुं छे. माटे तुं अत्यारे भग्नव्रतवाळो भग्ननियमवाळो अने भग्नपोषधवाळो छो. तेथी हे पुत्र! तुं ए स्थाननी आलोचना कर, यावत् तपकर्म रूप प्रायश्चित्तनो स्वीकार कर.

६. 'एस णं तए विदरिसणे दिट्ठे' आ तें विदर्शन–विरूप आकारवाळी विभीषिका–भयंकर वस्तु वगेरे जोइ. अंधकारमां भयंकर वस्तुनुं दर्शन थाय छे ते विदर्शन कहेवाय छे.

७. 'भग्गवए' भग्नव्रत —भंग कर्यो छे व्रतनो जेणे एवो, कारण के स्थूल प्राणातिपातनी विरतिनो भावथी तेणे भंग कर्यो छे, केमके क्रोध वडे तेनो नाश करवा माटे ते दोड्यो छे, अने तेथी अपराधी छतां पण ते व्रतनो [1]विषय छे. 'भग्ननियमः' जेणे नियमनो भंग कर्यो छे एवो, कारण के कोपना उदय वडे उत्तर गुण रूप क्रोधना अभिग्रहनो भंग कर्यो छे. 'भग्नपोषधः' जेणे पोषधनो भंग कर्यो

[1] सामान्यतः श्रावकने स्थूलप्राणातिपातनी विरतिनो विषय अपराधी प्राणी नथी, परन्तु तेणे पोषध व्रत ग्रहण करेलु होवाथी अपराधी छतां तनी विरतिनो विषय थाय छे, अथवा कोप वडे तेनो नाश करवानो अभिप्राय होवाथी भावथी तेणे प्राणातिपातनी विरतिनो भंग कर्यो छे.

णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे, तं णं तुमं इयाणिं भग्गव्वए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि, तं णं तुमं पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि। तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मगाए भद्दाए सत्थवाहीए तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ।

८. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, पढमं उवास-

---

त्यार पछी चुलनीपिता श्रमणोपासक भद्रा सार्थवाही माताना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे स्वीकारे छे. स्वीकारीने ते स्थाननी आलोचना करे छे यावत् प्रायश्चित्तने स्वीकारे छे.

८. त्यार पछी चुलनीपिता श्रमणोपासक प्रथम उपासक प्रतिमाने स्वीकारी विहरे छे, प्रथम उपासक प्रतिमाने यथासूत्र सूत्र–प्रमाणे

छे पयो, कारण के तेणे अव्यापार रूप पोषधनो भंग कर्यो छे. 'एयस्स' अहीं छट्ठी विभक्तिनो द्वितीया विभक्ति अर्थ होवाथी 'एतमर्थमालोचय' ए अर्थनी आलोचना कर एटले गुरुने निवेदन कर. यावत् शब्दना ग्रहणथी 'पडिक्कमाहि' तेथी निवृत्त था, 'निंदाहि' आत्मसाक्षीए निन्दा कर, 'गरिहाहि' गुरुनी साक्षीए निंदा कर, विउट्टाहि' विश्रोटय–ते भावना अनुबंधनो विच्छेद कर 'विसोहेहि' अतिचार रूप मळने दूर करवा वडे विशुद्धि कर, 'अकरणयाए अब्भुट्ठेहि' फरीथी नहि करवानो स्वीकार कर. 'अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहि' यथायोग्य तपकर्म रूप प्रायश्चित्तनो अंगीकार कर. ए वडे 'निशीथादि सूत्रोमां गृहस्थने प्रायश्चित्त कह्युं नथी माटे गृहस्थने प्रायश्चित्त होतुं नथी' एम कोइ माने छे तेनो मत दूर कर्यो छे. साधुने उद्देशी कंइ पण करे तो गृहस्थने प्रायश्चित्त जित व्यवहारने अनुसरीने होय छे.

उपासकदशाना तृतीय अध्ययननो टीकानुवाद समाप्त.

गपडिमं अहासुत्तं जहा आणन्दो जाव एक्कारसवि । तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं उरालेणं जहा कामदेवो जाव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ ॥ निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

आनन्द श्रावकनी जेम आराधे छे यावत् अगीयारे प्रतिमानुं आराधन करे छे.

त्यार बाद चुलनीपिता श्रमणोपासक ते उदार तप वडे कृश थयो अने (काळ करी) कामदेवनी जेम यावत् सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक विमाननी उत्तरपूर्व दिशाए अरुणप्रभ नामना विमानने विशे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. यावत् ते महाविदेह क्षेत्रने विशे सिद्ध थशे. निक्षेप कहेवो.

सातमा उपासकदशांगना त्रीजा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.



णं तुमे विदरिसणे दिट्ठे, तं णं तुमं इयाणिं भग्गव्वए भग्गनियमे भग्गपोसहे विहरसि, तं णं तुमं पुत्ता ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि, जाव पडिवज्जाहि । तए णं से चुलणीपिया समणोवासए अम्मगाए भद्दाए सत्थवाहीए तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ जाव पडिवज्जइ ।

८. तए णं से चुलणीपिया समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ, पढमं उवास-

त्यार पछी चुलनीपिता श्रमणोपासक भद्रा सार्थवाही माताना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे स्वीकारे छे. स्वीकारीने ते स्थाननी आलोचना करे छे यावत् प्रायश्चित्तने स्वीकारे छे.

८. त्यार पछी चुलनीपिता श्रमणोपासक प्रथम उपासक प्रतिमाने स्वीकारी विहरे छे, प्रथम उपासक प्रतिमाने यथासूत्र सूत्र-प्रमाणे

छे पण्णो, कारण के तेणे अव्यापार रूप पोषधनो भंग कर्यो छे. 'एयस्स' अहीं छट्ठी विभक्तिनो द्वितीया विभक्ति अर्थ होवाथी 'एतमर्थमालोचय' ए अर्थनी आलोचना कर एटले गुरुने निवेदन कर. यावत् शब्दना ग्रहणथी 'पडिक्कमाहि' तेथी निवृत्त था, 'निंदाहि' आत्मसाक्षीए निन्दा कर, 'गरिहाहि' गुरुनी साक्षीए निंदा कर. विउट्टाहि' विश्रोटय-ते भावना अनुबंधनो विच्छेद कर. 'विसोहेहि' अतिचार रूप मळने दूर करवा वडे विशुद्धि कर, 'अकरणयाए अब्भुट्ठेहि' फरीथी नहि करवानो स्वीकार कर. 'अहारिहं तवोकम्मं पायच्छित्तं पडिवज्जाहि' यथायोग्य तपकर्म रूप प्रायश्चित्तनो अंगीकार कर. ए वडे 'निशीथादि सूत्रोमां गृहस्थने प्रायश्चित्त कह्युं नथी माटे गृहस्थने प्रायश्चित्त होतुं नथी' एम कोई माने छे तेनो मत दूर कर्यो छे. साधुने उद्देशी कंई पण करे तो गृहस्थने प्रायश्चित्त जित व्यवहारने अनुसारीने होय छे.

उपासकदशाना तृतीय अध्ययननो टीकानुवाद समाप्त.

गपडिमं अहासुत्तं जहा आणन्दो जाव एक्कारसवि । तए णं से चुलणीपिया समणोवासए तेणं उरालेणं जहा कामदेवो जाव सोहम्मे कप्पे सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं अरुणप्पभे विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई पण्णत्ता । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५ ॥ निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं तइयं अज्झयणं समत्तं ॥

आनन्द श्रावकनी जेम आराधे छे यावत् अगीयारे प्रतिमानुं आराधन करे छे.

त्यार बाद चुलनीपिता श्रमणोपासक ते उदार तप वडे कृश थयो अने (काळ करी) कामदेवनी जेम यावत् सौधर्म देवलोकमां सौधर्मावतंसक विमाननी उत्तरपूर्व दिशाए अरुणप्रभ नामना विमानने विशे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. यावत् ते महाविदेह क्षेत्रने विशे सिद्ध थशे. निक्षेप कहेवो.

सातमा उपासकदशांगना त्रीजा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.



चउत्थमज्झयणं।

१. उक्खेवओ चउत्थस्स अज्झयणस्स। एवं खलु जम्बू! तेणं कालेणं तेणं समएणं वाणारसी नामं नयरी। कोट्ठए चेइए। जियसत्तू राया। सुरादेवे गाहावई, अड्ढे। छ हिरण्णकोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। धन्ना भारिया। सामी समोसढे। जहा आणन्दो तहेव पडिवज्जइ गिहिधम्मं। जहा कामदेवो जाव समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ति उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ।

४ सुरादेव अध्ययन.

१ चोथा अध्ययननो उपोद्घात कहेवो. (जेमके श्रमण भगवान् महावीरे त्रीजा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे, तो चोथा अध्ययननो शो अर्थ कह्यो छे ?) ए प्रमाणे हे जंबू! ते काले अने ते समये वाराणसी नामे नगरी हती. कोष्ठक चैत्य हतुं. जितशत्रु राजा हतो. सुरादेव गृहपति हतो. ते आढ्य-धनिक हतो. तेने छ हिरण्यकोटि निधानमां, छ व्याजे अने छ धनधान्यादिना विस्तारमां हती. दश हजार गायनुं एक व्रज एवां छ व्रजो हतां. तेने धन्या भार्या हती. महावीर स्वामी समोसर्या, आणन्दनी जेम ते गृहस्थ धर्मनो स्वीकार करे छे. अने कामदेवनी पेठे यावत् श्रमण भगवंत महावीरनी धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे.

१. हवे चोथा अध्ययननो प्रारंभ कराय छे. ते पण सुगम छे. परन्तु कोष्टक चैत्य छे. बीजा पुस्तकमां काममहावन चैत्य छे. धन्या भार्या छे.

२. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं पाउब्भविल्था। से देवे एगं महं नीलुप्पल० जाव असिं गहाय सुरादेवं समणोवासयं एवं वयासी-हं भो सुरादेवा समणोवासया! अपत्थियपत्थया ४ जइ णं तुमं सीलाइं जाव न भञ्जसि तो ते जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता पञ्च सोल्लए करेमि, आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि। जहा णं तुमं अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि। एवं मज्झिमयं, कणीयसं, एक्केक्के पञ्च सोल्लया, तहेव करेइ, जहा चुलणीपियस्स, नवरं एक्केक्के पञ्च सोल्लया।

२. त्यार बाद ते सुरादेव श्रमणोपासकनी पासे रात्रिना मध्य समये एक देव प्रगट थयो. ते देवे एक मोटी काळा कमळ जेवी तलवार लइने सुरादेव श्रमणोपासकने आप्रमाणे कह्युं–हे अप्रार्थित (मरण) नी प्रार्थना करनार सुरादेव श्रमणोपासक! जो तुं शील वगेरेने भांगीश नहि तो तारा ज्येष्ठ पुत्रने तारा पोताना घरथी लइ जइश. लइने तारी आगळ तेनो घात करीश. घात करीने तेना मांसना पांच सोल्ल–टुकडा करीश. अने तेने आदान–आंधण–पाणी तेल वगेरेथी भरेला कडायामां उकाळीश. उकाळीने तारा शरीरने मांस अने रुधिर वडे छांटीश. जे रीते तुं आर्तध्याननी अत्यन्त परवशताथी पीडित थयेलो अकाळे जीवितथी मुक्त थइश. ए प्रमाणे मध्यम पुत्रने अने कनिष्ठ–नाना पुत्रने माटे समजवुं. एक एकना पांच सोल्ल–टुकडा करीश अने तेमज करे छे–इत्यादि बधुं

२. 'जमगसमग' ति. एक काले ए अर्थ छे. 'सासे' इत्यादिने विषे यावत् शब्दनुं ग्रहण होवाथी आ प्रमाणे जाणवुं—१ श्वास, २ कास-खांसी, ३ ज्वर-ताव, ४ दाह-उष्णता, ५ कुक्षिशूल-पेटनुं शूल, ६ भगन्दर, ७ अर्श-हरस, ८ अजीर्ण, ९ दृष्टिरोग,

तए णं से देवे सुरादेवं समणोवासयं चउत्थंपि एवं वयासी-हं भो सुरादेवा ! समणोवासया ! अपत्थियपत्थया ४ जाव न परिच्चयसि तो ते अज्ज सरीरंसि जमगसमगमेव सोलस रोगायङ्के पक्खिववामि, तंजहा-सासे, कासे, जाव कोढे, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट० जाव ववरोविज्जसि । तए णं से सुरादेवे समणोवासए जाव विहरइ । एवं देवो दोच्चंपि तच्चंपि भणइ जाव ववरोविज्जसि

३. तए णं तस्स सुरादेवस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे

चुलनीपितानी जेम जाणवुं. परन्तु अहीं एक एकना पांच टुकडा समजवा. त्यारपछी ते देवे सुरादेव श्रमणोपासकने चोथी वार पण आ प्रमाणे कह्युं-अप्रार्थित (मरण)नी प्रार्थना करनार हे सुरादेव श्रमणोपासक ! जो तुं शील वगेरेनो त्याग नहि करे तो आजे तारा शरीरमां एक साथे सोळ रोगो मूकीश. ते आ प्रमाणे-श्वास, कास-खांसी, यावत् कोढ. जे प्रकारे तुं आर्तध्याननी अत्यन्त परवशताथी पीडित थइ अकाळे ज जीवितथी मुक्त थइश. त्यार पछी ते सुरादेव श्रमणोपासक यावद् निर्भय रहे छे. ए प्रमाणे देव बीजी वार अने त्रीजी वार पण कहे छे के यावत् तुं जीवितथी मुक्त थइश.

३. त्यार बाद ते देवे बे वार अने त्रण वार ए प्रमाणे कह्युं एटले ते सुरादेव श्रमणोपासकने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय-

१० मूर्धशूल-मस्तकनुं शूल, ११ अकारक-अरोचकपणुं, १२ अक्षिवेदना-आंखनी पीडा, १३ कर्णवेदना, १४ कंडू-खरज १५ उदररोग अने १६ कोढ.

उपासकदशाना चोथा अध्ययनो टीकानुवाद समाप्त.

अज्झत्थिए ४-अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जाव समायरइ, जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ, जेऽवि य इमे सोलस रोगायङ्का तेऽवि य इच्छइ मम सरीरगंसि पक्खिवित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए त्तिकट्टु उद्धाइए। सेऽवि य आगासे उप्पइए, तेण य खम्भे आसाइए, महया महया सद्देणं कोलाहले कए।

५. तए णं सा धन्ना भारिया कोलाहलं सोचा निसम्म जेणेव सुरादेवे समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता एवं वयासी-किण्णं देवाणुप्पिया! तुब्भेहिं महया महया सद्देणं कोलाहले कए? तए णं से सुरादेवे समणोवासए धन्नं भारियं एवं वयासी-एवं खलु देवाणुप्पिए! केऽवि पुरिसे तहेव कहेइ जहा चुलणीपिया। धन्नाऽवि पडिभणइ-जाव कणीयसं, नो खलु देवाणुप्पिया! तुब्भं केऽवि पुरिसे सरीरंसि जमगसमगं सोलस

संकल्प थयो-अहो! आ पुरुष अनार्य छे अने यावत् अनार्य पाप कर्म करे छे. जे मारा ज्येष्ठ पुत्रने यावत् कनिष्ठ पुत्रने मारी आगळ घात करीने यावत् मांस अने रुधिर वडे मारा शरीरने छांटे छे. अने जे आ सोळ रोगो छे तेने पण मारा शरीरमां एक साथे मुकवाने इच्छे छे. तेथी मारे ते पुरुषने पकडवो श्रेयरूप छे.' एम विचार करीने ते दोडयो. ते देव पण आकाशमां उडयो. तेणे घरनो स्तंभ-थांभलो पकडयो अने अत्यन्त मोटा शब्द वडे कोलाहल कर्यो.

४. त्यार पछी ते धन्या भार्या कोलाहल सांभळीने अवधारीने ज्यां सुरादेव श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे. आवीने तेणे आ प्रमाणे कर्यु-हे देवानुप्रिय! तमे अत्यन्त मोटा शब्द वडे केम कोलाहल कर्यो? त्यार बाद ते सुरादेव श्रमणोपासके धन्या भार्याने

रोगायङ्के पक्खिवइ, एस णं केवि पुरिसे तुब्भं उवसग्गं करेइ, सेसं जहा चुलणीपियस्स तहा भणइ । एवं सेसं जहा चुलणीपियस्स निरवसेसं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकन्ते विमाणे उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५। निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं चउत्थं अज्झयणं समत्तं ॥

आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रिये! कोई पुरुष-इत्यादि जेम चुलनीपिताए कह्युं हतुं तेम कहे छे. धन्या पण उत्तर आपे छे-कोइ पुरुषे यावत् कनिष्ठ पुत्रने घरथी लइने घात कर्यो नथी. हे देवानुप्रिय! तमने कोइ पण पुरुष शरीरमां एक साथे सोळ रोगो मुकतो नथी. आ कोइ पण पुरुष तमने उपसर्ग करे छे. बाकी बधुं चुलनीपिताने कह्युं तेम कहे छे. ए प्रमाणे बाकी बधुं चुलनीपिता संबन्धे कह्युं तेम कहेवुं. यावत् ते सौधर्म देवलोकने विशे अरुणकान्त विमानमां उत्पन्न थयो. त्यां चार पल्योपमनी स्थिति छे. ते महाविदेह क्षेत्रमां मोक्षे जशे. अहीं निक्षेप-उपसंहार कहेवो

सातमा उपासकदशांगना चोथा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.

पंचमं अज्झयणं ।

१. एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं आलभिया नामं नयरी। सङ्खवणे उज्जाणे। जियसत्तू राया। चुल्लसयए गाहावई, अड्ढे, जाव छ हिरण्णकोडीओ जाव छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं। बहुला भारिया। सामी समोसढे। जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ, सेसं जहा कामदेवो जाव धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ताणं विहरइ ॥

२. तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि एगे देवे अन्तियं जाव असिं

---

५ चुल्लशतकाध्ययन.

१. हे ! जम्बू ए प्रमाणे खरेखर ते काळे अने ते समये आलभिका नामे नगरी हती. शंखवन नामे उद्यान हतुं. त्यां जितशत्रु राजा हतो. चुल्लशतक नामे गृहपति रहेतो हतो, ते आढय–धनिक हतो. यावत् तेने छ हिरण्यकोटि निधानमां, छ कोटि व्याजे अने छ कोटि द्रव्य धन धान्यादि विस्तारमां हतुं, तथा दस हजार गायोनुं एक व्रज एवां छ व्रजो हतां. तेने बहुला नामे भार्या हती. महावीर स्वामी समोसर्या. आनन्दनी जेम ते गृहस्थ धर्मनो अंगीकार करे छे. बाकी बधुं कामदेवनी पेठे कहेवुं यावत् ते धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे.

२. त्यार बाद ते चुल्लशतक श्रमणोपासकनी आगळ मध्य रात्रिना समये एक देव प्रगट थयो, अने तेणे यावत् तलवार

गहाय एवं वयासी-हं भो चुल्लसयगा समणोवासया! जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जेट्ठं पुत्तं साओ गिहाओ नीणेमि, एवं जहा चुलणीपियं, नवरं एक्केक्के सत्त मंससोल्लया जाव कणीयसं जाव आयञ्चामि। तए णं से चुल्लसयए समणोवासए जाव विहरइ। तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं चउत्थम्पि एवं वयासी-हं भो चुल्लसयगा! समणोवासया! जाव न भञ्जसि तो ते अज्ज जाओ इमाओ छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वुड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ ताओ साओ गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिङ्घाडग० जाव पहेसु सव्वओ समन्ता विप्पइरामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्टवसट्टे अकाले चेव जीवियाओ ववरोविज्जसि।

ग्रहण करीने आ प्रमाणे कह्युं-हे चुल्लशतक श्रमणोपासक! यावत् शीलव्रतादिने भांगीश नहि तो आजे तारा मोटा पुत्रने तारा पोताना घरथी लइ जइश, [अने तारा समक्ष तेनो घात करीश] इत्यादि जेम चुलनीपिताने कह्युं हतुं तेम कहेवुं, परन्तु एक एकना सात मांससोल्ल-मांसना टुकडा करीश, यावत् नाना पुत्रनो घात करी तेना लोही अने मांस वडे तारा शरीर उपर छांटीश. ते पछी चुल्लशतक श्रमणोपासक निर्भीक-नीडर रहे छे. त्यार बाद ते देवे चुल्लशतक श्रमणोपासकने चोथी वार पण आ प्रमाणे कह्युं-हे चुल्लशतक श्रमणोपासक! यावत् तुं शीलव्रतादिने भांगीश-छोडीश नहि तो आजे जे तारुं छ हिरण्यकोटि द्रव्य निधानमां मूकेलुं छे, छ कोटि व्यःजे मूकेलुं छे अने छ कोटि धनधान्यादिना विस्तारमां छे, तेने तारा पोताना घरथी लइ जइश अने लइने आलभिका नगरीना शृङ्गाटक मार्गमां यावत् त्रिक, चत्वर अने मोटा मार्गमां चारे तरफ सघले स्थळे ज्यां त्यां फेंकी दइश. जेथी तुं आर्तध्याननी अत्यन्त परवशताथी पीडित थयेलो अकाळे जीवितथी मुक्त थइश.

३. तए णं से चुल्लसयए समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे चुल्लसयगं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता दोचम्पि तच्चम्पि तहेव भणइ जाव ववरोविज्जसि। तए णं तस्स चुल्लसयगस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोचम्पि तचंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयमेयारूवे अज्झत्थिए ४–'अहो णं इमे पुरिसे अणारिए जहा चुलणीपिया तहा चिन्तेइ जाव कणीयसं जाव आयञ्चइ। जाओऽवि य णं इमाओ ममं छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ छ वुड्ढिपउत्ताओ छ पवित्थरपउत्ताओ ताओऽवि य णं इच्छइ ममं साओ गिहाओ नीणेत्ता आलभियाए नयरीए सिङ्घाडग० जाव विप्पइरित्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए'त्तिकट्टु उद्धाइए जहा सुरादेवो तहेव भारिया पुच्छइ तहेव कहेइ ५। सेसं जहा चुलणीपि-

३. त्यार बाद ते चुल्लशतक श्रमणोपासक ते देवे एम कह्युं एटले निर्भय थइने रहे छे. त्यार पछी ते देव चुल्लशतक श्रमणोपासकने निर्भय रहेलो यावत् जोइने बीजी वार अने त्रीजी वार पण एम ज कहे छे के यावत् तुं जीवितथी मुक्त थइश. ते देवे बीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे कह्युं एटले चुल्लशतक श्रमणोपासकने आ आवा प्रकारनो संकल्प थयो—'अहो आ पुरुष अनार्य छे–इत्यादि चुलनीपितानी जेम चिंतवे छे, यावत् नाना पुत्रनो घात करीने तेना रुधिर अने मांस वडे मारा शरीरने छांटे छे अने वळी जे छ हिरण्यकोटि निधानमां मूकेली, छ व्याजे मूकेली अने छ धनादि विस्तारमां रोकेली छे तेने पण मारा पोताना घरथी लइने आलभिका नगरीना शृंगाटक वगेरे मार्गमां चारे तरफ ज्यां त्यां फेंकी देवाने इच्छे छे, माटे मारे ए पुरुषने पकडवो योग्य छे' एम विचारी तेने पकडवाने ते दोडयो–इत्यादि यावत् सुरादेवनी जेम तेनी भार्या पूछे छे अने ते तेमज कहे छे. बाकी बधुं चुलनी-

यस्स जाव सोहम्मे कप्पे अरुणसिट्ठे विमाणे उववन्ने, चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। सेसं तहेव जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ५॥ निक्खेवो।

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं पञ्चमं अज्झयणं समत्तं

पितानी पेठे जाणवुं, यावत् ते सौधर्म देवलोकमां अरुणशिष्ट विमानने विशे उत्पन्न थयो. तेनी चार पल्योपमनी स्थिति कही छे. बाकी बधुं तेमज कहेवुं यावत् ते महाविदेह क्षेत्रने विशे सिद्धिपदने पामशे. अहीं निक्षेप कहेवो.

सातमा उपासकदशांगना पांचमा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.

१. १ पांचमुं अध्ययन स्पष्ट छे.



छट्ठं अज्झयणं ।

१. छट्ठस्स उक्खेवओ । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं कम्पिल्लपुरे नयरे । सहसम्बवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया । कुण्डकोलिए गाहावई । पूसा भारिया । छ हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, छ वुड्ढिपउत्ताओ, छ पवित्थरपउत्ताओ, छ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । सामी समोसढे । जहा कामदेवो तहा सावयधम्मं पडिवज्जइ । सच्चेव वत्तव्वया जाव पडिलाभेमाणे विहरइ ।

२. तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया

---

६ कुंडकोलिक अध्ययन.

१. अहीं छठ्ठा अध्ययननो उत्क्षेप–उपोद्घात कहेवो. ए प्रमाणे खरेखर हे जम्बू ! ते काळे अने ते समये कांपिल्यपुर नगर हतुं. सहस्राम्रवन उद्यान हतुं. जितशत्रु राजा हतो. कुंडकोलिक गृहपति हतो. तेने पुष्पा नामे भार्या हती. तेणे छ हिरण्यकोटी निधानमां मूकेली, छ वृद्धि–व्याजे मूकेली अने छ धन धान्यादिना विस्तारमां रोकेली हती. दस हजार गायोनुं एक व्रज एवां छ व्रजो हतां. महावीर स्वामी समोसर्या. कामदेवनी जेम ते श्रावक धर्मनो स्वीकार करे छे–इत्यादि तेज बधी वक्तव्यता कहेवी यावत् ते (श्रमण निर्ग्रन्थोनो अशनादि वडे) सत्कार करतो विहरे छे.

जेणेव पुढविसिलापट्टए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता नाममुद्दगं च उत्तरिज्जगं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ ।

३. तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था । तए णं से देवे नाममुद्दं

---

२. त्यार बाद ते कुंडकोलिक श्रमणोपासक अन्य कोइ दिवसे मध्याह्न समये ज्यां अशोकवनिका छे अने ज्यां पृथ्वीशिलापट्ट छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने नामांकित मुद्रिका (वींटी) अने उत्तरीय वस्त्रने पृथ्वीशिला पट्ट उपर मूके छे. मूकीने श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्मप्रज्ञप्तिने स्वीकारी विहरे छे.

३. ते बार पछी ते कुंडकोलिक श्रमणोपासकनी पासे एक देव प्रगट थयो, अने ते देव ते कुंडकोलिक श्रमणोपासकनी नाममुद्रा अने उत्तरीय वस्त्रने पृथिवीशिला पट्ट उपरथी ग्रहण करे छे. ग्रहण करीने घुघरीओ सहित श्रेष्ठ वस्त्रो जेणे पहेरेलां छे एवा ते

१-२-३ हवे छट्ठा अध्ययन संबन्धे कंइक लखीए छीए-'धम्मपण्णत्ति'त्ति । श्रुतधर्मनी प्ररूपणा, दर्शन, मत, सिद्धान्त ए तेनो अर्थ छे 'उत्थानं' उठवुं, बेठेलो उभो थाय ते उत्थान. 'कर्म' जवुं, आववुं वगेरे. 'बलं' शरीरनु सामर्थ्य, 'वीर्यं' जीवनुं सामर्थ्य 'पुरुषकारः' पुरुषपणानुं अभिमान, 'पराक्रमः' ज्यारे पुरुषकार पोतानुं प्रयोजन सिद्ध करे त्यारे पराक्रम कहेवाय छे. 'इति' उपदर्शन अर्थमां छे. जीवोने विशे उत्थानादि नथी, एटले के ते निष्प्रयोजन छे, कारण के ते पुरुषार्थना साधक नथी. तेनुं असाधकपणुं पुरुषकार होवा छतां पण पुरुषार्थनी सिद्धि थती नथी माटे ए रीते सर्वे भावो नियत-नियतिने आधीन छे. जे जे प्रकारे थवानुं छे ते ते प्रकारे थाय छे, परन्तु पुरुषकारना बलथी अन्यथा करवुं शक्य नथी. ए संबन्धे कह्युं छे के—

च उत्तरिज्जं च पुढविसिलापट्टयाओ गेण्हइ, गेण्हेत्ता सखिंखिणिं॰ अन्तलिक्खपडिवन्ने कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी–हं भो कुण्डकोलिया समणोवासया ! सुन्दरी णं देवाणुप्पिया गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स

देवे आकाशमां रहीने कुंडकोलिक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कर्युं–हे देवानुप्रिय कुंडकोलिक श्रमणोपासक ! मंखलिपुत्र गोशालकनी धर्मप्रज्ञप्ति सुंदर छे, (केमके तेनी धर्मप्रज्ञप्तिमां) उत्थान, कर्म, बल, वीर्य अने पुरुषकार–पराक्रम नथी, सर्व भावो नियत

'प्राप्तव्यो नियतिबलाश्रयेण योऽर्थः सोऽवश्यं भवति नृणां शुभोऽशुभो वा।
भूतानां महति कृतेऽपि हि प्रयत्ने, नाभाव्यं भवति न भाविनोऽस्ति नाशः ॥"
नहि भवति यन्न भाव्यं भवति च भाव्यं विनाऽपि यत्नेन । करतलगतमपि नश्यति यस्य तु भवितव्यता नास्ति ॥"

"नियतिना सामर्थ्यनो आश्रय करवा वडे मनुष्योने शुभ अथवा अशुभ जे अर्थ प्राप्त थवानो छे ते अवश्य थाय छे, मोटो प्रयत्न करवामां आवे तो पण प्राणीओने जे थवानुं नथी ते थतुं नथी अने जे थवानुं छे तेनो नाश थतो नथी.

जे थवानुं नथी ते थतुं नथी अने जे थवानुं छे ते यत्न सिवाय पण थाय छे. जेनी भवितव्यता नथी ते हाथमां रहेलुं होय तो पण नाश पामे छे."

माटे श्रमण भगवंत महावीरनी 'मंगुली' असाय-अयुक्त 'धर्मप्रज्ञप्तिः' श्रुतधर्मनी प्ररूपणा छे. केवा प्रकारनी छे ? तेना उत्तरमां कहे छे–'अत्थि'इत्यादि. बधा भावो अनियत छे, कारण के ते उत्थानादिथी प्राप्य छे अने उत्थानादि सिवाय थतां नथी. तेथी कुंडकोलिके ते देवने ए प्रमाणे कह्युं–जो गोशालकनो 'उत्थानादि नथी माटे सर्व भावो नियत छे' एवा प्रकारनो सुन्दर धर्म छे, अने 'उत्थानादि छे माटे सर्व भावो अनियत छे'-एवा प्रकारनो महावीरनो धर्म अयुक्त छे, एम तेना मतनो अनुवाद करीने कुंडकोलिक तेना मतने

धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे इ वा कम्मे इ वा बले इ वा वीरिए इ वा पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती, अत्थि उट्ठाणे इ वा, कम्मे इ वा, बले इ वा वीरिए इ वा, पुरिसक्कारपरक्कमे इ वा, अणियया सव्वभावा।

(नियतिने आश्रित) छे. श्रमण भगवंत महावीरनी धर्म प्रज्ञप्ति मंगुली-खराब छे. (कारण के तेमना मते) उत्थान, यावत् पुरुषकार-पराक्रम छे. सर्व भावो अनियत छे (नियतिने आश्रित नथी).

दूषित करवा माटे वे विकल्प करे छे-'तुमे णं' इत्यादि. पूर्वेना वाक्यमां 'यदि' जो-ए पदनुं ग्रहण करेलु होवाथी आ वाक्यनी आदिमां 'तदा' तो-ए पदनो अध्याहार जाणवो. तो तें आ दिव्य देवऋद्धि वगेरे गुण शाथी प्राप्त कर्यां ? शुं उत्थादि वडे 'उदाहु' अथवा उत्थानादि सिवाय ? एटले के तप ब्रह्मचर्य वगेरेना आचरण सिवाय प्राप्त कर्यां ? जो उत्थानादि सिवाय प्राप्त कर्यां-ए पक्ष गोशालकना मतनो आश्रय करेलो होवाथी तने संमत छे तो जे जीवोने उत्थानादि-तपश्चर्या वगेरे नथी ते जीवो देवो केम नथी ? पूछनारनो आ अभिप्राय छे-जेम तारी मान्यताथी तुं पुरुषकार विना देव थयो छे, पण सर्व जीवो जे उत्थानादि विनाना छे ते देवो थवा जोइए, परन्तु ए प्रमाणे इष्ट नथी, माटे उत्थानादिनो अपलाप करवाना पक्षमां दूषण छे. अने जो तें आ ऋद्धि उत्थानादि वडे प्राप्त करी छे तो जे तुं कहे छे के 'गोशालकनो मत सुन्दर छे अने महावीरनो मत सुन्दर नथी ते तारुं मिथ्या वचन छे, कारण के तेनो व्यभिचार-अन्यथापणुं छे. तेणे एम कहुं एटले ते देव 'शंकितः' शंकावाळो थयो-शु गोशालकना मत सत्य छे के महावीरनो मत सत्य छे ? कारण के तेणे महावीरनो मत युक्तिथी सिद्ध कर्यो छे, तेथी आवा प्रकारना विकल्पवाळो थयो. कांक्षित.' महावीरनो मत पण सारो छे, कारण के युक्तियुक्त छे' आवा प्रकारना विकल्पवाळो थयो. यावत शब्दना कथनथी 'भेदमापन्नः' मतिभेदने प्राप्त थयो. कारण के 'गोशालकनो मत ज सारो छे ए निश्चयथी रहित थयो छे. तथा 'कलुषं समापन्नः' पूर्वेना निश्च-

४. तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी-जइ णं देवा ! सुन्दरी गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती-नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती-अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तुमे णं देवा ! इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुई दिव्वे देवाणुभावे किणा लद्धे, किणा पत्ते, किणा अभिसमन्नागए, किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं, उदाहु अणुट्ठाणेणं अकम्मेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं? तए णं से देवे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी-एवं खलु, देवाणुप्पिया ! मए इमेयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं

४. त्यार बाद ते कुंडकोलिक श्रमणोपासके ते देवने आ प्रमाणे कह्युं-हे देव! जो मंखलिपुत्र गोशालकनी धर्मप्रज्ञप्ति, (जेमां) उत्थान नथी, यावत् सर्व भावो नियत छे-ए सुंदर होय अने श्रमण भगवंत महावीरनी 'उत्थान छे, यावत् सर्व भावो अनियत छे' ए धर्मप्रज्ञप्ति खराब होय तो हे देव ! तें आ दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति, दिव्य देवानुभाव-देवप्रभाव शाथी मेळव्यो, शाथी प्राप्त कर्यो, शाथी अभिमुखपणे प्राप्त कर्यो ? शुं उत्थान वडे, यावत् पुरुषकार-पराक्रम वडे ? अथवा उत्थान सिवाय, कर्म सिवाय के पुरुषकार-पराक्रम सिवाय ? ते वार पछी ते देवे कुंडकोलिक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं-ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रिय ! में

यथी विपर्ययरूप फलुपपणाने प्राप्त थयो छे. गोशालकमतने अनुसरनारना मत वडे मिथ्यात्वने प्राप्त थयेलो छे. अथवा 'आणे मते जित्यो' ए खेदरूप कलुषित भावने प्राप्त थयो. तेथी ते कुंडकोलिक श्रमणोपासकने 'किंचि पामोक्खं' कंइ पण उत्तर आइक्खित्तए' 'आख्यातुं' आपवाने 'नो संचाएइ' शक्तिमान् थतो नथी.

लद्धा पत्ता अभिसमन्नगया। तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए तं देवं एवं वयासी–जइ णं देवा! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, जेसि णं जीवाणं नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, ते किं न देवा? अह णं देवा! तुमे इमा एयारूवा दिव्वा देविड्ढी ३ उट्ठाणेणं जाव परक्कमेणं लद्धा पत्ता अभिसमन्नागया, तो जं वदसि–सुन्दरी णं गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स धम्मपण्णत्ती, नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा, मंगुली णं समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्ती–अत्थि उट्ठाणे इ वा जाव अणियया सव्वभावा, तं ते मिच्छा। तए णं से देवे कुण्डकोलिएणं समणोवासएणं एवं वुत्ते समाणे संकिए जाव कलुसं समावन्ने नो संचाएइ कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स किंचि पामोक्खमाइक्खि-

आ आवा प्रकारनी दिव्य देवऋद्धि उत्थान सिवाय यावत् पुरुषकार–पराक्रम सिवाय मेळवी छे, प्राप्त करी छे, अभिमुख पणे प्राप्त करी छे. त्यार बाद ते कुंडकोलिक श्रमणोपासके ते देवने ए प्रमाणे कह्युं–हे देव! जो तें आ आवा प्रकारनी दिव्य देवर्द्धि उत्थान सिवाय यावत् पुरुषकार–पराक्रम सिवाय मेळवी, प्राप्त करी अभिमुखपणे प्राप्त करी छे तो जे जीवोने विशे उत्थान नथी, यावत् पुरुषकार–पराक्रम नथी ते देवो केम नथी? हे देव! जो तें आ आवा प्रकारनी दिव्य देवर्द्धि उत्थान वडे यावत् पुरुषकारपराक्रम वडे मेळवी, प्राप्त करी अने अभिमुखपणे प्राप्त करी तो पछी तुं जे कहे छे के मंखलिपुत्र गोशालकनी धर्मप्रज्ञप्ति सुंदर छे, कारण के (तेमां) उत्थान नथी, यावत् सर्व भावो नियत छे, श्रमण भगवंत महावीरनी धर्मप्रज्ञप्ति खराब छे, (कारण के तेमां) उत्थान छे, यावत् सर्व भावो अनियत छे, ते मिथ्या छे. त्यार बाद कुंडकोलिक श्रमणोपासके ए प्रमाणे कह्युं एटले ते देव शंकित थयो, यावत् कलुष–

त्ए, नामसुद्दयं च उत्तरिज्जयं च पुढविसिलापट्टए ठवेइ, ठवेत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

५. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे हट्ठ० जहा कामदेवो तहा निग्गच्छइ जाव पज्जुवासइ। धम्मकहा।

६. 'कुण्डकोलिया' इ समणे भगवं महावीरे कुण्डकोलियं समणोवासयं एवं वयासी-से नूणं कुण्डको-

विपर्ययने प्राप्त थयो अने कुंडकोलिक श्रमणोपासकने कंई पण उत्तर आपवाने शक्तिमान् न थयो. तेणे नाममुद्रा अने उत्तरीय वस्त्रने पृथिवीशिलापट्ट उपर मूक्या, अने मूकीने जे दिशाथी आव्यो हतो ते दिशा तरफ गयो.

५. ते काळे अने ते समये महावीर स्वामी समोसर्या. त्यारे ते कुंडकोलिक श्रमणोपासक आ महावीर स्वामी आव्यानी वात वडे विदित थयेलो हृष्ट-प्रसन्न थयो अने कामदेवनी पेठे वंदन करवा माटे नीकळे छे यावत् पर्युपासना करे छे. (भगवंते) धर्म कथा कही.

६. 'हे कुंडकोलिक' एम संबोधी श्रमण भगवान् महावीरे कुंडकोलिक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं–हे कुंडकोलिक ! खरेखर

६ 'गिहमज्झावसन्ता णं'ति गृहवासमां रहेनारा, 'णं' वाक्यालंकारमां वपराय छे. 'अन्ययूथिकान्' अन्यतीर्थिकोने 'अर्थैः' जीवादि पदार्थो वडे, अथवा सूचना अर्थो वडे, 'हेतुभिः' अन्वय[1] अने व्यतिरेक स्वरूपवाळा हेतुओ वडे, 'प्रश्नैः' बीजाने पूछवा योग्य पदार्थो वडे,

१ 'यत्सत्त्वे यत्सत्त्वमन्वयः' जेना अस्तित्वमां जेनु अस्तित्व होय ते अन्वय, अने 'यदभावे यदभावो व्यतिरेकः.' जेना अभावमां जेनो अभाव होय ते व्यतिरेक. कार्यकारणभाव अन्वय व्यतिरेकथी जणाय छे, जेमके माटीना अस्तित्वमां घटनुं अस्तित्व अने तेना अभावमां घटनो अभाव छे, माटे माटी घटनुं कारण छे.

लिया ! कल्लं तुब्भ पुव्वावरण्हकालसमयंसि असोगवणियाए एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। तए णं से देवे नाममुद्दं च तहेव जाव पडिगए। से नूणं कुण्डकोलिया ! अट्ठे समट्ठे ? हन्ता अत्थि। तं धन्ने सि णं तुमं कुण्डकोलिया ! जहा कामदेवो। 'अज्जो' इ समणे भगवं महावीरे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तित्ता एवं वयासी–जइ ताव अज्जो गिहिणो गिहमज्झावसन्ता णं अन्नउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे करेन्ति, सक्का पुणाइं अज्जो समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्ग

काले तारी पासे मध्याह्न समये अशोकवानिकामां कोई एक देव आव्यो हतो. त्यार बाद ते देवे तारी नाममुद्रा अने उत्तरीय लई लीधुं इत्यादि यावत् ते पाछो गयो. हे कुंडकोलिक ! खरेखर आ अर्थ सत्य छे ? हा, छे. तो कुंडकोलिक ! तुं धन्य छो, वगेरे कामदेवनी पेठे कहेवुं. 'हे आर्यो' एम संबोधी श्रमण भगवंत महावीरे निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओने आ प्रमाणे कह्युं–हे आर्यो ! जो गृहस्थावासमां रहेता गृहस्थो अर्थ, हेतु, प्रश्न, कारण अने उत्तर वडे अन्यतीर्थिकोने निरुत्तर करे छे तो हे आर्यो ! द्वादशांग

'कारणैः' उपपत्ति-युक्तिओ वडे, साबिती वडे, 'व्याकरणै' बीजाए पूछेला प्रश्नोना उत्तर आपवा वडे, 'निप्पट्ठपसिणवागरणे' त्ति. निरस्त अने स्पष्ट कर्या छे प्रश्नना व्याकरण-उत्तरो जेओना एवा, अथवा प्राकृत होवाथी 'निप्पिष्टप्रश्नव्याकरणान्' निप्पिष्ट-खंडन करेला छे प्रश्नना उत्तरो जेओना एवा प्रकारना करे छे. 'सक्का पुण'त्ति हे आर्यो ! श्रमणोए निरस्त अने स्पष्ट करेला छे प्रश्नोत्तर जेओना एवा अन्यतीर्थिकोने करवा शक्य ज छे.

उपासकदशाना छठ्ठा अध्ययननो टीकानुवाद समाप्त.

गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अन्नउत्थिया अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठपसिणवागरणा करित्तए। तए णं समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेन्ति। तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठमादियइ, आदिइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ।

७. तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील०जाव भावेमाणस्स चोद्दस्स संवच्छराइं वइक्कन्ताइं, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्ति उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ। एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव

गणिपिटकनुं अध्ययन करता एवा श्रमण निर्ग्रन्थोए अर्थ वडे यावत् अन्यतीर्थिकोने निरुत्तर-निराम करवा समर्थ छे. त्यार पछी श्रमण निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओ श्रमण भगवंत महावीरना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे स्वीकारे छे. त्यार बाद कुंडकोलिक श्रमणोपासक श्रमण भगवंत महावीरने वन्दन अने नमस्कार करे छे. वन्दन अने नमस्कार करी, प्रश्नो पूछे छे, पूछीने अर्थने ग्रहण करे छे, अर्थ ग्रहण करीने जे दिशाथी आव्यो हतो ते दिशा तरफ गयो. पछी महावीरस्वामी बहारना देशोमां विहार करे छे.

त्यार बाद ते कुंडकोलिक श्रमणोपासकने घणा शील-व्रतादि वडे यावत् आत्माने भावित करता चौद वर्ष व्यतीत थया अने पंदरमा वर्षनी वच्चे वर्तता तेने अन्य दिवसे (कदाचित् मध्य रात्रिना समये धर्मजागरण करतां आवा प्रकारनो संकल्प थयो-इत्यादि) कामदेवनी पेठे ते प्रमाणे ज्येष्ठ पुत्रने स्थापीने अने तेमज पोषधशालामां यावत् धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे. एम

लिया ! कल्लं तुब्भ पुव्वावरण्हकालसमयंसि असोगवणियाए एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था । तए णं से देवे नाममुद्दं च तहेव जाव पडिगए । से नूणं कुण्डकोलिया ! अट्ठे समट्ठे ? हन्ता अत्थि । तं धन्ने सि णं तुमं कुण्डकोलिया ! जहा कामदेवो । 'अज्जो' इ समणे भगवं महावीरे समणे निग्गन्थे य निग्गन्थीओ य आमन्तित्ता एवं वयासी-जइ ताव अज्जो गिहिणो गिहमज्झावसन्ता णं अन्नउत्थिए अट्ठेहि य हेऊहि य पसिणेहि य कारणेहि य वागरणेहि य निप्पट्ठपसिणवागरणे करेन्ति, सक्का पुणाइं अज्जो समणेहिं निग्गन्थेहिं दुवालसङ्ग

काले तारी पासे मध्याह्न समये अशोकवानिकामां कोई एक देव आव्यो हतो. त्यार बाद ते देवे तारी नाममुद्रा अने उत्तरीय लइ लीधुं इत्यादि यावत् ते पाछो गयो. हे कुंडकोलिक! खरेखर आ अर्थ सत्य छे ? हा, छे. तो कुंडकोलिक! तुं धन्य छो, वगेरे कामदेवनी पेठे कहेवुं. 'हे आर्यो' एम संबोधी श्रमण भगवंत महावीरे निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओने आ प्रमाणे कह्युं-हे आर्यो! जो गृहस्थावासमां रहेता गृहस्थो अर्थ, हेतु, प्रश्न, कारण अने उत्तर वडे अन्यतीर्थिकोने निरुत्तर करे छे तो हे आर्यो ! द्वादशांग

'कारणैः' उपपत्ति-युक्तिओ वडे, साबिती वडे, 'व्याकरणै.' बीजाए पूछेला प्रश्नोना उत्तर आपवा वडे, 'निप्पट्ठपसिणवागरणे' त्ति. निरस्त अने स्पष्ट कर्या छे प्रश्नना व्याकरण-उत्तरो जेओना एवा, अथवा प्राकृत होवाथी 'निष्पिष्टप्रश्नव्याकरणान्' निष्पिष्ट-खंडन करेला छे प्रश्नना उत्तरो जेओना एवा प्रकारना करे छे. 'सक्का पुण'त्ति हे आर्यो ! श्रमणोए निरस्त अने स्पष्ट करेला छे प्रश्नोत्तर जेओना एवा अन्यतीर्थिकोने करवा शक्य ज छे.

उपासकदशाना छट्ठा अध्ययननो टीकानुवाद समाप्त.

गणिपिडगं अहिज्जमाणेहिं अन्नउत्थिया अट्ठेहि य जाव निप्पट्ठपसिणवागरणा करित्तए। तए णं समणा निग्गन्था य निग्गन्थीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स तहत्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेन्ति। तए णं से कुण्डकोलिए समणोवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता नमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ, पुच्छित्ता अट्ठमादियइ, आदिइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए। सामी बहिया जणवयविहारं विहरइ।

७. तए णं तस्स कुण्डकोलियस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील०जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स अन्नया कयाइ जहा कामदेवो तहा जेट्ठपुत्तं ठवेत्ता तहा पोसहसालाए जाव धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ। एवं एक्कारस उवासगपडिमाओ तहेव जाव

गणिपिटकनुं अध्ययन करता एवा श्रमण निर्ग्रन्थोए अर्थ वडे यावत् अन्यतीर्थिकोने निरुत्तर-निराम करवा शक्य छे. त्यार पछी श्रमण निर्ग्रन्थो अने निर्ग्रन्थीओ श्रमण भगवंत महावीरना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे स्वीकारे छे. त्यार बाद कुंडकोलिक श्रमणोपासक श्रमण भगवंत महावीरने वन्दन अने नमस्कार करे छे. वन्दन अने नमस्कार करी, प्रश्नो पूछे छे, पूछीने अर्थने ग्रहण करे छे, अर्थ ग्रहण करीने जे दिशाथी आव्यो हतो ते दिशा तरफ गयो. पछी महावीरस्वामी बहारना देशोमां विहार करे छे.

त्यार बाद ते कुंडकोलिक श्रमणोपासकने घणा शील-व्रतादि वडे यावत् आत्माने भावित करता चौद वर्ष व्यतीत थया अने पंदरमा वर्षनी वच्चे वर्तता तेने अन्य दिवसे (कदाचित् मध्य रात्रिना समये धर्मजागरण करतां आवा प्रकारनो संकल्प थयो-इत्यादि) कामदेवनी पेठे ते प्रमाणे ज्येष्ठ पुत्रने स्थापीने अने तेमज पोषधशालामां यावत् धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे. एम

च्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेमाणुरागरत्ते य, अयमाउसो ! आजीवियसमए अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठेत्ति आजीवियसमएणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ । तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एक्का हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता, एक्का वुड्ढिपउत्ता, एक्का पवित्थरपउत्ता, एक्के वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं । तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स अग्गिमित्ता नामं भारिया होत्था । तस्स णं सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पोलासपुरस्स नगरस्स बहिया पञ्च कुम्भकारावणसया होत्था । तत्थ णं बहवे पुरिसा दिण्णभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं बहवे करए य वारए य पिहडए य घडए य अद्धघडए य कलसए [redacted] अलिञ्जरए

सिद्धान्तनो अर्थ जेणे जाण्यो छे, जेणे अर्थ ग्रहण कर्यो छे, जेणे अर्थ पूछयो छे, जेणे अर्थ विशेषतः निश्चित कर्यो छे अने जेणे तात्पर्यथी अर्थने जाण्यो छे एवो, तथा अस्थिनी मज्जामां प्रेमना अनुराग वडे रंगायेलो आजीविकनो उपासक सद्दालपुत्र नामे कुंभार रहेतो हतो. हे आयुष्मन् ! आ 'आजीविकनो समय-सिद्धान्त एज अर्थरूप छे, एज परमार्थरूप छे अने बाकी बधु अनर्थ रूप छे' एम ते आजीविकना समय वडे आत्माने भावतो-वासित करतो विहरे छे. ते आजीविकना उपासक सद्दालपुत्रने एक

श्रवणथी अर्थ जाणेलो छे जेणे एवो, एटले जेणे श्रवण मात्र करेलुं छे एवो, 'गृहीतार्थः' बोध थवाथी जेणे अर्थ जाणेल छे एवो, 'पृष्टार्थः' संशय पडवाथी जेणे अर्थ पूछयो छे एवो, 'निश्चितार्थः' उत्तर मळवाथी विशेष निश्चित करेल छे अर्थ जेणे एवो आजीविकोपासक सद्दालपुत्र छे.

'दिण्णभइभत्तवेयण'त्ति दत्तभृतिभक्तवेतनः—आप्युं छे भृति-पगार, भक्त-भोजन रूप वेतन-मूल्य जेओने एवा 'कल्लाकल्लिं'

सोहम्मे कप्पे अरुणज्झए विमाणे जाव अन्तं काहिइ । निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं छट्ठं अज्झयणं समत्तं

अगियार उपासक प्रतिमाओ तेमज पाळीने यावत् सौधर्म देवलोकमां अरुणध्वज विमानने विशे उत्पन्न थयो यावत् पछी (महाविदेहमां) कर्मोनो अन्त करशे. अहीं निक्षेप कहेवो.

सातमा उपासकदशाना छठ्ठा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.

७ अज्झयणं ।

१. सत्तमस्स उक्खेवो। पोलासपुरे नामं नयरे । सहस्सम्बवणे उज्जाणे । जियसत्तू राया । तत्थ णं पोलासपुरे नयरे सद्दालपुत्ते नामं कुम्भकारे आजीवियोवासए परिवसइ, आजीवियसमयंसि लद्धट्ठे गहियट्ठे पु-

७ सद्दालपुत्र अध्ययन.

१. सातमा अध्ययननो उपोद्घात कहेवो-(श्रमण भगवान् महावीरे छठ्ठा अध्ययननो आ अर्थ कह्यो छे तो सातमा अध्ययननो शो अर्थ छे?) पोलासपुर नामे नगर हतुं. सहस्राम्रवन नामे उद्यान हतुं. जितशत्रु राजा हतो. ते पोलासपुर नगरमां आजीविकना

१. सातमुं अध्ययन सुगमज छे, परन्तु 'आजीवियोवासए' ति. 'आजीविकाः' गोशालकना शिष्यो, तेओनो उपासक-श्रावक. 'लब्धार्थ'

विहरइ। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी-एहिइ णं देवाणुप्पिया! कल्लं इहं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे तीयपडुप्पन्नमणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कवहियमहियपूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे वन्दणिज्जे सक्कारणिज्जे संमाणणिज्जे कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं जाव पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते, तं णं तुमं वन्देज्जाहि, जाव

आवीने मंखलिपुत्र गोशालकनी पासे धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे. ते पछी आजीविकोपासक सद्दालपुत्रनी पासे एक देव आव्यो, अने घुघरीओ सहित श्रेष्ठ वस्त्र जेणे पहेरेलां छे एवा ते देवे 'अंतरीक्षप्रतिपन्नः' आकाशमां रही आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रिय! आवती काले अहीं महामाहण, उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनारा, अतीत, वर्तमान अने भविष्यने जाणनारा, अरिहंत, जिन, केवली, सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी त्रण लोक वडे अवलोकित, महित-स्तुति करायेला अने पूजित, देव, मनुष्य अने असुर सहित लोकने अर्चनीय, वन्दनीय, सत्कार करवा योग्य, सन्मान करवा योग्य, कल्याण, मंगल, देव अने चैत्यनी पेठे उपासना करवा योग्य, सत्य कर्मनी संपत्तियुक्त एवा (पुरुष) आवशे, माटे तुं वंदन करजे, यावत् पर्यु-

---

जीवनी हिंसाथी निवृत्त थयेल होवाथी महामाहन कहेवाय छे. एटले [illegible] नगरमां महामाहन आवशे. 'उप्पन्ननाणदंसणधरे' उत्पन्न-आवरणना क्षयथी प्रगट थयेल ज्ञान अने दर्शनने धारण करनार, अने पछीज 'अतीतप्रत्युत्पन्नागतज्ञायकः' अतीत-भूत, प्रत्युत्पन्न-वर्तमान अने अनागत-भविष्य काळने जाणनार, 'अरह'ति अशोक वृक्षादि महाप्रातिहार्यरूप पूजाने योग्य होवाथी अर्हन्, अथवा सर्वज्ञ

य जम्बूलए य उट्टियाओ य करेन्ति। अन्ने य से बहवे पुरिसा दिन्नभइभत्तवेयणा कल्लाकल्लिं तेहिं बहूहिं करएहि य जाव उट्टियाहि य रायमग्गंसि वित्तिं कप्पेमाणा विहरन्ति।

२. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता गोसालस्स मङ्खलिपुत्तस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं

हिरण्यकोटि निधानमां रहेली, एक व्याजे मूकेली अने एक कोटि धनधान्यादिना विस्तारमां रोकायेली हती. तेने दस हजार गायोनुं एक व्रज हतुं. ते आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने अग्निमित्रा नामे भार्या हती. ते आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने पोलासपुर नगरनी बहार कुंभकारना पांचसो हाट हतां. तेमां जेने भृति–पगार अने भोजन रूप वेतन–मूल्य आप्युं छे एवा घणा पुरुषो दरेक प्रभाते घणा करक, वारक, पिठर, घट, अर्धघट, कलश, अलिंजर, जंबूल अने उष्ट्रिका करे छे. अने जेने पगार अने भोजनरूप मूल्य आप्युं छे एवा बीजा घणा पुरुषो दरेक प्रभाते ते घणा करको, यावत् उष्ट्रिका वडे राजमार्गमां पोतानी आजीविका करता विहरे छे.

२. त्यार बाद ते आजीविकोपासक सद्दालपुत्र अन्य कोई दिवसे मध्याह्नकाळे ज्यां अशोकवनिका छे त्यां आवे छे. त्यां

दरेक प्रभाते, [बहून् करकान्'–पाणी भरवानी घडीओ, 'वारकान्' गटकुडां, 'पिठरकान्' तावडीओ, 'घडकान्' घडाओ, 'अर्धघटकान्' अरधो घडो पाणी समाय तेवा नाना घडा, 'कलशकान्' अमुक प्रकारना आकारवाळा मोटा घडाओ, 'जंबूलकान्' लोकनी प्रसिद्धिथी जाणवा योग्य (चंबुओ), 'उष्ट्रीका.' मद्य अने तेल वगेरेना पात्र विशेष, गाडवा.]

२. 'पहिर' आवशे, 'इहं' आ नगरमां, 'महामाहणे'त्ति मा हन्मि–हुं नहि हणुं, अथवा पोते हनन–हिंसाथी निवृत्त थइ बीजाने 'मा हन'–न हणो, एम कहे, ते माहन, अने तेज मन, वचन करणादि वडे आजन्म–जन्म पर्यन्त ? (जीवनपर्यन्त) सूक्ष्मादि भेदवाळा

विहरइ । तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था । तए णं से देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने सखिंखिणियाइं जाव परिहिए सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–एहिइ णं देवाणुप्पिया ! कल्लं इहं महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे तीयपडुप्पन्नमणागयजाणए अरहा जिणे केवली सव्वण्णू सव्वदरिसी तेलोक्कवहियमहियपूइए सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स अच्चणिज्जे वन्दणिज्जे सक्कारणिज्जे संमाणणिज्जे कल्लाणं मङ्गलं देवयं चेइयं जाव पज्जुवासणिज्जे तच्चकम्मसंपयासम्पउत्ते, तं णं तुमं वन्देज्जाहि, जाव

आवीने मंखलिपुत्र गोशालकनी पासे धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे. ते पछी आजीविकोपासक सद्दालपुत्रनी पासे एक देव आव्यो, अने घुघरीओ सहित श्रेष्ठ वस्त्र जेणे पहेरेलां छे एवा ते देवे 'अंतरीक्षप्रतिपन्नः' आकाशमां रही आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिय ! आवती काले अहीं महामाहण, उत्पन्न थयेला ज्ञान अने दर्शनने धारण करनारा, अतीत, वर्तमान अने भविष्यने जाणनारा, अरिहंत, जिन, केवली, सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी त्रण लोक वडे अवलोकित, महित–स्तुति करायेला अने पूजित, देव, मनुष्य अने असुर सहित लोकने अर्चनीय, वन्दनीय, सत्कार करवा योग्य, सन्मान करवा योग्य, कल्याण, मंगल, देव अने चैत्यनी पेठे उपासना करवा योग्य, सत्य कर्मनी संपत्तियुक्त एवा (पुरुष) आवशे, माटे तुं वंदन करजे, यावत् पर्यु-

जीवनी हिंसाथी निवृत्त थयेल होवाथी महामाहन कहेवाय छे पटले आ नगरमां महामाहन आवशे. 'उप्पन्ननाणदंसणधरे' उत्पन्न–आवरणना क्षयथी प्रगट थयेल ज्ञान अने दर्शनने धारण करनार, अने पथीज 'अतीतप्रत्युत्पन्नानागतज्ञायकः' अतीत–भूत, प्रत्युत्पन्न–वर्तमान अने अनागत–भविष्य काळने जाणनार, 'अरह'ति अशोक वृक्षादि महाप्रातिहार्यरूप पूजाने योग्य होवाथी अर्हन्, अथवा सर्वज्ञ

पज्जुवासेज्जाहि, पाडिहारिएणं पीढफलगसिज्जासंथारएणं उवनिमन्तेज्जाहि । दोचंपि तचंपि एवं वयइ, वइत्ता जामेव दिसं पाउब्भूए तामेव दिसं पडिगए ।

३.(तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तेणं देवेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झ

पासना करजे, तथा प्रातिहारिक (पाछा आपवा योग्य) पीठ–आसन, फलक–पाटीउं, शय्या–वसति–स्थान, अने संस्तारक–संथारा वडे निमंत्रण करजे. एम बीजीवार अने त्रीजीवार कहुं, कहीने (ते देव) जे दिशाथी आव्यो हतो ते दिशा तरफ गयो.

३.(त्यार बाद ते देवे ए प्रमाणे कहुं एटले आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने आ आवा प्रकारनो अध्यवसाय थयो–ए प्रमाणे

होवाथी अविद्यमान छे रह–एकान्त जेने ते 'अरहाः' जेने एकान्त–छानुं नथी एवा, रागादिनो जय करनार होवाथी जिन, केवल–परिपूर्ण, शुद्ध अथवा अनन्त ज्ञानादि जेने छे ते केवली, अतीतादिनुं ज्ञान छतां सर्व ज्ञान प्रति शंका थाय माटे सर्वज्ञ–सर्वने विशेषपणे जाणनार. कारण के तेमने साकार उपयोग छे. 'सर्वदर्शी' अनाकार उपयोगना सामर्थ्यथी सर्वने सामान्यपणे देखनार, तथा 'तेलोक्कवहियमहियपूइए' त्रण लोक वासी जन वडे 'अवहितः' सर्व ऐश्वर्यादि अतिशयना समूहने जोवामां तत्पर मन वडे अत्यन्त हर्ष वडे अने अतिशय कुतूहलथी अनिमेष लोचन वडे जोयेला, 'महिय'त्ति सेव्यपणे इच्छित, 'पूजितः' पुष्पादिथी पूजायेला एवा. एज वातने स्पष्ट करे छे. 'सदेवमनुजासुरस्य' देवसहित मनुष्य अने असुरो जेने विषे छे एवा लोकने पुष्पादि वडे अर्चन करवा योग्य, 'वन्दनीयः' स्तुति वडे वन्दन करवा योग्य, 'सत्करणीयः' सत्कार करवा योग्य, आदर करवा योग्य, 'सन्माननीयः' अभ्युत्थान वगेरे विनय करवा वडे सन्मान करवा योग्य, कल्याण, मंगल अने देव रूप छे एवी बुद्धि वडे उपासना करवा योग्य, 'तच्चकम्मसंपयासंपउत्ते'त्ति.तथ्य–अवश्य सफल होवाथी सत्य फळ कर्मोनी सम्पत्ति वडे युक्त एवा प्रकारना छे.

त्थिए ४ समुप्पन्ने–'एवं खलु ममं धम्मायरिए धम्मोवएसए गोसाले मङ्खलिपुत्ते, से णं महामाहणे उप्पन्नणाण-दसणधरे, जाव तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते, से णं कल्लं इहं हव्वमागच्छिस्सइ। तए णं तं अहं वन्दिस्सामि, जाव पज्जुवासिस्सामि, पाडिहारिएणं जाव उवनिमन्तिस्सामि।

४. तए णं कल्लं जाव जलन्ते समणे भगवं महावीरे जाव समोसरिए। परिसा निग्गया जाव पज्जुवासइ।) तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे 'एवं खलु समणे भगवं महावीरे जाव विहरइ, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं, वन्दामि जाव पज्जुवासामि' एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता ण्हाए जाव

खरेखर मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक गोशाल मंखलिपुत्र छे ते महामाहण, उत्पन्न थयेला ज्ञान–दर्शनने धरण करनारा, यावत् सत्य कर्मनी संपत्तिथी युक्त छे. अने ते काले अहीं शीघ्र आवशे, तेथी हुं तेमने वंदन करीश, यावत् तेमनी पर्युपासना करीश. अने प्रातिहारिक पीठ–आसन वगेरे वडे निमन्त्रण करीश.

४. ते पछी काले यावत् सूर्योदय थतां श्रमण भगवान् महावीर समोसर्या. परिषद् वांदवाने नीकळी, यावत् तेमनी पर्युपासना करी.) त्यार बाद आजीविकोपासक सद्दालपुत्र आ वातथी विदित थई 'ए प्रमाणे खरेखर श्रमण भगवान् महावीर यावत् विहरे छे, माटे श्रमण भगवंत महावीरनी पासे जउं, तेमने वांदुं अने तेमनी पर्युपासना करुं' एम विचार करे छे. विचार करी स्नान करी

४. 'कल्लं' अहीं यावत् शब्दना ग्रहणथी 'पाउप्पभायाए रयणीए (प्रादुष्प्रभातायां रजन्यां–प्रातःकालनो आविर्भाव थयो छे जेमां एवी रात्रि थतां) त्यांथी मांडी 'जलन्ते सूरिए' (ज्वलति सूर्ये–तेज वडे सूर्य देदीप्यमान थतां) त्यां सुधी प्रभातनुं वर्णन जाणवुं अने तेनी ज्ञातासूत्रना उपोद्घातनी जेम व्याख्या करवी.

पायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे मणुस्सवग्गुरापरिगए साओ गिहाओ पडिणिक्खमइ । पडिनिक्खमित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ । निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करेत्ता वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जाव पज्जुवासइ ॥

५. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य महइ० जाव धम्मकहा समत्ता । 'सद्दालपुत्ता' इ समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–'से नूणं सद्दालपुत्ता ! कल्लं तुमं पुव्वावरण्हकालसमयंसि जेणेव असोगवणिया जाव विहरसि । तए णं तुब्भं एगे देवे अन्तियं पाउ-

कौतुक, मंगल अने प्रायश्चित्त करी शुद्ध अने प्रवेश योग्य वस्त्रो पहेरी अल्प अने महामूल्यवाळा घरेणा वडे शरीरने अलंकृत करी मनुष्यरूपी वागुरा (जाळ) वडे वींटायेलो ते पोताना घरथी बहार नीकळे छे. नीकळीने पोलासपुर नगरना मध्य भागमां थइने जाय छे. जइने ज्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान छे अने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे, आवीने त्रण वार प्रदक्षिणा करे छे, प्रदक्षिणा करीने वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने पर्युपासना करे छे.

५. त्यार बाद श्रमण भगवान् महावीरे आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने अने अत्यन्त मोटी परिषदने धर्मकथा कही, यावत् धर्म कथा समाप्त थई. 'हे सद्दालपुत्र' ! एम संबोधी श्रमण भगवान् महावीरे आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने आ प्रमाणे कह्युं–'सद्दालपुत्र ! गइ काले तुं मध्याह्नकाळे ज्यां अशोकवनिका छे त्यां यावत् रह्यो हतो, त्यारे तारी पासे एक देव आव्यो. ते पछी ते

देवे अन्तलिक्खपडिवन्ने एवं वयासी-हं भो सद्दालपुत्ता ! तं चेव सव्वं जाव पज्जुवासिस्सामि' । से नूणं सद्दालपुत्ता ! अट्ठे समट्ठे ? हंता अत्थि । नो खलु सद्दालपुत्ता ! तेणं देवेणं गोसालं मङ्खलिपुत्तं पणिहाय एवं वुत्ते । तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासयस्स समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्तस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए ४-'एस णं समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव तच्चकम्मसम्पयासम्पउत्ते, तं सेयं खलु ममं समणं भगवं महावीरं वन्दित्ता नमंसित्ता पाडिहारिएणं पीढफलग०जाव उवनिमन्तित्तए' एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता नमंसित्ता एवं वयासी-'एवं खलु भन्ते ! ममं पोलासपुरस्स नयरस्स बहिया पञ्च कुम्भका-

---

देवे आकाशमां रही आ प्रमाणे कह्युं-हे सद्दालपुत्र ! (काले आ नगरमां महामाहण आवशे) इत्यादि बधु कहेवुं, यावत् (तने विचार थयो के) 'हुं सेवा करीश.' सद्दालपुत्र ! खरेखर आ अर्थ युक्त छे ? (सद्दालपुत्रे कह्युं) हा, छे. परन्तु हे सद्दालपुत्र ! ते देवे मंखलिपुत्र गोशालकने उद्देशीने ए प्रमाणे कह्युं न होतुं. त्यार पछी आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने श्रमण भगवंत महावीरे एम कह्युं एटले आवा प्रकारनो आ अध्यवसाय थयो-आ श्रमण भगवंत महावीर महामाहण, उत्पन्न थयेल ज्ञान-दर्शनने धारण करनारा, यावत् सत्य कर्मनी संपत्तियुक्त छे, ते माटे मारे श्रमण भगवंत महावीरने वंदन नमस्कार करीने प्रातिहारिक (पाछा आपवा योग्य) पीठ-आसन, फलक-इत्यादि वडे निमन्त्रण करवुं श्रेय-योग्य छे' एम विचार करे छे. एम विचार करीने प्रयत्न वडे उठे छे, उठीने श्रमण भगवंत महावीरने वन्दन नमस्कार करे छे, वंदन नमस्कार करीने तेणे एम कह्युं—हे भगवन् ! खरेखर पोलासपुर नगरनी बहार मारा

रावणसया। तत्थ णं तुब्भे पाडिहारियं पीढ०जाव संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरह'। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स पञ्चकुम्भकारावणसएसु फासुएसणिज्जं पाडिहारियं पीढफलग०जाव संथारयं ओगिण्हित्ता णं विहरइ।

६. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए अन्नया कयाइ वायाहययं कोलालभण्डं अन्तो सालाहिंतो बहिया नीणेइ, नीणेत्ता आयवंसि दलयइ। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं

पांच सो कुंभारना हाटो छे, त्यां तमे प्रातिहारिक पीठ, फलक यावत्, संथाराने ग्रहण करीने रहो. त्यार बाद श्रमण भगवान् महावीर आजीविकोपासक सद्दालपुत्रनी ए वात स्वीकारे छे, स्वीकारी आजीविकोपासक सद्दालपुत्रना पांचसो कुंभारना हाटोमां प्रासुक अने एषणीय (निर्दोष) प्रातिहारिक पीठ, फलक यावत् संथाराने ग्रहण करीने विहरे छे.

६. त्यार पछी आजीविकोपासक सद्दालपुत्र अन्य कोई दिवसे वाताहत-वायुथी सूकायेल कुंभारना पात्र अंदर रहेला छे तेने शालामांथी बहार काढे छे. बहार काढीने तडकामां सूकवे छे. त्यारे श्रमण भगवान् महावीरे आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने कह्युं-

६ 'वायाहययं' ति. वाताहतं-वायु वडे कंइक सूकायेलां, काचा, 'कोलालभंडं' ति. कुलाल-कुंभार, तेना संबन्धी ते कौलाल-कुंभारे घडेला भांड-पात्र. ए पुरुषकारवडे कराय छे के ते सिवाय कराय छे? ए प्रमाणे भगवंते पूछ्युं एटले ते नियतिवाद रूप गोशालकना मत वडे भावित-वासित होवाथी 'पुरुषकारवडे कराय छे' ए उत्तर आपवामां पोताना मतनो त्याग अने परमतना स्वीकाररूप दोषने जाणता तेणे 'अपुरुषकारेण' पुरुषकार सिवाय कराय छे-एम उत्तर आप्यो छे. त्यार पछी तेणे स्वीकारेल नियतिमतनो

वयासी—'सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभण्डे कओ' ? तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी–एस णं भन्ते ! पुव्विं मट्टिया आसी, तओ पच्छा उदएणं निमिज्जइ, निमित्ता छारेण य करिसेण य एगयओ मीसिज्जइ, मिसित्ता चक्के आरोहिज्जइ, तओ बहवे करगा य जाव उट्टियाओ य कज्जंति। तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–'सद्दालपुत्ता ! एस णं कोलालभण्डे किं उट्ठाणेणं जाव पुरिसक्कारपरक्कमेणं कज्जति, उदाहु अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं

हे सद्दालपुत्र ! 'आ कुंभारना पात्र केवी रीते थाय छे ? ने पछी आजीविकोपासक सद्दालपुत्रे श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे कह्युं–भगवन् ! आ पूर्वे माटी हती, त्यार पछी ते पाणी वडे स्थापन कराय छे–पलाळाय छे, पलाळीने राख अने छाण वडे एकत्र मेळवाय छे, मेळवीने चक्र (चाक) उपर चडावाय छे. त्यार पछी घणा करको (पाणी भरवाना घडा) यावद् उष्ट्रिका (घी तेल भरवाना पात्र) कराय छे. त्यार पछी श्रमण भगवान् महावीरे आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने आ प्रमाणे कह्युं–हे सद्दालपुत्र ! आ कुंभारना पात्र उत्थान (प्रयत्न)

निरास करवा माटे फरीथी प्रश्न करता भगवान् महावीर कहे छे–'सद्दालपुत्ता' इत्यादि. हे सद्दालपुत्र ! जो कोइ पुरुष तारा वाताहत–वायुथी सूकायेला पटले काचा, अथवा 'पक्केलयं' पक्व–अग्निथी पाकेला कोलालभांड–पात्रने 'अपहरेद् वा' चोरी जाय, विकिरेद् वा' ज्यां त्यां फेंकी दे, 'भिन्द्याद् वा' काणा करे, फोडी नांखे, 'आछिन्द्याद् वा' हाथथी खुचवीने बलात्कारे लइ ले, 'विछिन्द्याद् वा' प पाठान्तर छे पटले विविध प्रकारे छेद करे, 'परिष्ठापयेद् वा' बहार लइने त्याग करे. ते पुरुषने शुं तुं दंड 'निवत्तेज्जासि–निर्वर्तयसि–करे ? ते पुरुषने हुं 'आओसेज्जा वा' आक्रोशयामि–आक्रोश करुं, 'तुं मरी गयो छे'इत्यादि शापो–गाळो वडे भांडुं. 'हणेज्जा वा' हन्मि–दंडादि

कज्जति') तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं एवं वयासी–'भन्ते ! अणुट्ठाणेणं जाव अपुरिसक्कारपरक्कमेणं, नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा, नियया सव्वभावा।

७. तए णं समणे भगवं महावीरे सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं एवं वयासी–'सद्दालपुत्ता ! जइ णं तुब्भं केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभण्डं अवहरेज्जा वा विक्खिरेज्जा वा भिन्देज्जा वा अच्छिंदेज्जा वा

वडे, यावत् पुरुषकार–पराक्रम वडे कराय छे अथवा उत्थान सिवाय, यावत् पुरुषकार–पराक्रम सिवाय कराय छे ? त्यारे ते आ-जीविकोपासक सद्दालपुत्रे श्रमण भगवान् महावीरने आ प्रमाणे कह्युं–भगवन् ! उत्थान सिवाय, यावत् पुरुषकार–पराक्रम सिवाय कराय छे. (कारण के) उत्थान नथी, यावत् पुरुषकार–पराक्रम नथी, सर्व भावो नियत छे.

७. ते वार पछी श्रमण भगवान् महावीरे आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने आ प्रमाणे कह्युं–सद्दालपुत्र ! जो कोई पुरुष तारा

वडे हणुं, 'बंधेज्जा वा' वध्नामि वा–रज्जु वगेरेथी बांधुं, 'महेज्जा वा' मथ्नामि–नाश करुं, 'तज्जेज्जा वा' तर्जयामि–हे दुराचार! इत्यादि वचनो वडे तर्जना करुं, 'तालेज्जा वा' ताडयामि–चपेटा वगेरेथी ताडन करुं. 'निच्छोडेज्जा वा' निश्छोटयामि–धनादि लइ लेवा वडे बहार काढुं, 'निब्भच्छेज्जा वा' निर्भर्त्सयामि–कठोर वचनो वडे निर्भर्त्सना–तिरस्कार करुं अने अकाळे जीवितात् व्यपरोपयामि–जीवितथी मुक्त करुं, जीवथी मारी नांखुं. आ प्रमाणे भगवंत ते सद्दालपुत्रने पोताना वचन वडे पुरुषकारनो स्वीकार करावी तेना मतने दूषित करवा माटे कहे छे–'सद्दालपुत्त' इत्यादि हे सद्दालपुत्र! जो वास्तविक रीते उत्थानादि नथी तो तारा भांड कोइ हरण करतुं नथी, अने तुं तेने आक्रोश करतो नथी, जो कोइ तारा भांड हरण करे छे अने तुं तेना उपर आक्रोश करे छे एम माने छे छतां जे तुं कहे छे के 'उत्थानादि नथी' ते मिथ्या–असत्य छे.

परिट्ठवेज्जा वा, अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरेज्जा, तस्स णं तुमं पुरिसस्स किं दण्डं निवत्तेज्जासि ? भन्ते ! अहं णं तं पुरिसं आओसेज्जा वा हणेज्जा वा बन्धेज्जा वा महेज्जा वा तज्जेज्जा वा तालेज्जा वा निच्छोडेज्जा वा निब्भच्छेज्जा वा अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जा। सद्दालपुत्ता! नो खलु तुब्भं केइ पुरिसे वायाहयं वा पक्केल्लयं वा कोलालभण्डं अवहरइ वा जाव परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा भारियाए सद्धिं विउलाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणे विहरइ, नो वा तुमं तं पुरिसं आओसेज्जसि वा हणिज्जसि वा जाव अकाले चेव जीवियाओ ववरोवेज्जसि, जइ नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव परक्कमे इ वा नियया सव्वभावा। अह णं तुब्भं केइ पुरिसे वायाहयं जाव परिट्ठवेइ वा, अग्गिमित्ताए वा जाव विहरइ, तुमं वा तं पुरिसं आओ-

वायुथी सूकायेला (काचा) अने पाकेला कुंभारना पात्रने हरी जाय, ज्यां त्यां फेंकी दे, फोडी नाखे, बलात्कारे ले, बहार मूकी दे, अथवा तारी स्त्री अग्निमित्रा साथे विपुल भोगो भोगवतो विहरे तो शुं तुं ते पुरुषने शिक्षा करे ? हे भगवन् ! हुं ते पुरुषने आक्रोश करुं, हणुं, बांधुं, मारुं, तर्जना करुं, ताडन करुं, तेनुं बधुं खुंचवी लउं अने तेनो तिरस्कार करुं, तथा तेने अकालेज जीवितथी मुक्त करुं. सद्दालपुत्र ! जो उत्थान नथी, यावत् पुरुषकार-पराक्रम नथी अने सर्व भावो नियत छे तो कोई पुरुष तारा वायुथी सूकायेला (काचा) अने पाका कुंभारना पात्रने हरण करतुं नथी, यावत् बहार लइने मूकतुं नथी, अने तारी अग्निमित्रा भार्या साथे विपुल भोगो भोगवतुं नथी, तथा तुं ते पुरुषने आक्रोश करतो नथी, हणतो नथी यावत् अकाले जीवितथी मुक्त करतो नथी, अने जो तारां वायुथी सूकायेला पात्रने कोई पुरुष हरी जाय यावत् बहार मूकी दे, तथा अग्निमित्रानी साथे कोइ पुरुष विपुल भोगो भोगवतो विहरे अने तुं ते पुरुषने आक्रोश करे

सेसि वा जाव ववरोवेसि, तो जं वदसि नत्थि उट्ठाणे इ वा जाव नियया सव्वभावा तं ते मिच्छा। एत्थ णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए सम्बुद्धे।

८. तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–'इच्छामि णं भन्ते! तुब्भं अन्तिए धम्मं निसामेत्तए'। तए णं समणं भगवं महावीरे सद्दालपुत्तस्स आजीविओवासगस्स तीसे य जाव धम्मं परिकहेइ। तए णं से सद्दालपुत्ते आजीविओवासए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ० जाव हियए जहा आणंदो तहा गिहिधम्मं पडिवज्जइ। नवरं एगा हिरण्णकोडी निहाणपउत्ता, एगा हिरण्णकोडी वुड्ढिपउत्ता, एगा हिरण्णकोडी पवित्थरपउत्ता,

यावत् जीवितथी मुक्त करे तो तुं जे कहे छे के 'उत्थान नथी, यावत् सर्व भावो नियत छे ते मिथ्या छे. अहीं आजीविकोपासक सद्दालपुत्र बोध पाम्यो.

८. त्यार बाद आजीविकोपासक सद्दालपुत्र श्रमण भगवंत महावीरने वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं–हे भगवन्! तमारी पासे धर्म श्रवण करवाने इच्छुं छुं. ते पछी श्रमण भगवान् महावीरे आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने अने ते मोटी परिषदने यावत् धर्म कह्यो. त्यार बाद आजीविकोपासक सद्दालपुत्र श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्म सांभळी अवधारी हृष्ट-प्रसन्न अने संतुष्ट चित्तवाळो थई आनन्दनी पेठे ते प्रमाणे गृहस्थ धर्मनो स्वीकार करे छे. परन्तु तेणे एक हिरण्यकोटि निधानमां, एक हिरण्यकोटि व्याजे अने एक हिरण्यकोटि धनधन्यादिना विस्तारमां राखेली छे. दस हजार गायोनुं एक व्रज छे.

एगे वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं, जाव समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वन्दित्ता नमंसित्ता जेणेव पोलासपुरे नयरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता पोलासपुरं नयरं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे जेणेव अग्गिमित्ता भारिया तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता अग्गिमित्तं भारियं एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिए! समणे भगवं महावीरे जाव समोसढे, तं गच्छाहि णं तुमं समणं भगवं महावीरं, वन्दाहि जाव पज्जुवासाहि, समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जाहि'।

९. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया सद्दालपुत्तस्स समणोवासगस्स 'तह'त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ।

यावत् श्रमण भगवंत महावीरने वंदन नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने ज्यां पोलासपुर नामे नगर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने पोलासपुर नगरना मध्य भागमां ज्यां पोतानुं घर छे अने ज्यां अग्निमित्रा भार्या छे त्यां आवे छे. आवीने तेणे अग्निमित्रा भार्याने आ प्रमाणे कह्युं-ए प्रमाणे खरेखर हे देवानुप्रिये! श्रमण भगवान् महावीर समोसरेला छे, तो माटे तुं जा अने श्रमण भगवंत महावीरने वंदन कर यावत् पर्युपासना कर, तथा श्रमण भगवंत महावीरनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षाव्रत रूप बार प्रकारनो गृहस्थ धर्म अंगीकार कर.

९. त्यार पछी ते अग्निमित्रा भार्या श्रमणोपासक सद्दालपुत्रना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे स्वीकारे छे. त्यार बाद

९. 'तए ण सा अग्गिमित्ता' इत्यादि. त्यार बाद ते अग्निमित्रा भार्या सद्दालपुत्र श्रमणोपासकना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे

तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए कोडुम्बियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! लहुकरणजुत्तजोइयं समखुरवालिहाणसमलिहियसिङ्गएहिं जम्बूणयामयकलावजोत्तपइविसिट्ठएहिं रययामयघण्टसुत्तरज्जुगवरकञ्चणखइयनत्थापग्गहोग्गहियएहिं नीलुप्पलकयामेलएहिं पवरगोणजुवाणएहिं ना-

श्रमणोपासक सद्दालपुत्र कौटुम्बिक पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रिय ! लहुकरण-शीघ्र क्रिया करवामां युक्त एवा पुरुषे जोडेल, समान खुर-खरी अने वालिधान-पुच्छ जेओना छे तथा सरखी रीते उगेला शींगडावाळा, जम्बूनद-सुवर्णमय कलाप-डोकनुं आभूषण, अने योक्त्र-जोतर प्रतिविशिष्ट-सुशोभित जेओनुं छे एवा, रजतमय घंट जेने छे एवा, सूतरनी रज्जुरूप श्रेष्ठ सुवर्ण वडे युक्त नाथसंबन्धी रास वडे अवगृहीत-बांधेला, काळा कमळना करेला आपीड-छोगा जेओने छे एवा श्रेष्ठ युवान बळदो वडे

स्वीकारे छे. स्वीकारीने स्नान करी जेणे बलिकर्म करेलुं छे पछी, बलिकर्म लोकमां प्रसिद्ध छे, जेणे कौतुक, मंगल अने प्रायश्चित्त कर्युं छे पछी, कौतुक-मेषना तिलक करवा वगेरे, मंगल-दहीं, अक्षत, चंदन वगेरे, प्रायश्चित्त-दुःस्वप्नादिनो नाश करनार होवाथी प्रायश्चित्तनी पेठे अवश्य करवा योग्य, 'सुद्धप्पावेसाइं' शुद्धात्मा-शुद्ध आत्मा जेनो छे पछी, वैषिकाणि-वेषने योग्य श्रेष्ठ वस्त्रो जेणे पहेरेलां छे पछी, 'अप्पमहग्घाभरणालंकतसरीरे' अल्प अने महामूल्य वाळा आभरण वडे अलंकृत-सुशोभित शरीर जेनुं छे पछी, 'चेडिगचक्कवालपरिकीर्णो' दासीओना समूह वडे वींटायेली. बीजा पुस्तकमां यानतुं वर्णन छे ते व्याख्या सहित आ प्रमाणे जाणवुं-'लहुकरणजुत्तजोइयं' लघुकरण-शीघ्र क्रिया करवा वडे-दक्षपणा वडे युक्त पुरुषोए योजित-यन्त्र अने यूपादि वडे जोडायेलुं, 'समखुरवालिहाण-समलिहियसिंगएहिं' सम-तुल्य छे खरी अने वालिधान-पुच्छ जेना तथा सम-सरखा लिखित-उल्लिखित कोतरेला-उगेलां शृंग-शींगडा जेना छे एवा, 'जाम्बूनदमयकलापयोक्त्रप्रतिविशिष्टाभ्यां' सुवर्णमय कलाप-डोकनुं आभरण अने योक्त्र-जोतर प्रतिवि-

णामणिकणगघण्टियाजालपरिगयं सुजायजुगजुत्तउज्जुगपसत्थसुविरइयनिम्मियं पवरलक्खणोववेयं जुत्तामेव धम्मियं जाणप्पवरं उवट्ठवेह, उवट्ठवेत्ता मम एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह'। तए णं ते कोडुम्बियपुरिसा जाव पच्चप्पिणन्ति ॥

१०. तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया ण्हाया जाव पायच्छित्ता सुद्धप्पावेसाइं जाव अप्पमहग्घाभरणा-

'जुत्तामेव' युक्त-जोडेल, अनेक प्रकारना मणि युक्त घंटिका-घुघरीओना समूह वडे युक्त, सुजात-उत्तम, युक्त-संगत, ऋजु-सरल, प्रशस्त, सारी रीते घडेलुं अने सारी रीते गोठवेलुं युग-धोंसरुं जेने विशे छे एवा, प्रवर-श्रेष्ठ लक्षणो वडे सहित, धार्मिक यानप्रवर-श्रेष्ठ वाहनने हाजर करो. हाजर करीने मने आ आज्ञा पाछी आपो. त्यार बाद ते कौटुम्बिक पुरुषो (ते बधुं करीने) आज्ञा पाछी आपे छे.

१०. त्यार पछी ते अग्निमित्रा भार्या स्नान करी यावत् कौतुक, मंगल अने प्रायश्चित्त करी शुद्ध अने प्रवेश योग्य वस्त्रो

विष्ट-सुशोभित जेओने छे एवा, 'रजतमयघण्टसूत्ररज्जुवरकाञ्चनखचितनस्तप्रग्रहावगृहीतकाभ्यां' रजतमय घंट-टोकरा जेने छे एवा, सूतरनी रज्जुरूप श्रेष्ठ सुवर्ण वडे खचित-युक्त नाथनी प्रग्रह-दोरी वडे बांधेला, 'नीलोत्पलकृतशेखराभ्यां' काळा कमळ वडे करेलां छे शेखर-कलगी जेओने एवा, 'पवरगोणजुवाणएहिं' श्रेष्ठ जुवान एवा बे बळदो वडे 'जुत्तामेव' युक्त-जोडेल, 'नानामणिकनकघण्टिकाजालपरिगतम्' अनेक प्रकारना मणिमय सुवर्णनी घुघरीओना समूह वडे युक्त, 'सुजातयुगयुक्तऋजुकप्रशस्तसुविरचितनिर्मितं' सुजात-उत्तम काष्ठनुं बनेलुं युग-धोंसरुं, युक्त-संगत, ऋजुक-सरल, प्रशस्त, सुविरचित-सारी रीते घडेल अने निर्मित-नांखेलुं छे जेने विशे एवा, प्रवर-श्रेष्ठ लक्षण वडे सहित, 'जुत्तामेव' नो संबन्ध 'पवरगोणजुवाणएहिं' नी साथे करवो, एटले श्रेष्ठ अने जुवान बे बळदो सहित, धार्मिक यानप्रवर-श्रेष्ठ वाहनने 'उपस्थापयत' हाजर करो.

लंकियसरीरा चेडियाचक्कवालपरिकिण्णा धम्मियं जाणप्पवरं दुरूहइ, दुरुहित्ता पोलासपुरं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव सहस्सम्बवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता धम्मियाओ जाणाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता चेडियाचक्कवालपरिवुडा जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तिक्खुत्तो जाव वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासन्ने नाइदूरे जाव पञ्जलिउडा ठिइया चेव पज्जुवासइ ।

११. तए णं समणे भगवं महावीरे अग्गिमित्ताए तीसे य जाव धम्मं कहेइ । तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमं-

---

पहेरी, अल्प अने महामूल्यवाळा अलंकार वडे शरीर शणगारी, चेटिका–दासीओना समूह वडे वींटायेली धार्मिक श्रेष्ठ वाहन उपर चढे छे, चढीने पोलासपुर नगरना मध्य भागमां थइने नीकळे छे. नीकळीने ज्यां सहस्राम्रवन नामे उद्यान छे त्यां आवीने धार्मिक यानथी नीचे उतरे छे. नीचे उतरीने दासीओना समुदाय वडे वींटायेली (अग्निमित्रा) ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. आवीने त्रण वार यावत् वन्दन नमस्कार करे छे, वन्दन नमस्कार करीने अत्यन्त पासे नहि, तेम अत्यन्त दूर नहि एम यावत् हाथ जोडी उभी रहीने पर्युपासना करे छे.

११. त्यार बाद श्रमण भगवान् महावीर अग्निमित्राने अने ते मोटी परिषदने यावत् धर्मोपदेश करे छे, त्यार पछी ते अग्निमित्रा भार्या श्रमण भगवंत महावीरनी पासे धर्म सांभळी, अवधारी, हृष्ट–प्रसन्न अने संतुष्ट थयेली श्रमण भगवंत महावीरने वंदन

सइ, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी--सद्दहामि णं भन्ते ! निग्गन्थं पावयणं, जाव से जहेयं तुब्भे वयह, जहा
णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए बहवे उग्गा भोगा जाव पव्वइया नो खलु अहं तहा संचाएमि देवाणुप्पियाणं अ-
न्तिए मुण्डा भवित्ता, जाव अहं णं देवाणुप्पियाणं अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गि-
हिधम्मं पडिवज्जिस्सामि '। अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबन्धं करेह । तए णं सा अग्गिमित्ता भारिया स-
मणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तिए पञ्चाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जइ, प-
डिवज्जित्ता समणं भगवं महावीरं वन्दइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता तमेव धम्मियं जाणप्पवरं दुरुहइ, दुरुहित्ता
जामेव दिसं पाउब्भूया तामेव दिसं पडिगया । तए णं समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ पोलासपुराओ न
यराओ सहस्सम्बवणाओ पडिनिग्गच्छइ, पडिनिग्गच्छित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ।

नमस्कार करे छे. वंदन नमस्कार करीने तेणे आप्रमाणे कह्युं-'हे भगवन् ! हुं निर्ग्रन्थ प्रवचननी श्रद्धा करुं छुं के यावत् जे तमे कहो
छो. जे प्रकारे देवानुप्रिय एवा आपनी पासे घणा उग्रकुळना, भोग कुळना क्षत्रिओए यावत् प्रव्रज्या ग्रहण करी छे ते प्रमाणे हुं
देवानुप्रिय एवा आपनी पासे मुंड थइने प्रव्रज्या ग्रहण करवा समर्थ नथी, परन्तु हुं देवानुप्रिय एवा आपनी पासे पांच अणुव्रत
अने सात शिक्षाव्रत रूप चार प्रकारना गृहस्थ धर्मने अंगीकार करीश. (भगवंते कह्युं-)हे देवानुप्रिय ! तमने सुख थाय तेम करो, परन्तु
प्रतिबन्ध न करो. त्यार पछी ते अग्निमित्रा भार्या श्रमण भगवान् महावीरनी पासे पांच अणुव्रत अने सात शिक्षा व्रत रूप चार
प्रकारना गृहस्थ धर्मने स्वीकारे छे. स्वीकारीने श्रमण भगवंत महावीरने वंदन अने नमस्कार करे छे. वंदन अने नमस्कार करीने तेज

१२. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ। तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते इमीसे कहाए लद्धट्ठे समाणे-'एवं खलु सद्दालपुत्ते आजीवियसमयं वमित्ता समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं पडिवन्ने, तं गच्छामि णं सद्दालपुत्तं आजीविओवासयं समणाणं निग्गन्थाणं दिट्ठिं वामेत्ता पुणरवि आजीवियदिट्ठिं गेण्हावित्तए' त्तिकट्टु एवं सम्पेहेइ, संपेहित्ता आजीवियसङ्घसम्परिवुडे जेणेव पोलासपुरे नयरे जेणेव आजीवियसभा तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता आजीवियसभाए भण्डनिक्खेवं करेइ। करेत्ता कइवएहिं आजीविएहिं सद्धिं जेणेव सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणेव उवागच्छइ। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गो-

---

धार्मिक प्रवर यान (रथ) उपर चढे छे, चढीने जे दिशाथी आवी हती ते दिशा तरफ जाय छे. त्यार बाद श्रमण भगवंत महावीर अन्य कोई दिवसे पोलासपुर नगरथी अने सहस्राम्रवन उद्यानथी नीकळे छे अने नीकळीने बहारना देशोमां विहरे छे.

१२. त्यार पछी सद्दालपुत्र श्रमणोपासक थयो अने जेणे जीवाजीव तत्त्व जाणेला छे एवो यावत् विहरे छे. त्यार पछी मंखलिपुत्र गोशालक आ वातने जाणी 'ए प्रमाणे खरेखर सद्दालपुत्रे आजीविकसमयनो त्याग करीने श्रमण निर्ग्रन्थनी दृष्टि अंगीकार करी छे, तो हुं जउं अने आजीविकोपासक सद्दालपुत्रने श्रमण निर्ग्रन्थोनी दृष्टिनो त्याग करावी फरीथी आजीविकनी दृष्टि ग्रहण करावुं' एम विचारे छे. एम विचारी आजीविकना संघसहित ज्यां पोलासपुर नगर छे अने ज्यां आजीविकसभा छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने आजीविकसभामां भांड–पात्रादि उपकरण मूके छे. मूकीने केटलाक आजीविको साथे ज्यां सद्दालपुत्र श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे. ते वारे सद्दालपुत्र श्रमणोपासक मंखलिपुत्र गोशालने आवतो जुए छे. आवतो जोइने तेनो

सालं मङ्खलिपुत्तं एज्जमाणं पासइ। पासित्ता नो आढाइ, नो परिजाणइ, अणाढायमाणे अपरिजाणमाणे तुसिणीए संचिट्ठइ।

१३. तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तेणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणे अपरिजाणिज्जमाणे पीढफलगसिज्जासंथारट्ठयाए समणस्स भगवओ महावीरस्स गुणकित्तणं करेमाणे सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-' आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महामाहणे ? तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी-' के णं देवाणुप्पिया! महामाहणे ' ? तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-'समणे भगवं महावीरे महामाहणे'। से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ-'समणे भगवं महावीरे महा-

आदर करतो नथी, तेने जाणतो नथी, आदर नहि करतो अने नहि जाणतो ते मूंगो उभो रहे छे.

१३. त्यार बाद श्रमणोपासक सद्दालपुत्र वडे नहि आदर करायेला, नहि जाणेला अने पीठ, फलक, शय्या अने संथारा माटे श्रमण भगवंत महावीरना गुणकीर्तन करता मंखलिपुत्र गोशालके श्रमणोपासक सद्दालपुत्रने आ प्रमाणे कयुं-'हे देवानुप्रिय! अहीं महामाहण आव्या हता? त्यारे ते सद्दालपुत्र श्रमणोपासके कयुं-हे देवानुप्रिय! कोण महामाहण छे? त्यारे मंखलिपुत्र गोशालके कयुं-श्रमण भगवंत महावीर महामाहण छे. हे देवानुप्रिय! शा हेतुथी एम कहो छो के श्रमण भगवान् महावीर महामाहण छे? हे सद्दालपुत्र! खरेखर श्रमण भगवान महावीर महामाहण, उत्पन्न थयेला ज्ञान दर्शनने धारण करनारा यावत् महित-स्तुति करायेला अने पूजित

माहणे'? एवं खलु सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महामाहणे उप्पन्नणाणदंसणधरे जाव महियपूइए, जाव तच्चकम्मसम्पयासंपउत्ते, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ–'समणे भगवं महावीरे महामाहणे'। आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महागोवे? के णं देवाणुप्पिया! महागोवे? समणे भगवं महावीरे महागोवे। से केणट्ठेणं

हे देवानुप्रिय! अहीं 'महागोप' आव्या हता? हे देवानुप्रिय! 'महागोप' कोण छे? श्रमण भगवान् महावीर महागोप छे. हे देवानुप्रिय! शा हेतुथी यावत् महागोप कहेवाय छे? हे देवानुप्रिय! श्रमण भगवान् महावीर संसाराटवीमां नाश पामता, विनाश पामता, भक्षण कराता, छेदाता, भेदाता, लुप्त थता, विलुप्त थता घणा जीवोने (गायोनी पेठे) धर्मरूप दंड वडे संरक्षण करता, संगोपन (बचाव) करता निर्वाणरूप महा वाडामां पोताना हाथे पहोंचाडे छे, ते हेतुथी हे सद्दालपुत्र! एम कहेवाय छे के 'श्रमण भगवान् महावीर महागोप छे.'

१३ महागोवेत्यादि गोप-गायनो रक्षक, अने बीजा गायना रक्षको करतां अत्यन्त विशिष्ट होवाथी महान् छे माटे महागोप छे. 'नश्यतः' सन्मार्गथी दूर थता, 'विनश्यतः' अनेक प्रकारे मरता, 'खाद्यमानान्' मृगादि अवस्थामां वाघ वगेरेथी भक्षण कराता, 'छिद्यमानान्' मनुष्यादिपणामां खड्ग वगेरेथी छेदाता, 'भिद्यमानान्' भाला वगेरेथी भेदाता, 'लुप्यमानान्' कान, नासिका वगेरेना छेद करवा वडे लुप्त थता, 'विलुप्यमामान्' बाह्य उपधि-उपकरणना हरण करवाथी लोप पामता 'गा इव' गायोनी पेठे (ए अध्याहार जाणवो,) एवा जीवोने 'निव्वाणमहावाडं' निर्वाण रूप महा वाडामां-सिद्धि रूपी गायोना स्थान विशेषमां 'साहत्थिं'ति-स्वहस्तेनैव-पोताना हाथे साक्षात् 'संपावेइ' पहोंचाडे छे.

देवाणुप्पिया! जाव महागोवे? एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे धम्ममएणं दण्डेणं सारक्खमाणे संगोवेमाणे निव्वाणमहावाडं साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता! एवं वुच्चइ–'समणे भगवं महावीरे महागोवे'। आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महासत्थवाहे? के णं देवाणुप्पिया! महासत्थवाहे? सद्दालपुत्ता! समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे, से केणट्ठेणं? एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसाराडवीए बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे धम्ममएणं पन्थेणं सारक्खमाणे निव्वाणमहापट्ट-

---

हे देवानुप्रिय! अहीं महासार्थवाह आव्या हता? हे देवानुप्रिय! महासार्थवाह कोण छे? सद्दालपुत्र! श्रमण भगवान् महावीर महासार्थवाह छे. शा हेतुथी एम कहो छो? हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर संसाराटवीमां नाश पामता, विनाश पामता, यावत् विलुप्त थता घणा जीवोने धर्ममय मार्ग वडे संरक्षण करता निर्वाण रूप महापट्टण–नगरना सन्मुख पोताना हाथे पहोंचाडे छे, ते हेतुथी हे सद्दालपुत्र! एम श्रमण भगवान् महावीर महासार्थवाह कहेवाय छे.

हे देवानुप्रिय! अहीं महाधर्मकथी आव्या हता? हे देवानुप्रिय! महाधर्मकथी कोण छे? श्रमण भगवान् महावीर महाधर्मकथी छे. शा हेतुथी श्रमण भगवान् महावीर धर्मकथी छे? हे देवानुप्रिय! ए प्रमाणे खरेखर श्रमण भगवान् महावीर अत्यन्त

घणा पुस्तकमां महासार्थवाहना आलापक-पाठ पछी आ बीजो पाठ वधेलो छे–'हे देवानुप्रिय! अहीं महाधर्मकथी आव्या हता? हे देवानुप्रिय! कोण महाधर्मकथी छे? श्रमण भगवान् महावीर महाधर्मकथी छे? शा हेतुथी श्रमण भगवान् महावीर धर्मकथी छे? हे

णाभिमुहे साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता! एवं वुच्चइ-'समणे भगवं महावीरे महासत्थवाहे'। आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महाधम्मकही? के णं देवाणुप्पिया! महाधम्मकही? समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही। से केणट्ठेणं समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही? एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे महइमहालयंसि संसारंसि वहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे खज्जमाणे छिज्जमाणे भिज्जमाणे लुप्पमाणे विलुप्पमाणे उम्मग्गपडिवन्ने सप्पहविप्पणट्ठे मिच्छत्तवलाभिभूए अट्ठविहकम्मतमपडलपडोच्छन्ने वहूहिं अट्ठेहि

मोटा संसारमां नाश पामता, विनाश पामता, भक्षण कराता, छेदाता, भेदाता, लुप्त थता, विलुप्त थता, उन्मार्गने प्राप्त थयेला, सन्मार्गथी भूला पडेला, मिथ्यात्वना वळ वडे पराभव पामेला अने आठ प्रकारना कर्म रूप अन्धकारना समूह वडे ढंकायेला घणा जीवोने घणा अर्थो, यावत् व्याकरणो-उत्तरो वडे चार गतिरूप संसाराटवीथी पोताना हाथे पार उतारे छे, ते हेतुथी हे देवानुप्रिय! एम कहेवाय छे के 'श्रमण भगवान् महावीर महाधर्मकथी छे'.

सद्दालपुत्र! श्रमण भगवान् महावीर अत्यन्त मोटा संसारने विषे नाश पामता, यावत् विलोप पामता, उन्मार्गने प्राप्त थयेला, सन्मार्गथी दूर गयेला, मिथ्यात्वना बल वडे पराभव पामेला, आठ प्रकारना कर्म रूप अन्धकारना पटल-समूह वडे ढंकायेला घणा जीवोने घणा अर्थो, हेतुओ, प्रश्नो, कारणो-युक्तिओ अने उत्तरो वडे चार गति वाळा संसार रूप अटवीथी पोताना हाथे पार उतारे छे, ते माटे हे सद्दालपुत्र! श्रमण भगवान् महावीर महाधर्मकथी छे. आ पाठनो अर्थ स्पष्ट छे. परन्तु जीवोना नश्यन्-नाश पामता वगेरे विशेषण रूप हेतु वतावया कहे-छे-'उन्मार्गप्रतिपन्नान्' उन्मार्गने प्राप्त थयेला,' एटले जेणे मिथ्यादृष्टिना शासननो आश्रय करेलो छे एवा, 'सत्पथविप्रनष्टान्-सन्मार्गनो-जिन शासननो जेणे त्याग कर्यो छे एवा, एम शा हेतुथी छे? ते कहे छे-मिथ्या-

य जाव वागरणेहि य चाउरन्ताओ संसारकन्ताराओ साहत्थिं नित्थारेइ, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ–'समणे भगवं महावीरे महाधम्मकही'। आगए णं देवाणुप्पिया! इहं महानिज्जामए? के णं देवाणुप्पिया! महानिज्जामए? समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए। से केणट्ठेणं? एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं महावीरे संसारमहासमुद्दे बहवे जीवे नस्समाणे विणस्समाणे जाव विलुप्पमाणे बुड्डमाणे निबुड्डमाणे उप्पियमाणे धम्ममईए नावाए निव्वाणतीराभिमुहे साहत्थिं सम्पावेइ, से तेणट्ठेणं देवाणुप्पिया! एवं वुच्चइ–'समणे भगवं महावीरे महानिज्जामए'।

१४. तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी–'तुब्भे णं देवाणुप्पिया! इय-

हे देवानुप्रिय! अहीं महानिर्यामक आव्या हता? हे देवानुप्रिय! कोण महानिर्यामक छे? श्रमण भगवान् महावीर महानिर्यामक छे. एम शा हेतुथी कहो छो? हे देवानुप्रिय! श्रमण भगवान् महावीर संसाररूप महासमुद्रमां नाश पामता, विनाश पामता, यावत् विलुप्त थता, बुडता, अत्यन्त बुडता 'उप्पियमाणे' गोथां खाता घणा जीवोने धर्मबुद्धि रूप नौका वडे निर्वाणरूप तीरना सन्मुख पोताना हाथे पहोंचाडे छे. ते हेतुथी हे देवानुप्रिय! एम कहेवाय छे के 'श्रमण भगवान् महावीर महानिर्यामक छे.

त्यबलाभिभूतान्' मिथ्यात्वना बल वडे पराभव पामेला, तथा आठ प्रकारना कर्मरूपी तम पटल–अन्धकारनो समूह ते वडे प्रत्यवच्छंन्न-ढंकायेला. तथा निर्यामकना आलापकमां 'बुड्डमाणे' बुडता, 'निबुड्डमाणे' जन्ममरणादि जळमां अत्यंत बुडता, 'उप्पियमाणे' उत्पलाव्यमानान्-गोथां खाता जीवोने पोताना हाथे पार उतारे छे.

च्छेया जाव इयनिउणा इयनयवादी इयउवएसलद्धा इयविण्णाणपत्ता, पभू णं तुब्भे मम धम्मायरिएणं धम्मोवएसएणं भगवया महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए' ? नो तिणट्ठे समट्ठे। से केणट्ठेणं देवाणुप्पिया ! एवं वुच्चइ–'नो खलु पभू तुब्भे मम धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए' ? सद्दालपुत्ता ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जुगवं जाव निउणसिप्पोवगए एगं महं अयं वा एलयं वा सूयरं वा कुक्कुडं वा तित्तिरं वा वट्टयं वा लावयं वा कवोयं वा कविंजलं वा वायसं वा सेणयं वा हत्थंसि वा पायंसि वा खुरंसि वा पुच्छंसि

१४ त्यारबाद सद्दालपुत्र श्रमणोपासके मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिय ! तमे 'इतिछेकाः' आ प्रमाणे छेक–प्रस्तावने जाणनारा, यावत् ए प्रमाणे निपुण–सूक्ष्मदर्शी, ए प्रमाणे नयवादी–नीतिनो उपदेश करनारा, एम उपदेशलब्धा–आप्तना उपदेशनुं श्रवण कर्युं छे जेणे एवा, अने ए प्रमाणे विज्ञानप्राप्त छो, तो तमे मारा धर्माचार्य अने धर्मोपदेशक श्रमण भगवान महावीर साथे विवाद करवाने समर्थ छो ? ए अर्थ युक्त नथी. हे देवानुप्रिय ! एम शा हेतुथी कहो छो के तमे मारा धर्माचार्य यावत् भगवंत महावीरनी साथे विवाद करवाने समर्थ नथी ? हे सद्दालपुत्र ! जेम के कोइ पुरुष तरुण, बलवान्, युगवान्–उत्तम काळमां उत्पन्न थयेलो, यावत् निपुण शिल्पने प्राप्त थयेलो होय, ते एक मोटा अज, एडक–घेटा, सुकर, कुकडा, तेतर, बतक, लावा, कपोत, कपिंजल,

१४. 'पभु'त्ति प्रभवः–समर्थः. 'इतिच्छेकाः' इति–ए प्रमाणे, उपलब्ध अद्भुत प्रकार वडे, एम बीजे पण 'इति' शब्दनो अर्थ जाणवो. छेक–प्रस्तावने जाणनार, वृद्ध आचार्यो 'कलापंडित' एवी व्याख्या करे छे. 'इतिदक्षाः' कार्यने जलदी करनारा, तथा 'इतिप्रष्ठाः' दक्ष पुरुषोमां प्रधान, 'वाग्मी–जेनी प्रशस्तवाणी छे एवा' एम वृद्धाचार्योए कह्युं छे. कवचित् 'पत्तट्ठा' एवो पाठ छे. तेमां 'प्राप्तार्थाः' जेणे

घा पिच्छंसि वा सिङ्गंसि वा विसाणंसि वा रोमंसि वा जहिं जहिं गिण्हइ तहिं तहिं निचलं निप्फन्दं धरेइ, एवामेव समणे भगवं महावीरे ममं बहूहिं अट्ठेहि य हेऊहि य जाव वागरणेहि य जहिं जहिं गिण्हइ तहिं

वायस अने श्येन-बाजने हाथे, पगे, खरीए, पुंछडे, पिंछाए, शींगडे, विषाण-सुकरना दांते के रुंवाडे ज्यां ज्यां पकडे त्यां त्यां निश्चल अने स्पन्द रहित पणे धारण करी शके छे, ए प्रमाणे श्रमण भगवान् महावीर मने घणा अर्थो, हेतुओ, यावत् उत्तरो वडे

प्रयोजन प्राप्त कर्युं छे एवा, तथा 'इतिनिपुणाः' सूक्ष्मदर्शी, वृद्धो 'कुशल' एवो अर्थ करे छे. 'इतिनयवादिनः' नीतिना कहेनारा, 'इत्युपदेशलब्धा' जेणे आप्त पुरुषोनो उपदेश प्राप्त कर्यो छे एवा, बीजी वाचनामां 'इतिमेधाविनः' अपूर्व श्रुतने ग्रहण करवानी शक्तिवाळा, 'इति विज्ञानप्राप्ताः' अने जेमणे सद्‌बोध प्राप्त कर्यो छे एवा छो, तो तमे मारा धर्माचार्य श्रमण भगवान् महावीरनी साथे विवाद करवाने अहीं 'प्रभु' शब्दनो संबन्ध छे एटले समर्थ छो? ए तात्पर्य छे.

'से जहे'त्यादि यथानाम-जेम कोइ पुरुष तरुण-वधती जती उमरवाळो, अन्य आचार्य 'वर्णादि गुण वडे उपचित' एवी व्याख्या करे छे. यावत् शब्दना कथनथी आ जाणवुं-'बलवं' सामर्थ्यवाळो, 'जुगवं' युगवान्-युग-प्रशस्त काळ विशेष जेओने छे एवो, एटले उत्तम काळमां उत्पन्न थयेलो, कारण के दुष्ट काळ बळनी हानि करनार होवाथी तेनो निषेध करवा माटे आ विशेषण छे. 'जुवाणे' त्ति युवान, 'अप्पायंके' नीरोगी, 'थिरग्गहत्थे' सारा लेखकनी पेठे स्थिर अग्र हस्तवाळो, कारण के जेना हाथनो अग्र भाग अस्थिर होय तो बरोबर पकडी न शके माटे आ विशेषण छे. 'दढपाणिपाए' मजबूत हाथ पगवाळो, 'पासपिट्ठन्तरोरुपरिणए' पार्श्वपृष्ठान्तरोरुपरिणतः-बे पार्श्व-पडखां, पृष्टान्तर-पीठना विभागो, ऊरू-साथळो परिणत-परिपक्व थयेला छे जेना एवो, एटले उत्तम संघयणवाळो ए तात्पर्य छे. 'तलजमलजुयलपरिघनिभबाहु'त्ति. यमल-समश्रेणिमां रहेला तल-ताडना युगल अने परिघ-आगळीआना समान बाहु जेना छे एवो, 'घणनिचियवट्टपालिखंधे'त्ति. घननिचित-अत्यन्त निबिड, वृत्त-वर्तुलाकार, पाली-तळाव वगेरेनी पाळना सरखा स्कन्ध

तर्हि निप्पट्ठपसिणवागरणं करेइ, से तेणट्ठेणं सद्दालपुत्ता ! एवं वुचइ–'नो खलु पभू अहं तव धम्मायरिएणं जाव महावीरेणं सद्धिं विवादं करेत्तए'।

ज्यां ज्यां पकडे त्यां त्यां निरुत्तर करे छे, ते हेतुथी हे सद्दालपुत्र ! हुं एम कहुं छुं के 'हुं तारा धर्माचार्य यावत् भगवान् महावीरनी साथे विवाद करवाने समर्थ नथी.

जेना छे एवो, 'चम्मेट्ठगदुहणमोट्ठियसमाहयनिचियगायकाए' चर्मेष्टका-इटना ककडा वगेरेथी भरेली चामडानी कुंडी, जेने खेंचवा वडे धनुषधारी व्यायाम करे छे, दुघण-मुद्गर, मौष्टिक जेमां चामडानी दोरी परोवेली छे एवो-मुठी प्रमाण पत्थरनो गोळो, ते वडे समाहत-व्यायाम करवामां ठोकेला गात्र-अंगो जेना छे एवा शरीरवाळो, आ विशेषण वडे अभ्यास जन्य सामर्थ्य बताव्युं. 'लंघण-पवणजविणवायामसमत्थे' लंघन-उल्लंघन-करवुं, प्लवन-कुदवुं अने जविनव्यायाम-ते सिवाय अन्य शीघ्र व्यायाम, तेओमां समर्थ, 'उर-स्सबलसमागए' औरस्य-अंतरना उत्साह अने बल सहित, 'छेए' प्रयोगने जाणनार, 'दक्खे' दक्षः-शीघ्र करनार, 'पत्तट्ठे' प्रस्तुत काममां पूर्णताने प्राप्त थयेल, 'प्रष्ठ' एम अन्य आचार्य अर्थ करे छे. 'कुसले' विचारपूर्वक करनार, 'मेहावि' सि. एकवार जोयेल अने सांभळेल कर्मने जाणनार, 'निउणे' उपायनो आरंभ करनार, 'निउणसिप्पोवगए' सूक्ष्म शिल्प युक्त (मनुष्य) 'अजं वा' बकरो, 'एलकं वा' घेटो, 'शूकर वा' डुकर, कुर्कुट-कुकडो, तित्तिर-तेतर, वर्तक-वतक, लावक-लावा, कपोत-पारेवा कपिंजल, वायस-कागडो, श्येन-बाज ए बधा लोक प्रसिद्ध पक्षीओ जाणवा तेने 'हत्थंसि वा' हाथने विषे, जो के अज वगेरेने हाथ होता नथी, तो पण आग-ळनो पग हाथ जेवो छे एम समजी 'हाथने विषे' एम कह्युं छे, जेने जे संभवे ते प्रमाणे हाथ, पग, खरी, पुच्छ, पिच्छ, शिंगडा, विषाण अने रोमनी योजना करवी पिच्छ-पिंछा-पांखनो अवयवविशेष, शिंगडा बकरा अने घेटाने जाणवा. विषाण शब्द जो के

१५ तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए गोसालं मङ्खलिपुत्तं एवं वयासी–'जम्हा णं देवाणुप्पिया! तुब्भे मम धम्मायरियस्स जाव महावीरस्स संतेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं भावेहिं गुणकित्तणं करेह तम्हा णं अहं तुब्भे पाडिहारिएणं पीढ० जाव संथारएणं उवनिमन्तेमि, नो चेव णं धम्मोत्ति वा तवोत्ति वा, तं गच्छह णं तुब्भे मम कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढफलग० जाव ओगिण्हित्ताणं विहरह। तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स एयमट्ठं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता कुम्भारावणेसु पाडिहारियं पीढ जाव ओगिण्हित्ता णं विहरइ। तए णं से गोसाले मङ्खलिपुत्ते सद्दालपुत्तं समणोवासयं जाहे नो संचाइए बहूहिं आघवणाहि य पण्णवणाहि य सण्णवणाहि य विण्णवणाहि य निग्गन्थाओ पावयणाओ चालित्तए वा खोभित्तए

१५. त्यार बाद श्रमणोपासक सद्दालपुत्रे मंखलिपुत्र गोशालकने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिय ! जे माटे मारा धर्माचार्य महावीरना विद्यमान, सत्य, तथाप्रकारना सद्भूत भावो वडे गुणकीर्तन करो छो, तेथी हुं तमने (प्रातिहारिक) पाछा आपवा योग्य पीठ–आसन, यावत् संस्तारक वडे आमन्त्रण करुं छुं, परन्तु धर्म अने तपनी बुद्धिथी करतो नथी. ते माटे तमे जाओ अने मारा कुंभकारनी शालामां प्रातिहारिक पीठ, फलक यावत् ग्रहण करीने रहो. त्यार पछी ते मंखलिपुत्र गोशालक श्रमणोपासक सद्दालपुत्रने ज्यारे आघवणा–कथन, प्रज्ञापना, संज्ञापना अने विज्ञापना वडे निर्ग्रन्थ प्रवचनथी चलायमान करवाने, क्षोभ करवाने, विपरिणाम करवाने

हाथीना दांतने विशे प्रसिद्ध छे, तो पण समानपणाथी सुअरना दान्तने विशे जाणजो. 'निश्चलम्' सामान्यतः अचल, 'निष्पन्दे'–कंइ पण चलन क्रियाथी रहित.

या विपरिणामित्तए या ताहे सन्ते तन्ते परितन्ते पोलासपुराओ नगराओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ।

१६. तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील० जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा वइक्कन्ता, पण्णरसमस्स संवच्छरस्स अन्तरा वट्टमाणस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले जाव पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स अन्तियं धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणो-

समर्थ थतो नथी त्यारे श्रान्त थयेलो, तान्त-ग्लानि पामेलो अने परितान्त-खिन्न थयेलो ते पोलासपुर नगरथी नीकळे छे अने बहारना देशोमां विहरे छे.

१६. त्यार पछी सद्दालपुत्र श्रमणोपासकने घणा शीलव्रत वगेरे वडे यावत् आत्माने भावित करतां चौद वर्ष व्यतीत थया; पंदरमा वर्षनी वच्चे वर्तता तेने रात्रिना मध्य समये (धर्म जागरण करता विचार थयो—) यावत् ते पोषधशालामां श्रमण भगवंत महावीरनी पासेथी धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे. ते वार पछी ते सद्दालपुत्र श्रमणोपासकनी पासे मध्य रात्रीए एक देव आव्यो अने ते देवे एक मोटी काळा कमळ जेवी तलवार लईने सद्दालपुत्र श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं—इत्यादि जेम चुलनीपि-

१८. 'आघवणाहि य' आख्यानैः-कहेवा वडे, 'प्रज्ञापनाभिः' भेदथी वस्तुनी प्ररूपणा करवा वडे, 'संज्ञापनाभिः' वारंवार जणाववा वडे, 'विज्ञापनाभिः' अनुकूल कहेवा वडे.

उपासकदशाना सातमा अध्ययननो टीकानुवाद समाप्त.

वासयस्स पुव्वरत्तावरत्तकाले एगे देवे अन्तियं पाउब्भवित्था। तए णं से देवे एगं महं नीलुप्पल० जाव असिं गहाय सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-जहा चुलणीपियस्स तहेव देवो उवसग्गं करेइ, नवरं एक्केक्के पुत्ते नव मंससोल्लए करेइ, जाव कणीयसं घाएइ, घाइत्ता जाव आयञ्चइ। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं अभीयं जाव पासित्ता चउत्थंपि सद्दालपुत्तं समणोवासयं एवं वयासी-'हं भो सद्दालपुत्ता! समणोवासया! अपत्थियपत्थया जाव न भञ्जसि तओ ते जा इमा अग्गिमित्ता भारिया धम्मसहाइया धम्मविइज्जिया धम्माणुरागरत्ता समसुहदुक्खसहाइया तं ते साओ

ताने कह्युं हतुं तेम कहेवुं, अने तेमज देव उपसर्ग करे छे, परन्तु एक एक पुत्रना नव मांसना खंड करे छे, यावत् सौथी नाना पुत्रनो घात करे छे. घात करी तेना लोही अने मांस वडे तेना शरीरने छांटे छे. त्यार पछी ते सद्दालपुत्र श्रमणोपासक भय रहित थई यावत् विहरे छे. त्यार बाद ते देवे सद्दालपुत्र श्रमणोपासकने निर्भय यावत् जोइने चोथी वार पण सद्दालपुत्र श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं—अप्रार्थित-मरणनी प्रार्थना करनार हे सद्दालपुत्र श्रमणोपासक! जो तुं शीलव्रतादिक भांगीश नहि तो जे आ धर्ममां सहाय करनारी, धर्ममां द्वितीय, धर्मना अनुराग वडे रंगायेली अने समानपणे सुख दुःखमां सहाय करनारी तारी अग्निमित्रा भार्या छे तेने तारा पोताना घरथी लइ जइश, लइने तारी पासे तेनो घात करीश. घात करीने नव मांस सोल्ल-मांसना खंड करीश. करीने आदाण-आंधणथी भरेला कडायामां उकाळीश, उकाळीने तारा शरीरने मांस अने लोही वडे छांटीश, जे रीते आर्तध्याननी अत्यन्त पराधीनताथी पीडित थयेलो तुं जीवितथी मुक्त थइश.

गिहाओ नीणेमि, नीणेत्ता तव अग्गओ घाएमि, घाएत्ता नव मंससोल्लए करेमि, करेत्ता आदाणभरियंसि कडाहयंसि अद्दहेमि, अद्दहेत्ता तव गायं मंसेण य सोणिएण य आयञ्चामि, जहा णं तुमं अट्टदुहट्ट० जाव ववरोविज्जसि। तए णं से सद्दालपुत्ते समणोवासए तेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे अभीए जाव विहरइ। तए णं से देवे सद्दालपुत्तं समणोवासयं दोचंपि तचंपि एवं वयासी-हं भो सद्दालपुत्ता! समणोवासया! तं चेव भणइ। तए णं तस्स सद्दालपुत्तस्स समणोवासयस्स तेणं देवेणं दोचंपि तचंपि एवं वुत्तस्स समाणस्स अयं अज्झत्थिए ४ समुप्पन्ने। एवं जहा चुलणीपिया तहेव चिन्तेइ-'जेणं ममं जेट्ठं पुत्तं, जेणं ममं मज्झिमयं पुत्तं, जेणं ममं कणीयसं पुत्तं जाव आयञ्चइ, जाऽवि य णं ममं इमा अग्गिमित्ता भारिया समसुहदुक्खसहाइया तंपि य इच्छइ साओ

त्यार पछी ते देवे ए प्रमाणे कह्युं छतां ते सद्दालपुत्र श्रमणोपासक निर्भय थइने विहरे छे. त्यार बाद ते देवे सद्दालपुत्र श्रमणोपासकने बीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे कह्युं—हे सद्दालपुत्र श्रमणोपासक! इत्यादि (पूर्वोक्त) कहे छे. ते पछी ते देवे बीजी वार अने त्रीजी वार ए प्रमाणे कह्युं एटले सद्दालपुत्र श्रमणोपासकने आ प्रकारनो विचार थयो-इत्यादि चुलनीपितानी पेठे चिन्तवे छे-'जे मारा ज्येष्ठ पुत्रने, जे मारा मध्यम पुत्रने, अने जे मारा कनिष्ठ-नाना पुत्रने मारी (तेना लोही अने मांस वडे मारा शरीरने) छांटे छे, अने जे आ मारी अग्निमित्रा भार्या सुख दुःखमां समान सहाय करनारी छे तेने पण मारा पोताना घरथी लइने मारी पासे घात करवाने इच्छे छे, तो मारे ए पुरुषने पकडवो श्रेय-योग्य छे' एम विचारीने ते दोड्यो-इत्यादि चुलनीपिता संबन्धे कह्युं छे तेम बधुं कहेवुं. परन्तु अग्निमित्रा भार्या कोलाहल सांभळीने कहे छे. बाकी बधी वक्तव्यता चुलनीपितानी वक्तव्यतानी

गिहाओ नीणेत्ता मम अग्गओ घाएत्तए, तं सेयं खलु ममं एयं पुरिसं गिण्हित्तए' त्तिकट्टु उद्धाइए जहा चुलणीपिया तहेव सव्वं भाणियव्वं, नवरं अग्गिमित्ता भारिया कोलाहलं सुणित्ता भणइ, सेसं जहा चुलणिपियावत्तव्वया, नवरं अरुणभूए विमाणे उववन्ने, जाव महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवओ॥

सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं सत्तमं अज्झयणं समत्तं।

पेठे जाणवी. परन्तु ते (सद्दालपुत्र) काळ करी अरुणभूत विमानमां उत्पन्न थयो अने यावत् महाविदेह क्षेत्रमां सिद्धिपद पामशे. अहीं निक्षेप-उपसंहार कहेवो.

सातमा उपासकदशांगना सातमा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.



अट्ठमं अज्झयणं ।

१. अट्ठमस्स उक्खेवओ । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं रायगिहे नयरे । गुणसिले चेइए । सेणिए राया । तत्थ णं रायगिहे महासयए नामं गाहावई परिवसइ, अड्ढे जहा आणन्दो । नवरं अट्ठ हिरण्ण-कोडीओ सकंसाओ निहाणपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ वुड्ढिपउत्ताओ, अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ पवित्थरपउत्ताओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । तस्स णं महासयगस्स रेवईपामोक्खाओ

८ महाशतक अध्ययन.

१ आठमा अध्ययननो उत्क्षेप–उपोद्घात कहेवो. हे जम्बू ! ए प्रमाणे खरेखर ते काळे अने ते समये राजगृह नगर हतुं. गुण-शील चैत्य हतुं. श्रेणिक राजा हतो. ते राजगृह नगरमां महाशतक नामे गृहपति रहेतो हतो. ते आढ्य–धनवान् अने (समर्थ) आनन्दना जेवो हतो. परन्तु तेणे कांस्य सहित आठ हिरण्यकोटी निधानमां मूकेल, कांस्य सहित आठ हिरण्यकोटी वृद्धिमां–व्याजे मूकेल अने कांस्यसहित आठ हिरण्यकोटी धनधान्यादिना विस्तारमां (व्यवहारमां) रोकेली हती. ते महाशतकने रेवती प्रमुख तेर स्त्रीओ हती. ते अहीन–परिपूर्ण अंगवाळी अने सुंदर रूपवाळी हती. ते महाशतकनी भार्या रेवतीने कुलघर–पिताना घरथी आवेल आठ

१ जेमां बे द्रोणी वजन समाय एवु एक जातनु माप एक द्रोणीमां १२८ शेर समाय छे एटले २५६ शेर वजन माय तेवु एक जातनुं कांस्य नामनु माप

तेरस भारियाओ होत्था, अहीण० जाव सुरूवाओ। तस्स णं महासयगस्स रेवईए भारियाए कोलघरियाओ अट्ठ हिरण्णकोडीओ, अट्ठ वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था। अवसेसाणं दुवालसण्हं भारियाणं कोलघरिया एगमेगा हिरण्णकोडी, एगमेगे य वए दसगोसाहस्सिएणं वएणं होत्था।

२. तेणं कालेणं तेणं समएणं सामी समोसढे। परिसा निग्गया। जहा आणन्दो तहा निग्गच्छइ, तहेव सावयधम्मं पडिवज्जइ। नवरं अट्ठ हिरण्णकोडीओ सकंसाओ उचारेइ, अट्ठ वया, रेवईपामोक्खाहिं तेरसहिं भारियाहिं अवसेसं मेहुणविहिं पचक्खाइ, सेसं सव्वं तहेव। इमं च णं एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ–कल्लाकल्लिं च णं कप्पइ मे वेदोणियाए कंसपाईए हिरण्णभरियाए संववहरित्तए। तए णं से महासयए समणो-

हिरण्यकोटी, अने दस हजार गायोनुं एक व्रज एवां आठ व्रजो हतां. बाकीनी बार स्त्रीओने पोताना पिताना घरथी आवेल एक एक हिरण्यकोटी अने दस हजार गायोनुं एक व्रज एवुं एक एक व्रज हतुं.

२. ते काळे अने ते समये महावीर स्वामी समोसर्या. परिषद् वांदवाने नीकळी. आनन्दनी जेम (महाशतक) वंदन करवाने नीकळे छे अने तेमज श्रावक धर्मने अंगीकार करे छे. परन्तु कांस्य सहित आठ हिरण्यकोटी अने आठ व्रजना परिमाणनो उच्चार करे छे. तथा रेवतीप्रमुख तेर भार्याओ सिवाय अवशेष मैथुन विधिनो त्याग करे छे. बाकी बधुं तेमज जाणवुं, अने आ आवा प्रका-

१ आठमुं अध्ययन पण सुगम छे 'सकंसाओ'त्ति, कांस्य-द्रव्यनुं एक जातनुं प्रमाण, ते वडे सहित सकांस्य-कांस्य नामना प्रमाण युक्त. 'कोलघरियाओ' 'कौलगृहिका.' कुलगृह-पिताना घरथी दायजामां आवेली.

वासए जाए अभिगयजीवाजीवे जाव विहरइ, तए णं समणे भगवं महावीरे वहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

३. तए णं तीसे रेवईए गाहावइणीए अन्नया कयाइ पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि कुडुम्ब० जाव इमेयारूवे अज्झत्थिए ४-'एवं खलु अहं इमासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं विघाएणं नो संचाएमि महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं माणुस्सयाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरित्तए, तं सेयं खलु ममं एयाओ दुवालसवि सवत्तियाओ अग्गिप्पओगेणं वा सत्थप्पओगेणं वा विसप्पओगेणं वा जीवियाओ ववरोवित्ता, एयासिं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव उवसम्पज्जित्ता णं महासयएणं समणोवासएणं सद्धिं उरालाइं जाव विह-

रनो अभिग्रह ग्रहण करे छे-हमेशां बे द्रोण प्रमाण हिरण्यथी भरेला कांस्य पात्र वडे व्यवहार करवो मने कल्पे छे. त्यार बाद महाशतकश्रमणोपासक थयो अने जेणे जीव अने अजीव तत्त्व जाणेल छे एवो यावत् विहरे छे.

३. त्यार बाद रेवती गृहपत्नीने अन्य कोइ दिवसे मध्य रात्रिना समये कुटुम्ब जागरण करता आ आवा प्रकारनो विचार थयो-ए प्रमाणे खरेखर हुं आ बार सपत्नीना विघात-प्रतिबन्ध वडे महाशतक श्रमणोपासक साथे उदार मनुष्य संबन्धी भोगववा योग्य भोगोने भोगववाने समर्थ नथी, तो मारे आ बारे सपत्नीओने अग्निप्रयोग वडे, शस्त्रप्रयोग वडे अथवा विषप्रयोग वडे जीवितथी मुक्त करीने अने एओनी एक एक हिरण्यकोटि अने एक एक गायोना व्रजने स्वयमेव ग्रहण करीने महाशतक श्रमणोपासक साथे उदार भोगो यावत् भोगववा योग्य छे'-एम विचार करे छे, विचार करीने ते बारे सपत्नीओना अन्तर-अवसर, छिद्रो, अने विवरो जोती रहे छे. त्यार बाद रेवती गृहपत्नी अन्य कोइ दिवसे ते बारे सपत्नीओना अन्तर-छिद्रो जाणीने छ सपत्नीओने शस्त्रप्रयोगथी

रित्तए' एवं सम्पेहेइ। संपेहित्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अन्तराणि य छिद्दाणि य विवराणि य पडिजागर-माणी विहरइ। तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाइ तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं अन्तरं जाणित्ता छ स-वत्तीओ सत्थप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेत्ता छ सवत्तीओ विसप्पओगेणं उद्दवेइ, उद्दवेत्ता तासिं दुवालसण्हं सवत्तीणं कोलघरियं एगमेगं हिरण्णकोडिं एगमेगं वयं सयमेव पडिवज्जइ, पडिवज्जित्ता महासयएणं समणो-

मारे छे अने छ सपत्नीओने विषप्रयोगथी मारे छे. मारीने ते बारे सपत्नीओना पितृगृहथी (पियरथी) आवेल एक एक हिरण्य-कोटी अने एक व्रजने स्वयमेव ग्रहण करे छे, ग्रहण करीने महाशतक श्रमणोपासक साथे उदार एवा भोग्य भोगोने भोगवती रहे

३ 'अन्तराणि' अवसरो, 'छिद्राणि'-विरल-थोडा परिवार रूप छिद्रो, 'विवरान्' एकान्तो. 'मांसलोलुपे'त्यादि. मांसमां लंपट, एनुं विशेषण आपे छे-'मांसमूर्छिता' मांसमां तेना दोष नहि जाणवा वडे मूढ थयेली, 'मांसग्रथिता' मांसना अनुराग रूप तन्तु वडे गुंथायेली, 'मांसगृद्धा' तेनो उपभोग करवा छतां जेनी इच्छानो विच्छेद थयो नथी एवी, 'मांसाध्युपपन्ना' मांसने विषे एकाग्र चित्तवाळी अने तेथी बहु प्रकारना सामान्य अने विशेष प्रकारना मांसनी साथे, केवा? ते संबन्धे कहे छे-'सोल्लिएहिं' शूल्यकैः-शूलमां परोवीने संस्कार करेला, 'तलितैः' घी इत्यादि वडे अग्नि उपर तळेला, 'भर्जितैः' अग्निमात्र वडे पकावेला, अहीं 'सह' नो अध्याहार समजवो. एटले तेवा मांसनी साथे सुरा-काष्ठ अने पिष्टथी बनेल, मधु-मध, मेरक-एक जातनुं मद्य, मद्य-गोळ अने धावडीथी थयेल मदिरा, सिधु अने प्रसन्ना-एक जातनी मदिराने 'आस्वादयन्ती' इषत्-थोडो स्वाद करती, कदाचित् 'विस्वादयन्ती' विविध प्रकारे अथवा विशेष प्रकारे स्वाद करती, कदाचित् 'परिभाजयन्ती' पोताना समस्त परिवारने उपर कहेला तेना (मद्यना) विशेष प्रकारने वहेंचती विहरे छे.

घासएणं सद्धिं उरालाइं भोगभोगाइं भुञ्जमाणी विहरइ। तए णं सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया जाव अज्झोववन्ना बहुविहेहिं मंसेहि य सोल्लेहि य तलिएहि य भज्जिएहि य सुरं च महुं च मेरगं च मज्जं च मीधुं च पसन्नं च आसाएमाणी ४ विहरइ ॥

४. तए णं रायगिहे नयरे अन्नया कयाइ अमाघाए घुट्टे यावि होत्था। तए णं सा रेवई गाहावइणी मंसलोलुया मंसेसु मुच्छिया ४ कोलघरिए पुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी-'तुब्भे देवाणुप्पिया! मम कोलघरिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए उद्दवेह, उद्दवेत्ता ममं उवणेह। तए णं कोलघरिया पुरिसा रेवईए गाहावइणीए 'तह'त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणन्ति। पडिसुणेत्ता रेवईए गाहावइणीए कोलघ-

छे. ते पछी ते रेवती गृहपत्नी मांसने विशे लोलुप थयेली, मांसमां मूर्छित थयेली, यावत् अत्यन्त आसक्त थयेली बहु प्रकारना शेकेला, तळेला अने भुंजेला मांसनी साथे सुरा, मधु, मेरक, मद्य, मीधु अने प्रसन्ना-मदिरानो आस्वाद करती विहरे छे.

४. त्यार बाद राजगृह नगरमां अन्य कोइ दिवसे अमाघात-अमारिनो घोष थयो. त्यारे ते मांसमां लोलुप, मांसमां मूर्छित थयेली ते रेवती गृहपत्नी कौलगृहिक-पितृगृह-पियेरना पुरुषोने बोलावे छे. बोलावीने तेणे आ प्रमाणे कह्युं-हे देवानुप्रिय! तमे मारा पितृगृह संबन्धी व्रजोमांथी दरेक प्रभाते बब्बे वाछडाने मारो अने मारीने मने आपो. त्यारबाद ते पितृगृह-पियरना संबन्धी

४-५ 'अमाघाओ' रुढि शब्द होवाथी तेनो 'अमारि' एवो अर्थ थाय छे. 'कोलघरिए' कुलगृह-पितृगृहसंबन्धी 'गोणपोतको' बे वाछडाने 'उद्दवेह' मारो. 'मत्ता' इति. सुरा-मदिरा वगेरेना मदवाळी, लुलिता-मद-केफ चडे कंपती, स्खलना पामती. 'विकीर्णकेशी'

रिएहिंतो वएहिंतो कल्लाकल्लिं दुवे दुवे गोणपोयए वहेन्ति, वहेत्ता रेवइए गाहावइणीए उवणेन्ति । तए णं सा रेवई गाहावइणी तेहिं गोणमंसेहिं सोल्लेहि य ४ सुरं च ३ आसाएमाणी ४ विहरइ ।

५. तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स बहूहिं सील० जाव भावेमाणस्स चोद्दस संवच्छरा व-इक्कन्ता । एवं तहेव जेट्ठं पुत्तं ठवेइ जाव पोसहसालाए धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जित्ता णं विहरइ । तए णं सा रेवई गाहावइणी मत्ता लुलिया विइण्णकेसी उत्तरिज्जयं विकड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए

पुरुषो रेवती गृहपत्नीना ए अर्थने 'तह'त्ति कहीने विनय वडे स्वीकारे छे. स्वीकारीने रेवती गृहपत्नीना पियरना व्रजोमांथी दरेक प्रभाते बन्ने वाछडाओनो वध करे छे. वध करीने रेवती गृहपत्नीने आपे छे. त्यार पछी ते रेवती गृहपत्नी ते शेकेला, तळेला अने भुंजेला वाछडाना मांसनी साथे सुरा-मदिरानो आस्वाद करती विहरे छे.

५. त्यार बाद ते महाशतक श्रमणोपासकने घणा शील-व्रतो वगेरे वडे आत्माने भावित करता चौद वरस व्यतीत थया. ए प्रमाणे तेमज मोटा पुत्रने स्थापन करे छे. यावत् पोषधशालामां धर्मप्रज्ञप्तिने स्वीकारीने विहरे छे. त्यार पछी ते रेवती गृहपत्नी मत्त-उन्मत्त थयेली, लुलित-स्खलना पामती, छुटा केशवाळी उत्तरीय-उपरना वस्त्रने दूर करती करती, ज्यां पोषधशाला छे अने

छुटा केशवाळी. 'उत्तरीयकं' उपरना वस्त्रने 'विकर्षयन्ती' फाडी नांखती (रेवती) ज्यां महाशतक श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे, आवीने 'मोहोन्मादजनकान्' कामने उद्दीपन करनारा, 'शृंगारिकान्' शृंगाररसवाळा 'स्त्रीभावान्' कटाक्ष बतावबा वगेरे स्त्रीभावने 'उप-दर्शयन्ती' बतावती महाशतक श्रमणोपासकने कहे छे-'हं भो' ए आमन्त्रण-संबोधन वाची छे. 'महाशतक! इत्यादिथी मांडी

समणोवासए तेणेव उवागच्छइ । उवागच्छित्ता मोहुम्मायजणणाइं सिङ्गारियाइं इत्थिभावाइं उवदंसेमाणी २ महासययं समणोवासयं एवं वयासी–'हं भो महासयया ! समणोवासया ! धम्मकामया पुण्णकामया सग्गकामया मोक्खकामया धम्मकङ्खिया ४ धम्मपिवासिया ४ किण्णं तुब्भं देवाणुप्पिया ! धम्मेण वा पुण्णेण वा सग्गेण वा मोक्खेण वा ? जण्णं तुमं मए सद्धिं उरालाइं जाव भुञ्जमाणे नो विहरसि' । तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए एयमट्ठं नो आढाइ, नो परियाणाइ, अणाढाइज्जमाणे अपरियाणमाणे तुसिणीए धम्म-

ज्यां महाशतक श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने मोहोन्माद उत्पन्न करनारा, शृंगाररसवाळा स्त्रीभावने प्रदर्शित करती करती तेणे महाशतक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं–धर्मनी इच्छावाळा, पुण्यनी इच्छावाळा, स्वर्गनी इच्छावाळा, मोक्षनी इच्छावाळा, धर्मनी कांक्षावाळा ४ धर्मनी पिपासावाळा ४ हे महाशतक श्रमणोपासक ! देवानुप्रिय ! तमारे धर्म, पुण्य, स्वर्ग के मोक्षनुं शुं काम छे, के जे तमे मारी साथे उदार यावत् भोग्य–भोगववा लायक भोगो भोगवता नथी ? ते पछी ते महाशतक श्रमणोपासक रेवती गृहपत्नीना ए अर्थनो आदर करतो नथी, अने तेने मारी रीते जाणतो नथी, आदर नहि करतो अने नहि जाणतो मौन धारण

'विहरसि' सुधी रेवतीना वाक्यनो आ अभिप्राय छे–आज पनो स्वर्ग अथवा मोक्ष छे के जे मारी साथे विषयसुखनो अनुभव करवो. धर्मानुष्ठान स्वर्गादि माटे कराय छे, सुखना माटे स्वर्गादिनी इच्छा कराय छे अने सुख तो पटलुंज छे जे कामनुं सेवन करवुं, ए संबन्धे कहे छे के–

"जइ नत्थि सीमंतिणीओ मणहरपियंगुवण्णाओ । ता हे सिद्धंतिय ! बंधणं खु मोक्खो [illegible] सो मोक्खो" ॥

उज्झाणोवगए विहरइ । तए णं सा रेवई गाहावइणी महासययं समणोवासयं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–'हं भो ! तं चेव भणइ, सोऽवि तहेव जाव अणाढाइज्जमाणे अपरियाणमाणे विहरइ । तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं अणाढाइज्जमाणी अपरियाणिज्जमाणी जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥

६. तए णं से महासयए समणोवासए पढमं उवासगपडिमं उवसंपज्जित्ता णं विहरइ । पढमं अहासुत्तं

करी धर्मध्यानने प्राप्त थयेलो विहरे छे. त्यार बाद ते रेवती गृहपत्नीए महाशतक श्रमणोपासकने बीजीवार अने त्रीजीवार आ प्रमाणे कहुं–हे महाशतक श्रमणोपासक ! इत्यादि तेमज कहे छे, ते (महाशतक श्रमणोपासक) पण तेमज यावत् आदर नहि करतो, नहि जाणतो विहरे छे. ते पछी ज्यारे महाशतक श्रमणोपासके आदर न कर्यो अने सारी रीते जाणी नहि त्यारे ते रेवती जे दिशा तरफथी आवी हती ते दिशा तरफ चाली गई.

६. त्यार बाद महाशतक श्रमणोपासक प्रथम उपासक प्रतिमाने स्वीकारीने विहरे छे. प्रथम प्रतिमाने सूत्रमां कह्या प्रमाणे

जो मनहर प्रियंगुलताना जेवा वर्णवाळी स्त्रीओ नथी, तो हे सैद्धान्तिक ! मोक्ष ए बन्धन छे, ते (खरेखर) मोक्ष नथी

तथा—"सत्यं वच्मि हितं वच्मि सारं वच्मि पुनः पुनः । अस्मिन्नसारे संसारे सारं सारङ्गलोचना." ॥

हुं साचुं कहुं छुं, हितकारक कहुं छुं अने वारंवार सारभूत कहुं छुं के आ असार संसारमां साररूप हरणना जेवा लोचनवाळी (स्त्री) छे. तथा-सोळ वरसनी स्त्री अने पचीश वरसनो पुरुष, आ बन्नेनी निरन्तर प्रीति ए स्वर्ग कहेवाय छे.

जाव एक्कारसऽवि। तए णं से महासयए समणोवासए तेणं उरालेणं जाव किसे धमणिसन्तए जाए। तए णं तस्स महासययस्स समणोवासयस्स अन्नया कयाई पुव्वरत्तावरत्तकाले धम्मजागरियं जागरमाणस्स अयं अज्झत्थिए ४-'एवं खलु अहं इमेणं उरालेणं जहा आणन्दो तहेव अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाझूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ। तए णं तस्स महासयगस्स समणोवासगस्स सुभेणं अज्झवसाणेणं जाव खओवसमेणं ओहिणाणे समुप्पन्ने। पुरत्थिमेणं लवणसमुद्दे जोयणसाहस्सियं खेत्तं जाणइ पासइ, एवं दक्खिणेणं पच्चत्थिमेणं, उत्तरेणं जाव चुल्लहिमवन्तं वासहरपव्वयं जाणइ पासइ, अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुयं नरयं चउरासीइवाससहस्सट्ठिइयं जाणइ पासइ॥

(विधिथी) पूर्ण करे छे. एम अगियारे प्रतिमाने पूर्ण करे छे. त्यार पछी महाशतक श्रमणोपासक ते उदार तप वडे यावत् कृश-दुर्बळ थयो अने धमनीओ (नाडीओ) वडे व्याप्त थयो. ते पछी ते महाशतक श्रमणोपासकने अन्य कोइ दिवसे मध्य रात्रिना समये धर्म जागरण करता आ आवा प्रकारनो विचार थयो-आ उदार तप वडे हुं कृश थयो छुं-इत्यादि आनन्दनी पेठे सौथी छेल्ली मारणान्तिक संलेखना वडे क्षीण थयुं छे शरीर जेनुं एवो अने प्रत्याख्यात-त्याग कर्यो छे भात पाणीनो जेणे एवो ते काळनी दरकार कर्या सिवाय विहरे छे. त्यार पछी महाशतक श्रमणोपासकने शुभ अध्यवसाय वडे यावत् (अवधिज्ञानावरणना) क्षयोपशम वडे अवधिज्ञान उत्पन्न थयुं. ते पूर्व दिशाए लवण समुद्रमां हजार योजन प्रमाण क्षेत्र जाणे छे अने देखे छे. एम दक्षिण अने पश्चिम दिशाए जाणवुं. उत्तर दिशाए यावत् चुल्ल हिमवंत वर्षधर पर्वतने जाणे छे अने देखे छे. अधो दिशामां रत्नप्रभा-पृथ्वीना चोराशी हजार

७. तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्नया कयाइ मत्ता जाव उत्तरिज्जयं विकड्डमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता महासययं तहेव भणइ, जाव दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी–'हं भो तहेव। तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४ ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी–'हं भो रेवइ! अपत्थियपत्थिए! ४ एवं खलु तुमं अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया समाणी अट्टदुहट्ट-वसट्टा असमाहिपत्ता कालमासे कालं किच्चा अहे इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीइवा-

वरसनी स्थितिवाळा लोलुप अच्युत नामना नरकावासने जाणे छे अने देखे छे.

७. त्यार बाद ते रेवती गृहपत्नी अन्य कोइ दिवसे मत्ता–उन्मत्त थयेली, यावत् उत्तरीय–उपरना वस्त्रने काढी नांखती २ ज्यां पोषधशाला छे अने ज्यां महाशतक श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे. आवीने महाशतक श्रमणोपासकने तेमज कहे छे. यावत् तेणे बीजी वार अने त्रीजी वार आ प्रमाणे कह्युं—हे महाशतक श्रमणोपासक! इत्यादि पूर्वे कहेलुं तेमज जाणवुं. ते पछी रेवती गृहप-त्नीए बीजीवार अने त्रीजीवार ए प्रमाणे कह्युं एटले गुस्से थयेलो ४ महाशतक श्रमणोपासक अवधिज्ञान प्रयुंजे छे, प्रयुंजीने अवधिज्ञान वडे जाणे छे. जाणीने तेणे रेवती गृहपत्नीने आ प्रमाणे कह्युं–अप्रार्थित (मरण)नी प्रार्थना करनार हे रेवती! तुं खरे-खर सात रातनी (दिवसनी) अंदर अलसक (विषूचिका) रोग वडे पीडित थइ, आर्तध्याननी अत्यन्त परवशताथी दुःखित थयेली

■ 'अलसएणं' विषूचिका विशेषरूप अजीर्ण वडे, तेनुं आ लक्षण छे-आहार उपर न जाय, नीचे न जाय, तेम पाचन न थाय,

ससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववज्जिहिसि' । तए णं सा रेवई गाहावइणी महासयएणं समणोवासएणं एवं वुत्ता समाणी एवं वयासी-'रुट्ठे णं ममं महासयए समणोवासए, हीणे णं ममं महासयए समणोवासए, अवज्झाया णं अहं महासयएणं समणोवासएणं, न नज्जइ णं अहं केणवि कुमारेणं मारिज्जिस्सामित्तिकट्टु भीया तत्था तसिया उव्विग्गा सञ्जायभया सणियं २ पचोसक्कइ, पचोसक्कित्ता जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ओहय० जाव झियाइ। तए णं सा रेवई गाहावइणी अन्तो सत्तरत्तस्स अलसएणं वाहिणा अभिभूया अट्टदुहट्टवसट्टा कालमासे कालं किच्चा इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीइवाससह-

अममाधिने प्राप्त थइ मरण समये काळ करी आ रत्नप्रभा पृथिवीना लोलुय अच्चुय नरकने विशे चोराशी हजार वरसनी स्थितिवाळा नैरयिकोमां नारकपणे उत्पन्न थइश. ते महाशतक श्रमणोपासके ए प्रमाणे कह्युं एटले ते रेवती गृहपत्नी आ प्रमाणे बोली-महाशतक श्रमणोपासक मारा उपर गुस्से थयेल छे, महाशतक श्रमणोपासक मारा उपर हीन-विरक्त थयो छे. महाशतक श्रमणोपासके मारा विशे दुर्विचार कर्यो छे, नथी जाणती के हुं कोइक कुमार-दुःखकारक मृत्यु वडे मराइश' एम विचारी भयभीत थइ, त्रास पामी, त्रस्त थइ उद्विग्न थइ अने जेने भय थयो छे एवी धीमे धीमे पाछी गइ. पाछी जइने ज्यां पोतानुं घर छे त्यां आवी. आवीने अपहत थयेली छे मननी इच्छा जेनी एवी ते यावत् विचार करे छे. ते पछी ते रेवती गृहपत्नी सात रातनी अंदर अलसक व्याधि वडे

गण आमाशयने विशे अलसीभूत (आळसुनी पेठे) पडी रहे तेथी ते अलसक रोग कहेवाय छे
'हीणे'त्ति प्रीतिथी रहित. 'अपध्याता' दुर्ध्यानना विषयभूत करायेली 'कुमारेणं' दुःखकारक मृत्यु वडे.

रयणप्पभाए पुढवीए लोलुयच्चुए नरए चउरासीइवाससहस्सट्ठिइएसु नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ना ॥

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे, समोसरणं, जाव परिसा पडिगया। 'गोयमा'! इ० समणे भगवं महावीरे एवं वयासी–'एवं खलु गोयमा! इहेव रायगिहे नयरे ममं अन्तेवासी महासयए नामं समणोवासए पोसहसालाए अपच्छिममारणन्तियसंलेहणाए झूसियसरीरे भत्तपाणपडियाइक्खिए कालं अणवकङ्खमाणे विहरइ। तए णं तस्स महासयगस्स रेवई गाहावइणी मत्ता जाव विकड्ढमाणी २ जेणेव पोसहसाला जेणेव महासयए तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता मोहुम्माय० जाव एवं वयासी–तहेव जाव दोच्चम्पि तच्चम्पि एवं वयासी। तए णं से महासयए समणोवासए रेवईए गाहावइणीए दोच्चम्पि तच्चम्पि एवं वुत्ते समाणे आसुरुत्ते ४

पीडित थइ आर्तध्यानथी अत्यन्त पराधीनता वडे दुःखी थइ काळ समये काळ करीने आ रत्नप्रभा नरकपृथिवीना लोलुयच्चुय नरकने विषे चोराशी हजार वरसनी स्थितिवाळा नैरयिकोमां नैरयिकपणे उत्पन्न थइ.

८. ते काळे ते समये श्रमण भगवान् महावीर समोसर्या. यावत् परिषद् वांदीने पाछी गई. 'हे गौतम'! एम सम्बोधी श्रमण भगवान् महावीरे आ प्रमाणे कह्युं–हे गौतम! आज राजगृह नगरमां पोसहशालामां सौथी छेल्ली मारणान्तिक संलेखना वडे कृश थयेला शरीरवाळो, भात पाणीनुं प्रत्याख्यान कर्युं छे जेणे एवो अने काळनी दरकार नहि करतो मारो अन्तेवासी–शिष्य महाशतक नामे श्रमणोपासक रहे छे. ते पछी ते महाशतकनी मदोन्मत्त थयेली यावत् उपरना वस्त्रने काढी नांखती २ एवी रेवती नामे गृहपत्नी ज्यां पोषधशाला छे अने ज्यां महाशतक छे त्यां आवे छे. आवीने मोहोन्मादने उत्पन्न करनारा (शृंगारिक स्रीभावोने) बतावती

ओहिं पउंजइ, पउंजित्ता ओहिणा आभोएइ, आभोएत्ता रेवइं गाहावइणिं एवं वयासी-'जाव उववज्जिहिसि'। नो खलु कप्पइ गोयमा ! समणोवासगस्स अपच्छिम० जाव झूसियसरीरस्स भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं तच्चेहिं तहिएहिं सब्भूएहिं अणिट्ठेहिं अकन्तेहिं अप्पिएहिं अमणुण्णेहिं अमणामेहिं वागरणेहिं वागरित्तए, तं गच्छ णं देवाणुप्पिया ! तुमं महासययं समणोवासयं एवं वयाहि-नो खलु देवाणुप्पिया ! कप्पइ समणोवासगस्स अपच्छिम० जाव भत्तपाणपडियाइक्खियस्स परो सन्तेहिं जाव वागरित्तए। तुमे य णं देवा-

तेणे आ प्रमाणे कह्युं-(हे महाशतक !) इत्यादि तेमज कहे छे, यावत् बीजीवार अने त्रीजी वार पण एम कह्युं. त्यार पछी ते रेवती गृहपत्नीए बीजीवार अने त्रीजीवार ए प्रमाणे कह्युं एटले ते महाशतक श्रमणोपासक गुस्से थइ अवधिज्ञानने प्रयुंजे छे. प्रयुंजीने अवधिज्ञान वडे जाणे छे. जाणीने तेणे रेवती गृहपत्नीने आ प्रमाणे कह्युं-यावत् तुं (सात दिवसमां अलसक व्याधिथी मरीने नरकमां उत्पन्न थइश) तो हे गौतम ! अपश्चिम-सौथी छेल्ली मारणान्तिक संलेखना वडे क्षीण थयुं छे शरीर जेनुं एवा अने भक्त पाननुं जेणे प्रत्याख्यान कर्युं छे एवा श्रमणोपासकने सत्य, तथ्य, तेवा प्रकारना सद्भूत छतां अनिष्ट, अनिच्छनीय, अप्रिय, अमनोज्ञ अमनाप-अमनोहर उत्तर वडे बीजाने उत्तर आपवो योग्य नथी, माटे हे देवानुप्रिय ! तुं जा अने तुं महाशतक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कहे के 'हे देवानुप्रिय ! अपश्चिम मारणान्तिक संलेखना वडे क्षीण थयेला शरीरवाळा अने यावत् भक्त-पाननुं जेणे प्रत्या-

८ 'न खलु कप्पइ गोयमे'त्यादि. 'सन्तेहिं' विद्यमान, 'तच्चेहिं' तथ्य-सत्यरूप, तत्त्वरूप अथवा वास्तविक, 'तहिएहिं' तेज पूर्वोक्त प्रकारने प्राप्त थयेला, पण अल्पांशे न्यूनाधिक नहि थवा, तात्पर्य ए छे के 'सद्भूतैः' सद्रूप छतां 'अनिष्टैः' नहि वांछेल, 'अकान्तैः' स्व-

णुप्पिया! रेवई गाहावइणी संतेहिं ४ अणिट्ठेहिं ६ वागरणेहिं वागरिया, तं णं तुमं एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव जहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जाहि'। तए णं से भगवं गोयमे समणस्स भगवओ महावीरस्स 'तह'त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नयरं मज्झंमज्झेणं अणुप्पविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव महासयगस्स समणोवासयस्स गिहे जेणेव महासयए समणोवासए तेणेव उवागच्छइ। तए णं से महासयए भगवं गोयमं एज्जमाणं पासइ, पासित्ता हट्ठ०जाव हियए भगवं गोयमं वन्दइ नमंसइ। तए णं से भगवं गोयमे महासययं समणोवासयं एवं वयासी-'एवं खलु देवाणुप्पिया! समणे भगवं

ख्यान कर्युं छे एवा श्रमणोपासकने सत्य यावत् अनिष्ट कथन वडे बीजाने उत्तर आपवो योग्य नथी. हे देवानुप्रिय! तें रेवती गृह-पत्नीने सत्य ४ छतां अनिष्ट ६ कथन वडे उत्तर आप्यो छे, ते माटे तुं ए स्थानकनी आलोचना कर अने यथायोग्य प्रायश्चित्तनो स्वीकार कर. त्यार बाद भगवान् गौतम श्रमण भगवन्त महावीरना ए अर्थने 'तह'त्ति कही विनय वडे स्वीकारे छे. स्वीकारीने त्यांथी नीकळे छे. नीकळीने राजगृहनगरमां मध्यभागमां थइने प्रवेश करे छे. प्रवेश करीने ज्यां महाशतक श्रमणोपासकनुं घर छे अने ज्यां महाशतक श्रमणोपासक छे त्यां आवे छे. त्यारे ते महाशतक श्रमणोपासक भगवान् गौतमने आवता जुए छे. जोइने प्रसन्न अने संतुष्ट

'अनिष्टैः' ... रूप वडे अनिच्छनीय, 'अप्रियैः' अप्रीतिकारक, 'अमनोज्ञैः' मन वडे न जणाय, कहेवाने पण न इच्छाय तेवा, 'अमनआपैः' मनने विचार वडे पण न प्राप्त थाय ते, जेने कहेवामां अने विचारमां मन उत्साहित न थाय एवा व्याकरणैः-वचन विशेष वडे उत्तर आपवो योग्य नथी.

सातमा उपासकदशाना आठमा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.

जाव वागरित्तए, तुमे णं देवाणुप्पिया ! रेवई गाहावइणी सन्तेहिं जाव वागरिआ, तं णं तुमं देवाणुप्पिया ! एयस्स ठाणस्स आलोएहि जाव पडिवज्जाहि' । तए णं से महासयए समणोवासए भगवओ गोयमस्स 'तह'त्ति एयमट्ठं विणएणं पडिसुणेइ, पडिसुणेत्ता तस्स ठाणस्स आलोएइ, जाव अहारिहं च पायच्छित्तं पडिवज्जइ। तए णं से भगवं गोयमे महासयगस्स समणोवासयस्स अन्तियाओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता रायगिहं नगरं मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेण तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तए णं

हृदयवाळो ते भगवंत गौतमने वंदन नमस्कार करे छे. त्यार पछी भगवान् गौतमे महाशतक श्रमणोपासकने आ प्रमाणे कह्युं–हे देवानुप्रिय ! श्रमण भगवान् महावीर आ प्रमाणे कहे छे, भाषे छे, जणावे छे अने प्ररूपे छे–हे देवानुप्रिय ! सौथी छेल्ली मारणान्तिक संलेखना वडे क्षीण थयुं छे शरीर जेनुं एवा श्रमणोपासकने सत्य छतां अनिष्ट उत्तर वडे कहेवुं योग्य नथी. हे देवानुप्रिय ! तें रेवती गृहपत्नीने सद्भूत छतां अप्रिय उत्तर वडे कह्युं छे, तो हे देवानुप्रिय ! तुं ए स्थाननी आलोचना कर, यावत् प्रायश्चित्तनो स्वीकार कर. ते पछी ते महाशतक श्रमणोपासक भगवंत गौतमना ए अर्थने 'तहत्ति' कही विनय वडे स्वीकारे छे, स्वीकारीने ते स्थाननी आलोचना करे छे, यावत् यथायोग्य प्रायश्चित्तने स्वीकारे छे. त्यार बाद भगवान् गौतम महाशतक श्रमणोपासकनी पासेथी नीकळे छे, नीकळीने राजगृह नगरना मध्य भागमां जाय छे. जइने ज्यां श्रमण भगवान् महावीर छे त्यां आवे छे. त्यां आवीने श्रमण भगवंत महावीरने वंदन नमस्कार करे

समणे भगवं महावीरे अन्नया कयाइ रायगिहाओ नयराओ पडिणिक्खमइ, पडिनिक्खमित्ता बहिया जणवयविहारं विहरइ ॥

९. तए णं से महासयए समणोवासए बहूहिं सील० जाव भावेत्ता वीसं वासाइं समणोवासयपरियायं पाउणित्ता एक्कारस उवासगपडिमाओ सम्मं काएण फासित्ता मासियाए संलेहणाए अप्पाणं झूसित्ता सट्ठिं भत्ताइं अणसणाए छेदेत्ता आलोइयपडिक्कन्ते समाहिपत्ते कालमासे कालं किचा सोहम्मे कप्पे अरुणवडिंसए विमाणे देवत्ताए उववन्ने। चत्तारि पलिओवमाइं ठिई। महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ। निक्खेवो ॥

सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं अट्ठमं अज्झयणं समत्तं।

छे. वंदन नमस्कार करीने संयम अने तप वडे आत्माने भावित करता विहरे छे. ते पछी श्रमण भगवान् महावीर अन्य कोइ दिवसे बहारना देशोमां विहरे छे.

त्यार बाद महाशतक श्रमणोपासक घणा शील व्रत वगेरे वडे यावत् आत्माने भावित करतो वीश वरस सुधी श्रमणोपासक पर्यायने पाळीने अगियार उपासक प्रतिमाओने सम्यक् काया वडे स्पर्शीने मासिक संलेखना वडे आत्माने कृश करी साठ भक्त अनशन वडे व्यतीत करी आलोचना अने प्रतिक्रमण करी समाधिने प्राप्तथइ मरणसमये काळ करीने सौधर्म देवलोकमां अरुणावतंसक विमानने विशे देव थयो. तेनी चार पल्योपमनी स्थिति छे. ते महाविदेह क्षेत्रने विशे सिद्ध थशे. निक्षेप कहेवो.

सातमा उपासकदशांगना आठमा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.

नवमं अज्झयणं ।

१. नवमस्स उक्खेवो । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तूराया । तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नन्दिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ । अड्ढे । चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । अस्सिणी भारिया । सामी समोसढे । जहा आनन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी बहिया विहरइ । तए णं से नन्दिणीपिया समणोवासए जाए, जाव विहरइ । तए णं तस्स नन्दि-

---

९ नन्दिनीपिता अध्ययन.

१. नवमा अध्ययननो उपोद्घात कहेवो. हे जम्बू ! ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. कोष्ठक चैत्य हतुं. जितशत्रु राजा हतो, ते श्रावस्ती नगरीमां नन्दिनी पिता नामे गृहपति रहेतो हतो. ते आढ्य-धनवान् हतो. तेने चार हिरण्यकोटि निधानमां, चार हिरण्यकोटि व्याजे अने चार हिरण्यकोटि धनधान्यादिना विस्तारमां रोकायेली हती दस हजार गायोनुं एक व्रज एवा चार व्रजो तेने हता. तेने अश्विनी नामे स्त्री हती. महावीर स्वामी समोसर्या. आनन्द श्रावकनी पेठे तेणे तेमज गृहस्थ धर्मनो स्वीकार कर्यो. महावीर स्वामी बहारना देशोमां विचरवा लाग्या. ते पछी ते नन्दिनीपिता श्रावक थयो अने यावत् (जीव अजीवादि तत्त्वने

णीपियस्स समणोवासयस्स बहूहिं सील०वयगुण०जाव भावेमाणस्स चोदस संवच्छराइं वइक्कन्ताइं । तहेव जेट्ठं पुत्तं ठवेइ, धम्मपण्णत्तिं, वीसं वासाइं परियागं, नाणत्तं अरुणगवे विमाणे उववाओ । महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ । निक्खेवो ॥

॥ सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं नवमं अज्झयणं समत्तं ॥

जाणतो) विहरे छे. ते पछी ते नन्दिनीपिता श्रमणोपासकने घणा शीलव्रतो, (गुणव्रतो वगेरेथी आत्माने भावित करता चौद वरस व्यतीत थया. तेमज ते ज्येष्ठ पुत्रने स्थापन करे छे अने धर्मप्रज्ञप्तिनो स्वीकार करीने विहरे छे. वीश वरस सुधी श्रावकपणानो पर्याय पाळे छे, भेद ए छे के ते अरुणगव विमानमां उत्पन्न थयो, अने पछी ते महाविदेह क्षेत्रमां मोक्षे जशे. अहीं निक्षेप कहेवो.

उपासकदशाना नवमा अध्ययननो अनुवाद समाप्त.

नवमं अज्झयणं ।

१. नवमस्स उक्खेवो । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तूराया । तत्थ णं सावत्थीए नयरीए नन्दिणीपिया नामं गाहावई परिवसइ । अड्ढे । चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ, चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । अस्सिणी भारिया । सामी समोसढे । जहा आनन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ । सामी बहिया विहरइ । तए णं से नन्दिणीपिया समणोवासए जाए, जाव विहरइ । तए णं तस्स नन्दि-

९ नन्दिनीपिता अध्ययन.

१. नवमा अध्ययननो उपोद्घात कहेवो. हे जम्बू ! ते काले अने ते समये श्रावस्ती नामे नगरी हती. कोष्ठक चैत्य हतुं. जितशत्रु राजा हतो, ते श्रावस्ती नगरीमां नन्दिनी पिता नामे गृहपति रहेतो हतो. ते आढ्य-धनवान् हतो. तेने चार हिरण्यकोटि निधानमां, चार हिरण्यकोटि व्याजे अने चार हिरण्यकोटि धनधान्यादिना विस्तारमां रोकायेली हती. दश हजार गायोनुं एक व्रज एवा चार व्रजो तेने हता. तेने अश्विनी नामे स्त्री हती. महावीर स्वामी समोसर्या. आनन्द श्रावकनी पेठे तेणे तेमज गृहस्थ धर्मनो स्वीकार कर्यो. महावीर स्वामी बहारना देशोमां विचरवा लाग्या. ते पछी ते नन्दिनीपिता श्रावक थयो अने यावत् (जीव अजीवादि तत्त्वने

जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जि-णं विहरइ । नवरं निरुवसग्गाओ एक्कारसवि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ । एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

२. दसण्हवि पणरसमे संवच्छरे वट्टमाणाणं चिन्ता । दसण्हवि वीसं वासाइं समणोवासयपरियाओ ॥ एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते ।

३. वाणियगामे चम्पा दुवे य वाणारसीए नयरीए । आलभिया य पुरवरी कम्पिल्लपुरं च बोद्धव्वं ॥१॥

जेम ज्येष्ठ पुत्रने स्थापीने पोसहशालामां श्रमण भगवंत महावीरनी धर्मप्रज्ञप्ति स्वीकारीने विहरे छे. परन्तु अगीयारे श्रावकनी प्रतिमाओ उपसर्ग रहित तेमज कहेवी. एम कामदेवना सूत्रपाठ वडे जाणवुं. यावत् सौधर्म कल्पमां अरुणकिल विमानने विशे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां तेनी चार पल्योपमनी स्थिति छे. ते महाविदेह क्षेत्रने विशे मोक्षे जशे.

२. दशे श्रावकोने पंदरमा वर्षे चिन्ता–धर्मप्रज्ञप्ति मुजब वर्तवानो विचार थाय छे. अने दशे श्रावकनो वीश वरस श्रमणोपासक पर्याय छे. ए प्रमाणे हे जम्बू ! यावत् निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरे उपासकदशाना दसमा अध्ययनो आ अर्थ कह्यो छे.

३. वाणिज्य ग्रामने विषे प्रथम, बे श्रावको चम्पानगरीमां २–३, वाराणसीमां ४थो, आलभिका नगरीमां ५मो, कंपीलपुरमां

दसमं अज्झयणं ।

१. दसमस्स उक्खेवो । एवं खलु जम्बू ! तेणं कालेणं तेणं समएणं सावत्थी नयरी । कोट्ठए चेइए । जियसत्तू । तत्थ णं सावत्थीए नयरीए सालिहीपिया नामं गाहावई परिवसइ । अड्ढे दित्ते । चत्तारि हिरण्णकोडीओ निहाणपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ वुड्ढिपउत्ताओ, चत्तारि हिरण्णकोडीओ पवित्थरपउत्ताओ । चत्तारि वया दसगोसाहस्सिएणं वएणं । फग्गुणी भारिया । सामी समोसढे । जहा आणन्दो तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ,

१० सालिहीपिता अध्ययन

१. दसमा अध्ययननो उपोद्घात कहेवो. हे जम्बू ! ते काळे ते समये श्रावस्ती नगरी हती. कोष्ठक चैत्य हतुं. जितशत्रु राजा हतो. ते श्रावस्ती नगरीमां सालिहीपिता नामे गृहपति रहेतो हतो. ते धनिक अने दीप्त–तेजस्वी हतो तेने चार हिरण्यकोटी निधानमां मूकेली, चार हिरण्यकोटि व्याजे मूकेली अने चार हिरण्यकोटि धनधान्यादिना विस्तारमां हती. तेने दस हजार गायोनुं व्रज एवा चार व्रजो हतो. फाल्गुनी भार्या हती. महावीर स्वामी समोसर्या. आनन्दनी पेठे ते गृहस्थधर्मने स्वीकारे छे. अने कामदेवनी

१ नवमुं अने दसमुं अध्ययन स्पष्ट छे. दरेक अध्ययने उपक्षेप–उपोद्घात अने निक्षेप–निगमन विचारीने कहेवो. तथा 'ए प्रमाणे हे जम्बू' इत्यादि उपासकदशानुं निगमन वाक्य जाणवुं.

जहा कामदेवो तहा जेट्ठं पुत्तं ठवेत्ता पोसहसालाए समणस्स भगवओ महावीरस्स धम्मपण्णत्तिं उवसम्पज्जिणं विहरइ । नवरं निरुवसग्गाओ एक्कारसवि उवासगपडिमाओ तहेव भाणियव्वाओ । एवं कामदेवगमेणं नेयव्वं जाव सोहम्मे कप्पे अरुणकीले विमाणे देवत्ताए उववन्ने । चत्तारि पलिओवमाइं ठिई, महाविदेहे वासे सिज्झिहिइ ॥

२. दसण्हवि पण्णरसमे संवच्छरे वट्टमाणाणं चिन्ता। दसण्हवि वीसं वासाइं समणोवासयपरियाओ ॥ एवं खलु जम्बू ! समणेणं जाव सम्पत्तेणं सत्तमस्स अङ्गस्स उवासगदसाणं दसमस्स अज्झयणस्स अयमट्ठे पण्णत्ते।

३. वाणियगामे चम्पा दुवे य वाणारसीए नयरीए । आलभिया य पुरवरी कम्पिल्लपुरं च बोद्धव्वं ॥१॥

जेम ज्येष्ठ पुत्रने स्थापीने पोसहशालामां श्रमण भगवंत महावीरनी धर्मप्रज्ञप्ति स्वीकारीने विहरे छे. परन्तु अगीयारे श्रावकनी प्रतिमाओ उपसर्ग रहित तेमज कहेवी. एम कामदेवना सूत्रपाठ वडे जाणवुं. यावत् सौधर्म कल्पमां अरुणकिल विमानने विशे देवपणे उत्पन्न थयो. त्यां तेनी चार पल्योपमनी स्थिति छे. ते महाविदेह क्षेत्रने विशे मोक्षे जशे.

२. दशे श्रावकोने पंदरमा वर्षे चिन्ता–धर्मप्रज्ञप्ति मुजब वर्तवानो विचार थाय छे. अने दशे श्रावकनो वीश वरस श्रमणोपासक पर्याय छे. ए प्रमाणे हे जम्बू ! यावत् निर्वाणने प्राप्त थयेला श्रमण भगवान् महावीरे उपासकदशाना दसमा अध्ययनो आ अर्थ कह्यो छे.

३. वाणिज्य ग्रामने विषे प्रथम, बे श्रावको चम्पानगरीमां २–३, वाराणसीमां ४थो, आलभिका नगरीमां ५मो, कंपीलपुरमां

पोलासं रायगिहं सात्थीए पुरीए दोन्नि भवे । एए उवासगाणं नयरा खलु होन्ति बोद्धव्वा ॥२॥
सिवनन्द भद्द सामा धन्न बहुल पूस अग्गिमित्ता य । रेवइ अस्सिणि तह फग्गुणी य भज्जाण नामाइं ॥३॥
ओहिण्णाण पिसाए माया वाहिधणउत्तरिज्जे य । भज्जा य सुव्वया दुव्वया निरुवसग्गया दोन्नि ॥४॥
अरुणे अरुणाभे खलु अरुणप्पहअरुणकन्तसिट्ठे य । अरुणज्झए य छट्ठे भूय वडिंसे गवे कीले ॥५॥
चाली सट्ठि असीई सट्ठी सट्ठी य सट्ठि दस सहस्सा । असिई चत्ता चत्ता एए वइयाण य सहस्सा ॥६॥
बारस अट्ठारस चेउवीसं तिविहं अट्ठरसाई नेयं । धन्नेणं ति चोवीसं बारसं बारसं य कोडीओ ॥७॥

६ट्ठो, पोलासपुरमां ७मो, राजगृहमां ८मो, अने बे श्रावक श्रावस्ती नगरीमां थया. ए उपासकोना–श्रावकना नगरो जाणवा योग्य छे.

शिवनन्दा, भद्रा, श्यामा, धन्या, बहुला, पुष्या, अग्निमित्रा, रेवती, अश्विनी, अने फाल्गुनी ए दस श्रावकोनी भार्याना अनुक्रमे नाम छे.

अवधिज्ञान १, पिशाच २, माता ३, व्याधि ४, धन ५, उत्तरीय वस्त्र ६, सुव्रता–सुंदर आचारवाळी भार्या ७, अने दुर्व्रता दुराचारवाळी भार्या उपसर्गोना निमित्तो छे. अने छेल्ला बे श्रावक उपसर्गरहित छे.

ए दसे श्रावकोनी उत्पत्ति अनुक्रमे अरुण, अरुणाभ, अरुणप्रभ, अरुणकान्त, अरुणशिष्ट, छट्ठो अरुणध्वज, अरुणभूत, अरुणावतंसक, अरुणगव अने अरुणकिल विमानने विशे थई छे.

चालीश, साठ, ऍंसी, साठ, साठ, साठ, दस, ऍंसी, चालीश, अने चालीश एटला हजार गायोना व्रज अनुक्रमे जाणवा.

उल्लणदन्तवणफले अब्भिङ्गणुव्वट्टणे सणाणे य । वत्थ विलेवण पुप्फे आभरणं धूवपेज्जाइ ॥८॥
भक्खोयण सूय घए सागे माहुर-जेमण-पाणे य। तम्बोले इगवीसं आणन्दाईण अभिग्गहा ॥९॥
उड्ढं सोहम्मपुरे लोलूए अहे उत्तरे हिमवन्ते । पञ्चसए तह तिदिसं ओहिण्णाणं दसगणस्स ॥१०॥
दंसण-वय-सामाइय पोसह-पडिमा-अबम्भ-सचित्ते। आरम्भ-पेस-उद्दिट्ठवज्जए समणभूए य ॥११॥
इक्कारस पडिमाओ वीसं परियाओ अणसणं मासे । सोहम्मे चउपलिया महाविदेहम्मि सिज्झिहिइ ॥१२॥

पहेला आनन्द श्रावकने बार हिरण्यकोटि, बीजा श्रावकने अढार, त्रीजाने चोवीश, अने पछी चोथा, पांचमा अने छट्ठा ए त्रण श्रावकने अढार अढार कोटी, सातमाने त्रण कोटी, आठमाने चोवीश कोटि अने नवमा तथा दसमा श्रावकने बार बार हिरण्यकोटि द्रव्य छे.

उल्लण-अंगुछा, दातण, फळ, अभ्यंग, उद्वर्तन, स्नान, वस्त्र, विलेपन, पुष्प, आभरण, धूप, पेया, भक्ष्य, ओदन, सूप, घी, शाक, माधुर, (फळनो मधुर रस) जमण, पाणी अने तांबूल ए एकवीश प्रकारना अभिग्रहो आनन्दादि श्रावकोने छे.

उर्ध्व दिशामां सौधर्म देवलोक सुधी, अधो दिशामां रत्नप्रभाना लोलुयच्चुय नरकावास सुधी, उत्तरदिशामां हिमवन्त पर्वत सुधी अने बाकीनी त्रणे दिशामां पांचसो योजन सुधीनुं अवधिज्ञान दसे श्रावकोने छे.

बधा श्रावकोने दर्शन, व्रत, सामायिक, पोसह, कायोत्सर्ग प्रतिमा, अब्रह्मचर्यवर्जन, सच्चित्ताहारवर्जन, आरंभवर्जन, प्रेष्यवर्जन, उद्दिष्टवर्जन, अने श्रमणभूत ए अगियार प्रतिमाओ छे, वीश वरसनो श्रावकपणानो पर्याय छे, एक मासनुं अनशन छे, सौधर्म

उवासगदसाओ समत्ताओ ॥ उवासगदसाणं सत्तमस्स अङ्गस्स एगो सुयक्खन्धो दस अज्झयणा एक्कसरगा दससु चेव दिवसेसु उद्दिस्सिज्जंति तओ सुयक्खन्धो समुद्दिस्सिज्जइ अणुण्णविज्जइ दोसु दिवसेसु, अङ्गं तहेव ॥

॥ सत्तमस्स अंगस्स उवासगदसाणं दसमं अज्झयणं समत्तं ॥

कल्पमां चार पल्योपमनी स्थिति छे, अने बधा श्रावको महाविदेह क्षेत्रमां मोक्षे जवाना छे.]

उपासकदशा समाप्त. सातमा उपासकदशा अंगनो एक श्रुतस्कन्ध छे. दश अध्ययनो एक सरखा छे. ते दस दिवसे उपदेशाय छे, त्यार बाद बे दिवसोमां श्रुतस्कन्धनो समुद्देश–सूत्रने स्थिर परिचित करवा माटे उपदेश कराय छे अने अनुज्ञा–संमति अपाय छे तेमज ते अंगनो समुद्देश अने अनुज्ञा अपाय छे.

शिष्टादि नामो अरुणपदपूर्वक जाणवा, तेथी अरुणशिष्ट इत्यादि नाम कहेवा. अने ए गाथाओ पूर्वे कह्या प्रमाणे जाणवी. अहीं जेनी व्याख्या करी नथी तेनी व्याख्या ज्ञाताधर्मकथानुं व्याख्यान सावधानपणे जोइने जाणी लेवी.

सर्व मनुष्योने प्रायः पोतानुं वचन अभिमत-इष्ट होय छे, परन्तु जे पोताने पण सारी रीते रुचतुं नथी ते बीजाने शी रीते रुचे ? तो पण कोइक चित्तना उल्लासथी ए प्रमाणे में कंइक कह्युं छे, तेमां जे युक्त होय तेनो मारी प्रीतिने माटे निर्मल बुद्धिवाळा पुरुषो स्वीकार करो.

श्री चन्द्रकुलरूप आकाशमां सूर्यसमान श्रीजिनेश्वराचार्यना शिष्य श्रीमद्नवांगीना टीकाकार श्रीमद् अभयदेवाचार्ये करेला उपासकदशानी टीकानो अनुवाद समाप्त.

श्रीमदुपासकदशाङ्ग

अनुवाद सहित समास ।